मन पड़ैत अछि

सुरेन्द्र झा 'सुमन

मन पड़ैत अछि

सुरेन्द्र झा 'सुमन'

प्रकाशक :
मैथिली मन्दिर
दरभंगा

प्रकाशक : मैथिली मन्दिर
राज कुमार गंज
दरभंगा–846004

संस्करण : प्रथम
वर्ष : 2000 ई0

मूल्य : एक सय टाका

मुद्रक :- दरभंगा ऑफसेट प्रिन्टर्स
प्रेस - धरमपुर औद्योगिक प्रांगण-दरभंगा फोन 23800
कार्यालय - भगवानदास मुहल्ला, दरभंगा फोन 22940

स्मृति–विस्मृतिक गति–यति

'मन पड़ैत अछि' प्रायः 1970मे लिखब आरम्भ कयल। बाल्यकालसँ शिक्षा–दीक्षा अवधि धरि खड़रि गेलहुँ। पुनः कार्यव्यस्ततामे ग्रस्त भऽ कतहु अन्तरालेमे कखनहुँ कोनो पृष्ठ लिखा जाय। तदुत्तर बहतरा गेलापर पुनः स्मृति–तन्तुकें जोड़य लगलहुँ। गाम–घरसँ विद्यालय–महाविद्यालय पोथी–थोथी उनटबैत–चलबैत 'मयापंचाशीते–रधिकमपनीते तु वयसि' कलम धयलहुँ, दू तेहाइ गढ़ि–मढ़ि सकलहुँ। पुनः जरारोगग्रस्त भेलाक बाद ओकरा जेना–तेना पुरयबाक हेतु इष्ट–बन्धुसँ अनुरोधित–प्रबोधित होइत रहलहुँ। सर्वश्री अमरजी, भीम बाबू, सुरेश्वर बाबू, रमनी बाबू, समरेन्द्र बाबू, फूलचन्द्र रमण जी, अशोक ठाकुर जी, जटिलजी किछु अंश सुनि एकरा झटपट पुरयबाक आग्रही होइत रहलाह, पारिवारिक समाङमे चि0 माधवेन्द्र, लक्ष्मण, ब्रह्मेन्द्र, अरविन्द सेहो सभ आग्रही भेलाह। तदुत्तरे दृष्टिमन्दतोमे जेना–तेना अन्दाजेसँ कलम उठाय एहि संस्मरणात्मक विधाकें कहुना पुरा रहल छी।

स्मृति–विस्मृतिक रौद–छायामे छन घर छन बाहरक अन्धकार–प्रकाशमे जेना–तेना ई सम्पन्न कयल अछि। रोग–सोग मनःस्थितिमे कतोक नाम छुटि गेल हो, वर्ण–व्यत्ययसँ कदाच टुटि गेल हो, तदर्थ हमर स्थिति–परिस्थितिकें देखैत क्षमा करी। हम अपन शारीरिक मानसिक स्थितिमे एक प्राचीन कविक उक्तिमे जीर्णवयस्कक गतिविधि दोहरायब–

गात्रं संकुचितं गतिर्विलुलिता भ्रष्टाच दन्तावली
दृष्टिर्नश्यति वर्धते वधिरता लालावृतं चाननम्।
वाक्यं नाद्रियते च वान्धवजनैः योषिन्नसंश्रूयते
हा ! कष्टं पुरुषस्य जीर्णवयसः पुत्रोऽप्यमित्रायते।।

पूर्णतामे अपूर्णता ओ अपूर्णतोमे पूर्णताक घूर्णिमा 'पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते'क निगम–वाक्य प्रसिद्धे अछि।

एकर प्रकाशनमे श्री विनय कुमार अग्रवाल ओ मुद्रण–संशोधनमे आयुष्मान् अमलेन्दु शेखर पाठक प्रभृतिक सहयोग–अनुयोग वांछनीय रहल। सभकें साशीराशि साधुवाद।

पुनः भविष्णु–प्रभविष्णु पाठक लोकनिक आगाँ सस्नेह उपस्थापित करैत आशा ओ आशंसा जे 'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः' तकर परिहार करैत एहि स्मृति–मंजूषामे जोगायल श्रुतिकें सुनि, स्मृतिकें गूनि, कृपया कृतार्थ करथि।

मैथिली मन्दिर, दरभंगा
चैत्र प्रतिपदा–2000ई0 }

सहृदयक सुहृद सौहार्दसँ अभिभूत
सुरेन्द्र (सुमन)

अनुक्रम

"अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत!
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना।।"

गीताक उक्त उक्तिक अनुसारे सृष्टि–प्रक्रियाक क्रमे जीवमात्रक अथइति दूहू अव्यक्त रहैछ। ने केओ आदि वृत्तक, आ ने केओ अन्त–उपान्तक ज्ञानसीमाक स्पर्श कऽ पबैछ। जन्म ओ मृत्युक – प्रथम ओ चरम दूहू बिन्दुक बीच जे जीवन–वितान रेखित रहैछ तकर अन्तरालेमे कमोवेस स्मृति प्रवाहित भऽ पबैछ। तें ताहिलेल परिवेदना की ? अथ–उतमे पड़बाक प्रयोजन की ?

शारीरिक अंग–उपयोगक संगहि कर्म ओ ज्ञान द्विविध इन्द्रिय शिशु जहिना प्राप्त करैछ तहिना ओकरा इन्द्रियप्रेरक मनो भेटैछ, सुख–दुःखक अनुभवक हेतु ज्ञान–साधन अन्तःकरणे रहैछ, जाहिसँ विषयग्रहण लेल मेधा ओ स्मरण–धारणा क्रमशः विकसित होइत ओ पुनः विकासक एक सीमा धरि पहुँचि ह्रासोन्मुख होमय लगैछ।

"बाल्यं वृद्धिः वपुः मेधा बलं वीर्यं धृतिः गतिः ।
श्रुतिर्दृष्टी स्मृतिश्चायुः क्षीयते दशकैः क्रमात्।।"

एहि उक्तिक आलोकमे आयुक दस–दस वर्षक दशकीय विभाजनमे प्रथम दशक धरि बाल्यावस्था रहैछ, बीस वर्षक होइत शरीरक बाढ़ि–लंबाइ, तीस वर्ष धरि मोट–दुब्बर शरीरक काँति ठमकि जाइछ। चालिस धरि मेधाक, पचास पर्यन्त बलक सीमा मानल जाइछ। साठि धरि वीर्य–सामर्थ्य निंघटि जाइछ। सत्तरि पहुँचैत स्मृतिशक्ति क्षीण होमय लगैछ। अस्सी होइत चलबा–फिरबाक शक्ति चलि जाइछ। नवम दशकमे देखबा–सुनबाक संग स्मरणक क्षमतो नहि रहि जाइछ। दशमी अवस्थामे आयुक अवधि– 'जिजीविषेन शतं समाः' जिजीविषा सेहो समाप्त भऽ जाइछ।

एहि क्रममे आइ जखन हम पचहत्तरिया चुकल छी, कते कोना स्मृति जगाउ जे किछु समकालीन वृत्त सुनयबाक आग्रह पुराउ ?

परञ्च विडम्बना कही वा अनुभवक अवलम्बना, आत्मकथा वा संस्मरण लिखनिहार जे केओ होइ छथि से ओहि वयसमे लिखै छथि जखन हुनक स्मृतिशक्ति विलुप्त होमऽ लगैछ। जतबा मोन पड़लनि लिखैत गेलाह। टुटैत क्रमकें जोड़ैत, बेतरतीब विच्छिन्न स्मृति–सूत्रमे गेंठ दऽ जोड़ैत स्मरणिका गँथैत गेला। हँ, नित्य

दैनिकी लिखनिहार क्यौ एहनो रहै छथि जनिका गेंठ–गाँठक, स्मरणक घीचतानक जरूरति नहि, परञ्च ओ अपवादे कहल जायत।

मुदा किछु ज्ञानी–विज्ञानीक इहो कहब छनि जे जहिना स्मृति उपादेय, "स्मृतिभ्रंसाद् बुद्धिनाशः" तें स्मृति संग्रहणीय। तहिना, किछु त्यागी–विरागीक कहब छनि जे "सकलं विस्मृत्य निष्फलं चिन्तयेत"–मनक भण्डारकें विगत घटनाक जंजालसँ भरनहि जँ रहब तँ कोनो भविष्यनिधिक अँटावेस करब सम्भवे नहि होयत। मनोवैज्ञानिकी सेहो विस्मरणकें उपादेय मानैछ। ओ कहैछ जे अनुपादेय बस्तु बिसरल जाइछ, उपादेय तँ जेना–तेना स्मृतिमञ्जूषामे सुरक्षिते रहैछ।

एहि 'ननुनच'क ओझराहटिमे के पड़ओ ? परञ्च लिखबाकाल जखन घटनाक क्रममे अपेक्षितसँ अपेक्षितक नामो मन नहि पड़ैछ, तिथि–दिनांकक हिसाब गड़बड़ा जाइछ, तखन मन भनभना उठैछ जे जखन ई सब करबाक छल तखन डाइरी किएक ने डेबल? यात्राक विवरणी किएक ने नोट कऽ राखल? व्यक्तिक परिचायिका किएक ने जोगाओल?

मुदा आब जतबे स्मृतिकें जुड़तैक ततबे अंकित भऽ सकत। खौंझेने किछु सोझरा नहि सकत। यदस्तु तदस्तु।

हँ, प्रश्न इहो उठि सकैछ जे कथा–उपन्यासमे रोचकता रहैछ, इतिहासमे जिज्ञासाक पूर्ति होइछ, सन्त–ज्ञानीक वचनसँ ज्ञानरत्न उपलब्ध होइछ, विद्वान् मनीषीक चरितचर्चामे आदर्शक निदर्शन भेटैछ। किन्तु जे मनुज–सुलभ दुर्बलतासँ सीदित रहैत आयल, काम–क्रोध–लोभक प्रहारसँ आहत होइत रहल, ओकर स्मृतिसँ ने स्मृतिक सम्बोध भेटत ने ओकरा सुनने श्रुतिक शोध सधत। हँ, एकटा पुरानक अनुभूति भऽ सकैछ जे कोनो गाथा–कथा जकाँ छन भरि, कन भरि, कने सुनबालेल उत्सुकता जगा सकय।

लिखनिहारक जन्म भेल अछि ओहि युगमे जखन उद्योग–धन्धाक दिशामे देश ओतहि ठमकल छल जतय एकटा सुइ नहि बनैत छल, पेन्सिल लैत छलहुँ तँ 'मेड इन इंगलैंड', राजिस चाकू किनैत छलहुँ तँ 'मेड इन जर्मनी', सलाइ घसैत छलहुँ तँ खोलीपर 'मेड इन जापान' छपल रहैत छल। हवाइ जहाजक चर्चा प्रथम विश्वयुद्धक अन्तमे किछु चेतन भेलापर सुनल। 'टॉकी सिनेमा' आयले ने छल। रेडियो–टेलीविजन शब्दो ने गढ़ल गेल छल। ट्रांजिस्टर, वीडियोक सम्भावनो नहि छल। देहातक लोक प्रथम महायुद्धक उपसंहार साप्ताहिक पत्रसँ सप्ताहान्तमे सुनि सकल। समय तखन द्रुतगतिक नहि विलम्बगामी भेल छल। देश तखन अवश्य अटकसँ कटक धरि कतहु कटल नहि छल, सिंध–पंजाब–बंगाल सीमाप्रान्त सब देश–सीमामे समेटल छल। लंका–वर्मा धरि भारतीय शासन पसरल छल, तिब्बतोक पर्वतीय भूमि भारतक संरक्षणमे सुरक्षित छल। संप्रदाय तखनो छल मुदा साम्प्रदायिक एना दंगा नहि। सिक्ख–हिन्दू–मुस्लिम–इसाइ सब अपना–अपनी धर्म–मजहब गहने छल मुदा ओहि नामपर कटाउझ नहि करैत छल। कट्टरता कम नहि छलै मुदा टक्कर

टा नहि लैत छल। छूति–छातिक रूढ़ि तँ बेस छलै, परञ्च सामाजिकतामे सौहार्द छलै। जातिभेद जमल छलै, परञ्च अगिला–पछिला वर्गक कटु संघर्ष नहि छलै। नारीजाति परदामे अवश्य जकड़ल छल, कुलीनताक अनेकानेक अभिशापसँ दबल–पिछड़ल छल, मुदा तिलक–दहेजक नामपर जरौल नहि जाइत छल। परिवारक सीमा संकुचित होयब आरम्भ तँ छल परञ्च पिता–पुत्र, सासु–पुतोहु वा भाइ–बहिनि अथवा बेटा–भतिजमे एना दूरान्तर नहि देखना जाइ छल। व्यक्ति–परिवार ओ समाज एते विभाजित नहि छल।

परञ्च स्वोन्मुखी आजुक व्यक्ति ओ समाजोन्मुखी ताहि दिनक लोकमे एकटा स्पष्ट भेद–रेखा देखबामे अबैछ जे पहिने जते पाटापाटी, गोलागोली बाराबारी चलै छल, ताहिमे बहुत कमी एखन भेटि रहल अछि। जँ ककरोसँ मतलब नहि छै, निन्दा कुचेष्टाक खुष्ठमख्याल सेहो नहि। जँ मेल–मिलाप कमलैक तँ बात–बातमे रगड़ो–झगड़ो घटलैक अछि।

पंक्ति–लेखक लिखबा लेल प्रस्तुत भेल छथि तखन जखन कंप्यूटर कार्यालय सम्हारि रहल अछि, 'रोबोट'क स्वागत–सत्कारसँ खतराक चीत्कार धरि यांत्रिक विधिएँ सुना रहल अछि। टेलीविजनक माध्यमे शिक्षा–दीक्षा व्यवस्थित भऽ रहल अछि। मद्रासमे प्रसूत 'हिन्दू' पत्रक दिल्ली संस्करण संग–संग छपि रहल छैक।

ई युग अछि परिवर्तनक। छन–छनमे किछु बदलाव चाही। किछु ने किछु नवीनता चाही। भने ओ कतहु ककरो लेल पुराने रहौक, अपना लेल तँ नवे भऽ कऽ आयल अछि। युरोपियनक लेल पैंट पुरान, अपना लेल, धोती पहिरनिहारक लेल तँ ओ नवे छलै। सिंधी–पंजाबीक कन्याक पहिराबा छल सलवार– गरारा, मैथिल बालिकाक लेल तँ फैशने रूपमे पहिने प्रवेश पौलक। आब ने मिनी मैक्सी धरि ओकर विस्तार भेल छैक। असलमे लोक एकरंगा अधिक दिन धरि नहि पसिन्न करैछ, तेरंगा–सतरंगाक आवेशी पहिनो रहिते आयल छल। मुदा एखन ओकर गति युग–प्रवृत्तिक अनुसारे वेगवती अछि। गतिवेगमे स्वभावतः कने खसबाक चोट–चोँछ लगबाक सम्भावना रहिते छैक। तें ककरो खेद दिअय तँ तकरा सह्ये करऽ पड़तैक।

पहिलुका समय छल ठहरावक। जतऽ बैसि गेलहुँ, सैह अपन बैसार बनि गेल। के दौड़धूप करय ? बेसी कूदफान करब तँ मेच–मचोड़क डर बनल रहत। जे दौड़ लगबै छथि, जमानाकें खेहारैत चलै छथि, ओहो अन्तमे कोनो मंजिलपर जाकऽ ठमकबे करता। तखन कथी लेल एते चिन्ता–तरद्दुत ? किए एना नकल–शकल? भने अपन आसनपर आसीन छी, कने–मने मन भेल तँ तोसक–मसलङपर आराम–विश्राम कऽ लेब। के एते कुर्सी–टेबुलक कतार लगबय! इएह मनोवृत्ति ताहि समयक छल। एहि द्रुत ओ विलम्बित कालखण्डकें समन्वित करब तँ तखनहि सम्भव होयत जँ गति–यतिकें (नभौभरौ)* वर्णविन्यासी छन्दबन्धमे समन्वित कयल जाय।

* 'द्रुतविलम्बित माह नभौ भरौ' – वृत्तरत्नाकर ।

'द्रुतविलम्बित छन्द नभैं भरैं – छान्दसी ।

अर्थात् पुरातनक सभ्यता ओ नवीनक भव्यताकें संगत कयल जाय। प्राचीन ज्ञान ओ नूतन विज्ञानकें संगहि अंगीकृत कयल जाय।

पहिल समय सस्तीक छलै, आइ महगीक छै। पहिने पदार्थ सस्त–सुलभ, मुद्रा दुर्लभ। एखन टाका सहज, बस्तु महग। दुहुक तुलना अविश्वसनीय। एहि शताब्दीक तेसर दशक धरि सोन बाइस रुपैये तँ एखन बासइ सय नहि तकरो द्विगुण बेआलिस सय रुपैये भरी। धान–गहूम तहिया आठसँ दस टके क्विंटल सुलभ, एखन तीन–चारि सय टके कठिन। साग–पातकें के पूछय ? तर–तरकारी आना–खानामे। सेर–अढ़ैयाक तौल, एखन पँचटकही–दसटकहीक टनाटनीमे मोल। घी बारह–तेरह आने अठासीक तौलमे सेर भरि, एखन चालिस–पचास–पचपनमे किलो भरि। डेढ़–दू टके धोती–साड़ी, एखन सयसँ उपरेक पुछारी। कते तुलनात्मक अन्तर देखौल जाय ? तहिना मजूरी दस–बारह पाइ, एखन बीस–पचीस रुपैया। पचीस–पचास महीनवारीपर अध्यापक– अफसर, एखन हजार–डेढ़ हजारपर पिउन दुर्भर। ओहि युगक लोक जँ एकाएक आबि जाथि अथवा एहि युगक व्यक्तिकें ओहि कालक अन्तरालमे राखि देल जाइन, दुहूकें चकचौन्ही लगतनि जे हम कोन स्वप्नलोकमे आबि गेल छी !

शिक्षा–दीक्षाक सुविधा–असुविधा सेहो मूक–बधिरक कहा–सुनी सन असंगत मानल जायत। कलकत्ताक बाद पटनामे युनिवर्सिटी खुजि गेल छल अवश्य। परञ्च बिहार–उड़ीसामे चारि मात्र कॉलेज, पटना–भागलपुर, कटक ओ पाछाँ मुजफ्फरपुर। बिहार–उड़ीसा मिलाकऽ एकटा संस्कृत एसोसिएशन, टोल–विद्यालय अवश्य किछु दर्जनक संख्यामे छल। इंट्रेन्स परीक्षार्थीक रिजल्ट सर्चलाइटक सेहो रोआयल साइजक 3–4 कालममे नामोल्लेखपूर्वक छपि जाइ छल। संस्कृत परीक्षाक रिजल्ट अवश्य मिथिलामिहिरक एक डेढ़ पृष्ठ छापि लैत छल। हँ, लोक कानून ओ विज्ञानक डिग्री पयबा लेल, तीर्थ उपाधि लेल कलकत्ता शरण लेथि। आचार्य परीक्षा काशीमे अवश्य आकर्षक छलै। अधिकांश तत्कालीन पंडित काशीक 'प्रोडक्ट' छला। परञ्च क्रमशः काशी जाय पढ़बाक पद्धति सेहो कम भऽ गेल छल। आब उपनयनमे समावर्तनसँ पहिने पूछि लेबाक प्रथा शुरू छलै जे पुरहित–आचार्य बरुआसँ पूछथि– पढ़बालेल कतऽ जा रहल छी ? तँ बरुआसँ कहौल जाय – 'काशी'। नदिया बंगालसँ न्याय पढ़िकऽ अयनिहारक संख्या क्रमहि घटि चुकल छल।

उच्च माध्यमिक शिक्षा हेतु बिहारमे सतरह गोट जिला स्कूल खुजि गेल छल। सबडिवीजन मधुबनी, समस्तीपुर आदिमे सेहो क्रमहि स्कूल चलऽ लागल छल। मिड़ल स्कूल थानामे एकाध गोट चलै छल। प्राइमरी पँचहजारी संख्यावाला गाम सबमे खोलबाक उपक्रम जोरसँ चलि चुकल छल। हँ, गैरसरकारी स्कूल पाठशाला तँ गाम–गाममे पूर्वापर क्रमसँ पण्डित लोकनि घरपर विद्यार्थी राखिकऽ पढ़यबाक कर्त्तव्य निमाहैत छला। गुरुजी गाम–गाममे सनिचरा ओ गणेशचौठक पर्वी–चंदापर चलबैत छला। अधिकांश ग्रामीण जनताक धियापुता द्विजवर्गमे

द्वादशस्तवी, दुर्गा, दशकर्मपद्धति, शिशुबोध, नाह्निदत्तपचीसी ओ सामान्य सुबोध वर्गमे हनुमान चालीसा, रामचरितमानस, चंदाझा रामायण, कतहु बङलाक काशीरामक रामायण तथा उत्तर सीमामे नेपाली भनुदत्तक रामायण पढ़बाक चालि छल। सामान्य लोक चिट्ठी–पत्री धरि लिखब–पढ़ब, दोनाइ, विटगरहाँ, सवैया, ड्योढ़ा, हुट्ठा, धमुच्चा धरि खाँति ओ खरीद–बिकरीक आगाँ–मुरकट्टी हिसाब सीखि फरहर नागरिक कहबऽ लगै छल। मैट्रिक पासक धाक छल, ग्रेजुएट होयब स्पृहाक बात छल। एम0 ए0 तँ तकलोसँ नहि भेटै छला। संख्यानुपात यैह छल, परंच गुणात्मक अंतर बहुत अधिक छल। मिड्ल पास व्यक्ति मोख्तारगिरी करै छला, फाइनल कऽकऽ हेडपण्डिताइ प्राप्त करै छला। मैट्रिक धुरझार अंग्रेजी बाजथि, निबन्ध–लेख लिखथि, आधुनिक ग्रेजुएटकें पढ़ैबाक योग्यता राखथि। ग्रेजुएटक उत्तरदायित्व तँ औरो प्रखर छल। मास्टर डिग्रीबाला हेतु कहल जाइन जे जे ओ लिखथि–बाजथि से आर्ष वचन जकाँ शुद्धे मानि लेल जाय। तहिना मध्यमा कौमुदी पढ़निहार पण्डित कहबथि–'कौमुदी यदि चायाति वृथा भाष्ये परिश्रमः' कहबी प्रसिद्ध छल। अमरकोश–अष्टाध्यायी– भट्टिकाव्य तँ पंडितक पहिल शर्त छल। प्रसिद्ध आशीर्वादी श्लोक अछि जे–

अष्टाध्यायी जगन्मांता, अमरकोशो जगत्पिता।
भट्टिकाव्यं गणेशश्च त्रयीयं सुखदाऽस्तुवः।।

शिक्षितक जीविकामे सबसँ स्पृहणीय कानून पेशा छल। ओकील–मोख्तारक बेस चलती। बैरिस्टर कहायब तँ वरदाने छल। कचहरीमे नाजीर सिरिसेदार तँ ओहदे भेलैक, मुन्शी–मोहर्रिर बनबामे सेहो लोकक रुचि छलै। सरकारी अफसरमे डिप्टीगिरीक पद तँ– "किस स्वर्ग का सोपान है तू हाय री डिप्टीगिरी" मैथिलीशरणगुप्तजीक पद सोलहो आना साँच छल। पुलिस–दारोगागिरी सेहो ओहदाक आखिरी सीढ़ी मानल जाइ छल। 'नौकरी नऽ करी' लोक मुँहसँ बजै छल परञ्च 'खट्टा अंगूर के खाय' कहबी चरितार्थ करै छल।

लोकमे राजनीतिक चेतना जागि रहल छल। जाहि कम्पनी बहादुरक साखि बूढ़ा–बूढ़ीक मुहँसँ खिस्सा जकाँ सुनै छल, मुगलिआ शासनक अन्धकारमे ब्रिटिश शासनकें 'वन्देमातरम्'क मंत्रद्रष्टा धरि शुभ्र प्रभात कहबाक प्रसंग संगति कऽ चुकल छला, ओकरा प्रति विद्रोहक स्फुलिंग चौंका–चमका रहल छल। लाल मुरेठा देखतहिं बारी–झारीमे नुकयनिहार वर्गोक सन्ततिमे विद्रोह अंकुरित भऽ रहल छल। नर्म राजनीतिक दलोक सदस्य गरमा रहल छला। एक दिस रायबहादुरी–खाँसाहेबी–दिवानबहादुरीक खिताब पयबालेल गार्डेन पार्टीक धूमधड़क्का छल तँ दोसर दिस आबि सर–नाइटहुडकें हुड करबाक मुडमे लोक आबि रहल छल।

सभामे जँ 'सुगरकोटेड' प्रस्तावक बड़िआ तैयार होइत छल तँ कतहु कोन–खोन्हिमे तरुणवर्ग गुपचुप विस्फोटक तत्त्व जुटा रहल छल। तावत् पंजाबक

जलियाँवालाबाग तँ रक्तस्नान नहि कयने छल, परञ्च बंगालक पद्मा भागीरथीमे जलप्लावन भूमिक्षरण प्रक्रिया प्रारम्भ कऽ देने छल। महाराष्ट्रक पुणेमे शिवाक भवानी, गुर्जरमे सोमनाथक खण्डहर सुगबुगा रहल छल। बंगभंग आंदोलनक जोर अजमायल जा चुकल छल, मुजफ्फरपुरमे खुदीरामक हड्डी बज्र बनैबाक प्रक्रियामे छल ओ चाकबन्धु, सावरकरवन्धु द्वारा स्वातन्त्र्यशिखामे समिधा चढ़ि रहल छल। गाँधी दक्षिण अफ्रिकाक क्षितिजपर उदित भऽ रहल छला, तिलक राजनीतिक भारतक भालपर तिलकित बनबाक क्रममे छला। बाल–लाल–पालक ललकार लोक ललकि–ललकि सुनि रहल छल।

सहस्रवर्षव्यापी राजनीतिक परतंत्रताक इतिहासक कलुषित पृष्ठक उपरान्त स्वाधीनताक स्वर्णिम पृष्ठ लिखल जयबाक भूमिपृष्ठ प्रस्तुत भऽ रहल छल।

प्रथम विश्वमहायुद्धक ज्वालाकें केओ विनाशकारी कहै छल, कतो ठाँ ओकरा निर्माणकारी बुझल जाइत छल। पच्छिमक पतन ओ पूबक उत्थान कहि केओ ओहि युद्धक निष्कर्ष बहार करय। भारतोमे एक पक्ष छल जे बाहरी शासकक नियतिक लोहकें गर्मायलेमे सोझ करबाक विग्रही छल और किछु विपत्तिमे सहायता दऽ पघिला कऽ नव साँचामे गढ़बाक आग्रही–संग्रही छल।

ओही सब भूमिपृष्ठक जन–जीवनक संग रितबाक, ओ अग्रिम पत्र–पंक्तिकें पढ़ैत चलबाक, तथा बीच–बीचमे वर्षा–वसन्तक बबन्डरमे भिजबा–तितबाक एवं समसामयिक उत्थान–पतनक भोगल क्षणकें बटोरि रखबाक हेतु जे किछु मन पड़बाक जटिल प्रक्रिया होइछ तकर भूमिका प्रस्तुत करैत लेखकक कलम थरथराइत अछि। से स्वाभाविको थिक।

तें कखनो मन डगमगा उठैछ जे एहि सब अतीत गीतकें अलापने की ? आब तानपूरापर सरिगम सप्तकक रेयाज कोन काजक ? नव–नव वाद्ययंत्रसँ गुंजित रंग–विरंगी लाइटक फोक्सिंगमे रञ्जित मञ्चपर आब यात्रा–अंकीया–कीर्त्तनिञा नाच–नाटक देखयबाक प्रयोजनीयता की ? भोगल–सँजोगल कथा दोहरैबामे ककरा रस भेटतै ? गाथा छन्द–बन्ध सुनबा लेल के कान देत ? 'श्रुति'क काज नहि, अतीत–वर्त्तमान सब 'वीजन'मे स्पष्ट देखल जाइछ। 'स्मृति'क प्रयोजन नहि, कंप्यूटरमे सब समायल अछि। 'पुरान' 'ज्ञानकथा' अतथ्य कथ्य बनि गेल अछि, विज्ञानक तथ्य पथ्यवत् सेव्य अछि। जखन बीसम शताब्दीक उपान्तमे ठाढ़ व्यक्ति एड़ी अलगाकऽ एकैसम शताब्दीक बाट नेहारि रहल अछि, तखन केओ व्यक्ति जँ बिखरल बिसरल व्यतीत दशाब्दीकें मन पाड़वालेल अपस्याँत हो तँ अनसोहाँत बुझिए पड़ैछ।

परञ्च इहो देखै छी जे फिल्म–वीडियो छोड़ि–छाड़ि लोक नुक्कड़ नाटक देखवालेल उताहुल होइछ। जयदेवक गीतगोविन्द, विद्यापतिपदावली ओ रवीन्द्रक नागरिक संगीतक संग लोकगीतकें विदग्ध जन अकानि रहल अछि, गाम–गमइमे घूमि–घूमि संग्रहकार्य चलि रहल अछि। फिल्मी संगीतकारो नव–नव लय गढ़बालेल जंगली–पहाड़ीक लय–सुर बटोरि रहल छथि। आधुनिकतम कहौनिहार

कथा–उपन्यास–काव्य गढ़निहार महाश्वेताक छवि–छटाक रसिक 'ब्लैक व्यूटी'क चर्चा चला लैत छथि। आब महाभारत ओ जातक कथाक खोज करैत अजंता–अलोरा ओ मोहनजोदाड़ो–हड़प्पाक ढूहकें ढूरि–ढारि रहल छथि तखन पुरान–नव ओ वास्तव– कल्पनाक सीमारेखा कोन ? छन्दबन्धी खन मुक्तवृत्त दिस, तखन दोहा–कवित्त दिस, पुनः गद्यगन्धी दण्डक ओ खन मुक्तक खण्डक दिस दौड़बरहा करैत चलैत छथि। ख्याल–ध्रुपद स्थायीसँ ठुमरी–दादराक चलती धरि चालू रखने छथि, ओ अष्टपदीक वीथीसँ गजलक गली धरि दौड़ लगा रहल छथि। तखन की नव की पुरान ? की अतीत की वर्त्तमान, की आधुनिकता की अनागत सन्धान ? कहब मुश्किल अछि।

बुझि पड़ैछ, आइ जे पुरान पड़ल अछि, काल्हि ओ नव भऽ कऽ भक्क दऽ उगत। एखन जे आधुनिक अछि से परसू बसिया जायत। सब घूर्णमान, सब परिवर्त्तमान। प्रत्यक्ष–परोक्ष सापेक्ष। एखनहु जे महानगरमे बसिया गेल से दूर–देहातमे नव भऽ कऽ गमकैछ। गाम–घरक 'हीरो' कखनो फिल्मक 'हीरो' बनि हीरा जकाँ चमकैछ। सब दृष्टिपर निर्भर। कारुणिको दृश्य सहृदयक हृदयस्पर्शी बनैछ, वीभत्स–भयानको वस्तु रसात्मकता प्राप्त करैछ। वस्तु कोनो अवस्तु नहि, वनस्पति कोनो अनौषधि नहि, मनुष्य कोनो अप्रयोजनीय नहि, घटना कोनो अवर्णनीय नहि।

ओकर उपयोक्ता चाही, उपभोक्ता चाही। दृष्टि छै तँ ओकरा यत्रतत्र रंग–आवृत्तिक दृश्य देखबालेल भेटिए जाइ छैक।

मन पाड़बाक काज नहि, उनैसम शताब्दीक बङलाक अमित्राक्षर मैथिलीमे बीसम शताब्दीक मध्यमे नव मान्य भेल। अंग्रेजीक चिबायल–चलायल 'ब्लैक वर्स' एम्हरो आबि कवितामे नवताक मानदण्ड बनऽ लागल। तहिना मैथिलीक शत–शत वर्षक परम्परागीत आधुनिक कविताक्षेत्रक मानदण्ड कवीन्द्र रवीन्द्रक कण्ठमे तहिआ नवे सन बंगबन्धुकें लागल छल। भजन जे काल्हि धरि भक्तमंडलीमे गाओल जाइ छल, से एखन किछु गायक–गायिकाक कण्ठक माध्यमे प्रचुर लोकप्रियता प्राप्त कयने जाइछ। एहिना पहिनो कखनो कादम्बरीक आडम्बरी गद्यक मान होइछ आ कखनो हितोपदेशी सरल गद्यक। कखनो तत्समबहुल भाषाक मान्यता तँ कखनो ठेठ अवहट्ठक ठाठक पठनीयता। एहि प्रकारक भावक चढ़ाव–उतार भाषा–साहित्यहुक बाजारमे चलिते रहैछ।

प्रक्रम

प्रवृत्ति–निवृत्तिकें लाभ–हानिसँ जोड़ल जाइत रहलैक अछि। 'प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते' प्रयोजनापेक्षी प्रवर्त्तनक गीत पहिनो गाओल जाइत छल। 'आवश्यकता आविष्कारक जननी' एखनो मानल जाइछ। परञ्च ज्ञान–विज्ञानक वा कला–साहित्यक अनेक क्षेत्र एहनो अछि जे प्रयोजन–निरपेक्ष चलैत रहैछ। ज्ञान

ज्ञानक लेल, कला कलाक लेल, स्वतःस्फूर्त्त प्रवर्त्तना होइत रहैछ। अन्यथा जनसंख्या विस्फोटक समस्याबहुल युगमे परखनलीमे बच्चाक उत्पादनक की प्रयोजन भऽ सकैछ ? हिंसा–भरल युगमे, जखन लोकहितभावनाक, सुरक्षायोजनाक लेल घोल मचल अछि, तखन राष्ट्र–राष्ट्रमे परमाणु अस्त्र, रासायनिक आयुध बनयबाक होड़ किए चलल अछि ? जखन पृथ्वीपर कुरुक्षेत्र–पानीपत–हल्दीघाटी–चित्तौर–क्रीट–स्पार्टा चीन–देबालक आरपाऽर हिरोशिमा– नागासाकीक रक्तरंजित भूमिक धूमिल इतिहास मेटायल नहि अछि, तखन पुनि स्टारवार, अन्तरिक्ष युद्धक आयोजन कथीलेल प्रयोजनीय ?

विज्ञान अपन विकासक पथपर बढ़ल जाइछ, साहित्य–कला अपन प्रकाशक दिशामे चलल जाइछ। लाभ–हानि उठौनिहार अपन दृष्टिकें देखि–परेखि उठाबओ, अपन शक्ति प्रसक्तिक अनुसार व्यवहारमे लाबओ। इहो एकटा पक्ष अछि।

पारिवारिक वातावरण

अस्तित्ववादी कहैछ, व्यक्तिक जागृत चेतनो सामाजिकताक सृष्टि करैछ। फूलक अतिरिक्त मालाक अपन आस्तित्व की ? ग्रथन–कौशलकें पृथक् मूर्त्त पदार्थ मानब अनावश्यक। समाजशास्त्री कहैत छथि, मनुष्य सामाजिक प्राणी थिक। समाजवादी बुझबैत छथि, व्यक्तिक ऐकिक चेतना संघ–समाजेसँ प्रेरणा पाबि पुनः ओहीमे समाहित रहैछ, बिन्दु यदि संहत रूपे प्रवाहित नहि हो तँ ओकर पृथक् अवशेष सत्तोक खतरा। व्यक्ति समाजमे सामञ्जस्य देखौनिहार पट–तन्तुक न्याय आगाँ पबै छथि। परञ्च व्यक्तिक अभिव्यक्ति ओ समाजक प्रसक्ति जे रेखित होइछ ओ तँ रहैछ परिवारे। जहिना व्यक्तिक सुरक्षा ओ पुष्टि–सन्तुष्टि प्रथम–प्रथम परिवारमे होइछ तहिना ओकर समाजमे परम–चरम संयोजनो परिवारेक माध्यमे बनैछ। परिवार पैघ रहौक वा छोट बनौक, ओकर प्रभाव सर्वाधिक व्यक्तिक शील–संस्कार ओ रुचि–परिष्कार पर पड़िते छैक।

परिवार छल मध्यम आकारक। पिता हमर तीन भाइ। जेठ पं0 रामेश्वर झा, दिनभरि पूजा–पाठमे लागल। संध्या–वन्दन, शालग्राम–नर्मदेश्वर–शक्तिकुण्डलिनी एवं रूपविग्रह स्नपन पूजनसँ लऽ वलिविश्वेदेव गोग्रास प्रदान धरि जप–पाठ करैत हुनका मध्याह्न भऽ जानि। अपराह्नमे शेष समय गाम–टोलक ओ अड़ोस–पड़ोसक गामक छात्रकें जुटाकऽ शिक्षा देबामे संलग्न रहथि। मुख्यतः कर्मकाण्डक तदङ्गतया थोड़–बहुत व्याकरणक ज्ञान करायब हुनक पाठक्रममे रहनि। पाछाँ, लोककें साक्षर बनयबाक क्रममे साधारणतः महिसबार–चरवाह धरिकें साक्षर बनयबाक प्रवृत्ति ततेक बढ़ि गेल छलनि जे अनिच्छुक व्यक्ति ओहि रास्तासँ कन्नी काटथि। बहुतो व्यक्ति पकड़ल जाथि तँ फेर साक्षर बनि, पढ़ि–लिखि दोसरोकें पढ़यबायोग्य भऽ जाथि। ओहि चटिसारक अनेक छात्र हेबनि धरि अपना बस्तीमे एहि सबलेल प्रशस्ति पबैत

रहला। परशुराम–जयकान्त–श्रीकान्त, हाँसोपुरक रामपदार्थ, बल्लीपुरक बदरी झा–रामखेलावन पाठक आदि ओहिमे प्रमुख छथि।

पुरुष लोकनिक हेतु कुशी अमावास्यामे कुश उपारबाक चलनि एतय बहुप्रचरित। पितृकर्म लेल द्विज–शूद्र सब कुश उपारथि, पुरहित पात्र लोकनि तँ बोझे आनथि। राखी ब्राह्मण–पुरोहिते बान्हथि। राखी सिनेमाक प्रचलनक बाद एम्हर आबिकऽ बहिनि द्वारा भाइकें बन्हबाक प्रचलन चलल अछि। दशमी–यात्रामे जयन्ती देबालेल ब्राह्मण गाम–गाममे घुमि दक्षिणा बटोरथि। अपराजिता सेहो कतहु देवी–विसर्जनमे ग्रहण करथि। जमीन्दार लोकनिक सिरिस्तामे दक्षिणाक रकम बान्हल रहनि, देवानजी तनिका सबकें चिट्ठा देखि देल करथि। वसन्तपञ्चमीमे अबीर लगायब, माघी अचला सप्तमीमे तुलसी–बैर–अपराजित आदिक सात गोट पात लऽ कऽ स्नान विहित छल। साँझेसँ घरक धिया–पुता से लोढ़ऽ जाथि। आषाढ़मे इसरगतक जड़ी बान्हब, अनन्तचतुर्दशीमे अनन्त–डोर बान्हब। नागपञ्चमीमे गहबरपर लाबा–दूध चढ़ाय नागपूजा, भगतक नागनृत्य प्रचलित। ओहि दिन नीमक पात दही संग चिबाय सर्पविषरोधक टोटमा लोक कयल करथि। जूड़शीतलमे श्रेष्ठजनसँ जल माथपर जुड़ायब विहित, सतुआइनमे पितरकें सातु चढ़ाय तकर भोजन, रातिमे बड़ी–पूरी ओ प्रातः जूड़शीतलमे पानि–कादो– क्रीड़ा ओ बासि बड़ी–भातक भोजन, बेरियामे शिकार आदिक आयोजन। फगुआमे होलिकादाह लेल ओहि समय चौकी–केबाड़–खिड़की सबकें स्वाहा करबाक बात केओ सोचै नहि छल, जंगल–झाड़, नार–पोआर लऽ धूमधामसँ होलिकादाह आ जोगीड़ा–फकड़ा झालि–डम्फा–ढोलकक स्वरपर चलिते छल। भोरमे भस्मक्रीड़ाक थोड़–बहुत विधिक बाद रंग–अबीर होरी–हुरदंग मचिते छल। मेषसंक्रान्तिक बादसँ ठाम–ठाम चंदन–चर्चित कऽ शर्बत–पानक व्यवहार होइत छल। नवान्नक अवसरपर हवनपूर्वक ब्राह्मण–भोजन, पूसमे बगेयासँ पुसौठ, तिलासंक्रान्तिमे लाइ–चुड़लाइ चलैत रहल अछि। मिथिलाक पावनिमे छठि–परमेश्वरीमे साँच–भुसबा आदि, चौठचन्द्रमे पूरी–पकमान–दही–केरा, कोजागरामे मखान–नारिकेर जलपान, दीपावलीमे मधुर–मखान। कते कहल जाय, वर्षभरि पावनि–तिहार, पर्व–व्रत जयन्ती चलिते अछि। दशमी–शिवरात्रि, रामनवमी–कृष्णाष्टमी आदि प्रचलिते अछि। कातिकमे दीप–दान, भीष्मपञ्चक व्रत–उद्यापन–आकाशदीप व्यवहृते अछि। एम्हर आबिकऽ शिक्षित उत्साही लोकनि विद्यापति जयन्तीमे विशेष उत्साह देखबैत गेल छथि, जे एहि शताब्दीक तेसर दशकक अन्तसँ चलि पड़ल अछि।

बालस्मृति

ओहि समय बाथरूम, सुलभ शौचालय आदि नहि छलै। नदी, बाध, गाछी, वन–जंगल दिशि बाह्यभूमि कहैत यथोचित लोक जाथि। तिरहुतक नदीमातृक देश रहने नदी दिस कहब वा जनउ कान चढ़ायब सेहो बाह्यभूमिक संकेत छलैक। लोक

माथमे गमछी बान्हि हाथमे छड़ीनुमा खन्ती लऽ कऽ जाथि आ यथेच्छ माटि आनथि। शास्त्रानुसार 10–7–3–3 बेर वाम, तखन वाम–दहिन दुनू मिलाय, पुनि पैर तखन हाथ, माटि अंगुलव्यापी होमक चाही।

विद्यार्थी लोकनिक काज छल, फूल–बेलपात–तिनपतिया दूभि आनि आसन लगाय पूजा–भवन सजायब। से कय हमहुँ आवृत्ति करय लागी। किछु छात्र एहनो छला जे एतहि भोजन करथि–सुनथि–बैसथि। जाड़मे जखन राति चारि बजे उठि 'तच्छिष्याध्ययननिवेदितावसानाम्'कें चरितार्थ करथि तखन हमरो सबकें उठय पड़य–से जेना पहाड़ उठायब सन बूझि पड़य।

कहल तँ जाइछ जे 'पश्चिमाद् यामिनीयामात् प्रसादमिव चेतना' से रघुवंशक कविकें चेतना प्रसादक जे अनुभव भेल होन्हु, मुदा हमरा सबकें तँ चित्त विषादके बुझि पड़य। प० रामेश्वर झा हमर आचार्यगुरु सेहो छला, बड़ मानथि, 10 वर्षक अल्पावस्थाक कारणे हमरा किछु छूटिओ भेटय। किन्तु आन छात्र सब कठोर अनुशासनमे रहि शिष्यक मूलार्थक 'शासने तिष्ठति इति शिष्यः' चरितार्थ करथि।

विद्यार्थी लोकनिकें एकटा और काज रहनि, बकड़ीक दूधक संग्रह। ग्रहणीग्रस्त होयबाक कारणे पथ्य लेल बकड़ी–दूध हुनका पेय रहनि। किछु गोटे, खासकऽ बन्नावाली मोसमात बाबीकें माल–जाल बकड़ी पोसबाक जेना बाय होनि। किछु दिन अछैते विद्यार्थी गुरुक प्रसन्नताक लेल पारापारी दूध संग्रहक उद्योग करथि, जनिका कोनो दिन संग्रह विशेष होनि से गुरुक प्रसन्न दृष्टिसँ कृतार्थ होथि। तें किछु होड़ चलैक।

जाहि घर–आङनमे जन्म लऽ पाँचम वर्षक अबोध शैशव जीवन बिताओल, ओ एक सम्मिलित परिवारक विशाल परिसर छल। पितृमातामह कारी चौधरीक उत्तराधिकारिणी हमर पितामही छली, हुनक परिवार एक खुटमे, दोसर खुटमे हंसमणि चौधरीक तीन पुत्रक परिवार एवं सभक कुटुम्बी एवं गृहस्थ (कृषि प्रबन्धक), नोकर–चाकरक एक छोटछीन टोल बसल हो। संख्या पचास व्यक्तिक। एहि सात दशकक भीतर, जहियासँ ओ डीही घर छोड़ि सब अपन–अपन नव–नव वास लेलनि आइ ओ 24 परिवारमे बसल छथि ओ प्रत्येक परिवारमे अनुपातिक संख्या 7–8 अछि। लगभग दू सय व्यक्ति भऽ गेल छथि, जे 1911 क ओ 81 क जनगणनाक चतुर्गुण वृद्धिक संकेतक कहल जायत।

प्रायः छठम वर्ष छल होयत, 16–17 ई०, क्रमहि लोक घर–आङनक संकीर्णताक कारणें उपटय लागल छला। पहिने श्रीप्रसाद चौधरीक एकमात्र सन्तान बाबू आनन्द चौधरी उपटि बसला। तदुत्तर बाबू अयोध्या प्रसाद चौधरीक पुत्र गोपालजी चौधरीक मुख्यतामे उपटला। ओही संग अपनो परिवार उपटि बसल। तत्काल दछिनबारी सड़कक कातमे दू पैघ–पैघ घर–आङनमे एक कोठली दालानपर तथा दुहूकात ओसारा ओ घेरल–बेढ़ल आङनमे एक मालजालक घर उतरबारी भागमे ठाढ़ छलै। एक भोरमे पितामही, माय–पितिआइन ओ भाइ–वहिनि सभक संग कोनो शुभ बस्तु

पोथी–पतरा फुलडाली, कलशी आदि नेने गृहप्रवेश कयल। एक गंगाजली नेने हुलसल–फुलसल आगाँ–आगाँ दौड़ल अयलहुँ, ततबा स्मरण अछि।

नव घरारीपर बसबाक उल्लास तँ सबकेँ छलैक, किन्तु एक युग सँ पारिवारिक सहवासक जे अभ्यास छलैक से जेना पाछाँ नहि छोड़ैक। भिन्न–भिन्न तीनू परिवारक मिलन–केन्द्र जकाँ अपन दालान बनल रहलै। स्त्रीगणलोकनिमे आवाजाही कमैत गेलैक, किन्तु पुरुषलोकनिमे से सूत्र जुटले जकाँ रहलैक। हमर पित्ती लोकनि तीन भाइ छला। हुनक तीनू ममिऔत परिवारसँ जेना संपर्कप्रतीक रूपें एक–एक भाइकें जेना अपनयबाक प्रीति–रीति बना लेने होथि। आनन्दबाबू हमर जेठ पित्ती (रामेश्वर बाबू)कें, छोट पित्ती (तेजबाबू)कें जेठ नामदेवबाबू ओ हमर पिता (भुवनेश्वर, प्रसिद्ध भुवनीबाबू)कें गोपालबाबू नियमित रूपे संग भोजनपर बैसथि। फलतः तीनू पटीदार अपनामे हिस्सा–बखड़ाक बखेड़ामे एकहि मध्यस्थ तीनू भाइक सहयोगसँ बहुधा बॉचल रहथि। पाछॉ आबिकऽ हमर दुहू पित्तीक क्रमहि स्वर्गवास भेलाक वाद आपसी सौमनस्यक बंधन बहुधा शिथिल होइत देखल गेल।

मन पड़ैत अछि – क्यो परिचित उपचित वयस्क आसनपर पूजा करैत छथि, हम शालिग्रामकें गोली बुझि उठा लैत छी, अथवा नर्मदेश्वरकें लीची जेकाँ स्वादय लगै छी।

पॉचम वर्ष अक्षरारम्भ भेल। जेठ पित्ती प0 रामेश्वर झा, जनिका हम सब भाइ–बहिनि बाबूक संबोधन करिअनि, 'ऑजी सिद्धरस्तु'पूर्वक अक्षरारम्भ करौलनि। स्कूलमे 'ओनामासी धं' (ओ नमः सिद्धम'क अपभ्रंस रूप) प्रचलित छल। किन्तु हमरा लोकनि 'ऑजी सिद्धिरस्तु' तिरहुतामे विधिपूर्ति कयल। तदुत्तर देवाक्षरक घरहिपर अभ्यास कयल। निर्णयसागरसँ रामायण (तुलसीकृत) मङा देल गेल छल– रीडर नहि पढ़ि ओहीपर पढ़बाक अभ्यास कयल। ओहि समय कोनो स्कूल तँ नहि खुजल छल किन्तु 'वाणी विलास विद्यालय' नामक एक विद्यालयक स्थापना बाबू जानकीप्रसाद चौधरीक कोठलीमे भेल छल। संस्कृत पढ़ौनिहार हमर छोट पित्ती प0 तेजनारायण झा व्याकरणतीर्थ, अंग्रेजी पढ़ौनिहार राजेश्वर सरस्वती (दहौड़ा), हिन्दी शिक्षक यदुनन्दन झा छला। पाछाँ तेजबाबू संस्कृत विद्यालय, (कनखल–हरिद्वार)मे नियुक्त भेला। हुनक स्थानमे प0 वासुदेव झा, (शोकहरा–बरौनी) अध्यापन कयलनि। किछु दिन बड़े टोप–टहंकारसँ स्कूल चलल। एकटा उर्दू–फारसी पढ़यबा लेल मुंशीजी सेहो राखल गेला– ओहि समय धरि 'पढ़य फारसी बेचय तेल, देखऽ ई दुनियाकेर खेल' फारसी पढ़िकऽ ओहदा पैवाक रास्ता रूकऽ लागल छलै, मुदा कोर्ट–कचहरीमे व्यवहारक कारणे कचहरिया गाम–परिवारमे फारसी जानब आवश्यक बुझल जाइत छलै।

पाछाँ गाममे कोनो पतिया–प्रायश्चित्त लऽ कऽ दुगोला भऽ गेलै। दछिनबारि–उतरबारि ड्योढ़ी, नबका टोलक दू परिवारक बीच पक्ष–विपक्षक कारणे पाटापाटी चलऽ लगलैक। विद्यालयमे क्रमहि शिथिलता आबि गेलै। ओहि पाटापाटीमे

अपन परिवार विशेष आघातक पात्र बनि गेल छल। नव बनल मकानक सीढ़ी सड़क दिस बढ़ि आयल अछि, से कोना टूटत तकर. जिला बोर्डसँ लिखापढ़ी चलल, किंतु जखन शिकायतीक अपनो पर सड़कक हदमे पड़य लागल तखन झगड़ा गिझाय लागल। किन्तु एकर कटुता बहुतो दिन धरि खेहारने छल। खान–पान बन्द। आवर्यात बन्द। जेना आजुक विभाजित राष्ट्रक सीमाक तनाव हो अथवा पूर्वी–पश्चिमी बर्लिनक देबाल कल्पित हो। बहुत दिनक बाद दुहू डेउढ़ीमे नव पीढ़ीक उदयक बादसँ यातायात, खान–पान, संगति–रंगति पुनः चलय लागल जे हेवनिमे एकाकार प्रतीत होइछ। परंच यदुनंदन झाकें लऽ कऽ स्कूल चलऽ लागल जे पाछाँ विधिवत् सरकारी लोअर प्राइमरी स्कूल स्थापित भेल, जकर सेक्रेटरी हमर पिताजी छला।

किछु दिन लेल हम स्कूलो गेलहुँ। खाँत–विटगरहाँ, सवैया –ड्यौढ़ा घोखलहुँ। अपन अखड़हाकें धथूर–भङरैया रगड़ि अपना अपनी चमकयने रही जाहिपर खड़ीसँ लिखल खॉत खूब चमकै। घोखब कम रुचय, पोथी पढ़वामे धरफड़ी देखाबी। बीचमे एकदिन डिप्टी साहेब अयला तँ पोथी पढ़ब देखि दोसर वर्गसँ चारिम वर्गमे रखबाक परामर्श देलथिन। हम ताहि दिनक बी० सँ ए० शिशुवर्गमे नहि जाय लोअर प्राइमरीक रीडर पढ़ऽ लगलहुँ। ओहि दिन भूगोल–इतिहास–प्रकृतिक पुस्तक नहि चलैत छलै। साहित्य–रीडर ओ गणित। लोअर परीक्षा देबा लेल लोक रोसड़ा जाइत छल। अपर प्राइमरी वा मिड़ल पढ़बा लेल रोसड़ा हसनपुर जाय पड़ैत छलै। हाइस्कूल दरभंगा–मधुबनी–समस्तीपुरमे छल। कॉलेज पटना–भागलपुर मुजफ्फरपुरमे रहै। हम सब तावत् भोला बिहारी ओ गोपी बाबू लोकनिक संग प्राईवेट ट्यूटरसँ पढ़य लगलहुँ। हमरा लोकनिक बीच सर्वाधिक वयस्क हरीन्द्रबाबू (नेहरा) छला।

यदुनन्दन झा नाङर छला, हुनका लोक नङरूगुरुजी सेहो कहनि। पैर–नेङराइत छलनि, एकटा ठेलुआ गाड़ीपर लोक दऽ लऽ जाइन। तें बैसलेबैसल विद्यार्थीपर दवाबक हेतु बेस नमछड़ छड़ी हाथमे राखथि। चटिया छड़ी देखि डरे सकदम रहय। हिसाव आदि पढ़यबामे ओ नामी रहथि। हमरा ओहि छड़ीक शासनमे जयबाक अवसर नहि भेल। अक्षर घरेपर सिखलहुँ, हनुमानचालीसा कऽ टऽ कऽ पढ़ैत लगले रामायणक चौपाइ–दोहा पढ़य लगलहुँ। पितृ–पैत्रिक मोहनासँ जेठ पित्ती (प० मुक्तेश्वर झा–सिंहेश्वर झा जनिका क्रमहि भाइकाका–पाहुनकाका कहि संबोधित करियनि) किछु श्लोक सिखबथि –चंदाझाक रामायण जे ओहि समय बहुतोक कंठहार बनल,छलैक तकर लंकादहन, अंगद–रावण संवादक अनेको छंद रटा देने रहथि।

ओही बीच हमर छोट पित्ती तेजबाबू कनखलसँ ग्रहणीरोग–ग्रस्त भऽ आबि गेला। अवसन्न स्थितिमे छला, अपने रोगशय्याश्रित छला–बजाय हमरासँ तुलसी–कृत रामायणक किछु अंश सुनि आशीर्वाद देलनि। किछु नीके भेलापर हुनकासँ ग्रामीणक आग्रह भेलनि जे नवाह वाल्मीकि रामायण ओ सप्ताह भागवत कथा कहथि। वेणीबाबू–चुन्नीबाबूक बङ्गलीपर कथा–मंच बनल, परिसरमे थहाथही, लोक

भरल। तेज काकाक पीताम्बरी पहिरने स्वर्णगौर शरीर ओ मधुरकंठें कथावाचन करबाक रूप–रेखा एखनहुँ हृदय–पटपर अंकित अछि।

नव घरवासक अधिक दिन नहि बीतल छल। साओनमे आयल छलहुँ, माघ अबैत हमर पितामही विशेष क्लेशित भऽ गेली। हुनक संध्याकालमे तुलसी लग दीप लेसि ओसारापर आबि माला जपबाक स्वरूप–कल्पना एखनहु स्मृतिपटपर सजीव अछि। जखन हमरा सब भाइ–बहिनि हुनका घेरि–बेढ़ि किछु माङ करैत जइअनि तखन हुनक फटकार–दुलारक मुद्रा एखनहु झलकि उठैछ। अपन छोट बालकक स्वास्थ्यक दुःस्थितिसँ हुनक स्वास्थ्य सहसा बिगड़ि गेलनि आ फाल्गुन शुक्ल 11 सन 1323 सालमे (1926इ0) हुनक मृत्यु भऽ गेलनि। हुनका देखय, पाटापाटी रहितहुँ दुनू डेउढ़ी ओ गामघरक लोक थाहाथाही लागल छल। किछु कालक हेतु जेना भेदभाव मेटा गेल हो।

मायक मृत्युक बाद छोट पित्ती तेजबाबूक हालति बिगड़ैत गेलनि, आयुर्वेदक चिकित्सा चलैत छलनि, पाचनशक्तिक अभावमे केराक रोटी ओ दूध सेवन करैत गेला। ओही बीच हमर जेठ बहिनिक (चम्पिका–प्रसिद्ध बुच्चोदाइ) विवाहक कथा स्थिर भेल जाँताक श्रीकृष्ण मिश्र सँ। किन्तु एमहर हिनक स्थिति दिनानुदिन बिगड़ैत गेल। फलतः अपना आङनसँ हटाय बहिनिकें आन आङन जानकीनाथ चौधरी–रामअधीन चौधरीक संयुक्त परिवारमे हुनक विवाह भेल। ओही बीच वैशाखी पूर्णिमामे तेजबाबू दिवंगत भेला। नव वसैत परिवार जेना बैसि जाय। घरक मजगूत खाम्हें जेना टूटि जाय! असमय भानु अस्त भऽ जाय!

हुनक मृत्युक आघात परिवारपर तेना पड़ल जे जे दालान हारमोनियम–सितार–तबला–झालि–मृदंग ओ संगीत–स्वरसँ बसन्त–बहार गुंजित रहैत छल ततय सब बंद भऽ गेल। शोकताप ओ अश्रु–उच्छवासक गर्मी वातावरणकें तप्त खिन्न बना रहल छल। वर्ष दिन धरि हमर जेठ पित्ती ओ पिता कोनो बाजा हाथसँ छुइलनि नहि– मुरवर संगीत जेना मौन भऽ गेल हो।

तेजबाबू भैआरीमे छोट छला, किन्तु अध्ययन–अध्यापनक यशसँ सर्वाधिक यशस्वी छला। ओ नेनहिसँ स्वयं संस्कारवश पढ़नुक छला। प0 वासुदेव ठाकुर जे विशेषतया काशीमे अध्यापन करैत छला– बहुधा गाम आबथि तँ किछु दिन रहि जाथि ओ अध्यापन जारी राखथि। ई तीनू भाइ हुनकासँ पढ़य जाथि। तेजबाबू पढ़थि कम्मे गुनथि बेसी – 'उपक्रमणिका' सँ शब्द–धातु रूप पढ़लनि परंच श्लोक गढ़बाक प्रवृत्ति देखल जाइन। कतहु लगमे दोसर ठाम पढ़बाक सुविधा नहि तें वयसाहु भेलोपर सविध पढ़ाइ नहि चलि सकल। अन्ततः पटना जयबाक अवसर भेलनि। प0 हरिहर कृपालु द्विवेदीक दृष्टिमे हिनक मेधा व्यक्त भेल, फलतः तीन मासक अभ्यन्तर लघुकौमुदी समाप्त कऽ प्रथमा परीक्षामे वृत्ति पौलनि। दोसरे वर्ष 11 मासक मध्य कौमुदी अधिगत करैत मध्यमा परीक्षामे सफल भेला। तेसर वर्ष बीतैत व्याकरणतीर्थ परीक्षोत्तीर्ण भऽ गेला। वेदान्ततीर्थक परीक्षा देबालेल छलाह तावत

स्वास्थ्य हिनक बिगड़ि गेल।

चारि वर्षमे प्रारंभ सँ चरम परीक्षोत्तीर्ण होयबाक ई दृष्टान्त विरले ककरहु देखला जाइछ। एहन अनुजक वियोग दुहू भाइकें बहुत दिन धरि—शोक विह्वल कयने रहल।

हमरा लोकनि नाटकीय रंगमंचक बहुतो सामान दालानपर डिक़ल राखल देखी। हमर जन्मसँ पूर्व ओ किछु दिन धरि पाछाँ सेहो नाटकक मंचन करबथि। अधिकांश पात्र गामहिक, किछु लग—पास बलहा—करिअन—बन्धार आदिक सेहो रहथि। तेजबाबूक बीमारीएक समय उत्साह शिथिल भेने अभिनय बन्द भऽ गेल छल। स्वाप्निक चित्र जकाँ कहियो जेना कोनो दृश्य देखने होइ से बूझि पड़य। हमर पिताजी स्वयं नाटक लिखथि। विशेष हिन्दियहिमे नाटक अभिनीत हो, एकाध मैथिलीमे सेहो। हिन्दीमे हुनक लिखल पौराणिक नाटक अछि — प्रह्लाद, हरिश्चन्द्र, मयूरध्वज,वकबधक पाण्डुलिपि एखनहु सुरक्षित अछि। तेजबाबूक लिखल जानकी स्वयंवर नाटक मैथिलीमे लिखल छल जकर किछु पत्र मात्र बाँचल रहि सकल।

ओकर भारी—भरकम पोशाक चमकी जड़ीमढ़ल, नाचक घँघड़ा—बडी ,दाढ़ी—मोछ ओ पर्दा वर्षो सुरक्षित छल। कहिओ कऽ हमरासभ कोनो खेलधूपक दृश्यमे उपयोग करी। पाछाँ एहिमे अभिनय कयनिहार अनेको व्यक्ति नाटकमंडली ठाढ़ कयलनि — बलहाक जयदेवजी, बल्लीपुरक तेजनारायणजी ओ परमानाक एकाध गोटे। ओ सब माँगि लेलथिन। हुनका लोकनि कहिओ आबथि तँ गुरुदक्षिणामे जेना नाटक देखा जाथि।

एहि सब उपादानक प्रभाव पाछाँ हमरहुसबपर पड़ल ओ तेज बाबूक तेसर दशकक ओ चारिम दशकक आरंभमे 'तरुण नाट्य परिषद्'क स्वयंप्रदर्शी(एम्योच्योर) नाटक मंचन करैत गेलहुँ। किछु तत्कालीन पात्र अहूमे सहायक भेला जाहिमे महादेव चौधरी विलेनक पार्ट करथि।

धन्ततरि पूजा

अखिल भारतीय वैद्यसम्मेलनक बनारस अधिवेशन 1920 मे भेल छल। आयुर्वेदिक उत्थानक हेतु ओकर संस्थापक अध्यक्ष शंकरदानी शास्त्रीक अध्यक्षीय भाषणक आधारपर जगन्नाथ शुक्ल वैद्य (प्रयाग)क प्रस्ताव भेल छल जे आयुर्बेदक प्रचारार्थ धन्वन्तरि पूजनोत्सव ओ सम्मेलन आयोजित हो! ओहिमे विहारक प्रतिनिधि रूपे ब्रजबिहारी चौबे—शिवचन्द्र मिश्र प्रभृतिक संग हमर पिता सेहो सम्मिलित भेल छला, ओतयसँ फिरलापर ओ 13वर्षक हेतु धन्वन्तरि पूजाक संकल्प लेलनि।

तदनुसार कार्यक्रमक संग पूजनोत्सव पद्धति प्रस्तुत भेल। पौराणिक खोज—बीनक संग सुश्रुत ओझा धन्वन्तरि काशीराजक ऐतिहासिकताक अतिरिक्त

दशावतारी विष्णुक चौबीस उप–अवतारमे तेरहम अवतार जे समुद्रमन्थनमे अमृत कुम्भधारी धन्वन्तरिक उल्लेख अछि ओ जनिका आयुर्वेदक मूल उपदेष्टा मानल गेल अछि तनिक पूजापद्धतिक अनुसार 13 वर्षक धन्वन्तरि दोरख बंधनक संकल्प लेलनि। क्रमशः दू–एक वर्षक बादे पूजा एक महोत्सवक रूप धारण कयलक। प्रथम वर्ष धन्वन्तरिक मूर्ति बनल। पाछाँ दीवालीक कारणे लक्ष्मीक मूर्ति योजित भेल। ततः विद्याधिष्ठात्री सरस्वतीक मूर्ति सेहो योजित भेल तथा ई त्रिदिवसीय उत्सव गामेक नहि, ओहि इलाकाक उत्सव बनि गेल। ग्रामीण सभामे पहिलेपहिल नोटिसक संग कार्ड छपबाक प्रथा प्रवर्तित भेल। ओहि समय उत्तर बिहारमे पूर्णियासँ चंपारन धरि प्रेस दरभंगाक यूनियन प्रेस ओ रामेश्वर प्रेस तथा मुजफ्फरपुरक बोस प्रेस छलै। तीनूमे एक अग्रवाल माड़वारीक रमेश्वर प्रेसमे नोटिस छपौल जाइक। पूजा प्रसंगमे वाद्य–संगीत, गवैया ओ नटुआ–नचाबक मनोरंजनक संग चौपहरा आदि नौटंकी–नाटक, जुलूस–कीर्त्तन आदि होइत छल। मध्याह्नमे धन्वन्तरि–सम्मेलनक आयोजन जाहिमे इलाका भरिक बुद्धिजीवी आहूत होइत छला। बाहरक व्याख्यानदाता उपदेशक आबथि तथा गण्यमान्य व्यक्ति सभापतित्वक हेतु बजाओल जाथि। प० गिरीन्द्रमोहन मिश्र, बाबू रामनिहोरा सिंह, प्रिन्सपल धर्मराज ओझा प्रभृति अध्यक्षता कयलनि। राजाराम शास्त्री, रामानुज शास्त्री, प० दुःखमोचन झा, सुरेन्द्रमोहन भट्ट आदि, प० विद्यानाथ झा (परवाना), प० नचारी झा (बहेड़ी) सम्मिलित होथि तथा राष्ट्रीय आन्दोलनक प्रमुख प्रचारक आयल करथि। दूर–दूर धरि एहि महोत्सवक सोहरा मचि गेल। पाछाँ दूर–दूरसँ गवैया–सितरिया ओ संगीतज्ञ सभ पहुँचल करथि। व्याख्यान देवाक हेतु गाम–गामसँ लोक जुटथि। कुश्तीक अखाड़ा एहि प्रतिद्वंद्विताक हेतु जगजिआर भऽ उठल। दशमी झूलाक संग इहो पर्व ग्राम–नागरिक हेतु प्रेरणाप्रद भऽ उठल। एहि अवसर पर छोट–मोट बाजार जकाँ लागि जाय।

पाछाँ उत्सवक विशालता देखि ग्रामीण ओ इलाकाक लोक मूर्त्ति पर चढ़ावा देबऽ लगला। जनिक विधिवत् लेखा होइक ओ एहि प्रकारक लोकसँ वर्षमे एकदिन हमर पिता चिकित्सा शुल्क छोड़ि देथि। 1920 सँ 32इ० धरि उत्सवक आयोजन भेल। पाछाँ वैयक्तिक पूजन होइत रहल – धन्वन्तरि पूजामे दोरक बंधन 1980 इ० धरि, हमर छोट भाइ आयुर्वेदाचार्य प० देवेन्द्र झाक समय धरि, पारिवारिक वैद्य व्यवसायक सभाक रूपे ई पर्व पूजित होइत रहल।

पावनि–तिहार

मुसलमान लोकनिक तजियामे हिन्दू जमिकऽ भाग लेथि। खलिया–भरती चौकीमे देखी तँ घंटी बन्हने, माथ–मुरेठामे मयूरक पाँखि खोसने प्रतिशत 80 जंगी हिन्दू रहथि। दौड़–धूप तरुआरि खूब चलैक। मन्दिरक आगाँ मैदानमे लड़ुआरी खेलैत जोड़ा सब एकाएकी जूझल करथि, ओ हुनका लोकनिकेँ प्रोत्साहित कयल

जानि। डेउढ़ी सब अपन–पक्षक मुस्लिमकें, जे अधिकांश जन–मजदूर हो, तकरा तजिया हेतु मदति देल जाइक। हम सब नेना–भुटका लडुआरी–झरनी देखी ओ अनेक दिन धरि अपन खेल–धूपमे तजियाक खेल खेली।

रामनवमी–कृष्णाष्टमीमे, रामायण–भागवतक पाठक संग भजन–भाव हो, चुरमा प्रसाद वितरण हो। जन्मोत्सवक बाद छठिहार सेहो मनौल जाय, कीर्तन सेहो पाछाँ प्रचलित भेल। मन्दिरपर आश्विन पूर्णिमामे–कोजागरा पर्वपर– मखान–बतासा, नारियरक संग भगवानकें इजोरियामे राखि भजनभाव हो ओ सतंजा भूजा प्रसादमे वितरित हो। तहिना अन्नकूट दिन श्रद्धालु परिवारसँ अनेक प्रकारक पूरी–पकवान–मधुर–मिठाइ, पायस– व्यंजनक भोग लागय– सब प्रसाद पाबथि। कहल जाय जे छप्पनो प्रकारक अन्न–व्यंजनक भोग लगाओल गेल अछि।

शिवरात्रिमे हमरा लोकनि ग्रामक समीपे भटोरास्थानक मेलामे जाइ। पहिने गाममे हरिमन्दिर छल, शिवमन्दिर नहि। पाछाँ शिवमंदिर बनल अछि। हाइस्कूल बनही पोखरिपर, जतय शिवदर्शन करय ग्रामीण जाइ छथि, तथापि भटोरास्थानक महत्व उखड़ल नहि अछि।

तहिना सामाजिक पावनिमे बड़ी, बनही ओ पुबारि पोखरिमे छठिक साँझ ओ भोरमे हाथ उठैबाक, बाहरी पावनिमे ठकुआ ओ साँच ओ चौठचंद्रमे पूरी पकवानक घर–आङनमे ओरिऔन चलैत छल।

मकरसंक्रान्तिमे भोरे स्नान–तिलाठीक धधरा तापब ओ तिलवा–चुड़लाइ जलपानक बाद घी–खिच्चड़िक भोजभातक आनन्द लैत – माघी सप्तमीमे प्रातःस्नानक लेल, तुलसी–बैर–बेलपात–अपराजित–अकौन आदि साँझे चुनि–बिछि राखी। ग्रहणमे बागमती अथवा कड़ेहधारमे स्नानक हेतु धर्रोहि लागल रहैक। गामक लोक, विशेषतः स्त्री समाज पोखरिमे, किछु लोक सुदूर नदीमे स्नान कऽ आबथि। नवान्न–हवन कर्मकांडी लोकनि करथि। प्रौढ़लोकनि स्नानक बाद मन्दिर जाय चरणामृत ग्रहण करथि, संध्यामे नियमतः बहुतो व्यक्ति आरतीकाल पहुँचथि। किछु रामायण गाबथि–किछु सुनय जाथि।

स्त्रीगणमे तुलसीचौड़ापर सान्ध्य दीप, कार्तिकमे दीपदान प्रचलित छल। आकाशदीप टोले–टोलमे उद्‌यापन आदि प्रमुखतया प्रचलित छल। स्त्री समाजमे व्रतक महिमा खासकऽ विधवा लोकनिमे बुझि पड़य जेना उपवास ओ पारण दुहू समान संख्यामे चलैक। जितिया– सोमवारी, बिहुला– सपता आदि पूजा आङनक शोभा शृंगार छल।

नेनहिसँ गामक पूजा–उत्सव–मेला–जलसा सब जे दखैत अयलहुँ ताहिमे दुर्गा–मेला, झूलन प्रधान छल। दुर्गापूजाक आरम्भ श्रीप्रसाद चौधरीक उत्साहसँ भेल। कहल जाइछ जे पहिने हासाक बाबू लोकनि कलकत्ताक मृण्मयी दुर्गापूजा देखि अपना गाममे दुर्गापूजा आरम्भ कैलनि – ओकर अव्यवहिते 1875 सँ बल्लीपुरमे आरम्भ भेल। बहुत बादमे, जखन बात–बातमे दछिनबारि डेउढ़ीमे पाटापाटी चलऽ

लागल तखन दोसरो दुर्गाप्रतिमा बनय लागल। ओही आसपासमे 'रमौल'मे सेहो प्रतिमा बनब आरम्भ भेल। आब तँ गाम–गाममे दुर्गामेला लागि रहल अछि। पहिने पूजा–विशेष कलशस्थापनहिसँ आरम्भ होइक ओ प्रतिमा प्रतिष्ठाक संग सप्तमीसँ दशमी विसर्जन धरि मेला लगैक। नाच–गानक कोनो विशेष व्यवस्था नहि। हँ, कुश्तीक विशेष व्यवस्था रहैक। गाममे अनेक अखाढ़ा खुजल छल। बुझि पड़ैछ जे मालवीयजीक सप्तोपदेशमे जेना कहल गेल छल जे – 'ग्रामेग्रामे पाठशाला मल्लशाला तथैव च' तकर परम्परा गाममे हमरा सभक ज्ञानसँ पहिनहिसँ प्रचलित छल।

दोसर उत्सव श्रावण तृतीयासँ श्रावणी पूर्णिमा पर्यन्त दुहू उतरबारी–दछिनबारी मन्दिरपर झूलनक उत्सव चलैत छल। झाँकी बनयवामे योगीन्द्र नारायण चौधरी, भूषण प्रसाद चौधरीक आवेश बेसी देखल जाइत छल। कोनो दिन लताकुंज, कोना दिन पुष्पपुंजक, कहियो कदलीगर्भस्तम्भक, कहियो रेशमी वस्त्राडंबरक झाँकी लगैत छल, डेउढ़ीमे राजबाबू– कलाबाबू– धीरेन्द्र बाबूक आवेश रहैत छल। रामायण–आरतीक बाद गबैया, नटुआ ओ नटवा, कदाचित कोनो वर्ष वेश्याक नृतय सेहो होइत छल। नटावामे ओहि समयक ग्वालियर दिसक केदारजी, जयपुर प्रान्तक शिवराज–लक्ष्मण आदि प्रमुख छल।

झूलनसँ जे उत्सव शुरू हो से कृष्णाष्टमी–चौठचंद्र–अनन्त–वसन्त पंचमी–जितीया–मातृनवमी–दुर्गापूजा–कोजागरा–धनवन्तरि पूजा–हनुमज्जयंती–अन्नकूट ओ दीपावली–हुड़ियाहा–भ्रातृद्वितीया–छठि–देवोत्थान–सामा ओ धातृक नीचाँ भोजन आदि धरि निरन्तर चलैत रहैत छल।

फगुआ बड़े जोस–खरोससँ होइत छल। दुनू डेउढ़ीक फगुआजुलूस संवतक रात्रि ओ निज फगुआमे उत्तेजक रहैक। सब नव वस्त्रमे होथि, रंगक पिचकारी छूटि चलैक। ढोलक–डम्फा–झालिक संग गीतक धमक ओ जोगीड़ाक गमक, रंगसँ सड़कपर कादो लागि जाइक, अबीरसँ सभक मुँह लाल–विचित्र दृश्य ओ उत्तेजना देखबामे आबय। भाङ–माजूम, पान–सुपारी ठाम–ठाम विलहल जाइत छल। दोकान सबसँ टोलवैया सुपारी असूलथि। किछु दिन काशीक देरवादेखी बुढ़वामंगल मनेबाक उत्साह सेहो रहल।

संगी–साथी दोस्त–मित्र

'केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम्' – दुइ आखरक अमृतमय 'मित्र' शब्दक के सृष्टि कयलनि ? – एकर जिज्ञासा कयनिहार नीतिकार विष्णुशर्मा मित्रक लाभकें सर्वोपरि सिद्ध करैत अपन हित उपदेशमे पहिने 'मित्रलाभे'कें स्थान देलनि ओ कहलनि जे – 'मित्रं प्रीतिरसायनं नयनयोरानन्दनं चेतसः'। मित्र नयन मन जुड़ौनिहार आनन्ददायी प्रेमरसायन होइत छथि। वास्तवमे नेनाकें खेलबा लेल जँ संगी नहि भेटय तँ ओ जीवन भरि मनहूसे रहि जाइछ, किशोरकें जँ दोस्त–मीत

नहि रहै तँ ओ प्रतिभारिक्त तिक्त स्वभावक भऽ जाय। प्रौढ़कें जीवन संघर्षमे जँ मित्र नहि भेटथि तँ ओ हारले–हेरायले अपनाकें बुझथि। बूढ़सूढ़कें मित्रसँ गपसपक मौका नहि हो तँ हुनक जिनगिए समाप्त भऽ जाय, जीवनक मौके भसिआ जाय।

परंच एहन जे जीवन–रसायन मित्र, से थोड़–बहुत सदा–सर्वदा सबकें भेटैत रहल छथि। प्रायहे केओ एहन अभागल होथि, जनिका मित्र नहि भेटल होथिन। हँ, मित्रता लेल किछु ने किछु समानता चाही। चाहे ओ वयसमे हो, पढ़बा–लिखबाक वर्गीकरणमे हो, रुचि–समतामे हो अथवा विचार–रमतामे हो – किछु ने किछु एकता चाही। दक्षिणवाही मलय समीर जकाँ सुखक संवाही धीरता चाही।

प्रयोजनापेक्षी मित्र सेहो होइ छथि, राजनीतिक प्रयोजने इष्ट–घनिष्ट सेहो होइ छथि, परंच ओ सब पूर्वा–पछवा बसात जकाँ कखनहु प्रचंडो भऽ उठै छथि। तेहने मित्र सब लेल पद्मसिंहशर्मा सन पराक्रमी लेखककेँ कँपकँपी छुटनि, हुनका गोहारि मचबऽ पड़लनि–'मुझे मेरे मित्रोंसे बचाओ!' हुनका बचा सकिऔन वा नहि परंच एहन लोकक पाला कहिओ नहि पड़ल, ई कहबाक दम्भ तँ नहि करब, किन्तु एतबा अवश्य जे ओ प्रयोज़नी महाजन जेहन महान होथु किन्तु हम अन्तससँ कहिओ हुनका से नहि बुझल, आन जे कोनो वन्दनीय– अभिनन्दनीय उपाधिसँ हुनका भूषित कयने होइ। नीतिकारक 'यानि कानि च मित्राणि कर्तव्यानि शतानि'कें 'सहस्राणि' संख्या धरि पहुँचा नेने होइ, सेहो सम्भव, परंच 'अहेतुः पक्षपातो यः' सहज मित्र 'ग्रूस' मे नहि 'दर्जन' मे गणनीय रहैछ। मित्र बाटक आँकड़–पाथर नहि जे जतऽ ततऽ अनेरे भेटैत रहता। ओ तँ बहुमूल्य रत्न– मणि मणिक्य थिका जे पुण्यक खानिसँ कठिन कर्मयोगें उपलब्ध होइ छथि।

परंच 'मैत्रेणेक्षस्व चक्षुषा' मैत्रीक नेत्रसँ देखवाक संवेदना जे वैदिक ऋषि लोककें दऽ गेल छथि– मैत्री, मुदिता, करुणाक दृष्टिकोण रखबाक जे विहित विधि भारतीय साधक सिखा गेल छथि – से मैत्रीक परिभावकें तेना आयाम दैछ जाहिसँ संगी–साथी, दोस्त–मीत, सहचर–सहकर्मी, सहचिन्तक–सहधर्मी, सहृद्–सुहृद सबकें हित–मित्र बना लेबाक जेना चित–चेतना जगौने गेल होथि। से ककरो कते सधैछ से तँ 'भाग्येनैतत् संभवति।'

परंच एहिसब मित्रक शृंखलामे बालसंगीक महत्व बड़ विशेष। ओ जेना हिमस्रोत कही। झड़ना रहय, जे सतत झरैत रहय। स्नेह सलिल निघटय नहि।

बाढ़ि–पानिवाला वेगवान् मित्रक प्रवाह बादमे भेटैछ। खूब वेग, अजस्र प्रवाह। परंच ओ लगले हटिओ जाइछ। हँ, कोनो गम्भीर हृदयहृदमे पहुँचैछ तँ स्थिर रूपे रहिओ जाइछ। पाछाँ जीवनयात्रामे तीर्थधारक अवगाहनोक मौका लगैछ जे आगहु संस्मरणीय रहैछ।

जखन खेल–मेल ,दौड़–धूप करबाक समय आयल, तँ घर–परिवार अड़ोस–पड़ोसक संगी–साथी जुटि अयला। बाबू–भैयाक धीआ–पुतामे हमरासँ वर्ष–दूवर्ष छोट बिजयबाबू–रतनबाबू–लक्ष्मीबाबू रामनिरेषणजी प्रभृति, सरकुटुम्बक

धीआपुतामे लक्ष्मी–विश्वेश्वर, गौआँमे भूपनारायण, त्रिवेणी आदि जमल रहथि। भोरेसँ खेल जमय, दौड़–धूप, चोरानुकिआ, कन्ना कोन–कोनक धूम मचल रहय। लताम–हरफा– सरीफा–करौनाक बीछब–तोड़ब–लोढ़ब ओ बाड़ी–झाड़ीमे घूमब–फिरब चलैत रहल। जखन उमेर औरो बढ़ल तँ गुल्ली–डंटा, कबड्डी, चिक्कादरबरक संग गोली, बाधगोटी सतघरा गोटीक खेलमे सब रमैत रहलहुँ। औरो बढ़लापर अपनासँ जेठजेठानुसक देखादेखी सतरंज–चौपड़िक खेलक नकल चलल। माटिक गोटी रङि–रङि खड़ीसँ रेखित घरमे खेल आरम्भ भेल। पढ़ब–लिखब जँ जोरजार कयला पर एक चौथाइ समय लेअय तँ तीन चौथाइ खेलमे बितय। देखादेखी अखाढ़ा खुनि–खुनि दंडबैसकी सेहो लोक लगबथि। कुस्ती सेहो खेलथि, पोखरिमे चुभकी लगबथि। तास–सतरंजक खेल तँ आगाँ चलिकऽ जमलैक, मुदा ई तखन जखन स्कूल ओ ट्यूटरक अनुशासनक अनुभव भेल।

तावत खेलमे चारि सालसँ कम वयसोक बालमंडली जुटय लगला। खेलक मैदान एप्रेंटिस जकाँ जाहिमे नूनूबाबू, चुम्माबाबू, टुनीलाल, गुरुदेव, गिरिवर सेहो सब सम्मिलित होमऽ लगला।

सभक उमेर बढ़ैत गेल, खेल बदलैत गेल। दौड़धूप कमल, बैसारी चलल। गुल्ली–डंटा छुटल, गोटी–पासा जुटल। दंड–बैसकी, उठा–पटक हटल, तास–परिहास चलल। चिक्का–दरबरि दबल, तँ मैदानी गेनक दौर–उड़ान उभड़ल। यार–दोस्त किछु छँटल तँ चटिसारक संगी–साथी जुटल।

आहि समय प्राइमरी स्कूल गाममे छलै। किछु दिन ततहु भट्ठा खड़ीक अखाड़ा रहल। ककहरा घोखनाइसँ लऽ कऽ रीडर–पाठ धरि घोखल ओ स्लेट–पाटीपर हाथ घसल।

तावत् दछिनवारि डेउढ़ीपर भोलाबाबू–बिहारीबाबू ओ गोपीबाबूक हेतु ट्यूटर राखल गेला जे अंग्रेजी पढ़बथि। मन पड़ैछ, मनीगाछी दिसक रघुनन्दनलालदास, हथौड़ीक गिरीशचन्द्र प्रसाद, अन्तमे पतैलीक चन्द्रनारायण चौधरी लोकनि मास्टरी करैत गेला। दासजीक अक्षर मोती सन होनि, प्यारीचरणक अंग्रेजी फस्टबुक घोखबथि, 'एबी ऐब' सँ 'सैक सैक सिंक' धरि अंग्रेजी हिज्जे मजबथि, किछु दिन बाद ओ कोनो कारणें हटा देल गेला। गिरीशचन्द्रजी किछु अंग्रेजी बजबाक अभ्यास करबथि – कतहु डाकघरमे नोकरी लागि गेलनि। चौकी–पटियापर हिनका लोकनिक भिन्सर–साँझ दुहूबेर क्लास चलनि। बादमे चन्द्रनारायणबाबू कायदासँ 10सँ 4 बजे धरि क्लास लेथि, बेंच–कुर्सी–टेबुल लगा' कऽ जेना कोनो स्कूलमे पढ़ौल जाइक तहिना पढ़ाइ चलऽ लागल। साँझमे खेल–कूदक व्यवस्था। हिनक पढ़ाइ आकर्षक छल। नेहराक हरीन्द्र बाबू सबसँ पढ़ैत छलहुँ जाहिमे रमाकान्तबाबू, यादवेन्द्रबाबू, सेदुखाक रामदेवजी,रामगोविन्दजी आदि जुटि गेला। अध्ययनक बीचमे जलपान होइ, चूड़ा दहीक व्यवस्था अधिक काल रहय। आग्रहीत भऽ जलपान हुनके लोकनिक संग करी। प्रौढ़लोकनि गामपरसँ कऽ आबथि। प्रौढ़मे नागेश्वर बाबू,

चुन्नीबाबू, भूषणबाबू लोकनि अंग्रेजी सिखबाक सौखमे पढ़थि। स्कूलिंगकेर अनुभव हमरालोकनिकें ओहीठाम भेल।

पाछाँ भोलाबाबूक मृत्यु भेने मनहूसी आबि गेलै। बिहारीबाबू गोपीबाबू – हरीन्द्रबाबूक संग कलकत्ता विशुद्धानन्दसरस्वती स्कूलमे पढ़ऽ लगला। हमरा लोकनिक स्कूलिंग ओही समय समाप्त भऽ गेल।

तावत् असहयोग आन्दोलनक प्रथम बेग समाप्त भऽ गेल छलै, स्कूल–कॉलेजक पढ़ाइ छोड़िकऽ अयनिहारमे चन्नूबाबू मास्टर सेहो छला। ओ आब पुनः मुजफ्फरपुर कॉलेजमे नाम लिखौलनि। छुट्टीमे आबथि तँ अपने ओहिठाम डेरा राखथि। हमर पितासँ हुनका अत्यन्त सामीप्य भऽ गेलनि। हमरा पढ़बाक ओहो विशेष चिन्ता राखथि, अंग्रेजी मे 'ईशप्स फेबुल्स' क पुस्तक दऽ गेला ओ वर्ड–वर्डक उच्चारण–अर्थ लिखि दऽ गेला। कॉलेजसँ चिट्ठी लिखि हमर पढ़ाइ–लिखाइक खोज–पुछारी करैत रहथि। धन्वतरिपूजामे, अपन अवकाशक समयक उपयोग करथि, सभा–सम्मेलनक व्यवस्था करथि, सभापतित्व लेल तत्कालीन प्रसिद्ध लोककें आमंत्रित कऽ लऽ आबथि।

हमरा पढ़ाइसँ छूटि जेना भेटल हो, दिनराति संगी–साथीक संग तास–सतरंज, चौपड़ि जे सब खेल देखिऐक खेलल करी। हँ, कोनो पत्र–पत्रिका जँ भेटय, कोनो खिस्सा–पिहानीक पोथी भेटय सेहो पढ़ी। ओहि समय गपसपक खरिहान, गोनू विनोद सन दू चारि मैथिलीक पुस्तक बहराइ तँ बेस मनोरंजन करी।

बीचमे बिहारीबाबू दुहू भाइ कलकत्तासँ छुट्टीमे आबथि तँ ओहि समयक सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक पत्रिका माधुरी, प्रभा आदि मङबा कऽ पढ़ि साहित्यिक अभिरुचिक तृप्ति करी।

ओकर बाद हमर पढ़ाइक क्रम बदलल, जकर विवरण आगाँ अछि।

विद्यालय–महाविद्यालय तँ सहजहि मित्रताक फसिलक हेतु खेतखरिहान होइछ। अपरिचितक संग प्रगाढ़–परिचयक रंगभूमि इएह कहल जाइछ। जनिका पहिने देखनो नहि, जनिकासँ रक्तक कोनो आसक्ति–प्रसक्ति नहि, अतीतक कोनो सहवास नहि, भविष्यहुक संगतिक आश्वास नहि ओ सर्वाधिक विश्वासभाजन बनि जाइछ। दिन–रातिक एकत्र सहवासी पढ़बा–लिखबाक सहाध्यायी, खेलबा–धुपबाक, गप्प–बकवासक, रहस्य आलापक सहयात्री, सहशायी सहास्थायी की की ने बनल रहैछ। संग संग दृश्य–श्रव्यक आनन्द, क्रीड़ा–व्यायाम श्रमविनोद बुझि पड़ैछ। हम मित्र लोकनि जेना कोनो दिव्य लोकक प्राणी बनि गेल होइ। गाम–घरक चिन्तासँ परे, भाइ–बन्धु, गाम–घरक सखा–साथीसँ फराके कोनो अपर प्राणिलोकक प्राणी बनि गेल होइ।

जीवनमे उड़ान भरबाक जेना एमेच्योर इन्स्टीच्यूटक मेम्बरी पाबि गेल होइ, एवरेस्ट चोटीक अभियानी चुना गेल होइ अथवा राकेश शर्माक अन्तरिक्षी उड़ान भरय लागल होइ ! स्वप्नलोक मित्रमंडलीक ओ क्षण अमूल्य बूझि पड़य, जेना लागय

यैह क्षण वर्त्तमान मूल्यवान – शेष अमूल्य !

नोकर–खबास

मिथिलाक मध्यमवर्गीय परिवारक लोक, सम्पन्न–असम्पन्न जे रहथु, ओ लोकनि खबास–खास रखैत अयलाह। खबासवर्गमे खास कऽ धानुक, केओट, अमात जातिक लोक विशेषतया परिगर्भित रहल। एकहि दू वर्गक लोक सबतरि गाम–घरमे संबद्ध रहल। ई लोकनि सत्‌शूद्र मानल जाइत रहलाह। पुरुषवर्ग टहल–टिकोरा करथि, गृहकार्य ओ यात्रा आदिमे सतत संग पुरथि। विशेषतः भूमिहीन रहने अवशिष्ट–उच्छिष्ट ग्रहण करथि, खेत–पथारक उपजामे किछु अंश पाबथि, सीधापर, साधारण वेतनपर जीवन निर्वाह करथि। स्त्रीगण लोकनि पनिभरनीक काज, बर्तन–भाजन परिष्कारक संग कुटिया–पिसिया, ढेकी–उखरि–मुसर, जाँत–चक्की चलाय सेवा देथि। आइकाल्हि जकरा 'बंधुआ मजदूर' कहि उद्धारकार्य कयल जाइछ शत–प्रतिशत ई सब पुस्त–दर–पुस्त तहिना रहैत अयलाह। वैदिककालमे सेवाधर्मी शूद्र जातिकें 'पद्भ्यां शूद्रो अजायत' कहि जतय समाज संगठनमे श्रमिक–शिल्पीक मान्यता भेटल छल ततय रामायण– महाभारतमे तप–युद्ध–वाणिज्य–व्यवसायसँ इतर सेवाकार्य हिनका निर्दिष्ट रहल। स्मृति–विधानमे उच्चवर्गमे पानि चलबाक आधार दय सत्–असत् विभाग कयल गेल। किछु एहनो लोक जे पशुपालन कृषि आदि वैश्य–व्यवसायीलोक छलाह जे भूस्वामी भऽ अपन एक स्तर कायम रखलनि, कुर्मी, कोइरी प्रभृति। किन्तु क्रमशः यज्ञोपवीती नहि रहलाह ओहो अनुच्छिष्टभोजी भऽ अपन स्तर कायम रखलनि। समाज–संगठनमे किछु अस्पृश्य अंत्यजो मानल गेलाह, किन्तु दक्षिण केरल–कर्नाटक–आँध्र–तमिल देशवासी जकाँ एतय ततेक अछोप नहि रहथि जनिका रास्ता छोड़ऽ पड़नि वा तीर्थ–उत्सवोमे विशेष पार्थक्यक अनुभव करय पड़नि। एहि अंशमे मिथिलामे किछु उदारता रहलैक। यथा अन्यत्र मलाहजातीय लोकक अनुसूचित जकाँ पृथक वर्ग रहल, किन्तु मिथिलामे ओ द्विजेतरमे सत्‌शूद्रे मानल गेल। शौण्डिक–तैलिक व्यवसायी सहभोजनीय भने नहि रहल होथु, किन्तु एतय सामाजिकतामे हुनक स्थान बनल रहल। हँ एतय, अंत्यजमे डोम–चमार–दुसाध आदि अस्पृश्यताक आघात सहैत आयल, जकर वर्त्तमानमे प्रतिक्रिया तीव्रतर अनुभूत भऽ रहल अछि। कट्टरता ढहि गेने आब क्रमशः सभक स्तरो समतल दिस पहुँचि रहल अछि, जाहिलेल शासकीय विधि–व्यवस्था ओ आरक्षण–संरक्षण अनिवार्य भेल अछि।

भारतीय सामाजिकताकें सूक्ष्मतासँ देखने ई स्पष्ट प्रतीत होइछ, जे एतय वर्णव्यवस्था पाछाँ व्यवसाय–पेशाक आधारपर जातिक रूप ग्रहण कयलक। सोनार–लोहार, नौआ–मालि, नोनियाँ–कानूसँ तेली–सूड़ी–जोलहा, तंतुवाय–ततमा चमार स्वपेशेसँ संवद्ध जातिक नाम थिक। सभ अपन व्यावसायिक रूपें अपन सामाजिक कायदा–कानूनसँ जीवन–यात्रा चलबैत एक–दोसरा वर्गक पूरक रूपमे

संश्लिष्ट रहल अछि। वर्णव्यवस्थाक क्रममे जखन आजुक श्रमिक संघ जकाँ संकीर्ण–विकीर्ण पेशाक संघ बनय लागल होयत तखन जातीय पंचायतक आजुक ट्रेड यूनियन जकाँ सभक व्यावसायिक संगठन रहलैक। सभमे मानिजन (मान्यजन) छड़ीदार आदि एखनहुधरि चलैत अयलैक। विआहदान–सरसरोकार ओ सामाजिक विवादमे दंड–व्यवस्था, भोजभात सामाजिक स्तरपर चलैत रहलैक जे आब परिवर्तित परिस्थितिमे नवरूपक वर्गीय रूप ग्रहण कयने जा रहल अछि।

हमरालोकनि संक्रान्तिकालमे जुटैत–टुटैत, झलकैत–बदलैत जे रूप देखैत अयलहुँ अछि तकर छविछाया मात्र एतय मन पड़ैत गेल अछि।

बंधुआ मजदूर जकाँ दास–दासीक सेवाग्रहण प्राचीनकालमे प्रचलित छल। किन्तु प्राचीन साहित्यमे परिवारक पोष्यवर्गमे परिगणित छला। भृत्यनामक व्युत्पत्तिए 'भरणाद् भृत्यः' भरण करबाक पात्र हुनका मानल गेल। रामायणक नायक श्रीराम जखन वनवासक हेतु विदा भेला तखन अपन पोष्य भृत्यवर्गक देखभालक भार गुरु वसिष्ठकें सौंपलनि।

विद्यापतिक लिखनावलीमे दास–दासीकें संपत्ति मानि कोनो विक्रय–बंधक आदिक प्रथा छल तकर लेखाविधान भेटैछ, अनेक प्राचीन लेखावलीमे सेहो ओकर उल्लेख भेटैछ।

मगन आश्रम

गान्धीजीक भारतीय राजनीतिमे प्रवेश तिरहुतक पश्चिमी भाग चम्पारणमे आरम्भ भेल छल। निलहा कोठीक अत्याचारसँ किसान–मजदूरक दुर्दशा देखि गान्धीजी द्वारा कयल गेल अहिंसात्मक सत्याग्रहक सफलता राजनीति मे हुनका ध्रुवतारा बना देलक। ओहि समय सप्तर्षि जकाँ राजेन्द्र बाबू, व्रजकिशोर बाबू लोकनि हुनक माण्डलिक छलथिन। व्रजकिशोर बाबूक कार्यक्षेत्र छल दरभंगा। ओ तत्कालीन प्रदेश राजनीतिमे चाणक्य कहि प्रसिद्ध छलाह। धरणी बाबू, पं0 गिरीन्द्र मोहन मिश्र, बाबू चतुरानन दास, बाबू सत्यनारायण सिंह आदि प्रसिद्ध छला। ओही बीच प0 रामनन्दन मिश्र, काशीविद्यापीठक नव स्नातक, स्थानीय राजनीतिमे नक्षत्र जकाँ उगला। गान्धीजीसँ पूर्व जे राजनीति चलैत छल ओ पहिने कोठी–कमरासँ प्रमुख रूपमे बहराइत, सभामञ्चपर भाषणमे घहराइत, पत्र–पत्रिकाक मोट–मोट शीर्षक सँ गनगनाइत जनताक हृदयकें उत्तेजित करैत छल। विशेषतः शिक्षित समाजमे महाराष्ट्रक गोपालकृष्ण गोखले एवं बालगंगाधर तिलक, बंगालक सुरेन्द्रनाथ बनर्जी– विपिनचन्द्र पाल, पंजाबक लाला लाजपतराय आदिक भाषण आगि उगिलैत आबि रहल छल। केसरी–सम्पादक बालगंगाधर तिलकक गीतारहस्य जेना घर–घर पाठ्यपुस्तक बनिगेलहो। गाँधीजीक 'हिन्द स्वराज' सभक हाथमे रहैत छल। 'लाल–बाल–पाल' तीनू लकारान्तक ललकार ब्रिटिश शासनकें हिला–डोला चुकल छल। नगर–नगरमे लोकचित्तकें

हिन्दोलित कऽ रहल छल। परञ्च विदेशी शासनक लौहशृंखलाकें तोड़बाक हेतु आवश्यकता छल जे एकरा नगरसँ गामधरि, शिक्षित–अर्द्धशिक्षितसँ अपढ़–अबोध गाम–गमइ धरि 'स्वतंत्रता हमर जन्मसिद्ध अधिकार अछि' एहि मंत्रकें कान–कानमे फूकल जाय। पराधीनता– संवेदना हृदय–हृदयमे जगाओल जाय। एहि लेल आवश्यक अछि त्यागी–तपी– सिद्धान्तवादी–कर्मठ कार्यकर्त्ताक। जाहि लेल देशभरिमे केन्द्र खोलल जाय। जेना आरण्यक कालमे आश्रम होइत छल, बौद्ध युगमे विहार–आराम श्रमणक प्रशिक्षण होइत छल, चैत्य–मठमे जैनी श्रावक अपन सिद्धान्तक शिक्षण लैत छला, सिक्ख गुरु सम्प्रदाय गुरुद्वारा मठमे पञ्चककारी व्रत लैत परिलक्षित होइत छला, तहिना देशभक्त राष्ट्रिय कार्यकर्त्ताक लेल स्थान–स्थानपर आश्रम खोलल जाय। सोसाइटी तँ पहिनो चलैत छल, यथा – गोखलेक 'सवेण्ट्स ऑफ इण्डिया', एनीबेसेन्टक 'थियोसोफिकल सोसाइटी' चलैत छल, परञ्च ओकर परिधि–विस्तारक प्रयोजन आबि गेलैक। गान्धीजीक वर्धाक सावरमती आश्रम केन्द्र छल। प्रान्त–प्रान्तमे आश्रम केन्द्र खुजऽ लागल। बिहारमे सदाकत आश्रम स्थापित भेल। जिला–जिलामे, तदुत्तरो स्थान–स्थानमे खादी आश्रम, स्थानीय नेतालोकनिक आश्रम खुजऽ लागल। आश्रमक आकर्षण साहित्योमे व्याप्त भऽ गेल। सेवासदन, प्रेमाश्रम, शान्तिसदन, शान्तिनिकेतन अनेक कथा–उपन्यास– काव्य आदि लिखल जाय लागल। ओही वातावरणमे एतऽ 'मगन आश्रम'क स्थापना तत्कालीन तरुण नेता रामनन्दन मिश्र द्वारा मझौलिया गाममे भेल, जे केन्द्र मिथिलाक राजनीतिमे मुख्य चर्चाक विषय बनि गेल।

चर्खा क्लास

ओहि दिन गाममे बेस हलचल छल। बिहारमे परदा प्रथाक विरोधमे क्रान्तिक बिगुल फुकनिहार, मगन आश्रमक संस्थापक एवं गान्धीजीक सन्देश गाम–गमइमे घर–घर पहुँचयबाक व्रत लेनिहार नवयुवक नेता रामनन्दन मिश्र पहुँचल रहथि। हुनक त्यागवृत्तिक प्रभाव एक दिस लोककें आकर्षित कयने छल, दोसर दिस रूढ़िग्रस्त गाम–समाजक चित्तमे प्रचलित परदा प्रथाक विरोधीक प्रति रोष–आक्रोश सेहो छलै। ओम्हर बूढ़–पुनिञा एहन व्यक्तिक विचारकें ओहिना नहि सुनऽ चाहथि जेना नमाजी महजिदिया शंखध्वनि नहिं सुनऽ चाहै छथि वा जप–ध्यानक अनुष्ठानी अजानक शोरसँ परहेज रखै छथि।

एम्हर नवयुवकक गोल, जकर अग्रणी बाबू गोपीकान्त चौधरी रहथि (जे 'सत्याग्रह आश्रम' साबरमतीक वातावरणसँ अयले छला), हुनक भाषण सुनबाक ओ लोककें सुनयबाक आग्रही छल। गोपीबाबू अपन रमनामे बैसारक इन्तिजाम कयने छला। 'वायस्कोप'क तमाशा होयतै, तकरो प्रचार छल, तें लोक उमड़ि आयल। पाछाँ लोकक भीड़–भाड़ देखैत तटस्थो व्यक्ति सब जुटि अयला।

रामनन्दनबाबू पहुँचला। हुनक सहयोगी श्रीनारायण दास, निरसू जी, जगदीश जी, चन्द्रकान्त झा (बोरज)क एक जमाति पहुँचल।

मिश्रजी 'स्लाइड' देखा–देखा, प्रसंग बुझा–बुझा स्वाधीन देशक आँकड़ाक संग अपना देशक गरीबी, रोग, अकाल, स्वास्थ्य–दुर्दशा देखबैत स्वाधीन भारतक लक्ष्य–दिशाकें तेना आकर्षक शब्दें वर्णन कयल जे साधारण अपढ़–निरक्षरो व्यक्ति एकरा तमाशा नहि बुझि उपदेशकथा बुझलक। एहि भाषणसँ किछु प्रेरणा पौलक। भाग्यक भरोसे नहि रहि देशदशाक परिवर्त्तन हेतु राष्ट्रिय विचारधाराक अनुकूल गान्धीजीक दिशा–निर्देशनमे कल्याण भावनाक जेना ऊर्जा भेटल हो से अनुभव कयलक।

स्त्री–समाजकें सम्बोधित करैत ओ कोनो प्रकारक उच्छृंखलताक नहि, प्रत्युत भारतीय संस्कारक अनुकूल कर्त्तव्यक दिशा देखौलनि। सीता–द्रौपदी–भारती–लखिमा–झाँसीक रानीक आदर्श दिस प्रेरित कयलनि। फलतः विरोधक कोनो कारण नहि रहलै। सब ओहि भाषणकें सुनलक। जे नहि आबि सकल छल सेहो आनक मुहें सुनि प्रभावित भेल।

दोसर, हुनका प्रति ईहो वितृष्णा छलै जे ओ नास्तिक छथि, भगवानकें नहि मानै छथि। सेहो जखन ओ सब मन्दिरपर गेला तँ माथ झुकौलनि–ई कहि जे जखन लोकश्रद्धाक स्थान थिकै, तखन जनताकें जनार्दन माननिहार एकर मान्यता किएक ने देत ?

एहि सबसँ मिश्रजीक प्रति जे कोनो दुष्प्रचार छलै तकर परिहार भेल। ओ वृद्धक आशीर्वाद, प्रौढ़क सहयोग आ नवयुवकक श्रद्धा–प्रेम प्रचुर रूपें पौलनि। पाछाँ बल्लीपुर रामनन्दन बाबूक प्रभावक्षेत्रक एकटा बड़का प्रभावी अड्डा बनि गेल। हुनक यातायात बहुधा होइत रहल। हुनक प्रेरणासँ ओतऽ चर्खा क्लास खुजल जकर बैसार हमरहि दलानक पछबरिया कोठलीमे होइत छल। एक घण्टा नित्यप्रति ओतऽ आबि चर्खा वा ठकुरी चला, लोक मानथि जे जते सूत एतऽ टकुरीपर तनैत छी तते ब्रिटेनक लंकाशायरमे सूत टुटैत अछि। बहीपर सभक हस्ताक्षर होइत छल। संक्षेपित हस्ताक्षरी विना चौ, हेना चौ, गोका चौ, भूप्र चौ, राप्र झा, सुझा आदि नामसँ परस्पर सम्बोधित होइत गेला। प्रौढ़सँ किशोर धरि ओहिमे सम्मिलित होथि। अनुपस्थितिमे दुगुन सूत हुनका काटऽ पड़नि।

एक सदस्य देवकीनन्दन चौधरी (नूनूबाबू) उनैस सालक धापमे छला। जहाँ धरि स्मरण होइछ, क्लासमे नियमित रूपें उपस्थित रहनिहारमे छला बाबू विजयेन्द्र नारायण चौधरी, धीरेन्द्रनारायण चौधरी, हेमकान्त नारायण चौधरी, गोपीकान्त चौधरी, राधवेन्द्र झा, यादवेन्द्र झा, बालकृष्ण पाठक, देवनारायण चौधरी, गिरिवर चौधरी, भातू पोद्दार, जगत मण्डर, देवकीनन्दन चौधरी प्रभृति। कहियो–कहियो जे आबथि तनिका 'क्लासिक' नहि मानि 'विलासिक' मानल जाय।

ओ कते दिन चलैत रहल से ठेकनबैत यैह भान अछि जे आन्दोलन तेज होइ

तँ क्लासोमे चमक, निष्ठोमे विशिष्टता; आन्दोलन ठमकैक तँ एहूमे ठमक, जेल–धरपकड़ होइक तँ एतहु धमक।

एहि क्लासक संग राष्ट्रिय साहित्य ओ पत्र–पत्रिकाक पठन–पाठन सेहो चलैक। क्यौ विशिष्ट नेता–कार्यकर्त्ता आबथि तँ हुनक विचारो सुनल जाइन। सदस्योक विचार सुनाओल जाइन। ई पाछाँ एक प्रकारक वैचारिक प्रवर्तनक गोष्ठी बनि गेल। लग–पासक गाममे केओ कखनो बजौलो जाथि, सभाक वक्तो बनौल जाथि। गोपीबाबू, देवनारायणबाबू एहिमे अग्रसर रहथि।

हम मिश्रजीसँ किछु पहिनहुसँ सम्पृक्त छलहुँ। हस्तलिखित मासिक पत्रिका 'क्रान्ति'क तीन प्रति कार्बन कॉपी प्रस्तुत कऽ मगन आश्रममे पठबैत छलहुँ। प्रायः प्रति सप्ताह मिश्रजीसँ नियमित पत्राचार होइत छल। जे सभ संग्रहणीय छल। परञ्च जखन धरपकड़ चलल छलैक तखन हमर ममतासँ ओ सब संग्रह घरहिक लोक हटा देलनि। ताहि लेल एखनहु विषाद–संकोच अछि।

तरुण नाट्य परिषद्

प्रायः 1930–31 इ0 क घटना थिक। एक बेर विचार तरंगित भेल जे गाममे कलारुचिक सम्वर्द्धन एवं मनोरञ्जनक हेतु युवक लोकनिक एक संस्था संगठित हो। किछु मित्रसँ विचार कयल, ओलोकनि लगले सहमत भऽ गेला। लगले 'तरुण नाट्य परिषद्' नामसँ मोहर, लेटरहेड प्रस्तुत भऽ गेल। ओही बीच छात्रवृत्तिक जे पाइ भेटल छल ताहिसँ पर्दा हेतु मोटगर ननगिलाट किनने मुजफ्फरपुरसँ गाम अयलहुँ। गामक एक व्यक्ति कमला प्रसाद पेण्टर, उत्तमलाल झा, जे कोनो नाटकमण्डलीमे पेण्टरक काज करैत रहथि, ओ गामेमे छला। तनिकेसँ ड्रापसीन ओ विंगक पर्दा रङाओल। संगीत–अभिनयक मध्य ओ नेपथ्यक हेतु भवन, रस्ता ओ जंगलक पर्दा राधाकान्तबाबूक सहयोगसँ महि प्रस्तुत करबाओल। पुनः किछु दृश्यक सामान ठीक–ठाक करबैत जाइ गेलहुँ। किछु पुरान पोशाक, दाढ़ी–मोछ, परीक पहिरावा ओ पहिलुक नाटकीय जरी–टोपी, राजवेश आदि राखल छल, से सब मरम्मति–सरम्मति कराओल गेल। किछु केश–वेश, मुखौटा, दाढ़ी–मोछ आदि सुख संचारक ओ सुख शृंगार कम्पनी, मथुरासँ पार्सल मङाओल गेल।

मुदा नाटक कोन खेलल जाय ? किछु पहिलुक नाटक हमर पिताजीक लिखल छलनि – 'प्रह्लाद', 'बलि–वामन', 'वकवध', 'हरिश्चन्द्र', 'मयूरध्वज' आदि। किछु ओहि समयक पात्रो सब छला – महादेव चौधरी, वासुदेव मिसर, तेजनारायण चौधरी, रामखेलाओन पाठक आदि। ताहि सभक सङोर कयल। किछु औरो प्रौढ़ व्यक्ति बालकृष्ण पाठक, राघवेन्द्रबाबू, यादवेन्द्रबाबू आदि छला। नव–नवतुरिआ चुम्माबाबू, नूनूबाबू, कण्टीरबाबू–दुनियाँलाल–गुरुदेव–सूर्यनारायण–सूर्यकान्त ठक्कन, आदि। पहिलुक अभिनेताकें पहिलुके नाटक पसिन्न, पाठो तकर अभ्यास रखने

छला। नव लोकके नवका रुचिक नाटक चाही। किछु और नव–पढुआके सामयिक अभिनय चाहियनि। मिला–जुलाकऽ सभक रुचि राखल गेल। पहिलुक नाटकमे 'बलि–वामन' ओ 'मयूरध्वज'क नाम बदलि छोट कय छाँटल गेल। मध्यकालीन 'अभिमन्यु', 'सीता वनवास' परिवर्तन कऽ पाठ बाँटल गेल। नव सामयिकमे वीर भगतसिंहक बलिदानक टटका घटनापर नाटक खेलबाक विचार भेल। तकरा प्रस्तुत करबाक भार हमरापर रहल। लिखलो गेल, लोकक रुचिसम्मतो भेल। 'सीतावनवास'क कारुणिक अंश आवर्जक भेल जाहिमे रामक पार्ट राघवेन्द्र बाबू ओ सीताक पार्ट रूपनारायण चौधरी (कंटीरबाबू)क हृदयग्राही होनि। अर्जुनक अभिनयमे देवनारायण चौधरी (चुम्माबाबू)क तन्मयता कोनो उच्चकोटिक अभिनेताक हेतु स्पृहनीय बुझना जाइत छल। बालकृष्ण पाठकक ऋषि–मुनि द्रोणक, लक्ष्मीबाबूक जयद्रथक, यादवेन्द्र बाबूक सुखदेव–बटुकदत्तक, कमलनारायण कमलेशक गाँधीक; स्त्रीपात्रमे बटुकजी (दुनियालाल)क पाठ प्रशंसनीय होइत छल। हम अपनहु पाठ ली, परञ्च ओहू दिन बुझबामे आबय जे सम्हरय नहि। भरि दिन पात्रक रिहर्सल आदिक व्यवस्था ओ घर–घरसँ साड़ी–बडी ओ अन्यान्य पात्रानुकूल परिधानक व्यवस्थामे चित्त ऑट भऽ जाय, पाठ अभ्यासवाक अवसरे नहि। तखन ओही कालमे तत्काल जे फुरय से पाठ पुरयबामे जे चाही तेना सम्भव नहि हो। निर्वाह कहुना भैए जाय परञ्च ई अनुभव अवश्य हो, जे व्यवस्थामे रहय से अभिनयमे नहि रहय। परञ्च पात्र पूरय नहि तँ से करहि पड़य।

ओहि समयमे भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक 'भारत दुर्दशा', मुंशी रघुनन्दन दासक 'मिथिला नाटक' हिन्दीक संग मैथिली नाटक सेहो अभिनीति होइत छल। अभिनीत नाटक सभ तत्काल बड़ लोकप्रियता प्राप्त कयलक। अधिक दिनक अन्तराल होइक तँ चारू दिससँ लोक तगेदा करैत रहथि जे आब फेर कहिया खेलल जेतैक। कोनो पेशेवर कम्पनी तँ छलै नहि जे सब सबदिन जुटले रहथि। जखन कोनो उत्सव–अवकाश होइक तँ सहजहि जुटान भेलापर आयोजन भऽ जाइक।

पहिने तँ ई नवयुवकक क्षणिक उमंग कहल जाइत छल, परञ्च एकर सफलतासँ गामक बूढ़–प्रतिष्ठित, आनो गामक रसिक–सामाजिक लोक एकर प्रदर्शनमे जुटिकऽ आबथि।

गामक सुप्रसिद्ध रईस राधाकान्त बाबू नाट्यपरिषद्‌के आर्थिके सहयोग नहि देथि अपितु स्वयं राति–राति भरि सम्मिलित भऽ, अपने हारमोनियम टेरैत सबके प्रोत्साहित करथि। हमर पिताजीक आशीर्वाद तँ भेटिते छलैक, बंदाक संगीतरसिक रामचरण राय, सरहगामाक नामदेव चौधरी, करिअनक पं० दुःखमोचन झा, बोरज–बन्धार–बलहा–हाँसोपुर–सादीपुर–गाहर–अमरौती आदि आसपासक गाम–परिसरक प्रतिष्ठित लोकक ई आकर्षणक केन्द्र बनि गेल छल।

परिषदक सदस्य लोकनि तेना उत्साहित छला जे सब सोचथि जे एकरा आब तेहन रूप देल जाय, व्यवसायबुद्ध्या नहि, मात्र कलाप्रचारबुद्ध्या, जे जाहिसँ

परिवहन– दैनिक खर्चवहन मात्र लऽ आनोठाम यदाकदा परिभ्रमण करय। ताहिलेल आवश्यक बुझना गेल जे पहिने गामक झूलन आदि उत्सवमे लगातार पक्षभरि अभिनय चलौल जाय आ खर्च बचाय, सामानक पूर्ति कयल जाय।

परञ्च ई योजना सर्वथा असफल रहलैक। पूर्व अनुभवक अभावें लगातार 2–3 खेलक बादे बुझना गेलै जे अव्यवसायी व्यक्ति केओ सकनिहार नहि। थाकनि भिन्ने, निन्नक कमिएँ अगिला दिन खिन्न मने खेलो जमैक नहि। लोको उखड़ैत गेलै। से देखि कार्यक्रम स्थगित करऽ पड़लै। अगिला जोश–खरोश सेहो ठंढा गेलै। क्रमहि ओहिमेसँ जे नवतुरिआ, परी आदि बननिहार गामक बालअभिनेता छल से–सब कते दिन टिकैत ? आन नाटक मण्डलीवला आबि–आबि ओकरा सबकें भजिआकऽ अपना ओतऽ वेतनभोगी बना कऽ लऽ जाइत गेला।

पुनः जुटानमे कमी होइत गेलै। उत्साही सदस्य लोकनि क्रमहि कोनो–कोनो जीवनसंघर्षमे जुड़ैत गेला। एम्हर '32 मे सत्याग्रह आन्दोलन तीव्र होइत गेलै। बीचमे एकाधबेर आयोजितो भेल। परञ्च भूकम्प अबैत–अबैत ई तरुण संस्थाक महत्वाकांक्षाक हवाइ महल जे ढहल से फेर उठल नहि। हँ, गामक विस्मृत धरोहरिमे संस्थाक नामे टा अंकित रहि गेल जे आब क्रमहि विस्मृतिक बाढ़िमे धोआ–पोछा कऽ साफ भऽ रहल अछि।

बल्लीपुर

अपन दालान–दरबाजा आकर्षण–केन्द्र बनबाक अनेक उपादान–कारण छलैक। गाममे पंडिताइक काज चलैक। दिन–मुहूर्त्त देखबाक होइ तँ जोतषिआरेक काज चलैक। कथा–पुराणक चर्चा–वर्चा होइ। संगीतक सङोर छलैक। अखवार पढ़बाक होइक तँ लोक पढ़य वा समाचार बुझय आबय। दैनिक पत्रहुक बिहारमे तँ सहजहि अन्यत्रो हिन्दी धरिमे अभाव छलैक। साप्ताहिकक प्रचार छलैक। प्रथम महायुद्धक कारणे 'युद्धस्य वार्त्ता रम्या च'–युद्धवार्ताक रोचकता बढ़ि रहल छलैक। अपना ओतय, पाटलिपुत्र (पटना), मिथिलामिहिर (दरभंगा), बंगवासी (कलकत्ता), वेंकटेश्वर समाचार (बंबइ)सँ अबैत छल। बासिओ समाचार रोचक बुझना जाइक। युद्धक समाचार सुनी, जर्मनीक केसरक नाम बजै, विदेशी राष्ट्रक नाम कानमे पड़य। हवाइ जहाजक चर्चा युद्धमे शुरू भऽ गेल छलैक। अन्तमे 1918 इ0 मे जखन जर्मनहुँ हारि गेलै तँ तकर समाचार लोक बड़े उल्लाससँ सुनलक। युद्धक बाद देशमे किछु नव सुधार हेतैक से कथा प्रचलित छल।

ओहि 16–17 इ0 मे बम्बइमे प्लेगक भयंकर उपद्रव छलैक। संक्रामक विभीषिका ततेक व्याप्त छलै जे बंबइक वेंकटेश्वर समाचार जखन हथौड़ी डाकघर सँ मंगल–शुक्रक बीटक दिनमे आयल करैक तखन ओकर पैकटकें किछु काल रौदहिमे राखि देल जाइक तखन लोक पढ़य।

किन्तु 1919 इ0 अबैत–अबैत बिहारक अनेक शहरमे प्लेगक उत्पात शुरू भऽ गेल छलै। पटना–मुजफ्फरपुर–दरभंगा–रोसड़ा होइत बल्लीपुर गामहुमे प्लेगक उपद्रव शुरू भेल। लोक गामसँ उपटि दूर बाधमे बसथि। एक टोलसँ दोसर टोलक रस्ता बन्द। हमरा लोकनिक गृहस्थ बबुनन्दन झाक मृत्यु ओही प्लेगमे भऽ गेलनि। हमरा लोकनि कोस–डेढ़ कोस दूर मातृक करिअन पठा देल गेलहुँ। प0 दुःखमोचन झा, जे नामी विद्वान् ओ सह्रदय समाजसेवी छला तनिक आश्रममे तीन मास समय बिताओल। ओतय हुनकासँ संस्कृतक प्रारंभिक रूपावली ओ किछु प्रारंभिक प्रकरण पढ़बो करी। ओना एकर अध्ययन गामहिमे अपन जेठ पित्ती ओ आचार्य गुरु (पं0 रामेश्वर झा)क चटिसारमे आरम्भ कऽ चुकल छलहुँ। अर्थ कम्मे बुझिऐक, हँ शब्द मात्र रटि लैत छलहुँ।

1919क प्लेगक उपद्रवसँ निवृत्त भेलापर गाममे पुनः पूर्ववत् स्थिति भेलै। एहि बीच राधाकान्त बाबू अपन दू पुत्र आ पितिऔत भाइ भोलाबाबू (सूर्यकान्त नारायण चौधरी), बिहारीबाबू (हेमकान्त नारायण चौधरी), गोपीबाबू (गोपीकान्त नारायण चौधरी)कें अंग्रेजी पढ़यबाक हेतु ट्यूटरक व्यवस्था कयलनि। प्रारम्भमे रघुनन्दन लालदास (झंझारपुर), गिरीशचन्द्र प्रसाद (हथौड़ी) आदि अनेक शिक्षककें,ओ उर्दू सिखयबाक हेतु मुन्शी नबजादिक लालकें रखलनि। हमरो लोकनि ओहि ठाम पढ़ी। वयस्थमे हरीन्द्र बाबा (नेहरा), अपना डयोढ़ीसँ वयस्थमे भूषण बाबू–चुन्नीबाबू–राघवेन्द्रबाबू सेहो अंग्रेजी पढ़ब आरम्भ कयलनि, परञ्च किछुए दिनं धरि। छोट वयसक यादवेन्द्रबाबू–रमाकान्तबाबू ओ हम ओतय पढ़य लगलहुँ। हम सबसँ छोट छलहुँ, ओहि तीनू चौधरी परिवारक छायामे पूर्णतः हिलिमिलि गेलहुँ। हुनका लोकनिक संग जलपान जेना नित्य–नियमित भऽ गेल हो।

पढ़बामे सर्वाधिक सुव्यवस्था बाबू चन्द्रनारायण चौधरी (पतैली)क तत्त्वावधानमे भेल। ओहि बीच अपना ओहिठाम धन्वन्तरि सम्मेलनक जे आयोजन प्रारम्भ भेलैक ताहिमे हुनक योगदान प्रमुख छल। एहि उतरवारी खंडसँ विशेष लगाव हुनका दोसर पक्षक दुरावक कारण बनल छल। अथापि हुनक पढ़ाइसँ छात्र ततेक प्रभावित छल जे अव्याहत रूपें सभक श्रद्धा–स्नेहक भाजन रहला। बल्लीपुरक समाङ जकाँ बनि गेला जे पाछाँ हुनक कानूनी पेशामे सहायक सिद्ध भेल।

प्रथम गंगास्नान

ओना आर्यसंस्कृतिमे 'गंगा–गाय–गायत्री' तीन गकारक सर्वोपरि महत्त्व छैक। ओहिमे 'गायत्री' तँ वर्णविशेषक हेतु सीमित अछि। किन्तु गृहस्थक हेतु गायकें माय मानि घर–घर पूजनीय मानल गेल अछि। जनमितहिं जातकर्म होइछ, ओहिमे देवता–पितरक पूजाक बाद गोदान, विवाहक दोसर नाम गोदानविधि कहल

गेल अछि।* अन्तहु कालक विधिमे 'गोदान भऽ गेलनि' कहलासँ वैतरणी विधिक बोध होइछ। यज्ञ उद्यापन कोनो विधान–अनुष्ठान रहओ वा तीर्थ करू, व्रत करू, दक्षिणा दिअ, – जे कोनो धार्मिक कृत्य हो गोदानक महत्त्व सर्वोपरि अछि। परञ्च गोदानक सामर्थ्य जनसाधारणमे सेहो सीमिते। तखन गंगेटा एहन छथि जे 'जनम कृतारथ एकहि सनाने'। डूब दिअऽ, सब पाप–तापकें डुबा दिअऽ, जीवनकें कृतार्थ कऽ लिअऽ। तें एतय जीवनमे एको बेर गंगा नहायब अनिवार्य।

मिथिलामे खासकऽ संस्कारक सर्वोपरि प्रकार गंगावगाहने होइछ। एतय एकटा शब्द प्रचलित अछि 'अगंग'– जे गंगा नहि नहा सकल से अगंग रहि गेल। एहि ठाम एक प्रकारक अभिशाप प्रचलित अछि– 'अगंगे रहि जयता', अर्थात् जीवन भरि गंगा नहयबाक पुण्य अवसर हिनका नहि भेटतनि। एहन अनिवार्य छथि एतय 'गंगा'–तें जहाँ धरि हो, जन्मक बाद जते जल्दी गंगामे डूब दऽ देल जाय से मिथिलामे व्यक्ति–व्यक्तिक पारिवारिक आकांक्षा ओ उत्तरदायित्व होइछ।

हमर पाँचम वर्ष पूर्ण होअबापर छल। मातामहीक कबुला छलनि। ओ जखन हमर मायक संग चौमथघाट कोनो पूर्णिमा स्नान लेल गेलि छली तखन अपन कन्यासँ तीन–तीन दौहित्रीक जन्मक बाद दौहित्रक मुह देखबाक लालसासँ विकल होइत ओहि ठाम आयल गंगादास नामक एक तापससँ पुत्रक कामनामे हमर मायकें आशीर्वाद दिऔलथिन तथा कबुला कयलनि जे बालकक जन्म होयत तँ एतहि मुण्डन स्नान करयबनि।

मात्रिक छल हमर मातृमात्रिक पर–पुरोहितक घरमे करिअन आ पैत्रिक जमीन्दार खानदानमे, पितृ–मात्रिक बल्लीपुर। गामसँ जयबामे किछु विशेष व्यवस्था हेतु खर्चक ब्योंतबाँतक झंझटि। मूड़न एतहि धूमधामसँ भऽ गेल, परञ्च अगंगे। तें हमर मातामही कोनो बहानासँ कबुला पुरयबाक हेतु हमरालोकनिकें करिअन मङबा लेलनि। चौमथघाट ओहि समयमे लोक पैदले जाइत छल। नरहनि–सिंगियाघाट पार करैत दलसिंगसराय–केओटा होइत बाजितपुर–विद्यापतिमठ दर्शन करैत चौमथघाट। नानीक नैहरक सम्बन्धे पौत्र कुलदीप झा हुनक विशेष अपेक्षित छलथिन, किछु औरो अड़ोसक लोक संग छलनि। तीर्थयात्रीक झुण्डे। हम बहुत दूर धरि कुलदीप भाइक कान्हपर, बादमे भारपर, कखनहु बुलितो–दौड़ितो गेल रही। स्त्रीगण लोकनि विशेषतया गंगाक स्तुतिगीत गबैत चलथि। रस्तामे मुक्त आकाशमे, कोनो गाछ वा मन्दिरक परिसरमे सिद्ध–असिद्धक भोजन–भात चलैक। कतहु बाजार–दोकान भेटैक तँ केरा–मधुर सेहो चलैक। मुक्त आकाशमे उड़ैत चिड़इकें जे आनन्द होइत हेतै, बाढ़ि–पानिमे माछ–काछुकें जेना स्फुरंत गति भेटैक, तहिना प्रथम–प्रथम पैदल तीर्थयात्राक शैशव आनन्दानुभव एखनहु बिसरि नहि गेल अछि।

फागुनक मास, सन्तुलित शीत–ताप, दिनमे स्नान कतोक बेर। बालु उड़ैक, खुट्टीपर कपड़ा टाङि नाममात्रक छाँही, रातुक जाड़मे सुटुकिकऽ सूतब। प्राती

---

* 'निवर्त्य गोदानविधिं विधिज्ञः' – कालिदास विवाहकें गोदानविधि कहैत छथि।

भजन, साँझमे गंगाजीक आरती, वेगमे दीप–भसान, गीतनाद, गंगापुत्रक दान–दक्षिणा, संग आयल लोकहिकें नोति ब्राह्मणभोजन। तीन राति तीर्थवास कऽ सब गोटे हँसी–खुसी फिरैत गेलहुँ। अयबाकाल गाम कते दूर ! कते अयलहुँ, कते दूर बाँकी अछि तकर जिज्ञासा करैत, खाइत–पिबैत, घाट–बाट पार करैत कोनो–कोनो दृश्य एखनहु जेना सपनाइत होइ।

करिअन पहुँचलापर दू–तीन दिनक बादे गामसँ लऽ जयबा लेल केओ समाङ अयला। हम सब डेराइत–डेराइत गाम पहुँचलहुँ। परञ्च् सब सञ्च–मञ्च रहल। कबुला पुरबाक कथापर – ककरो कोनो क्षोभ नहि। अगंगक पहिल गंगास्नान स्मरणीय होइछ। ओकर बाद कतोक बेर गंगा नहायल होयब, तीर्थस्नान 'गंगाद्वारे प्रयागे च' कयने होयब, किन्तु चौमथक ओ पथ, विद्यापतिमठक ओ ठट्ठ, गाम–देहातक तीर्थयात्रीक ओ पाँओपैदल स्नानक अभियान अपन भिन्ने स्थान रखैछ।

कथा–रस

नेना अवस्थामे खयबा–पीबाक जे चाह बनल रहैछ, खेल–खेलौना, संगी–साथी, दौड़–धूपक जे उछाह रहैछ ताहिसँ खिस्सा–पिहानी सुनबाक उत्साह कम्म नहि होइछ। मुदा समवयस्क जँ चाही खेलबा लेल तँ बूढ़–बुढ़ानुस चाही कथा–गाथा सुनयबा लेल। जकर कमी ओहि समयमे गाममे नहि छलै। बाबी–नानी, काकी–दीदीक संगहि सर–कुटुम्बक बूढ़ लोक जे आबथि ताहिमे केओ ने केओ कथक्कर होथि, गृहस्थ नोकर–चाकरमे सेहो खिस्सा कहनिहार खिसक्कर सहजहिँ भेटि जाथि। पुरान–महाभारतसँ लऽ, बेतालपचीसी–सिंहासनबतीसीक सारंगा सदावृक्षक प्रेमकथासँ राजा–रानी, वीरबल, हीरामनि तोता, गोनूझाक हास्य, भूत–प्रेत, पशु–पक्षी आदिक कथासँ विस्मय, हास्य, भय भावसँ हमरा लोकनिकें ओतप्रोत कऽ देथि। साँझ पड़ितहि कोनो खिसक्करकें धऽ–पकड़ि, घेरि–बेढ़ि कथा–कहानी सुनबामे नेना सब आबि जुमथि, सुनि–सुनि झूमथि ओ कोनो प्राचीन काल्पनिक लोकमे मनहि–मन रस रस घूमथि। हरिनारायण मामा, महादेव काका, हरिचरण खबास आदिक नाम मोन पड़ैत अछि। स्त्रीकुटुम्बपरिवारमे लाखो दीदी आदि खिस्सा सुनबथि।

पाछाँ अक्षर बाँचऽ आयल, पोथी पढ़ऽ आयल तँ गप्प–सप्पक खरिहान, गोनू विनोद, बीरबल–विनोद आदि पढ़य लगलहुँ। पाछाँ खिस्सा तोता–मैना, बेतालपचीसी, सिंघासनबतीसी, चन्द्रकान्ता आ क्रमहि बंकिमचन्द्र–शरच्चन्द्र–प्रेमचन्द आदिक चाट पड़ैत गेल ओ कथा साहित्यक पाठक बनैत रहलहुँ। पाछाँ विभिन्न भाषाक प्रसिद्ध उपन्यास एवं कथाकारक कथासाहित्य पढ़बाक रुचि विस्तार होइत गेल, जे एखनहुँ थोड़–बहुत चलिते अछि। परञ्च ओहि मौखिक कथाशैलीमे जे राजा–रानी, हीरामनि–तोता, ताल–बेताल, डायन–जोगिन ओ जंगल–झाड़, नदी–नाला, पर्वत–कंदरा, शिकारक प्रसंग अबैत छल – एके संग कथा–गाथा, नीति–दृष्टान्त,

आख्यान–उपाख्यान, व्यंग्यकथा, गप्प–चुटुक्का, भारतीय जीवनपद्धतिकें विविध रूपमे चित्रित–रंजित करैत आयल अछि। पाश्चात्य साहित्यसँ प्रभावित कथा–उपन्यास जाहि रूपमे विकसित होइत आयल हो किन्तु भारतमे संसारक सबसँ प्राचीन साहित्यमे वेद–ब्राह्मण, आरण्यक–उपनिषदसँ प्राप्त कथा तँ कथे साहित्यक विस्तार थीक। कहल जाय जे ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दीमे लिखित गुणाढ्यक पैशाची भाषामे लिखल बृहत्कथा–जकर आगाँ संस्कृतरूप कथासरित्सागर, बृहत् कथामञ्जरी आदि प्रस्तुत भेल। अनुवाद– संवादक्रममे विश्वक विभिन्न देशमे किछु देशकालानुसार रूपपरिवर्त्तने प्रवर्तित भेल। जेना पञ्चतंत्र अरब–इरानक यात्रा करैत इसपकथामे समाहित होइत गेल। तहिना लोकमुखसँ प्रचलित भारतीय लोककथा संसारक विभिन्न कोनमे काने–कान पहुँचैत गेल। भारतीय यायावर (जिप्सी) जकर रूप एखनहुँ मगहिया बखो जाति अवशेष अछि, ओ जकर शाखा यूरोप धरि घुमैछ, कथाकें एक क्षेत्रसँ दोसर क्षेत्रमे पसारलक। टी. बेनेफ. 1859 मे सिद्ध कयलनि जे एहि प्रकारक कथाक मूलाधार भारतीय कथा थीक। लोकसाहित्य **(Folk Lore)** शब्दक उत्पत्ति 1846 मे भेल। डब्ल्यू. जे. टामस (1803) एवं जेकोब ग्रिम (1785–1863), मैक्समूलर (1823–1900), जे. जी. फ्रेजर (1854–1941) आदि एहि शब्दकें अपनौलनि।

जहिना 'सहस्रं सामशाखाः' मे किछु मात्र भेटैछ एवं शास्त्रक विभिन्न मूलसंहिता सब कालक चपेटमे लुप्त भऽ गेल, तहिना देशक बदलैत परिस्थितिमे ग्रामीणतापर नागरिकताक, कृषि जीवनपर उद्योग व्यवसायक प्रभावसँ बहुत किछु लोकसाहित्य विलुप्त भऽ गेल अछि। आब गाममे खिसक्कर–कथक्कर नहि भेटताह। लोककथामे केवल रोचकता–सहजता टा नहि एहिमे युग–युगक लोकजीवन, ओकर संस्कृति–सभ्यता, इतिहासक बिखड़ल–विसरल व्यक्तित्व, क्षेत्रक जीवजन्तु, लता–पादपसँ मानवहृदयक एकात्मता, आचार–व्यवहार, विश्वास धारणा आदिक संग कलाबोधक ओ एक एहन जीवन्त–चलन्त संग्रहालय भेटैत अछि जाहिमे देश–जाति–धर्म–धारणा सब ताकल–हेरल जा सकैछ। से क्रमहि लुप्त भेल जाइछ। आशा–सूत्र एतबे जे एम्हर लोककथाक संग्रहमे किछु रुचि जाग्रत भऽ रहल अछि।

आवश्यक अछि जे एखनहुँ वनवासी, गिरिवासी, घुमन्त–चलन्त अनुसूचित जनजाति एवं प्रजातिक बीच प्रचलित कथा–गाथा सबकें बटोरल जाय, गाम–गमइ, टोल–टापरमे कथक्कर–खिसक्कर जे कतहु बाँचल होथि तनिकासँ मौखिक शैलीमे कथातत्त्व सङोरल जाय। शैशव कालक सुनल ग्राम्य कथा–रस, एखनहुँ देश–देशान्तरक नव–नव रंग–ढंगमे सजल–सजाओल कथा–उपन्यासक तरंगमे बहितहुँ मन ओहि तटदेशमे पहुँचबालेल कखनहुँ कऽ उताहुल भऽ उठैछ। जेना कोनो भावुक विरह–विदग्ध प्रवासीकें विदेशक होटलमे पड़ल अपन भितघर–टटघर ओ बारी–झाड़ीक रमन–चमन मनकें अकस्मात् आकर्षित कऽ लैत हो !

कोइलख

1922 इ0क प्रायः आषाढ़ मास। हमर पूज्य आचार्यगुरु जेठ पित्ती प0 रामेश्वर झा (1870–1923)क श्राद्धमे कौटुम्बिक नोत पुरबाक हेतु कोइलखसँ प0 अनिरुद्ध झा आयल छला। आग्रहवश किछु दिन ओतहि बिलमि गेला। हमर पितासँ हुनक आग्रह भेल जे कोइलखमे हालहि 'भद्रकाली संस्कृत विद्यालय' खुजल अछि, ओतहि एहि बटुककें पढ़बालेल जाय देल जाइन। तदनुसार हम अपन पितिऔत भाय प0 राघवेन्द्र बाबू (1902–62)क संग कोइलख गेलहुँ। राजनगर स्टेशनसँ दू कोस दक्षिण–पूब कोइलख पड़ैत छलै। गामसँ रेल द्वारा प्रायः हमर ई पहिल यात्रा छल, तकर हुलास एखनो मोन पड़ैछ। प्रत्येक स्टेशनक नाम ठेकनबैत छलहुँ। किसनपुर स्टेशन धरि गामसँ सवारीपर अयलहुँ, किन्तु राजनगरसँ कोइलख पैदल गेलहुँ। एते दूर पैदल चलबाक पहिल मौका छल। डेग–डेगपर कते दूर अयलहुँ आ कते दूर बाँचल अछि से पुछारि करैत रहलहुँ – 'कतिचिदेव पदानि गत्वा रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारम्' केर उक्तिक स्वाभाविकताक अनुभव करबाक मौका जेना भेटल हो !

नव स्थानमे पहुँचलापर जे संकोच होइछ, गामक जे स्मृति–मोह होइछ, से किछुए दिनमे हटि–छँटि गेल। अपन समतुरिया भागिनलोकनिक संग दोस–मीत–यार लगाय रमि गेलहुँ। हमर पितिऔत बहिनिक विवाह ओतय छलनि। हुनक आवेश–पात, बहिनोय माधवबाबूक ममत्व ओ सम्पूर्ण सम्मिलित परिवारक स्नेहसँ मनक उचाट बोध नहि होअय। परिवार सहजहिं पैघ, चारि भाइक सखा–पात, ताहूपर अनेक स्थायी–अस्थायी कुटुम्बक जमाव। भोजनक समय मड़वापर चारू दिससँ पाँती जखन लगैक तँ बुझि पड़य भोजभातमे बैसल छी। ओहि समय परिवारक समृद्धि घटल नहि छलैक। आङनमे दूधक नापी चलि रहल अछि, दलानपर भाङक गोला पिसा रहल अछि। माधवबाबूक पनबट्टा दिन भरि खुजल रहैछ, क्यौ आवओ, बाबू–बबुआन वा जन–बोनिहार, सबकें पान–सुपारी आग्रहसँ दऽ रहल छथि। राघवेन्द्रबाबूक संगीत जमल अछि, संगीतप्रेमीक आग्रहसँ जखन–तखन हारमोनियमक संग भजनसँ लऽ गजल–दादरा जमैत अछि। हमरहु आग्रह होइछ। किछु हमर गीत जेना 'पेटेण्ट' भऽ गेल हो, आग्रहें दोहरबैत रहैत छी।

तावत ग्रीष्मावकाशक बाद विद्यालय खुजि गेल छल। 'विद्यारम्भे गुरुः श्रेष्ठः', दिन ठेकनाय, यथादिन जनौ–सुपारी पुस्तकपर चढ़ा लघुकौमुदी पढ़ब प्रारम्भ कयल। अध्यापक छलाह प0 जयसिंहठाकुर। विद्यालयक अन्य छात्रमे मधुपजी सेहो छला, वयसमे किछु जेठ। ओहि समय उपनाम क्यौ नहि रखने छलहुँ। कवि कहयबाक सनक ककरहुपर सबार नहि भेल छल। मन्दिरक पार्श्वमे अपरप्राइमरी स्कूल छलैक, जयदेवबाबूसँ ओतहि परिचय भेल। हरीबाबू बहुत छोट छला। सुशीलबाबू जे बनैली परिवारसँ सम्बद्ध छला – खेलधूपमे सम्मिलित होथि। प0 लुट्टी झाक

भातिज ओ पोष्य पुत्र गुनाइ (गुणानन्द)क माध्यमे प० लुट्टी झाक नित्य होम ओ 'मुरारेस्तृतीयः पन्थाः' कर्मकाण्डक कतिपय विचारसँ परिचित होइत रही। परमेश्वरझा जे हमरालोकनिमे जेठ–श्रेष्ठ छला, कौमुदीक बरहवर्षा प्राचीन अध्ययन–पथक पथिक छला, तनिक गुरुवचन–उत्पीड़नसँ एखनहु प्राचीन शिष्य–परम्पराक विस्मरण नहि भेल अछि। कैथाहीक शिवनन्दनजी ततेक वाग्दूक रहथि जे लोक फँचाड़ि कहि उठैनि। पचाढ़ीक वैदिकजी पढ़य अयला, ओहो वचनदण्डक पात्र भेल करथि।

मन पड़ैत अछि, ओही समय सीताराम झा (चौगमा)क लोकलक्षणक पद्य कोनो विस्मृतनाम सहाध्यायीसँ सुनबामे आयल। रोचकतासँ प्रभावित होइत रहलहुँ। मधुपजी किछु गीत–टुकड़ी जोड़ब प्रायः ओही समयमे शुरू कयने छला।

एक व्यक्ति वेदानन्द बाबू अथवा श्रीनन्दन झा काव्यतीर्थ वा चन्द्रकान्त बाबू एक छोटछीन अनुकरणात्मक नाटक लिखलनि जाहिमे लिखने छला – 'एही बीच हारमोनियम नेने राघवेन्द्र झाक प्रवेश'। एहिना वर्त्तमान व्यक्तिकें निर्देश करैत कोनो नाटक–प्रहसन लिखबाक मनोरञ्जन चलैक।

ओहि समय गोलागोलीक बेस नोकझोक चलैत छल। आक्षेपात्मक काव्यक रचना टोल–टोलसँ लिखि–लिखि बहराइत छल। फगुआक समय एकर विनोद खूब चलैत छलै। कतोक आक्षेपमय रचना चलैक जे ओहि समय 'कुकाव्य' नामसँ प्रचलित छल।

'भद्रकाली विद्यालय' भद्रकाली मन्दिरक परिसरमे चलैत छल। गुरुजी अवकाशमे जाथि तँ प० शिवनन्दन ठाकुर, जे ओहि समय कोनो जिला हाइस्कूलमे कार्यरत छला, जखन गाम अबैत छला, पढ़बय जाथि। प० गिरिजानन्द झा पढ़ि कऽ गाम आयले छला, ओहो कहियो कऽ अवकाशमे स्थानापन्न रूपें पढ़बय जाथि। जहिना गुरुजी द्रुतवक्ता तहिना ओ ठाकुरजी। दोहरा कऽ पुछबोमे भय–संकोच।

ओहि समय गुरुजीक पिता नरसिंह ठाकुर जीवैत छलथिन। हुनक छोट भाय प० श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार असहयोग आन्दोलनसँ प्रभावित छला, खादीधारी रहथि। कलकत्तामे पत्रकारिता दिस झुकाव रहनि। गान्धीजीक विचारधाराक समर्थक। गाम आबथि तँ विचार–चर्चामे गान्धीजीक मतक उल्लेख करथि तँ गुरुजीसँ विवाद भऽ जानि। ओहि समयमे पण्डितलोकनि गान्धीजीक अस्पृश्यता आदि नवीन विचार–धाराक कटु आलोचक रहथि। दुहू भाइक बीच तर्क–वितर्क रोचक ओ उत्तेजक होइत छल। हमरालोकनि विद्यालंकारजीक विचार सुनबाक उत्सुकता राखी, किन्तु गुरुजीक भय–संकोच रहैत छल। तथापि हम हुनक आँखि बचाय श्रीकान्त ठाकुरजीक समीप जाय जिज्ञासापूर्वक हुनक विचार सुनल करी। प० शिवनन्दन ठाकुरक ओतहि पड़ोसमे घर छलनि। ओ मध्यमार्गी छला। गुरुजीक संग शास्त्रीय गप–सप चलनि। दुहू द्रुतभाषी, सावधान भेनहि दुहूक गप्प बुझल जा सकनि।

विद्यालयमे पढ़ब आरम्भ कयल। राघवेन्द्रबाबू से सब देखि आब गाम फिरबालेल उद्यत छला, तावत् घटनावश हुनका रुकय पड़लनि। प० खुद्दी झा ओहि

समय गामहि छला। हुनक जेठ बालक तारादत्तबाबू दुःखित पड़लथिन। ककरो चिकित्सा चलैत छलनि, परञ्च् स्थिति बिगड़िते गेलनि। सहसा एकदिन हुनक दशा अत्यन्त चिन्तनीय भऽ उठलनि, नाड़ीगति मन्द, तन्द्रामे आबि गेल रहथि, घरसँ बाहर करबाक स्थिति। सब घबड़ायल, तावत् केओ कहलकनि जे माधवबाबूक ओतय बल्लीपुरक एक वैद्य आयल छथि, कने देखा तँ लेल जाइन। लगले बजाओल गेला। संगमे किछु रसायन बेर–कुबेर लेल छलनि। ताबड़तोड़ दबाइ देलथिन, होस भेलनि। परिवारमे प्रसन्नता आबि गेल। किछु दिनक भीतर तारादत्तबाबू नीरोग भेला। प० खुद्दी झा अत्यन्त प्रसन्न भऽ विदाइक संग एकटा प्रशंसापत्र अपना हाथें लिखि कहलथिन जे हमरासँ अहाँक विदाइ की होयत ? तखन हम 'वैद्यविद्या–निधि'क उपाधिसँ भूषित कऽ रहल छी, जकर तुलना द्रव्य नहि करत।

ओहि समय कोइलख संस्कृत विद्वानक केन्द्रग्राम छल। प० खुद्दी झा सन प्रसिद्ध वैयाकरण छला–जनिक 'नागेशोक्तिप्रकाश' विद्वन्मण्डलीमे 'शब्देन्दुशेखर'क विलक्षण टीका मान्य छल। यद्यपि ओ 'न पदान्त' सूत्रे धरि छपि सकल। किन्तु ओतबहुसँ हुनक पाण्डित्यक पताका फ़हराइत छल। श्रीनगरक सभापण्डित ओ रमेश्वरलता महाविद्यालयक प्रधानाध्यापक रहि ओ तत्काल कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक व्याख्याता रूपें कार्यरत छला। दोसर प्रसिद्ध पण्डित छला प० लुट्टी झा। हिनक शास्त्रार्थरीति प्रसिद्ध छल। धर्मशास्त्र–कर्मकाण्डमे अपन अद्वितीयता स्थापित करब हुनक झोंक छलनि। ओहि समय म० म० प० बालकृष्ण मिश्रक ख्याति विशेष बढ़ल छल। प० लुट्टी झा मिश्रजीक प्रति अपन चैलेंज खबासक नामसँ प्रश्नावली छपा वितरण करथि। एकर प्रतिक्रियो कम नहि होइत छल। एकबेर कोनो महन्थानसँ खटपट भेलनि तँ एकादशीमे आमिल ओ विष्णुक नैवेद्यमे मांसकें विहित कहैत एक परिपत्र प्रकाशित करौलनि जाहिमे पंण्डितपञ्चानक विरुद्ध प्रकाशित करौने छला। पर्चा सब हिन्दिएमे छपलनि–ओकर जबाबो तहिना पड़नि–'पञ्चानन को मांस के सिवा चाहिए क्या?'

हुनक पोष्यपुत्र गुनाइ (गुणानन्द) हमरालोकनिक संगी रहथि। हुनका पोष्यपुत्र बना अपना ढंगक शिक्षा देथिन। शास्त्रोपाधि तँ ओ नहि प्राप्त कऽ सकला परञ्च् शास्त्रार्थ करबामे निःसंकोच रहथि। प० दुःखमोचन झाक प्रसिद्धि छल कौमुदी पढ़यबामे। ओ कहल करथिन–'कौमुदी यदि नायाति वृथा भाष्ये परिश्रमः। कौमुदी यदि चायाति वृथा भाष्ये परिश्रमः।' हुनका ओतय कौमुदी पढ़बालेल छात्र जुटनि तँ अवश्य, किन्तु सबटा टीकाग्रन्थ ओहीपर पढ़ा देथिन–जे बौद्धिक भार छात्रकें सम्हरै नहि, ओ ग्रन्थ ससरै नहि। परीक्षा तँ चलि पड़ल छलैक– समय निरपेक्ष स्वाध्यायमे छात्रक प्रवृत्ति कम भेल जाइत छलैक तें हुनका ओतय छात्र कम, पण्डिते जिज्ञासा–पूर्त्ति लेल आयल करथि। अतएव हुनक घरपर चटिसारपर चहलपहल कम होइत गेल। एकर अतिरिक्त आचार्य–पण्डितमे विस्तीबाबू (प० विष्णुकान्त झा), गिरिजाबाबू (प० गिरिजानन्द झा) आदि प्रमुख छलाह। सतरंजक खेलाड़ीमे कार्त्तिकेयबाबू

प्रसिद्ध छलाह।

कोइलखक पुबारि–उतरबारि कोनक एक छोरपर रहैत छलहुँ ओ गामक दक्षिण–पश्चिम कोणमे स्थित भद्रकाली स्थानमे विद्यालय छल। पूरा दू मील गेल–आयल करी। पहिने दुरूह बुझि पड़य, पाछाँ अभ्यस्त भऽ गेलहुँ। कहियो दछिनबारि–पछबारि टोल होइत, कहियो मध्य टोल दछिनबारि टोल होइत जाइ–आबी। बेसी समय यातायातेमे जाय। गामपरक समय दिन भरि कोलाहली वातावरणमे बीतय। रातिमे किछु समय पढ़ल करी। लालटेमक चालि कम। अपन डिबिया रखने रही। हिनके लोकनिक संग रहि पढ़ी। तत्कालीन फाइनल परीक्षा देने व्रजनाथ झा (बिरजू जी) छला जे हिन्दीक शिक्षक छला। ओ अधिककाल हिन्दीमे गपसप करथि। ओहि समय धानुक–केओट क्यो पढ़ैत नहि छल। ओझाजीक खबासमे तुलसी खवास छला जे मिड्लमे पढ़ैत छला। हमरालोकनिक पूर्ण संगतमे रहथि।

बुचरूबाबू माधवबाबूक दोसर पक्षसँ जेठ बालक। वयसमे हमरासँ 5–6 वर्ष जेठ। घर–गृहस्थी काजमे दक्ष। हुनक मृत्यु असाधारण स्थितिमे भेलनि। मृत्युसँ सात दिन पूर्व ओ अपन कलमबागमे वाह्यभूमि गेल करथि। गाछिएमे शवदाहक प्रथा छलै। ओ एक चिताक धिमकापर एक कन्याकें बैसल देखलनि। ओ हिनक परिचित अपने असामी एक तेलिक कन्या छलि जकर मृत्यु किछु मास पूर्व भऽ गेल छलै जकर चर्च ई कयल करथि। तकरा देखि ई चौंकि उठला। ओ हिनका देखि हँसि देलकनि। ई डरे कँपैत गामपर अयला। पिताकें सब समाचार कहलनि। लगले ताप–शिरोवेदना नेने ओछैनपर पड़ला से फेर उठला नहि। बेहोसीमे ओ बीच–बीचमे हँसैत रहथि, हट–हट जो–जो कहि जेना डरे ककरो फटकारैत रहथि। जप–पाठ, झाड़–फूक आदिक प्रयोग चलैत रहल। किन्तु ओ पुनः आँखि नहि फोललनि। प्रेतदर्शन जन्य मृत्युक ई घटना बहुत विह्वल कयने रहल।

ओहि समय धरि संस्कृत पढ़निहार की तँ व्याकरण पढ़य अथवा ज्योतिष। ज्योतिष अर्थकरी विद्या बुझल जाइत छल। समाजसँ सम्पर्क सेहो ज्योतिषेक माध्यमसँ बहुधा होइत छलै। दिन तकयबामे जनउ–सुपारीक संग श्रद्धा द्रव्यक प्रथा प्रचलित छलै। मिथिलामे बिचला किछु शतक सर्वाधिक ज्योतिषी–धर्मशास्त्रीकें उपजबैत रहल। कोइलखक दैवज्ञशिरोमणि अपूछ झाक पूछ सबतरि छल, जे स्वर्गीय भऽ गेल छला। ज्येतिषी बबुआजी मिश्रक ओहि समयमे प्रतिष्ठा छलनि।

वैयाकरण पण्डितकें उपनयन–श्राद्धमे नोत–विदाइ भेटल करनि। पतिया कटबामे शुल्क भेटनि जे क्रमहि कमैत गेल। न्याय पढ़बाक प्रथा कम भेल जाइत छलै। तथापि मुक्तावली–सिद्धान्तलक्षण आदिक अध्ययन व्याकरणो पढ़निहार अनिवार्य बुझथि। कोइलखमे बहुतो व्यक्ति एहनो छला जे न्याय पढ़बालेल नवद्वीप भऽ आयल रहथि। हमर पूर्वोक्त अनिरुद्ध बाबू नवद्वीपसँ न्याय नव्यन्याय पढ़ि आयल रहथि। अवच्छेदकता–प्रकारताक लच्छा एकाधबेर हुनकहु मुहें सुनि चुकल रही। परञ्च पठन–पाठनक अभ्यास छुटि गेल छलनि। ओ 'पक्षे वैयाकरणाः तदर्धे नैयायिकाः' –

विसरबाक हेतु वर्षक वर्ष कम नहि कहल जायत। से स्थिति नैयायिककें शुरू छलनि। जे अध्यापनकार्यमे नहि होथि, कोनो दरबार नहि गहथि–हुनक सरस्वती प्रच्छन्नवाहिनी मानल जाथि। तथापि संस्कृत जे पढ़ि लेथि तनिके लोकनिकें पण्डित–विद्वानमे मोजर होनि। अंगेजी पढ़निहारक आदर तँ होनि किन्तु विद्वानमे गणना नहि। एकर अतिरिक्त अंगेजी शिक्षाक प्रवृत्ति बढ़ि रहल छलै। बनैली–श्रीनगर–चम्पानगर–रजौर–सिंहबाड़–हरिपुर आदिक सम्बन्ध–बन्धसँ अमीरलोकनिक धीयापूताक देखादेखी हुनक कौटुम्बिक परिवारवर्गमे अंग्रेजी पढ़निहारक संख्या बढ़ि रहल छल। इन्द्रनाथबाबू – पीताम्बरबाबू– गोनूबाबू–यदूबाबू (यदुनाथ झा, जे बल्लीपुरसँ सम्बद्ध छला)– काशीनाथबाबू–तारानाथबाबू आदि ओहि समयमे अन्यान्य विद्वान् एवं प्रतिष्ठित व्यक्तिमे गणनीय छला।

समाज–सम्पर्कीमे पञ्जीकार लोकनिक सम्मान विशेष देखना जाइत छल। ओहि समयमे बबुए मिश्र, लक्ष्मीकान्त मिश्र (डोमाइ मिश्र) प्रभृति पञ्जीकारक आदर विशेष देखैत छलहुँ। गपसपमे सबतरि पञ्जीबद्ध–कुलक चर्चा विशेष देखना जाइत छल। पण्डितोसँ बेसी समाजमे उच्च पञ्जीबद्धक सम्मान छल।

ओहि समय स्कूलमे शिक्षक छला घनानन्द झा। ओ हमरालोकनिक बीच डेरापर भोरमे गुरुजीसँ संस्कृत पढ़य आबथि तथा पञ्जीक कुलमूलक अनुसन्धान करथि। पाछाँ हुनक पुस्तक 'घटकराज' प्रकाशितो भेल।

कोइलखक ग्रामदेवता भद्रकाली। रातिमे टोल–टोलसँ नियमवान नैष्ठिक हाथमे लालटेम नेने भगवती मन्दिरपर दर्शन हेतु जाथि। बहुतो नैष्ठिक ग्रामीण नियमतः प्रतिदिन भगवतीस्थानमे दर्शन करय जाथि। मैथिल अधिकांशतः 'अन्तः शाक्ताः'।

'शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी'क अनुसार शारदीय पूजा महोत्सवक समय सम्पूर्ण गाममे उल्लासक वातावरण। कोइलखदेवीक सामूहिक पूजा टोल–टोलसँ बेहरी लगाय विधानपूर्वक आयोजित होइत छल। स्फुट रूपें घर–घरसँ फूल–पान–धूप–दीप–प्रसाद सेहो पहुँचौल जाय। कुमारि भोजन कराओल जाय। गीतनाद, वाद्य–संगीत–नृत्यक प्रबन्ध साधारण रहैक। बेसी पूजाक कर्मकाण्डे, पूजापाठ, होम आदिक सरंजाम। महाष्टमी ओ महानवमीमे कबुलापाती बलिदानक स[illegible]र पुष्कल रूपें। एक दिन बलिदानक दृश्य देखि वैष्णवहृदय कम्पित भऽ उठल। सहसा किछु एहन चीत्कार कऽ उठलहुँ जे लोक चौकि उठल। मन घुमि गेल छल, गामपर कहुना फिरलहुँ।

जलसा देखबालेल दशमीमे लोक राजनगर जाथि। एक दिन हमरोलोकनि गेल छलहुँ, राजभवनक दुर्गामन्दिर आदिक दृश्य चामत्कारिक लागल।

ओहि समयमे घर–घरमे जतेक उपनीत व्यक्ति रहथि, से पूजासनपर अवश्य बैसथि। स्त्रीगण आसन ओछाय, फूल–बेलपात, धूप–दीप, पार्थिव शिवलिंग बनाय, केराक पात सजाय राखथि। स्नान कऽ सबेरे आसनपर बैसि पाठ कयल करथि।

हमरोलोकनि पूजापाठ सम्पन्न करी। ओ दृश्य एखनहुँ स्मरण कऽ पुलकित भऽ जाइत छी।

गामक अन्यान्य पाबनि–तिहारमे स्मरण भऽ अबैछ मेषसंक्रान्तिक पर्व। सतुआनिक प्रात जूड़शीतलमे गाम–गाममे शिकारक होड़ मचैत छल। बहुतो ठाम तँ उत्तेजनामे मारिपीट मामूली बात छल। फगुआ–धुरखेलि आ जूड़शीतलक माटिकादोमे कखनहु मामिलो–मोकदमाक नौबति अबैत छलैक। मेषसंक्रान्तिसँ अक्षय तृतीया धरि गामक बहुतो सम्पन्न परिवार लोककें हकारि कऽ श्रीखण्ड चन्दनक लेप ओ शर्बत, कतहु भाङक जलसा कयल करथि। लोक–सम्मेलनक ग्रामीण उल्लास देखबा योग्य।

पहिल–पहिल गेलहुँ तँ गामक एक महफिल देखल। प्रायः उपनयनक अवसर रहैक। चुल्हाइ ठाकुर सम्पन्न गृहस्थ। हुनक बालक बलदेव ठाकुरक जोरें वेश्यानृत्यक आयोजन छल। ओहि समय महफिलमे प्रकाशक हेतु मसाल जरै छल। सामियानाक बाहर बगलमे गोंइठाकें मटियातेलसँ भिजाय गोंइठाक टुकड़ी चुट्टासँ उठाकऽ मसालची मसाल जराबय। ओही प्रकाशमे नाच आदि चलैक। बक्शीश देबाक प्रसंग देखल जे नटुआ वा नचनिहारिक माथपर रसिक सब टाका साटि देल करथि। खुदरा नोटक चलती नहि भेल छलैक। वृद्ध लोकनिमे एकर आलोचनो होइक।

सामान्यतः कीर्त्तनिञाँ नाच वा नारदी संगीतक चलनि छल। 'पारिजातहरण'क अभिनय ओतय देखल, घोड़ापर असवार पुरन्दर, बाँसक कमचीक घोड़ाक आकारपर नचैत–कुदैत दृश्य देखौल जाइत छल। मञ्च नहि, लोकक गोल बीच नाच–नाटक जे कही, आयोजित होइत छल।

कोइलखक जाहि कौटुम्बिक परिवारमे रहैत छलहुँ ताहि प्रसंग किछु उल्लेख स्वाभाविक। बहिनोय माधवबाबू चारि भाइ छला, क्रमहि सुवंश झा, अनिरुद्ध झा, माधव झा ओ जयकान्त झा। हुनक पितामह म0 म0 कृष्णदत्त झाकें नेपाल महाराजसँ बह्मोत्तर विरतामे चनहा मौजे भेटल छलनि, रकबा नेपाली 200 बीघा, जे एहि ठामक बीघासँ ठामहि दुन्ना लग्गाक नापें। भूमि उपजाउ। व्यवस्था लेल ओतय कचहरी बन्हने छला। गाड़ीक गाड़ी अन्न गाम अबनि। कोइलखक सुखी परिवारमे गनल जाथि। हुनक पित्ती महन्थ झा, जनिका कोनो सन्तान नहि, बड़ उदार स्वभावक, सदावर्ती कहल जाथि। ओहि समय अमीर हफीमी भैए जाथि। कुटुम्ब–अतिथि– अभ्यागतमे खर्च करैत, जयबारी भोज–भात, काज–तिहारमे मुक्तहस्त भेने ऋण लगौनिहार क्रमहि ऋणियाँ भऽ गेला। नेपा' क एक तेलि महाजनसँ कर्ज लैत गेला, अन्तमे आधा जमीन बिका गेलनि। बहुत पहिने महन्थ झाक मृत्यु भऽ गेल छलनि। हमरालोकनि जहिया गेल रही, हुनक वृद्धा विधवा जीवित छलथिन। साहखर्ची तखनहु घरसँ छुटल नहि छलनि। माधवबाबू पानक अभ्यासी, तीनू भाइ अफीम खेनिहार, अफीमीकें गोरसक सेवन अनिवार्य। एहू समयमे दूधक कड़ाह

चढ़ले रहै छल। दोस्त–मित्र पाहुन–परकक जुटान चलिते छल। किछु छात्रोक निर्वहन होइत छल। जेठ–श्रेष्ठ रोआबी सुवंशबाबूक डेरा चनहा मौजेमे, मधुबनीमे परिवारक धियापूता देवीबाबू, श्यामबाबू, लीलूबाबू पढ़ैत छलथिन, किछु आनो विद्यार्थीक जमाव रहैत छलनि। प्रसिद्ध मोख्तार अनूपलाल ठाकुरक बगलेमे हिनक डेरा की होस्टलक मेसे चलैत छल। चनहासँ जाड़ मासमे सबकें जड़ाउर अबै, दोहरि चादरि, परिवारे नहि स्थायी पाहुनोपरककें।

खर्च बहुल, पूर्वक आमदनी क्रमहि कमले जाइत। मामिला–मोकदमा महाजनसँ चलैत। मामिलापर मामिला लऽ कऽ फरिछयबाक स्थानमे पैरवीसँ आरो धकिअयबेक स्थिति।

छोट भाइ जयकान्तबाबूकें तन्त्र–मन्त्र, अनुष्ठान–पातक बेसी आवेश। मठ–मन्दिरपर अनुष्ठानक झोंक। आतृव्य ओ अभियोग–विजय हेतु ओ उच्चाटन–वशीकरण आदिक अनुष्ठान आरम्भ कयने छला। बेलपात परसँ फलाहार पर आबि गेल छला। हुनक फलाहारी चौका फराके छल – कखनो घृत ओ केरा–सोहारी ओ फल–मूल गोनरू (नेपाली सुखौती)क स्वाद हमरहु सबकें प्राप्त हो। संगीतक ओहो प्रिय, तें हमरा लोकनि हुनक स्नेहक भाजन। ओ कखनहु कऽ नेपाली रामायण पढ़थि। माधवबाबू दलानसँ कलमबाग धरि, बाट–घाटसँ खेत–पथार धरि जनोबोनिहारकें पानक बीड़ा खोऔनहि। लोकप्रियतो बेस छलनि। जेठ भाइ सुवंशबाबू मामिलाती, अनिरुद्ध बाबू नैयायिक, माधवबाबू तिरहुता टा लिखऽ जानथि, किछु व्यावहारिक बेसी। जयकान्तबाबू उग्र तांत्रिक।

नेना ओ बूढ़मे जतेक अवस्थाक अन्तर ततेक बात–व्यवस्थामे नहि। दू एक बूढ़ एहन भेटथि जे बड़े आवेशसँ गप सुनथि–सुनबथि। हुनके लोकनिसँ बुझना गेल जे पचास–साठि वर्ष पहिने कोइलखक लोक नोन कीनय रोसड़ा जाथि। नोन बड़ दुर्लभ छलै। पाछाँ प्रेमचन्दजीक 'नमक का दारोगा' पढ़ल तखन वस्तुस्थिति बुझबा योग्य भेल।

परिवार विशाल, हमरालोकनि आङनक बीच मड़बापर भोजन करी तँ चारू कात पाँति लागि जाय, छोटछीन भोजे चलैक। विरजूबाबू (व्रजनाथ झा)कें पढ़बाक खर्च भेटनि। ओहि समयक फाइनल परीक्षा जे मिड्लक बाद तीन वर्ष ट्रेनिंग देल जाइत छल, प्राप्त कऽ ओ हिन्दीक शिक्षक गामहिमे नियुक्त भेला। ओ अधिककाल हिन्दीमे बाजथि। दोसर छात्र तुलसी कामति छला जे पाछाँ लगेक कोनो गाम–टोलमे प्राइमरी स्कूलमे शिक्षक भेल रहथि।

एही परिवार संग जनकपुरक प्रथम यात्रा कयने छलहुँ। प्रायः रामनवमीक मेला छलै। कोइलखसँ राजनगर होइत जयनगर उतरि पैदल तीर्थयात्रा छल। रेल लाइन ओहि समय तैयार नहि भेल छलै।

एकबेर ओतहिसँ पैदले कुशेश्वरस्थानक यात्रा कयने छलहुँ। परिवारक अधिकांश लोक गेल रहथिन। बैलगाड़ी रसद लऽ कऽ गेल छल, किन्तु यात्रा पैदल

छल। ओहि समय धरि द्विजवर्गमे बैलगाड़ीपर चढ़ब सर्वथा वर्जित छल।

किरणजीसँ ओही परिवारमे भेट भेल। हुनक जेठ भाइ काशीनाथ झाक विवाह अनिरुद्धबाबूक जेठि कन्या यमुना दाइसँ। काशीबाबू प्रतिभावान। हुनक गपसँ प्रभावित होइत रही। किरणजी भाउजिसँ भेंट करय आबथि। तेजस्वी मुखमण्डल, वार्तालापमे प्रौढ़, हुनक परिचय आह्लादक भेल। शैशवक स्नेह जेना आगाँक प्रगाढ़–सहकर्मिता ओ सम्बन्ध–बन्धक बीजारोपण भऽ गेल हो। पाछाँ कोइलखहिमे हुनक विवाहो भेलनि।

अनिरुद्धबाबू प्रशंसकक प्रति अति सौहार्द राखथि। उदारतो देखाबथि। प्रसिद्ध अछि जे नदियामे छात्र–समुदायक बीच खरीद–फरोख्तमे अग्रसर बनौल जाथि। अपनो दिससँ टाका लगाय सस्त किनबाक प्रशस्ति पाबथि। ओ नदिया–बंगालक रहनि–सहनि सुनाबथि। बंग–समाजसँ परिचय रहनि। कृत्तिवास–रामायण, काशीनाथक महाभारतक चर्चा ओतहि सुनल। देवीबाबू बेसी पढ़ि नहि सकला, किन्तु व्यवहारी, मिलनसार, उदार। समवयस्क सब धाख करनि। श्यामबाबू पढ़नुक, मुदा असहयोग आन्दोलनमे पढ़ब छोड़लनि। नीलूबाबू–चन्दरबाबू घनिष्ठ मित्र रहथि, बेसीकाल स्कूली जीवनक चर्चा करथि, कमलबाबू समतुरिया। औरो अनेक टोल–पड़ोसक संगी बनि गेल रहथि। कखनो दोस्तीमे सुस्ती सेहो देखबी– 'मुझ पै अहसाँ होती जो न अहसाँ करते' सन भावना भऽ जाय। परञ्च फेर ओही सब लेल उत्सुक भऽ उठी –

'जिसको छोड़ चले फिर उसे खोजता हूँ।
आग से जलके फिर आग से लगा हूँ।'

हमरा सब दुद्धा वैष्णव। माछ–मांसक नाम सुनिते भड़कि उठी। कोइलखक परिवार 'जम्बीर रसपरिपूरित मत्स्यखण्डे'मे अमृत चरवनिहार। मुश्किल छल, डेग–डेगपर वैष्णवकें शाक्त बनैबाक गप्प–सरक्का सुनी। परञ्च वास्तवमे ताहि हेतु क्यो कठोर नहि बनला। हमरालोकनि नियममे कठोरतासँ रही। भोज–भातमे हठात् सम्मिलित नहि होइ।

संगीतक कारणे हम दुनू भाइ जे कोनो सभा–समिति होइ ताहिमे स्वागत–मंगल हेतु बजाओल जाइ। एकबेर मधुबनी डेरापर बजाओल गेलहुँ। छात्र–समुदायक दिससँ बाबू अनूपलाल ठाकुरक सदर मकानमे सरस्वतीपूजाक आयोजन छल। सुशीलबाबू, शिवशंकरबाबू, मधुबनीक नामी ओकील छला। वाटसन स्कूलक हेडमास्टरक नाम बजैत छल। देवीबाबू लोकनि ओतहि पढ़ैत छला। शिवशंकरबाबूक दुहू बालक जगदीशबाबू ओ चन्दरबाबू (चन्द्रशेखरबाबू) तेजस्वी छात्रमे गनल जाइत छला। हुनका लोकनिसँ परिचय भेल। मधुबनीमे किछु चिन्हार होइत गेलहुँ। ओही बीच असहयोग आन्दोलनमे खादी–प्रचारक प्रसंग गान्धीजीक बालक रामदास गान्धी आयल छला। बाबू चतुरानन दास, धनराज शर्मा प्रसिद्ध स्थानीय नेता छला। ओतहु सभामे स्वागत एवं राष्ट्रिय गानक हेतु जाइत छलहुँ। ओहि समयमे सभा–समितिक

सिलसिला बढ़ि रहल छलै। सम्पूर्ण देशक संग मिथिलो प्रभावित होइत गेल। प्रारम्भमे गान्धीजीक धार्मिक समाजमे जे कने आलोचना कतहु सुनबामे अबैत छल से आब एक दैवीशक्ति सम्पन्न व्यक्तिरूपमे दिनानुदिन चर्चित–अर्चित भऽ रहल छला। मिथिलामे चर्खा–कर्घाक केन्द्र मुख्यतः मधुबनी बनि रहल छल।

परीक्षाक समय आबि गेलैक। परीक्षा–केन्द्र नार्थब्रुक जिला स्कूल छल। दरभंगामे प्लेगक किछु उपद्रव छलै। रायसाहेब पोखरिक दछिनवारि कात साहुजी (वर्त्तमान सत्यनारायणजीक पिता)क कच्चा दोमहलापर हमरालोकनिक डेरा छल। प्रायः सब विद्यार्थी मिलाकऽ किछु टाका जयबा काल भाड़ामे देल गेल छल। कदाचित् गोटेक टाका हमरहु लागल हो।

परीक्षाक पहिल अनुभव छल। हम लघुवयस्क, छोट आकार–प्रकारक। मन पड़ैत अछि, बैंचपर बैसि डेस्कपर लिखब नहि ओरिआइत छल तें बेसी काल ठाढ़े भऽ कऽ लिखलहुँ। परीक्षा सम्पन्न भेलापर गाम अयलहुँ, मास डेढ़ेक बाद रिजल्ट बहरायल। मिथिला–मिहिरमे रिजल्ट छपैत छलैक। अपन नाम प्रथम श्रेणीमे ऊपरहि छपल छल। पाछाँ खबरि भेटल जे स्कालरशिप सेहो भेटल अछि।

तकर बाद कोइलख पुनः गेलहुँ। कौमुदी पढ़ब ओतहि प्रारम्भ कयल। प्रायः पञ्चसन्धि धरि ओतय पढ़ि सकलहुँ। बीचमे अगिलग्गीक प्रकाणमे गाम जे छलहुँ से पुनः ओतय नहि जा सकलहुँ।

बादमे कोइलख–परिवारक आर्थिक स्थिति निम्नाभिमुखे होइत गेलै। संयुक्त परिवारक जे परम्परा छल से पाछाँ छिन्न–भिन्न भऽ गेल। बाँट–बखरासँ बासक जे विशाल परिसर छल से टुकड़ा–टुकड़ीमे कटि–छँटि गेल। सौमनस्यो नहि रहि सकल। व्यवहारक नेहसँ हमर पितिऔत बहिनि अपन नैहरे चल अयली। अपन जन्मौटी बालक सतीशचन्द्र (जनिका हमसब सम्बन्धिक बिनोदें महन्थ बाबू कहैत छियनि)क संग एतय रहय लगली। हुनक शिक्षा–दीक्षा–नियोजन एतहि भेलनि। पैतृक सम्पत्तियो नहि लेलनि। ओकर बाद हमरा सबहिक सम्पर्क सूत्र टूटि गेल। अथापि कोइलखक मधुर स्मृति जोगौने आयल छी। कोइलखक कोनो व्यक्तिकें देखि हृदय स्निग्ध भऽ उठैछ। बादमे कोइलखक प्रति स्नेह प्रकीर्णशतकमे व्यक्त कयलहुँ–'गाम सहस लख कोइलख' इत्यादि।

पटना

हमर पूज्य पितृव्य प0 तेजनारायण झा व्याकरणतीर्थ म0 म0 हरिहरकृपालु द्विवेदीक प्रिय ओ तेजस्वी शिष्य छलाह। हुनक गुरुभक्ति असीम छल। अपन ग्रन्थ सबमे देववन्दनाक बाद हुनक गुरुवन्दनाक श्लोक एकर प्रमाण अछि।

महामहोपाध्यायजी पटनामे रामनिरञ्जनदास मुरारका संस्कृत विद्यालयक प्रधानाध्यापक छला। हुनक अध्यापनक ख्याति ततेक छल जे काशी जकाँ पटना

संस्कृत–शिक्षणक केन्द्र बनि गेल छल। हमर माम प0 दुःखमोचन झा (करिअन), शोकहरा–बरौनीक संस्कृत केन्द्रक प0 वासुदेव झा, प0 कृष्णदत्त ठाकुर (बल्लीपुर), बहेड़ीक प0 नचारी झा, पञ्चोभक प0 पलटू झा, प0 नन्दलाल झा प्रभृति तत्कालीन मिथिलाक अनेको विद्वान् हुनक तत्कालीन शिष्य–परम्परामे ख्यात भेल छथि। हमर पिता हुनक प्रियपात्र छलथिन। प्रेमाग्रहवश महामहोपाध्यायजी अनेक बेर प्रवचनक हेतु बल्लीपुर आयल छला। ओहि इलाकामे हुनक शिष्य–समुदायक संख्या विशेष छल।

कोइलखसँ परीक्षोत्तीर्ण भेलापर गाम जे अयलहुँ से बहुत दिन धरि गामहि रहि गेलहुँ। पाछाँ आगामी शिक्षा की हो, अंग्रेजी–शिक्षा ली अथवा कुलक्रमागत संस्कृत शिक्षा प्राप्त करी तकर विचारमे अभिभावक छलाहे, तावत् गामक प्रसिद्ध जमीन्दार एवं उदार शिक्षाप्रेमी बाबू राधाकान्त नारायण चौधरी अपन ककरौड़वासी बहिनोयकें शिक्षा देअयबाक हेतु पटना मुरारका विद्यालयमे पठयबाक निश्चय कयलनि। ओ हमर पिताकें (जे हुनका संगीत–कलाक शिक्षा देने छलथिन) आग्रह कयलथिन जे बटुककें ओतहि पठाओल जाइन। संस्कृतसँ आकर्षण ओ महामहोपा–ध्यायजीक प्राप्त कृपाक बल बुझि ओतहि पढ़बाक व्यवस्था कयलनि। हमरालोकनिक प्रारम्भिक शिक्षाक वरिष्ठ संगी स्व0 भोलाबाबूक माय, जनिका हमसब पिलखबाड़बाली कहि सम्बोधित करैत छलियनि, ओ जनिक अशेष स्नेह–साहाय्य प्राप्त छल, हुनकहु प्रेरणा एहि हेतु विशेष छल। जमाय बूटन झा (चकौती)क सेहो अनुयोग छल। तात्कालिक अभिभांवक रूपें राघवेन्द्रबाबू जे बड़का बौआ कहि सम्बोधित छला, से संग पहुँचाबय गेला। किछु दिन पूर्व ओ ओतहि अपन स्व0 पित्ती तेजबाबूक संग शिक्षा प्रारम्भ सेहो कयने छला। किछु दिन धरि ओतहि जा स्थिरता हो पहुँचावय गेल छला, मुदा मन तेना लागि गेलनि जे ओ पुनः ओतहि रहि आगाँक शिक्षाक्रम स्वयं जारी करयमे रहि गेला। हुनक व्यक्तित्वक आकर्षण छल जे ओ जतय जाथि अपन संगीत ओ चिकित्साक यशस्वितासँ लगले लोकप्रिय भऽ जाथि। मित्रमण्डली जुटि जाइन ओ ओतहि रहबाक आग्रही भऽ जाथि।

अस्तु, ओहिठाम हमरालोकनि विद्यालयक समीपे मिचाइगञ्जमे प0 बिहारीलालक ओतय बासा कयल। बिहारीलालक यातायात बल्लीपुरमे छलनि। हमर पिताक छोट ममिऔत बाबू गोपालजी चौधरीसँ हुनका अत्यन्त अपेक्षा ओ नोत–हकारक व्यवहार। ओ हमरालोकनिक रहबाक सब व्यवस्था कऽ देलनि। विद्यालयसँ छात्रवृत्तिक व्यवस्था दुहू भाइक हेतु भऽ गेल। आँटा–दालि–चाउर ओ किछु नगदो गनल–गुथल छात्रकें विद्यालय दिससँ भेटैत छलै। शेष खर्च गाम–घरसँ। निश्चिन्त भऽ अध्ययन आरम्भ कयल।

कौमुदीक अध्ययन तँ कोइलखेमे आरम्भ कयने छलहुँ। एतय स्मरण अछि, प्रातिपदिक सूत्रसँ महामहोपाध्यायजी प्रारम्भ कऽ देलनि। ओ कहलनि जे हम तँ टीका ग्रन्थ पढ़बैत छी, कखनहुँ आबि सुनि लेल करू। किन्तु बाबा (आत्मज ब्रह्मदत्त

द्विवेद्वी जे आचार्यक अन्तिम खण्डमे परीक्ष्य छला) अहाँकें नियमित पाठ देल करता। सैह भेल करय, व्याकरण हुनकासँ पढ़ल करी। ओहि समय हुनक भातिज प0 श्रीकान्त द्विवेद्वी साहित्याचार्यक परीक्षार्थी छला, महामहोपाध्यायजीसँ नैषध पढ़ैत छला। कखनहु पाठ सुनबाक अवसर प्राप्त करी तँ बड़ रुचिकर प्रतीत हो। निम्नकक्षक छात्र रहितो रस लेल करी। समय 24 इ0क छल, हमर वयस 13–14क छल। ओहिठाम हिन्दी कविक चर्चा सेहो भेल करै–सरस्वती–प्रभा–मतवाला–माधुरीक चलती छलै। पन्त–निरालाक उठान छल, मैथिलीशरणक कविताक रुझान छल। द्विवेदीजीक सम्पादकत्वमे काव्य–संग्रह 'कविता–कलाप'क धूम छल। एक दिन श्रीकान्त बाबा पुस्तक नेने विद्यालय पहुँचला। हुनक मण्डलीक एक साहित्यिक छात्र कवितेमे जिज्ञासा कयलथिन – 'कविता कलाप आप लाये केहि ठौर से'। ओहो तत्काले पद्येमे जबाब देलथिन – 'कविजी, आप छापेपर पढ़लें यह गौर से'। एहि प्रकारक गप्पोसप्पमे तुक केर टुक सुनैत छलहुँ।

मर्चाइगंजक डेरा गंगा–घाटसँ समीपे छल। प्रातः गंगास्नान चलैत छल। भोरमे आवृत्ति, पुनः भानस–भात मिलि–जुलि कऽ करैत जाइत छलहुँ। प्रायः आना मासपर दाइ वर्त्तन–बासन माँजि दैत छल। पनिभर फराक छल जे आठ आना मासपर घैल भरि गंगाजल अनैत छल। डेरामे कूपो छलै मुदा ओकर पानि नोनछराइन। तें गंगाजलेक व्यवहार खान–पानमे चलैत छल। दससँ चारि बजे धरि विद्यालय। किछु पाठ पढ़ी, किछु सुनी, शेष समय लगपासक पुस्तकालय– वाचनालयमे जाकऽ कखनहुँ पत्र वा कोनो मनलग्गू किताब उनटा–पनटा ली। साँझमे निरुद्देश्य सड़क धऽ किछु दूर धरि ककरो संग वा एकसरो घूमि आबी। गोटेक पाइमे प्रायः आधपाओ भूजा भेटि जाय, जलपान कऽ ली। कहियो पाँच पाइमे आधपाओ किसमिस जेबीमे लऽ ली, खाइत–खाइत घूमल करी। ओहि समय पटनामे 'चनाजोर गरम'क बेस फकड़ा–तुक्का चलैत छलै, ठाढ़ भऽ कऽ सुनय लागी। पाइमे प्रायः दू गोट पुड़िया–पुटका कीनि ली। घूमिफिरि सन्ध्यामे लालटेम लेसि पढ़ल करी। ओहि समय पटनासीटीमे बिजली नहि लागल छलै। बाँकीपुरमे हाइकोर्ट तँ बनि गेल छलै, ओतय मकान ओ बिजली देखय विद्यार्थी लोकनिक हेड़मे गेल छलहुँ। पहिले पहिल हवाइजहाज सेहो पटनेमे देखल। मकरसंक्रान्ति छलै, लोकसब छतपर चढ़ि– चढ़ि देखैत छल। ओहि समय धरि अपना भागमे कतहु बस–लॉरी वा ट्रक नहि दौड़ैत छलै, पटनेमे बस–लॉरी देखल, ओतहु ओहि समयमे थोड़ संख्यामे चलैत छलै। रिक्साक चलनि नहिए छलै। पटनिआ टमटम नामी, सर्वसाधारणक सवारी वैह। सम्पन्न व्यक्ति जोड़ा घोड़ागाड़ीपर वा खुजल फीटनपर। मोटर कोनो अफसरान वा रईस–साहेबान राखथि। हाइकोर्ट बनि गेने, ओहि समय बैरिस्टरक चलती खूब छलै। नगरक अधिकाधिक भूमि वैह लोकनि किनैत गेला, दाम बेसी पाबि पुस्तैनी वासिन्दा सब खगता भेने बेचैत जाथि। कालेज तँ छलै मुदा संख्या बड़ सीमित। हँ, हाइस्कूलक विस्तार भऽ रहल छलै। संस्कृतोक टोल–विद्यालय जमल छलै। किन्तु

बालस्मृतिस्कूल–कालेज जकाँ एतय कुर्सी–टेबुल–बेंचक लम्फ–लम्फा नहि। मसनद–गद्दीपर अध्यापक ओ सतरञ्जीपर छात्र। अध्यापकक आगाँ छोट बैसकी डेस्क। सेहो सबतरि नहि।

ओहि समय पटनामे प्रसिद्ध आयुर्वेदज्ञ व्रजबिहारी चौबेक प्रसिद्धि छलनि। हमर पिताजी अ० भा० आयुर्वेद सम्मेलनक प्रान्तीय प्रतिनिधि छला। चौबेजी हुनक पूर्ण परिचित छलथिन। एकाधबेर हुनको दर्शन करी।

सचिवालय वा राजभवन आदि ओहि समय तेना नहि भेल छल। विशेषतः सीटीक आकर्षण छलै। बजार ओ सिक्ख–गुरुद्वारा साहेब, पाटनदेवी आदि देखबाक अवसर प्राप्त करैत गेलहुँ।

ओही बीच कुम्हरारक खोदाइमे किछु पुरातत्त्वक सामग्री प्राप्त भेलै। लोक देखबालेल यातायात करय। हमरहुलोकनि जाइत गेलहुँ। किन्तु वर्तन–भाड़ा, मूर्त्तिखण्ड भग्नांश–अवशेष देखल, किछु बुझि तँ नहि सकी परञ्च उत्सुकता बढ़य। गोलघरपर चढ़लहुँ, अशोकक क्रूरताक कथानकसँ सम्बद्ध अगमकूआँ सेहो गेलहुँ।

पढ़बाक माध्यम ओतय हिन्दी छल। मिथिलाक संस्कृतक छात्रकें मैथिलीमे पढ़बाक अभ्यास। अथापि किछु दिनमे सहज भऽ गेल। प्रत्येक त्रयोदशीमे ओतय पाठ्यांशक लेख–परीक्षा चलैत छलै, मौखिक पूछा–पूछी तँ रोज चलिते छलै। विद्यालयमे चलन छलै, जे गुरुसँ पाठ लेथि ओ अग्रपाठी छात्रसँ चिन्तवैत छलाह, अर्थात् पाठ दोहरबैत छलाह। श्रीब्रह्मदत्त बाबाक पाठ तेहन बुझा कऽ होइत छल जे चिन्तबैक प्रयोजने ने होअय। पाछाँ स्वमुखी आवृत्तिक अभ्यासो भऽ गेल। समयो बचैत छल जकर उपयोग पाठ्येतर पुस्तक पढ़बामे लगैत छल।

मुरारका संस्कृत विद्यालयक छात्रकें, कहियो कोनो मारबाड़ी विशिष्ट संस्कृतानुरागी सम्पन्न सज्जन आबथि तँ निमन्त्रणपूर्वक वस्त्र आदिक बिदाइ देल जाइन। श्लोक पढ़बामे वा छात्रक बीच संस्कृतमे वादानुवाद कयलापर पुस्तक आदिक पुरस्कार देल जाइन। छात्र सभ सरस्वतीपूजा आदिक अवसरपर मनोरञ्जनक हेतु कखनो नाटक–मञ्चन करथि। छोट–छीन पाठ हमहुँ लेल करी। कहियो वर्षाऋतुमे झिलहेरि नाओपर होइ, संगीत चलै। राघवेन्द्रबाबूक संग हमहुँ किछु गीत गाबी। ओ गीतगोविन्द, शिवताण्डव आदिक गान करथि। हमरालोकनि एहि सभ माध्यमे छात्रमे बेसी चिन्हार भेल जाइ।

बूढ़ा गुरुजीक कृपा हमरालोकनिपर अशेष छल। बिहारीदासजी गौड़–ब्राह्मण छला, पौरोहित्यक संग धर्मप्राण मारबाड़ी समाजमे बेस पूजित छला। ओ अपन ओसारापर ठाढ़ भऽ जाथि। हम सब अपनामे चर्चा करी जे पाठ तँ लोक अपना लेल घरमे आसनपर बैसि गुनगुना कऽ करैछ, ई बाहरमे चौकीपर बैसि घनघनबैत छथि। स्वार्थ ओ परार्थ लोककें प्रभावित करबाक ई पद्धति बेस अपनौने छथि।

हुनक तीन बालकमे मुरारी–श्याम–गिरिधारीमे छोट छलथिन गिरिधारीलाल गर्ग, ओ अधिक काल हमरा सभक संग बैसल करथि। पाछाँ चलिकऽ ओ हिन्दीक

कवि–लेखकमे प्रसिद्धियो प्राप्त कैलनि। आनो अनेक तत्कालीन छात्र छला जे पाछाँ साहित्यक क्षेत्रमे कृतित्व देखौलनि।

ओहिठाम संस्कृत साहित्यक आचार्य छात्रलोकनिमे बहुतो आधुनिक हिन्दी साहित्यमे बड़ अनुराग देखाबथि। साहित्यिक बनबाक क्रममे अपन नामक पाछाँ उपनाम जोड़थि। श्रीकान्त बाबा अपन नामगे 'मधुप' जोड़लनि, क्यौ 'चञ्चरीक', क्यौ 'कमल' तँ क्यौ 'कुमुद' वा 'चन्द्र'। एहि प्रकारक कोमल नाम दऽ बहुतो अपन पैतृक नाम संग कवि–प्रचलित उपाधिधारी होइत छला। हम ओहि समय किछु लिखी नहि, सुनबे कयल करी। किन्तु नामक सेहन्ता जेना अंकुरित भऽ गेल हो।

पटनामे किछु मासे रहलहुँ। दू–एकबेर गाम अयलहुँ तँ गाममे किछु दिन रमि जाइ। किछु दिनक बाद ककरौड़वाला ओझा पढ़ब छोड़ि गाम रहि ग`ेला। हमरहु पटना प्रवास बन्द भऽ गेल। एतबा अवश्य भेल जे 'शहर सिखाबय कोतबाली'– गमैया संकोच छूटल, किछु रुचि–परिष्कार भेल ओ कने–मने काव्यक पाँतीक अपनोसँ टीका देखि अंर्थ लागय लागल।

राजनगर

राजनगरक नाम कानमे नेनहिसँ पड़ैत छल। बल्लीपुरमे जाहि पनिचोभे–परिवारक सम्भागी भगिनमान हमरालोकनि छलहुँ, ओहीसँ सम्बद्ध बालामिश्रक परिवार पड़ैत छलनि। हुनक दू विधवा बहिनि छलथिन जनिका हमसब लाखोदीदी ओ हजारदीदी कहैत छलियनि। सिमरी–नारायणपुर दिस लाखोदीदीक सासुर पड़ैत छलनि ओ अधिक काल आबथि तँ राजनगरक निर्माणक हाल सुनबथिन। कोना किला बनल अछि, कोना मन्दिर बनल अछि? कमलाक कटान रोकबाक हेतु कोना महाराज स्वयं अपनो जप–अनुष्ठान करैत कमला भाइकें मना लेलनि ओ रातारात धारक मुँह कोना मोड़ लेलकै। दशमीक उत्सवमे कतेक चहलपहल से सब सुनबथिन। स्त्रीगण सब हुनकासँ महारानी सभक हालचाल पूछथि। ओ बड़े आलंकारिक ढंगे सुनौल करथि। ओ जहिया–जखन बल्लीपुर आबथि तँ हुनकासँ गपसप, खिस्सा–कहानी सुनबा लेल आङन–आङनसँ आग्रह पहुँचनि।

बालामिश्रक मृत्युक बाद हुनक दू पुत्र जनार्दन ओ रामनिरेषणकें बहुधा अपना संग राजनगर–सिमरी लऽ जाथि। रामनिरेषण हमर बालसंगी, हमरासँ छौ मास छोट। छाया जकाँ संग रहथि। हुनका ऐलापर मन दून, चलि गेलापर सून लागय।

पटनासँ फिरलाक बाद जखन हम गामे रहय लगलहुँ, खेल–धूप, तास–सतरञ्ज, तबला–हरमुनिञा – एही सबमे समय ससरि रहल छल। हमर पिता सोचैत छला जे पढ़बाक की व्यवस्था करी। ओही बीच लाखोदीदीक आग्रह भेलनि जे ओहिठाम एकटा महारानी विद्यालय छै, हिनका पढ़य जाय दिऔन। डेरा हमरहि

ओतय रहतनि, संगी छथीने। कोस आधेपर महल छै, पढता–लिखता। राजदरबारक हवा–पानि लगतनि, फरहर बनता।

25 इ0क चैत–बैसाख मास। राजनगरक विद्यालयमे पढ़य पहुँचलहुँ। ओहि समय विद्यालय बेलनोती स्थान, यज्ञमण्डप, जे टीनसँ छाड़ल छल, चौमुखी मकानमे चलैत छल। व्याकरण–साहित्यक अध्यापक, जे प्रधानो छला, नरहीक प0 सहदेव झा, ज्योतिषक ज्यो0 अनिरुद्ध झा, वैदिक श्रीधर मिश्र ओ आयुर्वेदक वैद्य जयभद्र झा। हमर पाठ प्रायः कौमुदीसँ प्रारम्भ भेल। बेसी छात्र प्रथमे–मध्यमेक छला, आचार्यक कम्मे। एकटा परब्रह्मजी मन पड़ैत छथि जे मनोरमा–शब्दान्तमे घुटकैत छला।

प्रवेशक दिन गेलहुँ। पढ़ब–लिखब छुटले छल, छात्र सभक पूछापूछी होमय लागल। धखाइते–धखाइते जवाब दैत एकाध ठाम गोगाँ करैत हिलिमिलि गेलहुँ। परिहारपुरक मुदितजी संस्कृत धुरझार बाजथि, मुदा शुद्धाशुद्धिसँ मतलब कम राखथि। एकाध टोकमे स्वर मन्द पड़लनि। ओहो मिलिजुलि गेला।

एहिठाम मध्यकालमे लोक पहिने मीमांसा–धर्मशास्त्र, तदुत्तर कालमे न्याय–व्याकरण ओ बीच–बीचमे अर्थकरी शिक्षाक रूपमे ज्योतिष पढ़य लागल छला। विशेष शास्त्रार्थी भेला तँ राजा–रजबाड़ामे जाय पारितोषिक विर्ता (वृत्तिक हेतु भूमि वा वार्षिक बिदाइ) प्राप्त कयल करथि। वैदिक सिद्धान्तक कमी होमय लागल छल। काशीक माध्यमे दक्षिणी वैदिक विद्वानकें महाराज मङाय वेदक पठन–पाठनमे प्रोत्साहन देलनि। राजमे अनुष्ठानादिमे अधिकाधिक दानादि वैदिक लोकनिकें भेटनि।

ओहि समय राजनगरमे वेद पढ़निहारक संख्या बेसी छल। श्रीधर झा असल श्रौत वैदिक रहथि। समस्त यजुर्वेद कण्ठ रहनि, पुस्तक देखबाक प्रयोजन नहि। जनार्दन ओ रामनिरेषण दुहू भाइ वेदे पढ़थि, पाछाँ हमर आग्रहसँ रामनिरेषण व्याकरण–साहित्य पढ़ऽ लगला। ज्यो0 अनिरुद्ध झाक अध्यापनमे प्रशस्ति छल। हुनक अनेक सुयोग्य छात्र बहरैलथिन। कैथाहीक प्रसिद्ध ज्योतिषी माधव झा ओहि समय हुनक प्रमुख शिष्य छलथिन। व्याकरण–साहित्य वर्गमे राजसम्बद्ध अधिकारीक अनेको व्यक्तिक समाङ पढ़ैत छला जाहिमे प्रमुख भोतीबाबू, सतीबाबू, जीवाबाबू, प्रभृतिसँ सतीर्थ्य रहबाक कारणे परिचय भेल।

गर्मी ऋतु अबैत–अबैत विद्यालयक टीनक छत ततेक तबि जाइ से सब पसेनासँ तरबतर रहथि। विद्यालयक सचिव पैलेस अफसर बाबू लेखनाथ झा (प्रसिद्ध कण्टिरबाबू) छला ओ महाराजाधिराजसँ स्वीकृति लऽ उत्तर भागमे स्थित तन्त्राश्रम लग तत्काल दुर्गामन्दिरक एक भागमे पढ़ाइ चालू करौलनि। पुनः दुर्गापूजावकाशसँ किछु दिनक बाद पूबमे स्थित शीतगृह (Cold House)मे पाठशालाक व्यवस्था कयल गेल।

तन्त्राश्रम राजनगरक महत्वपूर्ण स्थान छल, जतय किछु दिन महाराजा–

धिराज स्वयं तन्त्रसाधना कयने छला। शीतगृह महाराजक किछु दिन पूर्व, ग्रीष्मकालीन विश्रामगृह बनल छल। छत नहि, खढ़ी–खढ़क मोट छज्जा छलै, नीचाँ प्लास्टर नहि, माटि नित्यप्रति पटौल जाइ जाहिसँ कजली–हरियरी जमि गेल छलै। किछु दिनक बाद बङलेमे तन्त्राश्रमक एक भागमे विद्यालयक व्यवस्था कयल गेलै जे दोसर वर्षमे फाटकसँ बाहर गिरिजामन्दिरमे स्थायी रूपें सञ्चालित भेल।

छात्रावास छलै शिवगञ्ज महावीर मन्दिरसँ उत्तर पोखरिक उतरबारि भागमे। स्थानीय छात्रक अतिरिक्त बाहरसँ आयल गोटेक दर्जन छात्र ओहिमे रहथि। गुरुजी (प० सहदेव झा)क आवास सटले रहनि। पैलेस आफिसरक सहायक गिरिजा प्रसाद श्रीवास्तवक डेरा ओही ठाम निकटेमे छलनि।

शिवमन्दिरमे 11 व्यक्ति रुद्रस्नपन करथि। वैदिक छात्र जनार्दन मिश्र सेहो स्नपन कयल करथि। प्रायः 15 टाका दक्षिणा भेटनि, कहियो हुनक छोट भाइ रामनिरेषण मिश्र सेहो स्नपनमे जाथि। एहि अनुष्ठान–वृत्तिक कारणे ओहि इलाकामे षडंग शतरुद्रीय धरि वेद जननिहारक संख्या निरन्तर बढ़ैत गेल छल।

महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह एही प्रकारें अनुष्ठान–योजनासँ कर्मकाण्डक शिक्षा–दीक्षाक पूर्ण प्रचार करौलनि। सन्ध्याक परीक्षा लऽ कऽ सबकें आठ आना साप्ताहिक भेटल करनि। ओहि इलाकाक ब्राह्मण बालक सन्ध्या सीखि गेल। दुर्गापाठक मन्दिर–मन्दिरमे व्यवस्था छल। प्रायः सवाटाका आवृत्ति दक्षिणा भेटैक। प्रत्येककें 2–3 आवृत्ति देल जाइन। दशमीमे पाठ कयनिहारक संख्या प्रचुर भऽ जाइक। धर्मकार्यक परीक्षाक देखरेख राजपण्डित बलदेव मिश्र करथि। परीक्षोत्तीर्णकें विशेष पाठानुष्ठान भेटनि। राजक प्रत्येक मन्दिरमे व्यवस्था रहै जे आरतीमे वा दीपमे जे बाती जरै, ताहि हेतु विधवा लोकनिसँ सूत लेल जाइन, हुनका बाङतूर राजसँ मुफ्त भेटनि आ कताइक पारिश्रमिक नियमतः भेटनि जाहिसँ आंशिक निर्वाह चलनि।

स्थायी रूपें तन्त्राश्रममे अनुष्ठानी लोकनि रहल करथि। हुनका लोकनिकें प्रायः 45 टाका मासिक भेटनि जे ओहि समय राजक प्रधान अधिकारी कार्यकर्त्ता पाबथि। स्कूल–विद्यालयमे ओतेक वेतन पण्डित–शिक्षककें नहि रहनि। ओकर अतिरिक्त 2 बजे हविष्य भोजन। रातिमे दूध–फल। तीन मासपर मण्डल–कल्प पुरैक। तखन कम्बल– आसन, रक्तवस्त्र आदिक संग नव संकल्प लेथि। एहि तरहें ओहि समय अनुष्ठानीक संख्या उत्साहवर्द्धक छल।

राजक मुख्यकेन्द्र दरभंगामे रमेश्वरलता संस्कृत विद्यालय बड़ी महारानीक नामपर छल तँ राजनगरमे छोटी महारानीक नामपर रमेश्वरी संस्कृत विद्यालय खोलल गेल छल। उक्त महारानी यदाकदा पण्डित ओ छात्र लोकनिक उत्साहवर्द्धनार्थ अवसर–अवसरपर सत्कार–उपहार देल करथि। राजमाताक नामपर लोहनामे विद्यापीठ खोलल गेल छल जे ओहि समय संस्कृत छात्रक आकर्षणकेन्द्र छल।

राजनगर मन्दिरक नगर छल। विशाल मुख्य फाटकक सामने दुर्गामन्दिर।

नगरक मुख्य राजभवन जेना यैह होइक। पोखरिक उतरबरिया मोहारपर प्रसिद्ध काली मन्दिर संगमर्मरक। भव्य, इजोरिया रातिमे एकर चाकचिक्य दर्शनीय रहै। एहिमे मुख्य पुजेरी लब्धप्रतिष्ठ रहथि। हरिमन्दिर, पञ्चदेवतामन्दिर, फाटकक बाहर गिरिजामन्दिर, शिवमन्दिर आदि दर्शनीय छल। तन्त्राश्रम, यज्ञमण्डप पृथक् छल। बादमे प्रधान राजकीय कार्यालय बनल जाहिमे आब कालेज सञ्चालित अछि। हाइ स्कूल किछु हटिकऽ छल।

छात्रमण्डलमे मुदित नारायणजी छला, संस्कृत ततेक तेजीसँ बाजथि जे लोक चमत्कृत होथि। किछु अप्रचलित धातुक प्रयोग करथि, हसतिक स्थानमे खखति (खख हसने), वदतिक स्थानमे वकति आदि, किछु यङन्तयङ्लुगंत – वावक्ष्यते– पा पठ्यते आदि। किंछु धाखो अर्जित कैलनि। पाछाँ परिचय नीक जकाँ भेल ओ हुनक लेख देखबाक अवसर भेल तें थाह–पता लागि गेल। ओ अपन नाम 'मुदित'मे 'त' अदन्त वा हलन्त से सन्दिग्ध रहथि तें मुदित लिखि बहुत नीचाँ कने हलन्त्यक चिह्न तेना लगबथि जे 'बेट' जकाँ बेटा–बेटी दुहूक बोध हो। पाछाँ ओ सम्हरला।

काशीनाथ ठाकुर 'कलेश' गुरुजीक सार सेहो पढ़ैत छलथिन, बेस व्युत्पन्न तथा सरस लोक। हुनक पितिऔत केशवजी, कोइलखक परमेश्वरजी सेहो एतहि आबि गेला। पीताम्बरजी मखौलिया, गुरुजीक चौकामे रहथि। गुरुजीक देखादेखी अपन पारमे अररनेबाक तरकारी चलबथि। रामनिरेषणजी यजुर्वेदक किछु अध्याय पढ़ि व्याकरण पढ़ऽ लगला। प० सहदेव झाक मिथिलाक्षर–देवाक्षर लिपि नामी छलनि। प० घूटर झा हुनक अभिन्न मित्र रहथिन। श्लोकबद्ध सुन्दर लिपिमे पत्रक आदान– प्रदान देखि–सुनि हमरालोकनि पुलकित होइ।

ओहि समय गुरुजीक देखादेखी कर्ची–कलम ओ कचनारक काढ़ामे कसीस आदि मिला स्याहीसँ लिखबाक अभ्यासक होड़ छल। केशवजी, काशीनाथ ठाकुर, रामनिरेषण मिश्र लोकनिक अक्षरक काट गुरुजीक तर्जपर। हमरा ओतेक नहि ओरिआय तथापि किछु अभ्यास कयल करी।

राजकीय पुस्तकालयक अध्यक्ष छला प० जगद्धर झा। तन्त्राह्निक, वर्षकृत्य, मन्त्रार्थसंग्रह आदिक संकलन ओ कयलनि। संशोधनमे प० सहदेव झा सहायता करथिन, पुस्तकक भूमिका लिखथिन। सुलिपिक सुलेखक द्वारा प्राचीन ग्रन्थक प्रतिलिपि सेहो पुस्तकालयमे होइत छलै। कोलइखक पूर्वपरिचित भवदत्त झा ओहिमे नियोजित होइत रहथि। ओहि समय फक्किका वा खररा लिखि–उतारि पढ़ब छुटल नहि छलै। निर्णयसागरक शुद्ध–सुन्दर छपल पुस्तकक प्रचारसँ लिखित पुस्तकक चालि कम भेल जाइत छलैक।

राजक प्रकाशन विभागमे प० बुचाइ झा (पिलखबाड) अद्भुत प्रतिभाक छलाह, वैयाकरण–नैयायिक वा शास्त्रविशेषज्ञ नहि, किन्तु संस्कृत अव्याहत बजनिहार। विशेषो पण्डित हुनकासँ गपमे ठठथि नहि। श्लोकबद्धो बजबाक अभ्यासी रहथि।

हुनक वार्त्तालाप सुनबामे रस आबय। गुरुजीक संग गप करथि।

ओहि समय गनौली–सतघराक विद्यालय सेहो खूब चलल। पचाढ़ी–लोहना–ठाढ़ी–नवानी–कपिलेश्वरस्थान–लक्ष्मीपुर–आनन्दपुर पाछाँ पतोर–रघुनाथपुर–बरौनी आदिक चौपाड़िक चालि समाप्त भऽ चुकल छल।

फक्किका बहराय लागल छलैक। 'फक्किकाप्रकाश' पुरान लेथोमे छपल अप्रचलित भऽ गेल छलैक। परीक्षोपयोगी प0 हरिशंकर झा (ठाढ़ी)क लिखलकेर प्रचलन बेस छलैक। ओही बीच कनकलाल ठाकुरक फक्किकारत्नमञ्जूषा बड़ छात्रप्रिय भऽ रहल छलै। परिणाम भेलै जे आब स्वयंस्फूर्त्त फक्किकासँ ओही सभक पाँती घोखि लोक उत्तीर्ण होमऽ लागल ओ अपन ऊहिसँ लिखब कम होअऽ लगलैक।

विद्यालयमे त्रयोदशी तिथि वाद–विवादक छलैक। छात्र लोकनि परस्पर पूछापूछी करैत शास्त्रार्थक अभ्यास करथि। हमरा ओहि दिस रुचि कम छल, अथापि किछु अभ्यास अपन अस्मिता बचयबालेल राखब आवश्यके रहैत छलैक। विद्यालयपर वा छात्रावासमे जे कोनो विद्वान् कदाचित् आबथि तँ विद्यार्थीसँ प्रश्न पूछथि ओ शुद्धाशुद्धक दृष्टिकोण देथि। कोनो आन विद्यालयक छात्र आबथि तखन विद्यालयक दिससँ ककरो भिड़न्त होइत छलै। कहियो हमरोपर भार पड़ैत छल। सतघरा–गोनौलीक विद्यार्थीक आवर्यात रहनि। मन अछि श्री जटाशंकरबाबूसँ हमरो पक्कड़ पड़ल छल। जहाँ धरि हो अपन तँ सहजहि विद्यालय परिवारकें अयश नहि होइ से ध्यान राखहि पड़ैत छल।

कहियो उत्सुकता हो जे महाराजाधिराजक दर्शन करी। सन्ध्याकाल नौलखा महलक नीचाँ विस्तृत परिसर छलै। ओकर पुबारि भागमे मुक्त आकाशक नीचाँ फर्शपर महाराजाधिराज सन्ध्या एवं प्रदोष पार्थिव शिवलिंगक पूजन करथि। पण्डित लोकनि ओ पर्सनल स्टाफक लोक उपस्थित रहथि। कहियो हमहूँसभ विद्यालयसँ फिरबा काल कने दबकले ओतय बैसि जाइ ओ पूजा–विधान देखी। अपराह्नमे नौलखाक पुबारि भागमे महाराजाधिराज सतरञ्ज खेलथि। नामी सतरञ्ज खेलनिहार राजक वृत्तिभोगी रहथि। ओतऽ किछु खेलरसिक दरबारी सेहो बैसथि। एक्के–दुक्के हम ओ जनार्दन– रामनिरेषण दुहू भाइक संग जाइ, किछु हटि कऽ बैसि जाइ। दूरेसँ चुपचाप खेल देखी, किन्तु महाराज केवल आँखि उठा देखि लेथि, विद्यार्थी थिका, क्यौ संकेत करनि, कोनो रोक नहि। बूढ़ा सरकारकें एहिमे कोनो प्राइवेसी नहि रहनि। कखनो आम दरबार लगनि तँ सामान्य इत्तिलाए पर लोक महाराजक दर्शन करथि, अभिवादनमे किछु द्रव्य सलामीमे देथि। पण्डितलोकनि जाथि तँ जनउ वा फूल हाथमे नेने जाथि। क्यौ आशीर्वादी वाक्य पढ़थि, महाराज स्वीकार करथि। निवेदन करबाक होनि तँ सेहो सुनि लेथिन। जनिकर कोनो राजकीय काज होनि से जखन महाराज आफिसमे बैसथि तखन विधिवत् कयल करथि। सुनल अछि जे ओ कहथिन– हम महाराज भने कहाबी परञ्च दरभंगा राजक हम तँ स्वयं मैनेजर छी,

आन जे मैनेजर छथि से हमर एसिस्टेण्ट थिका, राजकाज चलयबामे सहायता करै छथि। प्रायः प्रतिदिन नियमतः ओ आफिस कयल करथि। सब विभागक अन्तिम लेखा स्वयं देखथि। आवश्यक विचारणीय फाइल रातिमे अपन विश्रामक क्षणमे देखल करथि। हुनक टिप्पणी विलक्षण होनि। हुनक आर्डर, ओकर नोट–टिप्पणी सुचिन्तित, तर्कयुक्त होइत छल। फणिनाथबाबूकें हुनक कतेको नोट अक्षर–अक्षर मन छनि, जकरा एखनहुँ सुनैत छी तँ बूढ़ा सरकारक विज्ञतापर चमत्कृत होइ छी। ज्ञातव्य जे फणिनाथबाबू खास महाल आफिसमे नियुक्त छला।

महाराजाधिराजकें भवन निर्माणमे बहुत रस रहैत छलनि। राजनगरक निर्माण कार्य जारिए छल, ईट तँ ठीकेदार बनबथि, सुर्खी कुटबाक मिल चलैत छल, परञ्च बिल्डिंग डिपार्टमेण्ट देखरेख रखैक। एक बिजली साहेब कहबथि – ओ बिजलीक संग एहू विभागक देखरेख करथि। पाछाँ बुझल जे ओ रूसक जार–परिवारक कोनो राजकुमार छला जे 1917क रूसी क्रान्तिमे कहुना बचिकऽ पड़ाय भारत अयलाह। महाराजकें दिल्ली–शिमला घुमैत भेटलथिन – हुनक परिचय पाबि नेने अयलथिन।

महाराजक आस्तिकता ओ निरलस कर्मनिष्ठा विस्मयकर छल। भारतवर्षक अग्रणी धनिक, अखिल भारतीय जमीन्दारवर्गक नेता ओ सनातन धर्मक कट्टर उन्नेता छला। ओहि समय काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापनामे स्वयं प्रचुर दान दऽ ओ मालवीयजीक संग प्रत्येक देशी नरेशक ओतय जाय जे ओ सहायता देलथिन ताहिसँ सार्वजनिक क्षेत्रमे हुनक प्रसिद्धि व्याप्त छल। प्रमुख तीर्थस्थानमे विशेषतः शक्तिपीठमे मन्दिर निर्माण कराय ओ धार्मिक संसारमे स्तुत्य छला। हुनक दैनिक जीवन देखि, कर्मकाण्ड अनुष्ठान आदिमे स्वतः प्रवृत्ति देखि हुनक राजर्षिक पद–सम्बोधन कयल जाइत छल।

प्रत्यह ब्राह्ममुहूर्त्तमे उठथि, जाड़ो मासमे सामनेक पुष्करिणी घाटपर जाय स्नान करथि। बहुतो दीन–दुखी ओ आर्त्त उषाकालमे घाटपर जाय हुनका जे आत्मनिवेदन कयल करथि, ओ प्रसन्न मुद्रामे हुनक निवेदन ओतहु सुनि लेथि। ओ कहल करथि, ब्राह्ममुहूर्त्तमे सत्यधर्मी ब्रह्मत्व सबमे जाग्रत रहैछ, दिन भरि क्षमतानुसार क्षात्र तेज ओ वृत्ति–व्यवसायक राजस वृत्ति आ रातिमे विश्रामक तमोवृत्ति। ब्राह्मवृत्तिक लोककें प्रातःकालिक समय स्वर्णिम होइछ।

कहियो राजकुमार लोकनि शिकारमे जाथि। राजनगर किलासँ उत्तर कमलाक कछेड़मे दूर–दूर धरि जंगल छलै। शिकारक वर्णन साहित्यमे पढ़ी – देखबाक शौख भेल छल, किछु संगीक संग गेलहुँ। शिकारी ग्रुप घोड़ापर दौड़ लगबैत छला – गीदड़ आदिक संहार करथि, चिड़इ–चुनमुन्नी मारि खसाबथि, चरक पक्षीकें निसाना बनबथि। थोड़ेक दूर चलि, थाकि–थुकि घुरि अयलहुँ। इ सब कथा सुनबेमे वा शिकारीकें होहकारी देनिहार सबकें जे जोश–खरोस होइ, हम सब थाकनिसँ चूर भऽ कऽ फिरलहुँ। फेर कहियो एहि फेरमे नहि पड़लहुँ।

छात्रजीवनमे पढ़ब–लिखब तँ छले। मैदानी खेल तँ नहि, तास–सतरंज खूब

चलै। खोजीबाबूक दलान अड्डा छलैक। ओहि समय चाहक चालि कम, भाङ–शर्वत, पान–सुपारीक चलनसारि। भाङ पिनहार सेहो रहथि, हम सब किछु गोटे शर्वते ली।

ओहि बीच हिन्दीमे खिस्सा–पिहानीक युग समाप्त भऽ गेल छलै, तोता–मैना, सिंहासनबत्तीसी–बेतालपचीसी सन खिस्सा–कथाक रोचकता अल्पपठित, किछु नव रसिक ओ रसिकाक प्रिय रहि गेल छलैक। बङला उपन्यासक अनुवाद चलऽ लागल छल, प्रेमचन्दक नाम उर्दूमे खूब चलै छल। हिन्दीमे उतरि चुकल छला, किन्तु चन्द्रकान्ताक लोकप्रियता बढ़ल छलै। एकर चर्चा उठलै तँ खोजीजी देवकीनन्दन खत्रीक सब उपन्यास मङौलनि – चन्द्रकान्ता सन्तति 24 भाग, भूतनाथ, औरो सब। हमरालोकनि पाठ्यग्रन्थ छोड़ि वैह सब पढ़ल करी। मन अछि – पाठ लेबा कालो पुस्तकक जिल्दक दोगमे कोनो खण्ड राखी। एकदिन गुरुजी देखलनि, कहलनि एहि सबकें पढ़बामे लागब तँ अपन ग्रन्थ छुटि जायत।

ओही बीच कोनो प्रसंगमे कहलियनि – गुरुजी, एहि उपन्यासमे जे पात्र सब भेटै छथि ओ बड़ आचारवान। सब सन्ध्यावन्दन कयनिहार, धर्मपर निष्ठा रखनिहार। देखबाक उत्सुकता दखौलनि तँ चन्द्रकान्ता आनि देलियनि। देखल तँ गुरुजीक हाथ जे किरात – माघ उनटबैत छला से ओकरा समाप्ते कऽ छोड़लनि। कहलनि जे हँ ओ बड़ रोचक छै। मुदा ई सब अनध्यायमे पढ़ल करू।

राजनगरमे दशमी पर्व अपूर्व उल्लाससँ मनौल जाइत छल। लगपासक तँ सहजहिं, दूर–दूरसँ लोकक सम्मर्द रहै। तीर्थमे पर्वक दृश्य एतय साकार भऽ उठैत छल। बेलनोतीक जुलूस, जाहिमे महाराज, राजकुमार एवं राजसम्बद्ध पण्डित–गुणीक शृंखला अवश्य रहै, पुनः दुर्गामन्दिरमे महाराज स्वयं पूजा–आसनपर बैसथि। मिथिलाक परम्परा–पद्धतिक अनुसार विशेष विधानसँ पूजा चलनि। राजपण्डितजी पद्धति हाथमे रखने रहथि, महाराजकें मन्त्र कण्ठस्थ, विधि ज्ञाते – केवल क्रमभंग नहि हो तकरे हेतु सतर्कता।

खण्डवलाकुल राजपरिवारमे दुर्गापूजा परम्परासँ होइत छल। आगम–निगम दुहू पद्धतिक अनुकूल, म0 म0 रजे मिश्र – म0 म0 चित्रधर मिश्रक देखरेखमे परिष्कृत कयल गेल विशेष पद्धतिसँ प्रवर्त्तित पूजा दर्शनीय छल। महाष्टमी–महानवमीक अनन्तर विजयादशमीक राजसी यात्रा जकरा गटतोरी कहैत छलै, असंख्य दर्शकक आकर्षण छल। तहिना हाट–बजार–मेला लगैक। नृत्य–संगीत–वायस्कोप–नाटक तँ होइते छलै, मन्दिर–मन्दिरपर पृथक् नृत्य–संगीत–कीर्त्तनक व्यवस्था छलै। नारदी संगीत, कीर्त्तनिञा नाच एवं चौपहरा आदिक चहल–पहल छल।

हमरालोकनिक एक प्रिय संगी छला युगेश्वर झा (खोजी जी)। ओ विशेषतः हमरासँ किछु संस्कृतक अभ्यास करथि, सहायता लेथि। जनार्दन काकाक संगी छलथिन। ओ हमरा सबकें दैनिक जलसा कराबथि। घेरि–घारि बजारमे नीकसँ नीक मधुर, महगसँ महग पान, भाङ देल बादामी शर्बत आदि लऽ आग्रह करथि।

ओहि समय बनारसी पान चारि आने बीड़ा भेटै, वैह हुनक आग्रहसँ खयलहुँ। मसाला– किमाम–जर्दा हमरा अर्घल नहि, घुर्मी लागि गेल। चक्कर दैत रहल। किछु दिन धरि जर्दा देखि डर भऽ जाय। एकदिन दुराग्रहपर सब अफीम खाइत गेला। हम तँ दिन भरि सुस्त रहलहुँ। पाछाँ आग्रहसँ छुटलहुँ।

राजनगरमे राज दिससँ खेलक आयोजन होइ। महाराजकुमार ओ कुमर साहेब खेलमे खूब भाग लेथि। हुनक संगी–साथी सेहो रहथिन। हॉकी–टेनिस, कूदफान, दौड़धूप आदि किसिम–किसिमक प्रतियोगिता होइ। कुमर साहेबक पक्ष सरस होनि। महाराजकुमार हॉकीमे अग्रसर। दुहू कुमार खेलमे आकर्षणक केन्द्र रहथि। पारितोषिक वितरण होइ। हमरालोकनि दर्शके रही, स्कूलक छात्र भागो लेथि। संस्कृतक विद्यार्थी दर्शके रहथि।

कहियो जल झिलहिरक जलसा, कहियो आतिशबाजी, अधिककाल उमाकान्तक नाटक। गीतगोविन्दक ओहि समय नाम बजैत छल। ओहीठाम राजपण्डितक राजराजेश्वरी मैथिली नाटक देखल।

मुजफ्फरपुर

मध्यमा परीक्षा उत्तीण कयलापर आचार्य कक्षामे पढ़बाक हेतु कोन महाविद्यालय जाइ, आब एकर निर्णय करबाक अवसर आयल। ओहि समय धर्मसमाज संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुर संस्कृतक केन्द्र कहल जाइत छल। म0 म0 शशिनाथ झा, म0 म0 मुकुन्द झा बक्शी, महावैयाकरण किशोरी झा, सिद्धनाथ शास्त्री, देवीकान्त ठाकुर, कविशेखर प0 बदरीनाथ झा, विद्वद्वर रविनाथ झा, मीमांसक प0 जटेश्वर झा, नैयायिक सूर्यकान्त झा प्रभृति मैथिल विद्वान ओतय अध्यापन करैत छला। आयुर्वेदक सुप्रसिद्ध विद्वान् प0 शिवचन्द्र मिश्र ओ अंग्रेजी पढ़यबालेल प0 अनन्त मिश्र नियुक्त छला।

संस्कृत वाग्धाराक अप्रतिम प्रयोक्ता प0 ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ति शास्त्री प्रिन्सपलक पदपर प्रतिष्ठित छला। प्रदेशक कोन–कोनसँ संस्कृत पढ़बालेल छात्र–समुदाय ओतय पहुँचैत छल। ओतहि नाम लिखयबाक विचारसँ हम अपन पितिऔत अग्रज यादवेन्द्र बाबूक संग महाविद्यालय देखबालेल गेलहुँ। विद्यालय–परिसर, छात्रावास, पुस्तकालय एवं शैक्षणिक वातावरण देखि प्रभावित भेलहुँ ओ अन्तिम निर्णय करबाक हेतु अभिभावकसँ अनुमति लेबालेल गाम आबि किछु दिनक बाद, ग्रीष्मावकाशक बाद सत्रक आरम्भ जुलाइ 1927 सँ साहित्य वर्गमे नाम लिखाओल।

ओहि समय धरि संस्कृत अध्ययनमे सर्वाधिक छात्र व्याकरण पढ़थि अथवा ज्योतिष। अर्थकरी बुझि आयुर्वेद पढ़बाक प्रवृत्ति बढ़ि रहल छल। न्याय, वेदान्त आदिमे छात्र कम, अतएव वृत्तिक सुविधा रहैत छलै। तें बहुतो छात्र ओहिमे नाम लिखाय अपन आनो इष्ट शास्त्रक अध्ययन करथि। साहित्य पढ़बाक प्रवृत्ति सेहो

क्रमहि बढ़ैत गेलै। साहित्यमे दू वर्ग चलैत छलै। विभागक प्रधान छला कविशेखरजी, द्वितीय छला प0 अम्बिकादत्त चौबेजी। राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषाक हेतु कोनो वर्ग नहि छलै। छात्र अपनहि पढ़ि लेथि वा कोनो अध्यापकसँ सहायता लेथि। तावत् मैथिलीक प्रवेश शिक्षण–संस्थानमे नहि भेल छलै, किन्तु मैथिलीक हेतु वातावारणक सर्वथा अभाव नहि छल। 'मैथिलछात्र समिति' नामसँ एक संयुक्त संस्था छलै जाहिमे जी0 बी0 पी0 कालेज (अंग्रेजी) ओ डी0 एस0 एस0 कालेज (संस्कृत)क मैथिल छात्र सम्मिलित रूपें अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी ओ मैथिली चारू भाषामे निबन्धात्मक प्रतियोगिता परीक्षा लेथि ओ ओहिमे प्रथमकें साहित्यालंकारक उपाधि ओ पदक प्रदान करथि। हम जहिया गेल छलहुँ ओहि समयमे अंग्रेजी कालेजक दिससँ सचिव छला बाबू लक्ष्मीपति सिंह आ संस्कृत कालेजक दिससँ संयुक्त सचिव प0 सदानन्द झा (बाबूपाली)। वार्षिकोत्सवमे ओकर विशेष समारोह होइत छल।

ओहि समय युवक–आन्दोलन जोरसोरसँ आरम्भ छल। प0 नेहरू रूस–यात्रासँ फिरलापर एहि आन्दोलनक सूत्रपात कयलनि। साधु टी0 एल0 वास्वानी, के0 एफ0 नेरिमेन तथा नरेन्द्रदेव–पटवर्धन–लोहिया प्रभृति एहि नव आन्दोलनक प्रवर्त्तकमे छला। मैथिल समाजमे छात्र–युवक आन्दोलनक अगुआ छला कुमार गंगानन्द सिंह। हुनक अड़ाइडेगाक भाषण बड़ ओजस्वी छल। मुजफ्फरपुरमे हुनक सभापतित्व बहुत जोस–खरोस आनि देने छल। मैथिल छात्र–समितिक अध्यक्षता दोसर बेर बाबू चन्द्रधारी सिंह कयने छला।

ओहि बेर जे चारि गोटेकें उपाधि ओ पदक देल गेल छल ओहिमे छला हरिमोहन झा (मैथिली), रमानाथ झा (अंग्रेजी), रामचन्द्र मिश्र (संस्कृत) एवं पंक्तिक लेखक (सुरेन्द्र झा, हिन्दी), जनिका पदक ओ 'साहित्यालंकार' उपाधि देल गेलनि। हिन्दीमे निबन्धक विषय छल सामयिक आन्दोलन सम्बद्ध पर्दा प्रथा। ओकर अन्त्य परीक्षक छला महाविद्यालयक प्रिन्सपल, से तखन बुझल जखन ओ छात्रावासमे आबि संवर्द्धनात्मक प्रोत्साहन देल। क्रमहि छात्रक बीच परिचित होइत गेलहुँ।

अधिककाल महाविद्यालयक पुस्तकालय जाइ ओ रुचिवत कोनो पुस्तक पढ़ल करी। पुस्तकालयक अधिष्ठाता छला प0 जटेश्वर झाजी। स्मरण अछि, एकबेर वाणभट्टक हर्षचरित पुस्तकालयसँ लेल तँ ओ टोक देलनि – 'बटुक, पुस्तक जे लैत छी, से बुझबो करैत छिऐक ?' नम्रतासँ निवेदन कयलियनि– 'गुरुजी, बुझबाक प्रयास करैत छी।' तखन आशीर्वाद दैत कहलनि – पढ़ि लियऽ, हम पुछबो करब।

महाविद्यालयमे ओहि समय जे सभ प्रमुख छात्र पढ़ैत छला ओ पाछाँ अपना क्षेत्रमे प्रसिद्धि प्राप्त कयलनि। ओहिमे तारकेश्वर मिश्र, सदानन्द झा, उमेश मिश्र शास्त्री (आयुर्वेद), लक्ष्मीनारायण झा (आयुर्वेद), प0 रामचन्द्र मिश्र (वेदान्त), जयकिशोर नारायण सिंह (साहित्य), सदानन्द झा (ज्योतिष), हरिशंकर मिश्र (आयुर्वेद), श्रीकान्त प्रतिहस्त-- भूपनारायण प्रतिहस्त (वेद), कृष्णेश्वर झा (मीमांसा), भैरव झा (व्याकरण), लक्ष्मीनारायण शास्त्री (धर्मशास्त्र), मधुकान्त झा (ज्योतिष) ओ हुनक अभिन्न सीताशरण

झा (ज्योतिष) आदि प्रमुख छला। पाछाँ बेचन बाबू सेहो एतय पढ़ऽ अयला। हमरा सभक अनुग्रहमे साहित्यक संग अंग्रेजी क्लासमे जाथि, जे बादमे हम सब छोड़ि देल ओ जारी रखने रहला।

पूर्वक छात्र सेहो कार्य–विशेषें आबथि तँ परवर्त्ती छात्र हुनक सोल्लास स्वागत करथि जाहिमे जे सभ मन पड़ि रहल छथि ताहिमे धनुर्धर झा, भैरव गिरि (जे ब्रह्मचार्याश्रम खोलि सांस्कृतिक वातावरण निर्माणमे लागल छला), प्रायः न्यायाचार्य–परीक्षा देबालेल प० उपेन्द्र झा (परवर्त्ती प्रिन्सिपल रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगा) गेल करथि। छात्रावासमे हुनक सत्कार कयल जाइन।

हमरा सभक कालेज छोड़लाक बाद काशीकान्त मिश्र 'मधुप', उपेन्द्र ठाकुर मोहन, जानकीबल्लभ शास्त्री, रामकरण शर्मा आदि अनेक छात्र ओहि कालेजमे पाछाँ अध्यापकक पद पर प्रतिष्ठित भेला। अन्य छात्रमे जनिक सामीप्य एवं स्नेहसँ आह्लादित होइत रहलहुँ – देवकान्त झा – जगदीश झा (सनहा), मधुकान्त झा (यजुआर), सुरेन्द्र झा (चानपुरा), नरेश चौधरी (चानपुरा) आदिक संग बहुतोक चित्र– चरित्र, सुझाव–प्रभाव मन पड़ैछ, परञ्च नाम नहि स्मरण अबैछ। ओहि अनामा सहपाठी–बन्धुक स्मरण एखनो हृदयमे भावावेश जगा जाइछ।

कोनो क्लास–वर्गमे पढ़ी, छात्र जाहि कक्षामे पाठ सुनय चाहय, अनुमति लऽ कऽ बैसि सकैत छल। हमरालोकनि उत्सुकतावश ओ बहुज्ञता प्राप्त करबाक लिप्सावश वा कोनो संगीक संगतिवश विभिन्न वर्गमे कहियो–कदाच् पाठ सुनबालेल बैसि जाइ। वैयाकरण किशोरी झाक गुरुगम्भीर स्फुट वाचाशक्ति, महामहोपाध्याय शशिनाथ झाक स्थिरतासँ, रेघा कऽ, बुझा कऽ अध्यापन शैली, प० शिवशंकर झा जे गपमे तोतराथि किन्तु पढ़यबाकाल अव्याहत बाजथि, सांख्यशास्त्रीक शाश्वत–सारस्वत प्रवाह– सभ मन पड़ैत अछि। आयुर्वेद–अध्यापक प० शिवचन्द्र मिश्रक भाषा–माधुर्य ओ आकर्षक अध्यापन बाहरहुसँ सुनि मुग्ध होइ। प० यमुना त्रिपाठीक धर्मशास्त्रीय व्याख्या नव ढंगक मनमोहक हो। एक बेर ओ मनुस्मृति पढ़बैत काल व्याख्या कयलनि जे जाहि ठाम चौबटियाक प्रदक्षिण करब लिखल अछि, से चलबाक दक्षिणवर्ती गति सूचक अछि। वैदिक सुरेश द्विवेदी स्वर–प्रक्रिया, प्रातिशाख्य एवं सायण महीधरक व्याख्या पढ़बथि। प० दयानाथ झाक ज्योतिष–क्लासमे खूब चहलपहल रहैत छल। हुनक सहायक छला बुद्धिनाथ झा। म०म० शशिनाथ झा वेदान्तक अध्यापक छला, किन्तु हमरालोकनि पाठेतर रूपें आग्रहवश 'साहित्यदर्पण' ओ 'काव्यप्रकाश'क किछु अंश हुनकासँ पढ़ल, हुनक व्याख्याक ढंग जेना आइ धरि कानमे गुञ्जित अछि। प० रविनाथ झा नामी वैयाकरण छला। हुनक पाठशैलीक परिधि ततेक व्यापक होइत छल जे छात्र हुनक विद्यासँ चमत्कृत तँ हो किन्तु हाथ कम लगै। शाखाक बाहुल्य मूलक खोजकें जेना बिसरा दैत हो। नन्द कुमार कालेजक किरानी छला। 'कालेज की रानी' कहि सिद्धिनाथ शास्त्री चुटकी लेथि।

प्रिन्सपल दौगोदत्ति शास्त्रीक व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावी छल। जेहने दिव्य रूप

तेहने निरवच्छिन्न प्रवाहित संस्कृतक वाक्पटुता। संस्कृत बजबाक जे अभ्यासी नहि रहथि ओ हुनका लग जयबोमे हिचकिचाथि। विख्यात अध्यापको लोकनि हुनकासँ संस्कृत वार्त्तालापमे धखाथि। विद्यालयमे तँ सहजहिं पारिवारिको व्यवहारमे संस्कृते मातृभाषा जकाँ अव्याहत राखथि। निन्न टुटने अकचका कऽ जँ नोकरोसँ बाजथि तँ पहिने संस्कृते बजा जानि। संज्ञा शब्द मे अर्थवत् सूत्रक अनुदायी रहथि। आनो भाषाक शब्दकें युग्म शब्द जोड़ि विभक्ति लगाय बाजथिः– 'बाल्टी पात्रमानीयताम्।'

हिन्दीक सेहो प्रमुख वक्ता छला। हँ, अपना दिसक पहाड़ी कुमायूँ आदिक लोक जखन आबथि तखन तहिना बाजथि। हुनक आठ दस वर्षक कन्या कात्यायिनी छलि सेहो संस्कृतेमे हुनका संग बाजथि।

पर्दा प्रथापर जे निबन्ध पुरस्कृत भेल छल, सामयिकताक कारणे से युवक समाज मे किछु विशेष चर्चित रहल। संयोगवश एहि आन्दोलनक अगुआ प० रामनन्दन मिश्र, जे ओहि समय मगन आश्रमकें केन्द्रित कऽ राष्ट्रिय आन्दोलनमे एक नवीन प्राण–प्रेरणा लऽ कऽ संलग्न छला, जनिक कार्यक्षेत्रमे बहेड़ी (दरभंगा) ओ बल्लीपुर (रोसड़ा) प्रमुख रूपें छल, गाम अयला। पुछरि कयलनि। ओहि समय हम मुजफ्फरपुर छलहुँ। एक दिन हठात् मुजफ्फरपुर पहुँचलाह। हुनकासँ पहिनो प्रभावित छलहुँ, एहि विशेष भेटघाँटक फल ई भेल जे हम हुनक अनुयोगी बनि गेलहुँ ओ किछु समय नित रूपें राष्ट्रिय कार्यमे लगयबाक हेतु बचनबद्ध भेलहुँ। हुनक अनुरोध छल जे राष्ट्रिय जागरणक प्रसंग राष्ट्रिय गीत–कविताक रचनावली तथा मगन आश्रमक दिससँ 'क्रान्ति' नामक हस्तलिखित मासिक पत्रिका नियमित रूपें सञ्चालित करी। तदनुसार हम मुजफ्फरपुर वा गाम जतय रही, कार्बन लगाय तीन प्रति हस्तलिखित पत्रिका प्रस्तुत कऽ मगन आश्रम पठाबी। भाषा हिन्दी रहैत छलै। मैथिलीक कदाचित् कोनो राष्ट्रिय गान होइक तँ ओहो समाविष्ट होइक। एही प्रसंग यदाकदा मगन–आश्रम सेहो जाइ। मिश्रजीसँ पत्राचार बरोबरि होइत रहय, प्रेरणाप्रद विचार एवं अनुभव प्राप्त करैत रही।

मिश्रजी मुजफ्फरपुर कहियो कऽ जाथि– हुनके संग ओतहि डा० श्रीकृष्ण सिंहकें देखल। मिश्रजीसँ हुनक घनिष्ठता छल। एकबेर ओ सी०पी०एन० सिंहक डेरापर लऽ गेला, परिचय करौलनि, ओ आवश्यकता पड़लापर कोना संवाद पहुँचयबाक ई माध्यम रहता, से हुनका संकेत देलथिन। यद्यपि ओहन अवसर कोनो आयल से स्मरण नहि पड़ैछ। एही क्रममे मुजफ्फरपुरक किछु नव–पुरान साहित्यिकसँ परिचय प्राप्त करबाक मौका भेटैत छल। एकबेर टुनकी साह धर्मशालामे कविसम्मेलनक आयोजन छलै, गयाक मोहन लाल महतो वियोगी, जे बिहारक हिन्दी कविमे विशेष लब्धप्रतिष्ठ छलाह, सम्मिलित भेलहुँ। रचना पढ़ल, प्रोत्साहित रहलहुँ। ओहि समय 'नटवरजी' जे किछु दिन पूर्व 'लतीफ' सँ 'नटवर' बनल छला–आर्यसमाजक तत्त्वावधानमे हुनक शुद्धि भेल छल–मुजफ्फरपुरक लोकप्रिय साहित्यिक रहथि। हुनकोसँ परिचय प्राप्त कयल। रामधारी सिंह, पुरुषोत्तमदास वैष्णव आदि जखन

कोनो गोष्ठीमे सम्मिलित होथि, हुनका लोकनिक सरस आलापसँ उद्दीपित होइ।

तावत् नवीन पीढ़ीक साहित्यिक आगाँ बढ़ि रहल छलाह। मन पड़ैत छथि मोहनलाल–नीतीश्वर प्रसाद–जानकी बल्लभ (बालकवि) आदि।

ओहि समय बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन' कच्चीसराय मे रहैत छला। हुनक छोटछीन किन्तु स्वच्छ–फड़िच्छ भवन 'कमलालय' नामसँ ज्ञात छल। ओतय जखन–तखन साहित्यिक लोकनि जुमैत रहथि। किछु दिन पूर्व ओ 'लेखमाला' त्रैमासिक प्रकाशित कयने छला। हुनक सम्पादनकलामे सुरुचिक परिचय साहित्यिक समाजमे परिचित भऽ चुकल छल। विशेष पर्व–अवसरपर जेना फगुआक अवसरपर 'उड़नखटोला' नामसँ हास्य–व्यंग्य भरल होली बुलेटीन बहार करथि। दशमीमे पूजा–बूलेटिन प्रचारित करथि। ओही बीच ओ 'वैशाली' नामसँ सुसम्पादित मासिक प्रकाशित करब आरम्भ कयलनि। दिनकरजीक कवि–व्यक्तित्वक परिचय ओतहि भेल। दिनकरजी वैशालीमे छपबाक हेतु 'मिथिला' नामक कविता डाकसँ पठोने छलथिन, भेँट भेलापर कहलनि जे देखू, सिमरियाघाटसँ रामधारी सिंह दिनकर नामक एक युवक कविक रचना भेटल अछि, विलक्षण, एहि प्रतिभाकें प्रोत्साहन भेटबाक चाही। वैशालीमे ओ कविता प्रमुख स्थान पौलक– 'अपनी माँ की मैं वाम भृकुटि' जे पाछाँ 'रेणुका' मे छपल। वैशाली क्रमहि विहारक प्रतिभाकें अग्रसर करबामे जुटल छल। प्रो0 मनोरंजनक 'मत कह क्या–क्या हुआ यहाँ इस वैशाली के आँगन में' एही वैशालीक प्रथम अंकमे छपल छल।

किन्तु वैशाली अर्थाभावें पतराइत वर्षावधिमे बन्न भऽ गेल, मुदा जतबे अंक प्रकाशित भेल सुरुचिपूर्ण विविधविषय विभूषित सुसम्पादित रूपें स्मरणीय अछि।

भुवनजीक दुहू अनुज भीमेश्वर सिंह–जलेश्वर सिंह भाइक देखादेखी किछु गल्प लिखब आरम्भ कयलनि। भुवनजी 'मिश्रबन्धुक अनुसरणपर 'सिंहबन्धु' नामसँ लिखि तीनू भाइक सम्मिलित लेख अपन पत्रिकामे छापथि। 'लेखमाला' मे 'सिंह–बन्धु'क एक रोचक समीक्षात्मक लेख छपल छल।

आचार्यक प्रथम वर्षमे प्रवेश करबाक बाद, सभा–समितिक आवेशी रहने ओतय आयोजित ब्राह्मण महासभामे गेलहुँ। प्रिन्सपल दौगादत्तिशास्त्री सभापति छलाह। मैथिल सरयूपारीय, कान्यकुब्ज, शाकद्वीपीय, औड्र (उड़िया ब्राहमण) सभक प्रतिनिधि छल। सभ पण्डिते ओ गण्यमान्य छला। ओतय सभ अपन विचार व्यक्त केलनि जे ब्राह्मणमे भेद स्थानीय निवासक कारणे अछि। मूलतः गोत्र मनुयाज्ञवल्योक आचार–विचारमे बहुत किछु सब समानधर्मा सन्तुलित षटकर्मा छथि। तखन रोटी–बेटीक पारस्परिक व्यवहारमे जखन कोनो निषेध नहि तँ मात्र देशाचारक नामे भेद किएक? सबकें पारस्परिक सम्बन्ध सूत्रमे ग्रथित होयबाक चाही।

प्रस्ताव तँ भऽ जाइक, परंच व्यवहारमे क्यो आगाँ बढ़थि नहि। किछु दिनमे वैचारिको रूपें ब्राह्मणसभा बहुत दिन धरि नहि चलि सकल। पाछाँ अधिक एकर समालोचके देखल गेला। जे सभ विद्वान् अग्रेसर छला से एहि आन्दोलनक

सफलतामे सन्नद्ध होइत क्रमशः विरक्त भऽ जाइत गेला। परंच एतबा भेल अवश्य जे खेबा–पीबामे पंक्तिबद्धता कम होइत गेल।

एहिमे विशेष आलोचना मैथिले ब्राह्मणमे देखल जाइत छल। स्वाभाविको छल–जखन मैथिलोमे सोति–जोग–पंजीबद्ध–वंश–जयबारक देबाल ऊँच कऽ बान्हले जाइत रहल अछि तखन अन्यदेशीय ब्राह्मणक संग सम्बन्धसूत्र जोड़ब सम्भव कोना?

महाविद्यालयमे समय–समयपर औपचारिक शिक्षेतर सांस्कृतिक व्यायामिक एवं साहित्यिक समारोह द्वारा छात्रलोकनिक प्रज्ञा विकासक आयोजन होइत रहैत छल। बाबू रामदयालु सिंह जे पाछाँ बिहार विधानसभक अध्यक्षता कयलनि, प्रसिद्ध गान्धीवादी नेता छला। राजनीतिक कार्यक्रमक अतिरिक्त सूर्यनमस्कारक प्रचारमे दत्तचित्त छलाह। ओ महाविद्यालयक छात्रकें सम्बोधित करय अयला, हमरालोकनि प्रेरित भेलहुँ। किछु दिन धरि ओकर प्रभावो छात्रक बीच रहलै, सूर्यनमस्कारक कार्यक्रम चलबो कयल, किन्तु परीक्षाक समय अबैत–अबैत सभक उत्साह क्षीण पड़ि गेलैक।

एकबेर चम्पारणक प्रसिद्ध वैद्य एवं बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलनक पूर्वाध्यक्ष चन्द्रशेखर शास्त्रीक एक व्याख्यान भेल जाहि मे गूलड़िक प्रयोग रामवाण जकाँ अमोघ शुभकारी सिद्ध कयलनि। व्याख्यानक बाद हुनकासँ आयुर्वेदिक छात्रलोकनिक संग भेट करय गेलहुँ तँ देखल गूलड़िक ठाढ़िपात ओ फलक ढेर आगाँमे रखने प्रवचन कऽ रहल छथि, हुनक आस्था छलनि जे ईश्वर हमरा गूलरिक गुणक प्रकाशक उद्देश्यहिसँ जेना जन्म देने होथि। ओ 'गूलड़ि गुण विकास' नामक पुस्तको प्रकाशित कयलनि जे संस्कृत–परीक्षामे सर्वसाधारणपत्रमे अनिवार्य कऽ देल गेल छल। बहुतो व्यक्ति गूलड़ि सेवन आरम्भ कयलनि। बहुत दिनक बादो महारथीजीक ओतय आतिथ्य करय गेलहुँ तँ गूलड़िक तरकारी खयलहुँ। स्वादहीन रहितहु स्वादि–स्वादि खेलहुँ। रसना तृप्तिसँ अधिक स्वास्थ्यप्राप्तिक आकर्षण छल।

एकबेर चन्द्रशेखर शास्त्री बाल्मीकीय रामायणक हिन्दी अनुवादक प्रचारक क्रममे अयला तँ हुनक स्वागतमे एक साहित्यिक गोष्ठी आयोजित भेल।

एक बेर कलियुगी भीम राममूर्त्तिक भाषण एवं शारीरिक प्रदर्शन भेल जाहिमे छातीपर पाथर फोड़ब आदिक विलक्षण प्रदर्शन भेल। सब साश्चर्य छलहुँ।

1927–28 तक बिजलीक नगरहुमे विस्तार नहि भेल छल। होस्टलमे बिजली नहि, लालटेम राखय पड़ैत छलै। पाछाँ बिजली लगलै। प्रथम–प्रथम टॉकी फिल्म मुजफ्फरपुरमे देखल– शकुन्तला, अनारकली एहने सन फिल्म देखल। फिल्मी गीत नवे–नवे उभड़लैक ओ लोककण्ठमे बसय लगलैक, देखल दृश्यक स्मरणसँ ओहि गीतधुनिमे दोहरी आकर्षकता बुझा पड़लै। ओहि समयमे सुलोचना (एंग्लो इण्डियन) मुख्य तारिका छलि। महाराष्ट्रमे दुर्गाखोटे, शान्ता आप्टेक नाम सुनल जाय लागल। शान्तारामक नाम फिल्मी जगतमे परिचित भऽ रहल छल। मूक फिल्मक प्रचलन

मेटाय लागल। टॉकी लोकमनोरंजनक प्रधान साधन बनि गेल। रेडियोक चर्चा शुरू छल। थिएटरक कोनो मंच नहि छल। शौकिया नाटक संस्था सभ पर्व वा सम्मेलनमे आयोजित हो। वसन्तपंचमी ओहि समय किछु विशेष शिक्षा–संस्थान, छात्रावासमे मनौल जाइ, एतेक नहि।

महाविद्यालयक वार्षिकोत्सव भेल करै जाहिमे कोनो विशिष्ट विद्वान्, शिक्षाप्रेमी श्रीमान् प्रसिद्ध संस्कृतानुरागी समाजोन्नायक अध्यक्षता करथि। ओहि समय उद्‌घाटन वा मुख्य अतिथि वा विशिष्ट अतिथिक ॲटावेशक व्यवहार नहि छल। हँ, अध्यक्षक अतिरिक्त वक्ता रूपमे जे बजौल जाथु। हमरालोकनिक समयमे दरभंगाक नव राज्यासीन महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक शुभागमन भेल छल। पूर्व महाराजा–धिराजक सम्पर्क धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालयकें प्राप्त छलै। 29 इ. मे हुनक स्वर्गवास भेलापर म0 कुँवर नवे पदासीन भेल छला। हुनक स्वागत–सम्मानमे विशेष आयोजन भेल छल। कालिदासीय रघुवंशक कौत्स–वरतन्तु ओ रघुक प्रसंगक नाट्यरूपान्तर मुक्त मंचपर अभिनीत भेल छल। हम वरतन्तुक शिष्यक अभिनय कयने छलहुँ। संस्कृतमे किछु औरो अभिनय ओ प्रहसन सरस्वतीपूजाक अवसरपर आयोजित होइत छलै जाहिमे सम्मिलित होइ। संस्कृत पदक गानोमे भाग ली। ओहि समय संस्कृत छात्रमे संगीतक प्रचार कम होइत छलैक। अतएव छात्रमे विशेष चिन्हार होयबाक इहो एक साधन छल।

संस्कृतक छात्रमे बहुत कम राजनीतिक चेतना देखबामे अबैत छलै। यद्यपि चन्द्रशेखर आजाद सन बलिदानी साहसी युवक नेता काशीक एक संस्कृतेक छात्र छलाह। किन्तु सामान्यतः संस्कृतक पण्डित रूढ़िवादी, राजभक्त ओ पढ़ब–पढ़ायब एहिसँ अतिरिक्त कोनो आन्दोलनसँ सर्वथा असस्पृक्त रहैत छलाह, स्वाभावतः अध्यापकक प्रभाव छात्रोपर पड़ैत छलैक। मुदा पत्र–पत्रिका पढ़बाक रुचि लोकमे बढ़ि रहल छल। देशमे गान्धीजीक तूफानी प्रभाव अन्हड़ जकाँ गिरिगह्वरसँ लऽ सुदूर गाम घरक एकान्त प्रान्तहुमे हलचल मचा चुकल छल जे संस्कृतक राजनीतिक संकीर्ण वातावरणहुकें चंचल बना रहल छल। ओही बीच नेहरूजी रूस–यात्रासँ फिरलाक बाद युवक–आन्दोलनक सूत्र–संचालन करैत छलाह। उत्तर बिहारमे मुजफ्फरपुरक विशेषता छलैक। नेहरूजी तिलक मैदानमे भाषण देने छलाह। हमरोलोकनि बहुतो संस्कृत छात्रक संग सम्मिलित भेल छलहुँ। नवम्बर मासक दिनक 11 बजेक समय छल। मोन पड़ैछ– नेहरूजी भाषण करय मंचपर आयलाह तँ बजलाह जे– 'अहाँसभक ओहिठाम नवम्बरोमे रौद तेज रहैछ।' लगले बगलमे बैसल क्यौ हुनकापर छाता तानि देल तँ ओ तमकि कऽ बजला जे गर्मी हमरालोकनिकें चाही, नवम्बरोक जाड़मे जेना एहिठाम रौद–घाममे गर्मी मिझायल नहि अछि तहिना अहूँलोकनिमे गर्मी कायम रहओ यैह हमर अभिप्रेत अछि। तालीक गड़गड़ाहटिमे श्रोतामे और गर्माहटि आबि गेल। युवा–शक्ति ओ छात्रलोकनिकें मातृभूमिक गुलामीक जिंजिर तोड़बाक अभियानमे सम्मिलित होयबाक आह्वान कयलनि। ओहि सबसँ,

अंग्रेजी कालेजक हो वा संस्कृत महाविद्यालयक छात्रवर्गमे एक नव बलिदानी उत्साह आबि गेल छल।

एहि बीच सरकारी गैर–सरकारी झण्डा फहरैबाक आन्दोलनक कार्यक्रम घोषित भेल। हमरा लोकनि बहुतो छात्र कालेजक भीतर प्रिन्सपल ओ आयुर्वेद वर्गक बीचमे जे पोर्टिको बनल छल तकर द्वार–प्रवेश–खण्डमे जमा भेलहुँ। आतंकमय वातावरण ओ निरातंक अन्तःकरणक जेना परीक्षण होइ, किछु युवक छात्र मध्यमे ओ किछु सहटल–दबकल कात–करोटमे बैसल छलाह। वक्तामे जे बाहरक लोक आहूत छलाह प्रायः पुरुषोत्तमदास वैष्णव एवं रामधारी वा श्यामधारी कोनो नामधारी स्थानीय नेता, से संयोगवश नहि आबि सकला। छात्रमे साहसी तँ अनेक छलाह किन्तु बजबाक अभ्यासी कम। उमेश शास्त्री नामक एक आयुर्वेदिक छात्र ओ दोसर हम बजबा लेल आग्रहीत भेलहुँ। सार्वजनिक आन्दोलनमे रुचि रखनिहार नियमतः खद्दर पहिरनिहारमे तँ छलहुँ, जे फुरल निधोख बाजि गेलहुँ। तथ्य–विषय जे किछु रहल हो, किन्तु जोश–खरोश छल, तालीक गड़गड़ाहटि ओ 'वन्देमातरम्'क संग 'गान्धी–नेहरू पटेल'क नामक नारा खूब लगलैक। सन्ध्या धरि सभा समाप्त भेल। कालेजक होस्टल जेना गर्मा गेल हो।

दोसर दिन भोरे देखल गेल जे जाहिठाम कालेजमे यूनियन जैक फहराइत छल, राष्ट्रिय झण्डा फहरा रहल अछि। प्रिन्सपलक क्वार्टर–हातामे खबरि भेलनि, हलचल मचि गेल।

हमहुँ पाछाँ बुझल जे एना झण्डा फहरौनिहार–जलवार (दरभंगा) क मधुकान्त झा, सनहा (बेगुसराय) क देवीकान्त झा ओ आरा दिसक कोनो द्विवेदी एवं किछु अन्य छात्र जे अधिकांश समय हमर विशेष अनुगत–प्रभावित रहथि। पंरच सभक सन्देह हमरा ओ उमेश शास्त्रीपर स्वाभाविके रहै। एकदिन प्रिन्सिपल हमरा दुहूकें बजाय स्नेहपूर्वक बहुत किछु बुझौलनि–सुझौलनि जे कालेजमे अनुशासन रहय, शासनक विरोधक बहुत द्वार छै– 'छात्राणामध्ययनं तपः'। राष्ट्रिय आन्दोलन ककरा ने अभीष्ट छै, परंच साँपो मरय लाठियो नै टूटय–आदि–आदि। हम सब सुनि लेल आ कहल जे हमरालोकनिपर सन्देह निराधार थिक, कयने रहितहुँ तँ नठितहुँ नहि।

परंच हमरा सभकें सन्देहक दृष्टिसँ देखय जाय लागल छल। कारबाइ तँ कोनो देखबामे नहि आयल, मुदा बुझि पड़ल जे किछु सतर्कता बर्तल जा रहल अछि।

एतबा अवश्य छल जे नगरमे जखन कोनो आन्दोलनी सभा–समिति होइ तँ किछु गोटे निश्चितरूपें गेल करी। एहि सभक प्रमुख स्थान तिलक मैदान अधिक काल टहलल–बुलल करी, किछु ने किछु ओतय भेल करै। ओहि मैदानक निकटे रायबहादुर द्वारकानाथक कोठी छलनि–ओ शहरक प्रतिष्ठित नागरिकक संग डी० एस० एस० कालेजक मैनेजिंग कमिटीक प्रमुख सदस्य छला, किन्तु विचारमे ओ

छला बेस फर्राहाँ–गपमे बेस वाचाल–वावदूक। गप्प राष्ट्रियताक हाँकथि मुदा चाहथि जे कालेजक छात्र आन्दोलनसँ फराक रहय। ओ अपन हातामे टहलैत रहथि ओ देखथि तँ हमरासभकें बजा लेथि। हमरहु सब हुनक प्रवचन सुनैत रही। असरि भने कोनो नहि हो।

छात्रमे घनिष्ठ भाव रामचन्द्रजीसँ, जयकिशोरजीसँ छल किन्तु ई लोकनि राजनीतिक चर्चामे कोनो रस नहि राखथि। साहित्यिक चर्चामे रमल रहथि।

रामचन्द्रबाबूक संग घनिष्ठता बढ़िते गेल। साहित्यिक अभिरुचिक तीव्रता ततेक उमड़ि आयल जे हमरालोकनि 'जागृति' नामसँ संस्कृत मासिक पत्रिका चलयबाक उपक्रम कयल। जयकिशोरजी सेहो सहयोगी बनबाक आस्था देलनि। उत्साह मात्रक पूजी संवल लऽ प्रवृत्त भेलहुँ। नोटिस बहार कयल, पत्र लिखल। सर्वाधिक प्रोत्साहन भेटल जखन म0 म0 डा0 गंगानाथ झा 'कुमारिल–शंकरौ' नामक लेख पठौलनि। प0 दुःखमोचन झा 'मुगलबाला' नामसँ अनारकलीक चरितपर संस्कृतमे लघुकथा पठौलनि। प0 भूपनारायण झासँ पद्य प्राप्त भेल। आनो विद्वानक लेख संगृहीत भेल। छाताबाजारक बर्मन प्रेसमे छपाइ ठीक भेल। वसन्तपञ्चमी 1934 प्रकाशनक दिन स्थिर भेल। तावत् 'जागृति' नामेपर विवाद उठल जे 'जागृति' अपभ्रंश शब्द भाषामे प्रचलित अछि। संस्कृतमे 'जागर्ति' होयबाक चाही। 'प्रथमग्रासे मक्षिकापातः' हमरालोकनि घबरयलहुँ, किन्तु जखन 'खुदा स्वरं करोति'क शुद्धीकरणक सामर्थ्य उणादिसूत्र पाठकें छै, तखन इहो किएक ने शुद्ध मानल जाय। हमरालोकनि लक्षणसँ पहिने लक्ष्य ताकय लगलहुँ। अनेकठाम नव संस्कृत रचनामे एकर प्रयोग भेटल। प्रिन्सपल ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ति शास्त्री, जे संस्कृतक मानल अधिकारी विद्वान् छला, तनिक कोनो मुद्रित रचनामे 'जागृति जुवाम्' पद प्राप्त भेल। बम्बइसँ 'मंगलाशासनम्' नामक पुस्तिकामे अनेक विद्वानक सामयिक पद्य छपल छल ओहूमे जागृतिक प्रयोग भेटल। हँ, प्राचीन काव्यमे एकर व्यवहार नहि भेटल। अथापि विवादमान स्थितिमे 'डूबते को तिनके का सहारा' कहबी चरितार्थ भेल। हमरालोकनि ओही स्वीकृत नामपर अड़ल रहलहुँ। प्रथम अंक छपि गेल। 'विहार संस्कृत एसोसिएशन'क वार्षिक अधिवेशन 34क जनवरीक अन्तमे धर्मसमाज संस्कृत कालेजमे आयोजित छलै।

कविगुरुजीक डेरा कालेजसँ लगभग एक मीलक दूरीपर एकान्त–शान्त फुलबाड़ीक बीच एक बङ्लानुमा घरमे छल। प्रो0 उमानाथजी अपन पित्तीक संग ओही डेरामे छला। तीन मील दूरी पार करैत साइकिलसँ जी0 बी0 बी0 कालेज जाथि। अंग्रेजीक अध्यापक प0 अनन्त मिश्रक डेरा बीचहिमे पड़ैत छलनि। हमरालोकनि यदाकदा डेरापर जाइ। कविगुरुजीक समीप्यक लाभ ली। हुनक लिखबाक समय प्रभातप्राया ब्राह्मीमुहूर्त्तसँ 8 बजे प्रातः धरि छलनि। किछु ने किछु रचना प्रत्यह करथि। तदुत्तर स्नान–पूजन, भोजन एवं अध्यापनवृत्ति। सन्ध्याकालमे किछु काल पुस्तकावलोकन। ओही समय राधापरिणय बोस प्रेसमे छपैत छलनि। आयो साहस्त्रीक

रचना करैत छला। हमरालोकनिकें प्रसंगसँ सुनयबो करथि। राधापरिणयक संशोधित प्रूफकें मिलयबाक भार देथि, कहियो पहिलो प्रूफ पढ़िअनि। किन्तु अन्तिम प्रूफ अपने देखथि। दू वर्ष छपबामे लागि गेलैक। जहिया प्रकाशित भेलैक हमरालोकनि पुस्तक प्रकाशनक उपलक्ष्यमे गुरुजीक संग फोटो खिचौल। गुरुजी, जयकिशोरजी, रामचन्द्र जी ओ हम, जकर उपयोग 'मिथिलांक' मे भेल छल। पुस्तकपर समीक्षात्मक लेख कोनो पत्रिकामे देबाक भार हमरा भेटल, जे 'गंगा' मासिक पत्रिकाक 34–35 इ0 क कोनो अंकमे प्रकाशितो भेल। 'राधापरिणय'क उतारेपर पाछाँ अपनालोकनिक विशेष आग्रहपर ओ 'एकावलीपरिणय' लिखलनि।

गुरुजी वैष्णव छला, राधा–कृष्णक एकान्त उपासक। सोतिपुरामे दू परिवार घोर वैष्णव, गुरुजीक एवं लज्जानाथ बाबू–लेखनाथ बाबूक। हुनकालोकनिकें दामोदरनारायण चौधरी ओ चन्द्रकान्त नारायण चौधरी (बल्लीपुर) सँ घनिष्ठ मैत्री–भाव, नौत–पिहान चलैत छलनि। कोन परिवारक प्रभाव कोनपर से बुझल तँ नहि भेल, किन्तु बल्लीपुर–खानदान पहिनहिसँ वैष्णव तें अनुमान कयल जा सकैछ।

उमानाथ बाबूसँ धाक करियनि, परंच् ओ गुरुजीक प्रियपात्र बुझि टोकल करथि। हुनक आस्तिकता देखि मुग्ध छलहुँ। अंग्रजी शिक्षित व्यक्तिमे एहि प्रकारक शास्त्रानुष्ठान, कर्मकाण्डीय विधिविधान कदाचिते देखबामे अबैछ। 'कुशहीना तु मा सन्ध्या, तिलहीनां तु तर्पणम्' ओ कहियो नहि कयलनि। अन्तमे 'काशीमरणान्मुक्तिः' से ओ मृत्यु हेतु काशीवास कऽ पाछाँ 97 मे मुक्तिलाभ कयलनि।

अनन्त बाबू हमरालोकनिक अंग्रजीक अध्यापक छला। जखन पढ़बथि–खूब तत्परतासँ। कहियो गप्पोमे रमा देथि, शैक्षणिक विषयेक चर्चा करथि। हुनक विजयासेवन प्रशस्त छल। हृदयक अत्यन्त पवित्र, सरल–स्नेहमय। अवकाश प्राप्तिक बादो ओ अपन स्नेहसँ सिक्त करैत रहला।

उमेश शास्त्री (सीतामढ़ी दिसक) कें बहुतो दोहा–कवित्त–सबैया अभ्यास। नाथूराम शंकर, रत्नाकर आदि ओहि समयक व्रजभाषा कविक ओ बिहारी–मतिरामदेव आदिक रीतिकालीन रचना सुनाय आकर्षित करथि। रामचन्द्रजी (मोहन) संस्कृत श्लोकक भंडार, जयकिशोरजी बङला–अंग्रेजीसँ लऽ संस्कृत ओ हिन्दीक प्राचीन–नवीन कविताक प्रवाही अभ्यासी। रामचन्द्रजी ओ जयकिशोरजीकें हमरालोकनि श्रुतिधर कहियनि। श्लोक दोहरा–तेहरा कऽ सुनि लेथि, लगले सुना देथि। हम आनक सुनी बेसी, सुनबी कम। हँ, जखन कोनो रचनाक प्रसंग अबैक तँ ओहिमे सम्मिलित होइ ओ गोष्ठीमे यश भेटि जाय तँ अपन अभ्यासक कमीक अवसादकें 'प्रसादस्तु' प्रसन्नतोमे बदलबाक अवसर भेटि जाय।

परीक्षोमे किछु तहिना हो। कतोक संगी कहथि जे हम तँ परीक्षामे कलम तोड़ि कऽ राखि देलियैक। क्यो कहथि जे निबन्ध तँ हम पद्यबद्धे–श्लोकबद्धे लिखि देलियैक। हम एतेक कॉपी भरलियैक आदि–आदि। परंच फलप्रकाश होइक तँ कने अगिले माङिपर अपनाकें बैसल पाबी। पाछाँ इ प्रसिद्ध भऽ गेलैक जे परीक्षामे

प्राथम्य तँ हुनक भाग्येमे लिखल छनि, तें जँ प्रथम अयबाक अछि तँ जाहि वर्ष आ विषयमे ओ बैसथि तहिया नहि बैसी।

सुरेन्द्र गिरि, राजेश्वर ठाकुर (सिमरा) ओही समय कालेजमे पढ़य अयला। गिरिजीसँ मुजफ्फरपुरमे भेट होय। किन्तु राजेश्वर ठाकुर तँ दरभंगाक जीवनमे अभिन्न अंग बनि गेला। 'स्वदेश' (दैनिक) जखन 1954—55 मे बहार कयल तँ ओ अनन्य सहयोगी बनला। मुजफ्फरपुर छोड़बाक बादो रामचन्द्र बाबूसँ बरोबरि पत्राचार भेटघाँट चलैत रहल। बासुकी बिहारीक प0 कृष्णेश्वर झा जे पाछाँ कालेजक प्रिंसिपल भेला तनिकोसँ सम्पर्क होइत रहल।

कहियो कऽ लगापासक स्नेही छात्र अपन घरपर कोनो पर्व—अवकाशमे लऽ जाथि। भैरवजी काँटी स्टेशन उतरि अपन गाम चिकना लऽ गेल छला। ओतहि गुरु किशोरी झा, ओ हुनक परिवारक प0 अनिरुद्ध झासँ परिचय भेल, हुनक बालक ओहि समय तेजगर, मेधापटु वटु छला। हमर किछु घनिष्ठ मित्र सरयूपारीय छात्रवर्गमे छला, हुनक चौका पृथक चलनि किन्तु ओ हमरालोकनिकें श्रोत्रिय कहथि। ओहिसँ पूर्व बुझल छल जे मैथिलेमे श्रोत्रिय होइत छथि। ओ लोकनि आचार—विचारमे बड़ कट्टर रहथि। अस्नात चौका घरमे प्रवेश नहि करथि, तेलक स्थानमे घृतक व्यवहार करथि।

भैरवगिरि 'मित्रम्' नामक एक संस्कृत—बुलेटीन बहार करैत छला। प्रायः ओहीमे प्रथम बेर बालकवि जानकीबल्लभ शास्त्रीक कविता देखल। पाछाँ एक संस्कृत कविताक पोथी ओ नव—नव भाषा प्रचलित छन्दमे छपौलनि। साहित्याचार्य ओ पाछाँ कैलनि।

एकबेर स्मरण अछि चोरौतक महन्थजीक छावनीमे गेलहुँ। हुनका ओतय हमर बहिनोय श्रीकृष्ण मिश्र (जाँता) काज करैत छला, हुनकहिसँ भेट करय गेलहुँ। महन्थ लखन नारायण दासकें देखलियनि। परिचय पुछलनि तँ ओकरे बारम्बार दोहरबैत रहला, मन अकछा जकाँ गेल। किछु काल बाद देखल जे ओ हाथ मटिया रहल छथि। नोकर बाकुटक बाकुट माटि दैत जाइछ आ लोटाक लोटा पानि ढारैत जाइछ, कैकटा बाल्टी खाली भऽ गेल। फेर अयला तँ टोकलनि, पढ़बा—लिखबाक हाल दोहरा—दोहरा पुछलनि ओ चलबाकाल प्रसाद रूपें फल दैत कहलनि आयल करी। अहाँक बहिनोय एतहि छथि तें एहि स्थानकें अपन बुझी।

चतुर्भुज स्थानमे सोमबारीमें प्रसिद्ध शिवदर्शन मेला लगैत छल जे देखय जाइत रही। पाछाँ बुझल जे मुजफ्फरपुर क वालमंडी वा सोनागाछी यैह स्थान छल। चतुर्भुज स्थान जायब एक प्रकारें रसिक—हास्य विनोद होइत छल।

पर्व—स्नानमे गण्डकी स्नान हेतु जाइ। अषाढ़ाघाटमे कार्त्तिकी पूर्णिमाक मेला लगैक, ततहु जाइत रही। राजक मकान—मैदान देखि आबी। स्थानसँ जेना ममत्व हो।

मुजफ्फरपुरक छठि—दिवाली आ झूलन—उत्सव नामी छल। मेहथा परिवारमे संगीत—रसिक अनेक व्यक्ति छला। ओतय झूलनमे देशक नामी गबैया, कीर्त्तनकार,

नृत्यांगनाक जमघट रहैत छल। हमरालोकनि रातिमे देखय जाइ। अधिक राति भेने परिसरक फाटक बन्द भऽ जाइक। फटकियाकें कहि–सुनि फाटक खोलबाय गुपचुप सीटपर जाय सुती।

एकबेर संगीतक विख्यात उन्नेता एवं सन्त गायक विष्णु दिगम्बर व्यास मुजफ्फरपुर आयल रहथि। हुनक संगीत ओ रामायणपरक प्रवचन सुनबाक सौभाग्य भेटल । ओ नेनामे क्रान्तिकारी देशभक्त छला।

काशी–प्रसंग

1924 मे काव्यतीर्थ परीक्षोत्तीर्ण भऽ चुकल रही। साहित्याचार्य परीक्षा 1932 मे दऽ चुकल छलहुँ। मध्यमे एक वर्ष रोगाभिनिवेशमे समय चल गेल। परीक्षा दऽ चुकल छलहुँ मुदा कालेज–सम्पर्क छूटल नहि छल। ओही बीच काशीक संस्कृत प्रकाशक मास्टर खेलाड़ीलाल मुजफ्फरपुर आबि गुरुजी (कविशेखरजी) सँ आग्रह कयलनि जे मध्यमा परीक्षामे स्वीकृत साहित्य ग्रन्थ 'काव्यदीपिका'क संस्कृत व्याख्या लिखि देल जाय। अपने किछु अस्वस्थ छला। कहलथिन– हम तँ एखन स्वस्थ नहि छी, हमर एक विद्यार्थी आचार्य छथि, हुनकासँ लिखबा देब। प्रकाशककें मनहूस देखि ओ पूर्ण सन्तोष प्राप्तिक आशा देऔलथिन। हमहु एहि क्षेत्रमे अनुभवहीन रहितहुँ 'गुरोराज्ञा गरीयसी' सोल्लास स्वीकार कऽ लेल। जेना–तेना तीन मासमे 1932 मे प्रस्तुत कयल जे 1933 क अन्तमे प्रकाशित भेल। अन्तिम पंक्तिमे शाकेक उल्लेख देल अछि –

' युगशरवसुशशिमित'(1854)शकाब्दे श्रीभुवनेश्वरतनुजन्मा।
स्नेहवर्षिणीव्याख्यामाख्यान् मधुमासे सुरेन्द्र शर्मा ।।'

एहि हेतु हमरा काशी जाय डेढ़ मास रहय पड़ल, बी0 एल0 पावगी प्रेसमे पहिल संस्करा छपल छल। पुस्तक छपि टा गेल– व्याख्याकारमे नाम गना गेल, किन्तु प्रकाशकसँ कहियो पाला पड़ल नहि छल। पारिश्रमिक ओ दैते रहला, हम लैते रहलहुँ। दू–एक पत्र तगेदाक लिखि सन्तोष कयल। पाछाँ सुनल जे दोसर संस्करण करौलनि। 1984 मे बनारस गेल रही तँ 'काव्यदीपिका' क पुछारि कयल, तत्काल नहि प्राप्त भेने हुनक उत्तराधिकारीकें परिचयपूर्वक दू प्रति पठयबाक आग्रह कयल तँ वी0 पी0 सँ पठौलनि।

हँ, पुस्तक छपबाक सन्तोष भेल, ओकर भूमिका जे लिखलहुँ से पढ़ि किछु व्यक्ति प्रोत्साहित कयलनि जे संस्कृत गद्यक परम्परा निर्वाहित करू। किन्तु जीवनक विभिन्न गतिविधिमे किछु दोसरे दिशा निर्देशित छल।

अनन्तपूजामे जेना 'किं मध्यते ? क्षीरोदधिः, किं मग्यते ? अनन्तः ताही तरहें उपनयनक समावर्त्तन कालमे मड़वापर मिथिलामे बहुधा पुछल जयबाक व्यवहार छैक–' कतय जाइ छी पढ़य जाइ छी– कतय ? तँ काशी।' एहिसँ स्पष्ट अछि जे

मिथिलामे काशी जाय पढ़बाक मध्यकालिक परम्परा छलै। 19म शताब्दीक अन्त ओ 20 म शताब्दीक प्रारम्भ धरि काशी जाय पढ़बाक हेतु मैथिल छात्रक धर्रोहि लागल रहैत छल। 'काशी पढ़ि कऽ आयल छथि'— एतबे परिचय पाण्डित्यक परिचायक होइत छल, जेना हेमनि धरि 'फॉरेन–रिटर्न' भेनहि नव्य शिक्षित विशिष्ट बुझल जाइत छला।

माड़वपर 'काशी पढ़य जाइ छी'— एहि वाक्यक अनुसार काशीमे पढ़बाक सौभाग्य तँ हमरा नहि भेल, किन्तु काशीमे पढ़निहारक संग किछु समय रहबाक अवसर अवश्य भेटल। तीर्थयात्रा प्रसंग पूर्वापरक यात्राक अतिरिक्त छात्रावस्थामे काशी जयबाक एहन दू बेर अवसर भेल। एकबेर 32 इ0 मे 'काव्यदीपिका– टीका' क प्रकाशन प्रसंगमे– दोसर साहित्यिक यात्रे कहब अधिक संगत होयत, जीवन–संघर्ष पूर्वप्रवेशक प्रस्तुतिक अवतरणमे।

साहित्यिक यात्रा

आचार्य परीक्षाक बाद, एक बेर अकस्मात् आवेग भेल जे कने जीवन संघर्षमे प्रवेशक हेतु बाहरक हवा–पानि लगा आबी। मायसँ नेहोरा–विनती कऽ किछु आवश्यक काजे काशी जयबाक हेतु किछु टाका माङि लेल। ककरो संग जयबाक ओ जल्दी फिरबाक अनुरोधक संग गामसँ ककरो बिनु संकेत चलि देलहुँ।

पहिने काशी पहुँचलहुँ। चिन्हार स्थलमे नहि जाय बुलानाला धर्मशालामे डेरा देल। काज छल एकाकी घाट –बाट ,गली–बजार बौआयब, कार्माइकल लाइब्रेरीमे बैसि कोनो सामयिक साहित्यिक वा पत्र–पत्रिका उनटायब, प्रातः गंगा–स्नान ओ विश्वनाथ–दर्शन, किछु लघुभोजन कऽ कहियो कर्माइकल लाइब्रेरीमे, कहियो नागरी प्रचारिणीमे बैसि बैसि किताब उनटायब। सन्धामे कोनो पार्कमे बैसि लोकक गमनागमन देखी। कहियो दशाश्वमेघ घाटे–बाटे दृश्य देखी। स्नानर्थीक भक्तिभाव देखब, घाटक मन्दिरक घण्टानाद, स्तुतिपाठ सुनी, कतहु रंग–विरंगक परिधानमे सजल–धजल नागरिकाक छवि–छटा देखैत, विकलांग–भिखमंगाक गोहरि सुनैत, बजारमे अमार लागल दार्शनीय वस्तु–जात पर उड़ैत नजरि दैत, थाकि–थुकि यथासमय धर्मशालामे विश्राम ली। द्रव्यक कमी देखैत खयबा–पीबामे पूर्ण संयम राखी, चाह पीबाक ओहि समय चालि नहि, पान कहियो खन एकाध बेर खा ली। 'आज' क सान्ध्य संस्करण दू पाइमे भेटैत छलै से ली। पराड़करजीक प्रखर लेखनीक प्रसाद सम्पादकीय नियमित पढ़ैत सूति रही।

गोटेक सप्ताह एहिना आवारागर्दीक तर्जपर निरुद्देश्य घुमैत–फिरैत जी अकछा गेल। पढ़बोमे मन नहि लागय–घुमबो–फिरबोसँ अकच्छ भऽ गेलहुँ । निरुद्देश्यक रमणीयता विद्युदन्मेष जकाँ क्षणिक। ओहि समय होटलमे सिद्धान्न अर्धैत नहि छल। भात खयना अनेक दिन भऽ गेल, बलहीन जकाँ बुझि पड़ल। कतहु

चिन्हार देखि जे मुँह फिरा लैत छलहुँ से आब चिन्हारक खोजमे बिदा भेलहुँ। घनिष्ठ चिन्हारमे छला काशीनाथ ठाकुर, यात्रीजी, ओहि समयक वैद्यनाथ मिश्र 'वैदेह'। रानीकोठामे डेरा छल। किरणजी कतहु दूर महल्लामे आयुर्वैदिक प्रेक्टिसमे लागि गेल छला। हम सर्वप्रथम यात्रीजीक डेरा खटखटौल। बड़े उल्लाससँ भेटलाह। ओहि दिन सत्रमे हुनके संग भोजन हेतु पहिले–पहिल तारामन्दिर गेलहुँ, भोजन कऽ तृप्त भेलहुँ । काशी अयनिहार एवं रहनिहार मैथिलक हेतु ई बड़का अवलम्ब छल। एही प्रकारक, किन्तु संख्यामे कम, श्यामा–मन्दिर एवं किछु अंशमे राममन्दिरपर मैथिलक हेतु सत्र खुजल छल। अतिथिमात्र तीन दिन भोजन कऽ सकैत छला। व्यवस्थापकक अनुमतिपर बहुतो छात्र तथा किछु काशीवास कयनिहार विद्वान वा तैर्थिको व्यक्ति नियमित भोजी छला। दालि–भात, दू–तीन तरकारी, घृत, चटनी, नेबो, दही, भोजनोत्तर मुखशुद्धि हेतु पान–सुपारी सबकें वितरित हो। से एके सन्ध्या चलैक। किन्तु ततबा भोजन होइक जे रातिमे लघु भोजन, दुग्धपान वा फँक्का–फुक्कीसँ काज चलि जाइ। एहि प्रकारक सत्रमे जयबामे संकोच होइत छल, किन्तु जखन विशिष्टमे शिष्टहुकें देखल तँ संकोच कमल। एहि बीचमे यात्रीजी हस्तलिखित 'वैदेही' नामसँ जे मासिक पत्रिका मैथिलीमे संचालित छल तकर फाइल देखौलनि। छपबाक हेतु एक 'वसन्तांक'क तैयारी चलैत छल। हमहु अपन एक रचना अर्पित कयल , ओतहि वा गाम आबि कऽ पठौल से स्मरण नहि अछि। कविताक दू पंक्ति मन पड़ैछ –

ऋतुपति अयला प्रवृतिवयस्ये स्वागत हेतु सज्जिता होउ।
मलिन जीर्ण पट–पर्ण बदलि नव किसलय वसन भूषिता होउ।।

अयबासँ पूर्व गामहिसँ हंस–कार्यालयक पतासँ प्रसिद्ध कथाकार प्रेमचन्द जीकें पत्र द्वारा एहि आशयक निवेदन कयने छलियनि जे अपनेक साहित्यक पूजक एक छात्र दर्शनक उत्कण्ठा रखैछ। कोनो दिन उपस्थित भऽ आशीर्वाद ग्रहण करत। एहि आशयक निवेदन पत्र काशी अयबासँ पूर्व प्रसाद जीकें सेहो लिखि देने छलियनि। यात्रीजीसँ अनुरोध कयल जे कने संग चलू– दुहू साहित्यिकसँ भेंट करी।

दोसर दिन जायब स्थिर भेल। वेनियावादमे लाल रेलिंगवला दोतल्ला मकानमे प्रेमचन्दजी रहैत छला। दुहू गोटे पहुँचलहुँ, धखाइते पहिने नीचासँ पुछारि कयल। प्रायः हुनक बालक अमृतराय छलथिन, बुझि कऽ अयला ओ ऊपर लऽ गेला। अभिवादनपूर्वक दर्शनार्थीरूपें अयबाक अपन चिर आकांक्षा व्यक्त कयल। बड़े प्रेमसँ पढ़य–लिखय, रुचि–प्रवृत्ति तथा संक्षेपमे देश–कोसक जिज्ञासा कयलनि। से सभ भेलाक बाद हम किछु जिज्ञासा करैत गेलियनि। उपन्यास एवं गल्पक प्रसंग, 'हंस'क सम्पादन–प्रकाशनक अनुभव, कखन लिखैत छी, अध्ययनक समय कखन रहैछ, ककर रचना पसिन्न, अपन कोन रचना विशेष प्रिय–सभक उत्तर दैत गेला। अपन प्रिय लेखकमे जैनेन्द्रजी ओ जनार्दन झा द्विजक चर्चा कयलनि। जैनेन्द्रजीक 'परख' चर्चित भऽ चुकल छल। द्विजजीक कहानी 'हंस'मे प्रकाशित होइत छल। विहारक

लेखकमे राँचीक राधाकृष्णक सेहो चर्चा कैलनि। अन्तमे हम सन्देश–वाक्य चाहल तँ ओ अपन 'लेटरहेड' पर सुन्दर अक्षरमे लिखि देलनि–

''कला की उपासना ईश्वर की उपासना है। प्रेमचन्द''

हमरालोकनि अत्यन्त तृप्त भऽ अभिवादनपूर्वक बिदा भेलहुँ। किछु दिनक बाद 'गंगा' मासिक पत्रिकामे 'प्रेमचन्दजी से भेंटवार्ता' शीर्षकसँ एक लेख छपल। जखन हम 'मिथिलामिहिर' मे छलहुँ तखन शिवपूजन बाबू एकदिन सूचित कयलनि जे 'गंगा'क ओहि लेखक अधिकांश अवतरण लऽ कऽ कामेश्वर शर्मा 'कमल' हिन्दीक कोनो प्रतिष्ठित पत्रमे छपौलनि। से देखबैत शिवजी कहलनि जे 'साहित्यमे अब दिन दहाड़े चोरी–बटमारी शुरू हो गई है। नमूना सामने है।'

ओही दिन बेरमे 4–5 बजे सुंघनी साहक नामे विख्यात जाहि नोसि–तमाकूक पुस्तैनी दोकानपर प्रसादजी बहुधा बेसैत छला, देखि अयलहुँ। ओहि दिन ओ कोनो कारणे ओतय नहि आयल छला। अतः दोसर दिन प्रातः 9 बजेक बाद यात्रीजीक संगहि प्रसादजीक ओतय गेलहुँ। देखल जे प्रसादजी बैसकखानाक बाहर चौकी–फर्शपर बैसल मालिस करा रहल छला। मालीमे तेल पुष्ट कऽ राखल छल , एक नोकर पीठ–बाँहि ससरि रहल छलनि। हमरा सबकें देखि जिज्ञासा कयलनि–के छी ? कतयसँ आयल छी ? हम अपन गाम–घरक नाम कहैत पत्र–निवेदनक चर्चा कयलियनि तँ कहलनि–हँ–हँ पत्र भेटल छल। बेस कने काल ओहि रूममे बैसू, हम स्नानादि निपटा कऽ अबै छी। किछु काल अखबार उनटबैत हमसब बैसल रहलहुँ। सहसा प्रसादजी अयला आ हमरालोकनिकें संस्कृतक छात्र बुझि 'ध्वन्यालोक'क चर्चा कयलनि, कालिदास ओ भवभूतिक नाटकक चर्चा करैत अनेक श्लोक पढ़ैत गेला। शकुन्तलाक 'रम्याणि वीक्ष्य' पद्यकें शाश्वत एवं भवभूतिक 'अन्तर्मर्माणि सीव्यति' प्रयोगक अतिशय्यक चर्चा कयलनि। तखन अपन रचनाक चर्चा पर कहलनि–'नाटकन्तं काव्यं' तँ लिखल, आब कवेः कर्म काव्यम्– कामायनी महाकाव्य पूरा कऽ रहल छी। किछु पद्यो पढ़लनि। हमरालोकनि मुग्ध भऽ सुनैत रहलहुँ ताबत सूर्य मध्याकाशमे चढ़ि रहल छला, बेसी व्यवधान नहि बनि कहलियनि–आशीर्वादी सन्देश देल जाय। मौखिके कहलनि–हमर सन्देश हमर कवितेमे भेटत, पढ़ू। नमस्कारपूर्वक बिदा भेलहुँ। हुनक मस्ती, साहित्यपरस्ती देखि सहजहि अनुभव कयल जे छायावादक तीन हस्तीमे प्रसादजी, 'तीन लोक से न्यारी काशी' क अनुरूपे अनूपे व्यक्तित्व छथि।

दोसर दिन 'आज' कार्यालय गेलहुँ जे पराड़करजीक दर्शन करी। दर्शन अवश्य भेल। किन्तु सम्पादकीय कार्यमे तेना व्यस्त छला जे आगाँ पुनः अयबाक नेआर करैत फिरि अयलहुँ। पराड़करजीक व्यस्तता ओ तटस्थता तथा अपन साधनामे संलिप्तिक पता एहीसँ लगौल जा सकैछ जे काशीमे रहितहुँ हुनका प्रेमचन्दजी ओ प्रसादजीसँ भेंट नहि भेल छलनि। पाछाँ बनारसीदास चतुर्वेदी (विशाल भारत–सम्पादक) आमंत्रित कऽ तीनूकें एकदिन एकठाँ त्रिवेणी संगम

करबामे सफल भेला।

पुनः काशीनाथ ठाकुरक डेरापर पहुँचलहुँ, बहुत दिनपर भेटल छला, हुलसि कऽ एतहि रहबाक आग्रह कयलनि। रानीकोठासँ आबि मीरघाट मे टिकलहुँ। दु–एक दिन जे छलहुँ ताहिमे महारानी लक्ष्मीवती साहिबाक डेउढ़ीपर गेलहुँ। हुनक जेठ भाइ त्रिलोकनाथ मिश्रसँ भेट कयलियनि। ओतय सतरंज जमल छल, अनेक व्यक्ति गप–सप करैत छला। ठाकुरजी परिचय करौलनि। आवेशपात भेटल। ऑफिसमे रायबहादुर श्रीनाथ मिश्रकें अभिवादन कयल। हुनक बालक यज्ञीबाबू ऑफिसक काज देखैत छला। हुनकासँ गपसप कयल। कुलानन्दजी नन्दन ओतहि ऑफिसमे काज करैत छला, हुनकासँ प्रथम–प्रथम भेंट भेल। अंग्रजीमे ओ विषय–विषयपर संकलित पद्यावली संकलित कराय बुकलेट छपैत छला, ओ देलनि।

दू–एक दिन और काशी–निवासक सुयोग प्राप्त करैत प्रयागक हेतु यात्रा कयल। प्रयाग पहिनो गेल छलहु, किन्तु सहयात्रीक संग कोनो विशेष अवसरपर। किन्तु एहिबेर गेल छलहुँ एकाकी भ्रमण करबाक, भ्रमण मात्र नहि साहित्यिक चंक्रममे अनुभवक संक्रमणक क्रममे।

स्टेशनसँ उतरि कोनो धर्मशालाक पता लैत, मुट्ठीगंज धर्मशालामे डेरा लेल। एक कोठरीमे रहलहुँ, गर्मीक समय, अछौन मामूली, ओढनाक काज नहि, धोती–गंजी–कुर्त्ता, चादरि–गमछा, जलपात्र एक झोड़ामे कसा गेल छल। अथापि सुरक्षाक हेतु कोठरीमे लगयबालेल ताला कीनल। द्रव्य सीमित, अतएब खयबो–पीबोमे संयम चलैत छल। प्रयागमे किछु व्यक्ति चिन्हारमे तँ छला, किनतु हम कतहु गेलहुँ नहि। घूमी–फीरी, बजार टहली, देखबा योग्य स्थान किला–आनन्दभवन आदि देखल जे पाछाँ स्वराज्यभवनक नामसँ प्रसिद्ध भेल।

हमर मुख्य लक्ष्य छल साहित्यिक केन्द्र ओ साहित्यिक व्यक्तिक प्रति अपन सहज आकर्षणक परितृप्ति। प्रयाग हिन्दी साहित्यक केन्द्र जानल जाइत छल। हिन्दी पत्र–पत्रिका ओ प्रकाशनक केन्द्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन देखि तँ अयलहुँ। परंच संकोची स्वभाव ओ कृतित्वक अभाव, प्रभावी परिचय–सूत्रक संभावनो नहि। ग्रामीण किशोर–जीवनक स्वभावो सैह। ओतय घुमैत–फिरैत रही, परंच क्यो परिचित–अपेक्षित नहि। मन औनाइत रहल। एकदिन 'सहेली' पत्र–कायोलयमे गेलहुँ। ओतय एक कविता सम्पादकाजीक हाथमे दैत ठाढ़ रहलहुँ। ओ कवितापर एक नजरि दैत राखि लेलनि ई कहैत जे एहि अंकक मैटर पूरा भऽ गेल छै। आगाँ छपत। छलपापर अंक डाकसँ पठा देल जायत। 'अभ्युदय' साप्ताहिक–कायोलयमे गेलहुँ, एक राष्ट्रीय तुकबन्दी दऽ अयलहुँ। चालू अंकमे छपबाक आश्वासन भेटल तँ तृप्त होइत आपस भेलहुँ।

किछु उत्साह बढ़ल। एकदिन इंडियन प्रेस गेलहुँ, जतयसँ 'सरस्वती' मासिक पत्रिका बहराइत छल। ओहि समय प० देवीदत्त शुक्ल ओकर सम्पादक छला। श्रीनाथ सिंह ओकर सहायक सम्पादक छला जे ओही बीच हरिऔधजीक 'रस–कलश'

(पुस्तक भण्डार द्वारा प्रकाशित) ग्रन्थपर आलोचना 'हरिऔधजी की बुड़भस' लिखि साहित्यिक क्षेत्रमे उत्तेजना आनि देने छला। 'सरस्वती' ओहि समय माधुरी–प्रभा–सुधा आदिक बढ़ैत प्रभाव, ओहिसँ अपन प्रभावित क्षेत्रमे किछु क्रान्तिकारी चहल–पहल मचयबालेल उत्तेजनात्मक लेखमाला प्रकाशित करब आरम्भ कयने छल। प0 वेंकटेश तिवारीक 'राधा स्वकीया थी या परकीया' लेखमाला सेहो तत्कालीन साहित्यिक परिवेशकें चौंका चुकल छल। जे सब विनोदी पत्र 'सरस्वती'कें बढ़ियाँ कहब आरम्भ कयने छल–व्यंग्य चलबैत प्रायः 'हिन्दूपत्र' कहने छल जे–"सरस्वती तो बुढ़िया है,'मनोरमा'–'चाँद'तो चेली है। धत्तेरे मतवाले की अब 'सुधा' 'माधुरी' मेरी है"। से एकरा नाज–नखरापर पुनर्यौवनक स्फूर्त्ति–त्वरापर सस्मित छल।

हम धखाइत–सकुचाइत सम्पादकजीक कमरामे प्रवेश कयल तँ देखल जे सम्पादकक कुर्सीपर जे व्यक्ति बैसल छथि ओ चौबंदी पहिरने, पुरान ढंगक गोल पंडिताउ टोपी (पगड़ी) पहिरने, सिन्दुर बिन्दु नहि भय ठोप कयने,तमाकू खाइत स्वयं शुक्लजी छथि। कल्पना छल जे जनिक सम्पादकतामे बुढ़िया 'सरस्वती' नव कायाकल्प करय जा रहल अछि ओ अवश्य नव संस्कारक क्यौ पैंट–शूटबूटधारी प्रौढ़ होयताह। हम बगलक बेंचपर इशारा पाबि बैसि गेलहुँ। परिचय पुछलापर जखन मिथिला–दरभंगा जिलावासी ओ संस्कृतक विद्यार्थी बुझलनि तखन बेस दिलचस्पी लैत स्व0 महाराज रमेश्वर सिंह, हल्ली झा आदि तांत्रिक–साधकक चर्चा करय लगला। हम सुनैत रहलहुँ । हँ,हँ करैत गेलहुँ। हुनक आत्मीयतासँ तृप्त होइत रहलहुँ। हुनक शाक्तमतक प्रति निष्ठा बादमे आरो प्रतिफलित भेल तथा मिथिलाक प्रति आकर्षण औरो सुविदित भेल जखन किछु वर्षक बाद 'मिथिला मिहिर'क सम्पादन कालमे ओ अपन निजी मासिक प्रकाशन 'चण्डी' एतय पठबैत रहला ओ विनिमयमे मिथिला मिहिर मङबैत रहला।

हुनकासँ प्रणामपूर्वक बिदा होयबासँ पूर्व हम उतसुकतापूर्वक पुछलियनि, श्रीनाथसिंहजी तँ एतहि छथि, हुनकासँ परिचय चाहैत छी। ओ बगलक टेबुल दिस इसारा करैत एक व्यक्तिक दिस संकेत कयलनि जे वैह थिका। देखल जे एक खद्दर–धारी व्यक्ति दुबरे–पातरे कलम चला रहल छथि। हुनको प्रति पूर्व धारणा छल जे ओ क्यौ टोप–टहंकारी नव्य–भव्य वेशधारी व्यक्ति होयता, किन्तु सादासादी वेशमे व्यक्तित्वक प्रति भावना किछु औरे–रौद्र––भयानक–आक्रामक रस–भावसँ भिन्न, ओज–माधुर्यसँ प्रपन्ने व्यक्ति भेटला। कतऽ आयल छी, की कऽ रहल छी से सब पुछि, साहित्यसेवाक अभिरुचि बढ़ैबाक हेतु प्रोत्साहित कयलनि। साहित्य–तीर्थमे सद्यः स्नात जकाँ मन–प्राणसँ अभिवादनपूर्वक बिदा भेलहुँ।

दोसर दिन पुनः प्रोत्साहित मने 'चाँद'–कार्यालय गेलहुँ। ओकर प्रतापी संचालक ओ मुख्य सम्पादक छला रामरखसिंह सहगल। हुनक फीटफाट–रोबदाब देखि धरवाइत रहलहुँ। एक टा कविता लिखि लऽ गेल छलहुँ मुदा दऽ नहि सकलहुँ। केवल ग्राहकक चन्दा जमा कऽ फिरि अयलहुँ। 'सहेली'– कार्यालय

गेलहुँ। ओतय सकुचाइते कविता सम्पादकक टेबुलपर बढ़ा देल जे दू मासक बादक अंकमे छपल जकर प्रति पाछाँ हमरा गाम गेलापर प्राप्त भेल।

तावत् उत्तर विहारमे बाढ़िक समाचार अखबारमे पढ़ल। गाम छोड़नो किछु सप्ताह भऽ गेल छल। ओतयसँ चोट्टे बिदा भऽ गेलहुँ। किसनपुर स्टेशन उतरलहुँ, पता चलल बाग्वती उमड़ि गेल छथि, सड़क–बान्ह टूटि चुकल अछि, बल्लीपुर जयबाक हेतु रोसड़ा अथवा हायाघाटसँ रस्ता बाँचल छै। टिकट लऽ दोसर ट्रेनसँ हायाघाट उतरलहुँ तँ सहसा नूनूबाबू गाम जयबाक क्रममे भेटि गेला, ओम्हरो ठाम–ठाम सड़कपर पानि जमा, भिजैत–तितैत कहुना हथौड़ी होइत 14 मीलक रस्ता पार करैत गाम पहुँचि आश्वस्त भेलहुँ।

कलकत्ता

प्रातः स्मरणमे सप्तपुरी पहिनो प्रसिद्ध छल, किन्तु मोक्षपुरी कहि कऽ तीर्थस्थली मानि कऽ । दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ), हस्तिनापुर पौराणिक कालक राजधानी छलो परंच धार्मिक महात्म्यक अभावें राजतंत्रे धरि सीमित छल।

ब्रिटिश शासनमे प्रेसीडेन्सी कहि कऽ जे तीन आधुनिक महानगर बनल ताहिमे बम्बइ, मद्रास ओ कलकत्ता तीन महापुरी जनजीवनमे स्मरणीये नहि वरणीय सेहो बनल अछि। 1690 इस्वीमे जॉन चारनोक इस्ट इण्डिया कम्पनीक सदर हुगली नदीक मोहानापर चर–चाँचरक बीच बसल तीन गोट छोट–छोट बस्ती सूतानाटी, गोविन्दपुर ओ कलिकाता गाँवकें एक्वायर कऽ कोठी बसौलनि तँ के जनैत छल जे आगाँ चलि कऽ ब्रिटिश साम्राज्यक लन्दनक बाद द्वितीय महानगरीमे ई परिगणित होयत ओ जे एखन गोटेक हजारक विरल आवादी रखैछ से लाख नहि करोड़क सघन जनारण्यमे परिणत भऽ जायत।

भारतक पूर्वांचलक आकर्षण तँ कलकत्ते रहल। किछु दिन धरि भारतोक राजधानी रहल तथा आसाम–बंगाल–बिहार–उड़ीसा सभ कलकत्ता केन्द्रित बंगालमे समटायल छल। मिथिलाक लोक कमाय लेल पूब जाय तकर मुख्य केन्द्र कलकत्ते छलै। एहि इलाकाक लोक–संख्या प्रचुर छलै। संस्कृत पढ़ौनिहार अनेक पंडित छला, जनिक विद्यालयीय तत्त्वावधानमे संस्कृत छात्र परीक्षा देथि तीर्थपरीक्षोत्तीर्ण होथि। थोड़ समयमे परीक्षोत्तीर्ण होयबा लेल परीक्षा देथि।1926 इ0मे राजनगरसँ व्याकरणक मध्यमा परीक्षा देबाक हेतु प0 योगी झाक नामें हमहु प्रस्तुत भेलहुँ।

परीक्षा दियैबाक हेतु पिताजीक संग गामसँ उल्लासपूर्वक बिदा भेलहुँ। संगमे खवास मुखी मरड़ छलनि। तरौनीक महेशकान्त मिश्र, जे ओतय श्रद्धानन्द हाइस्कूलमे शिक्षक छला, हुनका सूचना पूर्वहि देल गेल छल ओ तदनुसार हाबड़ा स्टेशनपर उपस्थित छला, टैक्सीसँ 23 मछुआ बाजार डेरापर लऽ गेला। रास्तामे चकित–विस्मित स्टेशन, पुल एवं स्ट्रीटक दृश्य देखैत हम बसक भीड़भाड़ ओ लोकक दौड़बड़हा

देखैत चललहुँ। ओहिसँ किछु दिन पूर्व 25 इ0क अन्तमे कलकत्तामे हिन्दू–मुस्लिमक भयानक दंगा भेल छलै, ओहिमे मछुआ बाजारमे मुस्लिमक संख्या अधिक, 23 न0 मकानमे अधिकांश हिन्दू परिवार भरल छल, विशाल मकान एक गाम–टोले जकाँ बनल होइ। कोना घेरबेढ़–रोड़ेबाजी–छुरेबाजी भेल छलै से सब सुनैत रही। तरौनीक महेशकान्त बाबूक पितियौत बहिनसँ हमर पित्ती प0 तेजनारायण झाजीक विवाह छलनि। सतीशबाबू (पाछाँ बिहार सरकारक सचिव), जगदीशबाबू (पाछाँ बिहार सरकारक उच्चाधिकारी) ओतहि स्कूलमे शिक्षा पबैत छला। समवयस्क रहने, हुनका संग कलकत्ताक दर्शनीय स्थानमे घुमलहुँ। ईशनाथबाबू मामाजीक पड़ोसमे कोठली नेने छला। हुनकासँ पहिले पहिल ओतय भेंट भेल। संगीतक प्रेमी, हुनक बाँसुरी सुनल करी।

परीक्षा देल। बीचमे बाबूजी महेशकान्त मामाक संग जगन्नाथपुरी धामक यात्रा कऽ अयला। ओ अपन यात्राक विवरण अपन प्रिय सम्बन्धें ममियौत बाबू योगेन्द्रनारायण चौधरी (बल्लीपुर)कें लिखल करथि। ओ सुरक्षित नहि रहल तें रोचक यात्रा–साहित्यक अंश नष्ट भऽ गेल।

एहि बीच हम सतीशबाबूक संग कलकत्ताक विविध स्थानमे घुमल करी। पुरीसँ फिरलापर हमरा सबकें महेशकान्त मामा कलकत्ताक विभिन्न दर्शनीय स्थान–कालीस्थान, चिड़ियाखाना, अजायबघर, संस्कृत कालेज, विक्टोरिया मेमोरियल, फोर्ट विलियम किला, जैन मंदिर, जोरासाँकू, रवीन्द्रनाथ टैगोरक टैगोर हाउस, चौरंगी, युनीवर्सिटी, दरभंगा हाउस, सियालदह आदि देखौलनि। ट्राम–बस–टैक्सी–रिक्सा विभिन्न सबारीक उपयोग होइत छल। बड़े उल्लाससँ कलकत्ताक प्रत्येक दर्शनीय स्थान देखल। कालेज स्ट्रीटमे पुरान पुस्तक ढेर कीनल गेल, बी0 के0 पालक ओतयसँ औषधालयक उपयोगी अनेक सामान बाबूजी किनलनि। फिरबाकाल मोटा–पेटी भरिगर छल। संगक खबास रहने सुविधा रहल।

कलकत्ता प्रवासमे कोरेनियन थियेटरमे कलकत्ताक थियेट्रिकल पारसी मंचमे 'आँख की माया' नामक नाटक देखल। 'बेताव'क नाम नाटककारमे आबि गेल छल। पाछाँ नाटककारक रूपमे हुनक नाम बाजऽ लागल। परन्तु पारसी थिएटरमे काश्मीरी आगा हश्रे इंडियन शेक्सपियर बुझऽ जाय लागल छला। ओहि समय कंचनबाइक नाम बजै छल। वैह 'आँख की माया'क नायिका छली।

ओहि समय कलकत्ताक जनसंख्या प्रायः 6 लाख छलै। हमरालोकनिक ई पहिल कलकत्ता यात्रा छल। शिक्षा–परीक्षाक प्रसंग दू–तीन यात्रा औरो कयल।

मनियारी

एहि बीच परीक्षोत्तीर्ण भेलहुँ, बिहार–उड़ीसा सम्मिलित प्रान्तक साहित्याचार्य परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान भेटल, पदक पुरस्कारो भेटल। काव्योतीर्थ परीक्षामे बंगलामे सेहो प्रथम स्थानीय पुरस्कार भेटले छल। किछु चिन्हा–परिचय सेहो भऽ चुकल छल। आब कोन स्थान पकड़ी। संस्कृत विद्यालयमे तँ साहित्यक स्थान सीमिते रहैक, हाइ स्कूलमे ओकरा प्रश्रय भेटैक। बहुतो हाइस्कूल शिक्षक हेतु धर्मसमाज संस्कृत कालेजक प्रिन्सिपलकें उपयुक्त व्यक्तिक निर्देशक हेतु लिखल करथि। ओहि समय प० धर्मराज ओझा प्रिंसपल छलाह, गुरुजी ओ प्रिंसपलकें 'काव्यदीपिका'क प्रति दिअऽ गेलियनि तँ सहर्ष ग्रहण कऽ कहलनि जे हाइ स्कूलमे काज करबाक अछि तँ जाउ, महन्थ दर्शनदास हाइस्कूल मनियारीमे हेडपण्डितक स्थान रिक्त छै, व्यक्तिक माङ छनि, पत्र दऽ दैत छी।

हम काशीसँ गाम जयबाक रस्तेमे छलहुँ। अप्रत्याशित रूपें प्रस्तावित काज हेतु हमहु लगले प्रस्तुत भऽ गेलहुँ। प्रिंसपलक पत्र लऽ मनियारी पहुँचलहुँ। महन्थजीसँ भेंट कऽ पत्र देलियनि ओ लगले पढ़ि ओहिपर किछु लिखि एक व्यक्तिक संग हेडमास्टरसँ भेंट करय पठौलनि। धुरिअयले पैरे स्कूल गेलहुँ। हेडमास्टर छला श्री शुद्धदेव ठाकुर। ओ कहलनि क्लास एखन लऽ सकैत छी? हम प्रस्तुत छलहुँए। लगले वर्गमे पहुँचलहुँ, जे जेना फुरायल घण्टी पुरौल, पाछाँ दृष्टि गेल तँ देखल जे हेडमास्टर केबाड़ लग ठाढ़ पाठ सुनि रहल छथि।

बादमे गपसप करैत ओ ओहि व्यक्तिकें किछु लिखि महन्थजीक ओतय पठौलथिन, ओही दिन हमरा नियुक्ति पत्र भेटि गेल। संगहि इहो सुविधा भेल जे महन्थजीक छोट भाइ विश्वम्भर कुमारकें संस्कृत पढ़बियनि जाहि हेतु किछु पृथक् देय रहय डेरा–डण्टा भेटि गेल। विश्वम्भर कुमारक ट्युटर भेने किछु खातिरवारी सेहो भेटय लागल। नियुक्ति 6 मासक हेतु प्रोवेशन रूपमे छल। एहि बीच स्कूलक कोनो फंक्शन–शैक्षणिक गोष्ठी होइ तँ हमरा कविता पढ़बाक आग्रह हो, पढ़ी। अध्यापक–छात्र मण्डलीमे रमि गेलहुँ। पारिवारिक वातावरण बनि गेल। दुर्गापूजाक अवकाशक बादो छलहुँ। प्रायः 34क अन्तमे बड़ा दिनक अवकाशमे जे गाम अयलहुँ से पुनः गेलहुँ नहि।

तावत् मैथिल महासभाक रोसड़ा अधिवेशन भेलै, तकर बाद जीवनक मोड़ दोसर दिशामे ठेलि लऽ गेल। मनियारीसँ अयबाक बाद तगेदा ओ विश्वम्भर कुमारक आग्रह आदि अनुकूल छल, किन्तु जीवनयात्राक क्रम दोसरे दिशा हेतु समतूल छल, जे आगाँ स्पष्ट होयत।

दरभंगा–प्रसंग

जीवनक दशम शतकमे आबिकऽ सहसा मन तरंगित भेल जे जन्मक्षेत्रे अध्ययन क्षेत्रे यापित जीवनक प्रसंग तँ तीन दशक पूर्वहि कागज रङि चुकलहुँ, परंच जीवनक उत्तरार्ध–परार्ध जतय बीतल अछि, शीतल हीतल करैत साहित्य–समाज–राजनीति–रितमे रमैत रहलहुँ अछि तथा जतय एखनहु अंतिम बंकिम क्षण–कण छुच्छ–रुच्छ रीतिअहुँ बिता रहल छी– अपेक्षा–उपेक्षाक विन्दुपातसँ अनुकम्पित–प्रकम्पित भऽ रहल छी, ओहि दरभंगाक संगहि गंगा–यमुना तरङ्गित पटना–दिल्ली ओ विभिन्न प्रान्त–उपान्तमे जेना जल–वात ओ सायं–प्रभातक रस–रुचि शुचि बुझि अपनबैत रहलहुँ, व्यक्ति–समाजक सम्पर्कमे मधुपर्क ओ सम–विषम विषयक अनुभवमे गर्क रहैत अयलहुँ तकरो अंकित–टंकित कय ली। विस्मरणक करुण दिवान्त वेलामे किछु शब्दार्थक खेला करैत चली।

तें संभव अछि जे कथ्यमे तथ्यो हो तँ बहुतो अपथ्य तत्त्व आबि जाय, कतोक अपेक्षित अंश उपेक्षित रहि जाय। तें सुधी–बुधजन सँ क्षम्य होयबाक प्रार्थी छी एवं स्वदेश–स्वाभाषाक अनुरागी वा अपन भाव–भाषाक बागी लोकनिक राग–विरागक भाजन बनि जाइ। आइ एही तथमथमे मथल मनकें एहि दिस अग्रसर करबामे धखाइतो–धखाइत किछु छुच्छ–रुच्छ कहि चलब। एक बेर कहिओं कहनो रही–

'आइ हमर अमा तमीकें पूर्णिमाक पिआस लागल।
सुप्त मनमे लुप्त विभवक रस–भरल अनुभूति जागल।।'

1935 इसबीक बात थिक। हम तावत् भूकम्पक बादेसँ पातेपुरक दर्शनदास हाइ स्कूलक नोकरी छोड़ि, अपन पिताक साचिव्यमे एवं गामक लोकप्रिय भूपति बाबू राधाकान्त चौधरीक उदारतासँ खुजल, बंधारकोठीक अंग्रेज साहेबक अपर स्थानीय भूमिपति बाबू दामोदर चौधरीक अभियोगसँ त्रस्त भऽ बेचि–विकिन अपन देश इंग्लैंड फिरि जयबाक कारणे ओही नीलाम कोठीक परिवेशमे खुजल माध्यमिक स्कूलमे अपन सेवा अर्पित करबाक अभिनिवेशमे गामहि रहय लगलहुँ एवं ओतय बन्धुवर हेमकान्त–गोपीकान्त–देवनारायण–देवकीनन्दन–रामनिरेषण–वासुदेव गबैया प्रभृति सरस संगी–सहचरक संगति–रंगतिमे अपन नव वयसक उमंग भरल समय गमा रहल छलहुँ।

बीचमे मन तरंगित भऽ उठय तँ साहित्यिक रुचि–अभिनिवेशमे पटना–काशी–इलाहाबाद ओ लखनउ धरि पत्र–पत्रिकाक कार्यालय घुमि–फिरि अपन साहित्यक अभिनिवेशकें गर्मा–ठंढा अबैत छलहुँ। कदाचित् कोनो पत्र–पत्रिकामे लेख–कविता पठाय, ओकर प्रकाशनपर संगी–साथीक बीच रमि जाइत छलहुँ। हम जमीन्दारक गामक बीच एक भगिनमान परिवारक होइतहुँ, विद्यासेवी परिवारक रहने स्नेहादरक पात्र छलहुँ। बाहरसँ पंडित मल्ल–मलिक–गवैया–गुणी–कलाकार–वणिक लोकनिक

गाममे यातायात रहने रुचिक सुचिरता ओ विविधताक भाजन बनैत रहलहुँ।

परंच जीवन केवल रस–रंगे ओ भावना–तरंगे नहि थिक। ओकरा किछु जीविकाक ढंगो चाहिऐक। तें आब तकरो फिकिर जीवनमे जुटि रहल छल, एकटा वैचारिक किरकिरी उठि रहल छल। एही बीच बंदा–गामक बाबू जानकी प्रसाद राय, जनिक शिक्षा–कला गामक एक सम्पन्न मोसम्मातक ओतय कौटुम्बिकतामे रहि पूर्वमे हमरे पिताजीक निकट चलैत छलनि, हमरा पुछि बैसलाह, आब अहाँ गाममे रहि, एहिना बेढंग जीवन बितबैत रहब वा नगरक नागरिक रूपमे युग–जीवनक अनुकूल अपन क्षमता बढ़ायब ? हमर विचार जे अहाँ दरभंगा चली, हमर संस्था संगीत–विद्यालय लहेरियासरायमे अहाँ डेरा राखब। बहुत ओकील–मोख्तार, संस्था–संस्थापकसँ हमरा सम्पर्क अछि, परिचय करा देब। तखन अहाँ देखब 'भाग्य मतःपरम्'।

हमरा हुनक विचार उपयुक्त बुझायल। हम हुनका संग दरभंगा अयबा लेल तुलि गेलहुँ। प्रायः जनवरी 35 इ0मे हुनका ओतय आबि गेलहुँ। एहि ठाम रहबाक, खयबा–पीबाक, सभ व्यवस्था छल। एकटा व्याघात मन पड़ैछ। हुनक चौकामे प्याजु–लहसुन चलैत छलनि। हमरा तकर गन्धो सह्य नहि, अतएव खयबामे कने हिचक होइत छल। परंच से ओ बुझि, हमरा लेल अंशतः कने फराक व्यवस्था करबाक कष्ट उठा लेलनि। क्रमशः ओ संग लऽ कने एम्हर–ओम्हर लऽ जाथि।

जानकीबाबू संगीत–विद्यालयक एतय स्थापके नहि प्रत्युत संगीत–विधाक विविध प्रवाहमे प्रवाहित भेनिहार व्यक्तित्व छलाह। एहिठाम तत्काल विभूतिनाथ झाजी (डा0 गंगानाथ झा जीक पुत्र) कलाविद् आफिसर छलाह। हुनक संगतिमे रंगति लेल करथि। संगीतक विषयमे जतय कोनो विशिष्टता देखथि, ओतहि रमि जाथि। गयाक सोहनीबाबू ओहि समय ठुमरी गायनमे निष्णात मानल जाथि, किछु दिन ओतहि ओ रमि गेल रहथि। दरभंगा–राजमे म0 गनी खाँ–शरीफ खाँ प्रसिद्ध गायक रहथि, हुनको संगतिमे रंगति राखथि। विभूतिबाबू लोकनि नाट्य–कलाक कलाविद् छलाह, ओतहु धमकथि। एहि प्रकारें हुनक संगीतक आवेश दिशा–दिशामे प्रवेशी रहल। तत्काल लहेरियासराय–दरभंगा संगीतक आवेश–अभिनिवेशमे हुनक प्रवेश व्यापक रहल।

ओहि समय सभसँ प्रखर बुद्धिजीवी वर्ग ओकालतिखानामे रहैत छलाह। डाक्टर–इंजीनियरक संख्या अल्प, ओ गल्प–विनोदोमे हुनका सभकें ओतेक समय नहि, अनुरक्तिओ नहि। हम स्वयं अपन रुचिक अनुकूल सेहो गेल–आयल करी। पुस्तक–भंडार समीपे छलैक। किछु परिचय पूर्वहुसँ, आब कने विशेष घनिष्ठता बढ़ल। शिवपूजनबाबू जखन 'गंगा' मासिक पत्रमे सम्पादक छला तखन किछु लेख हमर ओहिमे छपि चुकल छल तें हुनकासँ घनिष्ठता बढ़ल। महारथीजी तावत् आबि चुकल छलाह, हुनकहुसँ स्नेहाबद्ध भेलहुँ। दत्तजी 'बालक'मे हमर रचना किछु छापि चुकल छलाह तें हुनका सँ भावात्मक घनिष्ठता बढ़िते गेल। कहिओ कऽ ओतय

हरिमोहनबाबू आ गंगापति बाबू पहुँचथि, हुनको संगति रंगति दियै लागल।

ओहि समय नगरमे कोनो कालेज नहि, स्कूलो गनल–गुथल, सार्वजनिक संस्थामे भंडार बुद्धिजीवीक भांडागारे बनि गेल छल। अतएव ओहिठामक संगति–रंगति तथा किछु राष्ट्रियताक भावनाक कारणे खादी–भंडारक चहल–पहल एवं पंडित रामनन्दन मिश्रजीक मगन–आश्रमक गमक–जमकसँ मनकें नागरिक जीवनमे बहुत–किछु रमा–जमा देलक।

ओम्हर दरभंगा–राजक नगरमे सगरो एकटा व्यापक धाख छलैक। पण्डित लोकनिक जमघट, रमेश्वरलता संस्कृत विद्यालयक चरवर तथा दरभंगा–म्युनिस्पैलिटीक परिसर नगरक नागरिकताक केन्द्र मानल जाइत छल। यदि नगरमे कोनो आयोजन होइक तँ मंगल–स्वागत–उपसंहारमे संगीत–विद्यालयसँ सहयोग रहने नगरक विभिन्न स्थान ओ नागरिक महत्त्वक लोककें देखबा–सुनबाक अवसर हमरो जानकीबाबूक प्रसरसँ भेटैत चलय। हमरा स्मरण अछि। एक बेर हारमोनियम–मास्टर जानकीबाबू कहलनि जे, आइ हम राजाबहादुरक ओतय जाइत छी, चलू, अहूँकें हुनक हारमोनियमक तान–तराना सुना दी। स्मरण अछि, हम संकुचित होइत ओतय हुनके संग राजा बहादुरक अन्तरंग दरबारमे प्रवेश कयलहुँ। जानकी बाबू निवेदन कयलथिन, 'सरकार' ई हमर गुरुपुत्र थिकाह, हिनका बड़ लालसा छनि जे सरकारक हारमोनियम वादन सुनथि। तें हम संग लेने आयल छिऐन।' मुस्किआइत सहृदय राजा विश्वेश्वर सिंहजी हारमोनियमपर कोनो गत बजबैत हाथ फेरलनि। हुनक स्टाफ तबला बजाय आ' गबैया रामचतुरजी स्वर गुनगुनाकऽ रागयोग बनौलनि। हम सभ कृतार्थ भऽ फिरलहुँ।

एक दिन जानकीबाबू बैरिस्टर सफी साहेबक ओतय लऽ गेलाह। मुस्लिम स्कूलक ओ सेक्रेटरी छलाह, हुनका ओतय हेड पंडित हेतु स्थान देबाक अनुरोध कयलथिन। ओ बादमे विचार करबोक हेतु हुंकारी भरलथिन। किन्तु ओ तावत् विहार सरकारक मिनिस्टरीमे चल गेलाह। तें बादमे हुनकासँ समयपर संपको नहि भेल। स्थान तावत् भरि गेलैक। एमहर दुलारपुरक ओकील श्री रामजी चौधरी, जनिकासँ हमर पितिऔत भाय यादवेन्द्रबाबूक परिचयो छलनि तथा हुनका द्वारा ओ हमर पितासँ सत्यनारायणकथाक मैथिली अनुवादो प्राप्त कयने छलाह, संगीत विद्यालयक ओ प्रमुख सदस्यो रहथि, ओहो कतहु हमरा स्थान दियैबाक हेतु विचार रखैत छलाह।

एहि बीच हमरा गामसँ पिता द्वारा खबरि पठौल गेल जे अहाँकें सासुर (एहु) जयबाक अछि। ससुर दिवाकर ठाकुरक विशेष आग्रह छनि शिवमन्दिरक जे स्थापना– उद्‌घाटना ताहिमे अहाँ आचार्य बनि अनुष्ठान–सम्पादित करिअनि। कने हिचकिचाइते नियत दिनसँ एक दिन पूर्व ओतय पहुँचलहुँ। ओहि ठाम पुरहित–पंडितसँ यथा–निर्देशित विधि–पूर्त्ति कयल, दान–दक्षिणाक आदान–पूर्वक दू–तीन दिन रहि गाम फिरलहुँ। किछु दिन पुनः गाम–घरक वातावरणमे रमल, संगी–साथीक साहचर्यमे

नगरक प्रवासी नागरिकताक धुपछाँहीसँ गामक माटि–पानिक रस–सौरभसँ तृप्त होइत रहलहुँ। मातृक करिअन जाय पंडित दुःखमोचन मामाक वात्सल्य ओ प्राचीन भद्रकाली मठक नवनिर्माण देखैत जीविका–प्रतीक्षाक अवसादकें बिसरौलहुँ, मनकें पुनः ग्राम–वातावरणमे रमबैत रहलहुँ।

एहि बीच कमलेशजीक संग क़ोनो प्रसंगें रोसड़ा समागत नयानगरक बाबू विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह ओकील, जे तत्कालीन डिस्ट्रिक्ट बोर्डक एक प्रमुख सदस्य छलाह, परिचय–पात भेल। ओतहि कोनो फंक्शनमे बारी गामक अमीर घरक कलाविद् विविध स्वर संधानी देवकान्तझाजीक स्वर निखारक कलाक श्रवणक आनन्द भेटल। एके व्यक्ति पशु–पक्षीक कू–दहाड़, गुंजन–गर्जन ओ विविध वाद्यक सुर–तानक कोना वितान तानि सकैछ, तकर श्रवण करैत मुग्ध भेलहुँ। एही प्रकारक कलाविद् ज्यो० दयानन्द झाजीक सुपुत्र योगेश्वर झा जे एही सब लोकप्रिय कलाक ख्यातिसँ प्रसिद्ध बिहारक मुख्यमन्त्री डा० श्रीकृष्णसिंहक अभिशंसें विधायको भऽ गेलाह। परंच से दरभंगा–अधिवासक बादक गप थिक। परंच अपना थाना–इलाकाक क्षेत्रमे ओहि कलाकारक सिद्धतासँ रोसड़ामे ओहि समय गोष्ठी जमल छलैक, ओतहि कमलेशजी ओ विन्ध्येश्वरी बाबू लोकनिक सामाजिक–राजनीतिक जमल गोष्ठी रोसड़ाक प्रमुख व्यवसायी नागरिक लोकनिक प्रसर–परिसरमे परिचित भेलहुँ, ओतय अपन पिताजीक यश–प्रतिष्ठा सेहो काज करैत रहल।

एही बीच जगन्नाथपुरक प्रतिष्ठित बबुआन बाबू लक्ष्मीनाथ मिश्रक उत्साहपूर्ण आयास–प्रयास महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक अध्यक्षतामे प्रवर्त्तित अ० भा० मैथिल महासभाक चर्चा चलि रहल छल। महाराज एतय आबथि, तकर आकांक्षा विभिन्न जातीय वर्ग–समाजोमे छलैक। इलाका भरिमे ताहिलेल उत्साह देखल जाइक। अन्ततः ओतय अधिवेशन होयब निर्धारित भेल। तकर किछु चर्च–वर्च चलैत छलैके। गाम अयलहुँ, ततहु समाजमे उत्साह छलैक। पिताजी आमन्त्रित छलाहे। हमरो लोकनि संगी–साथी सभ ओतय जयबाक उपक्रम कयल।

मैथिल महासभा रोसड़ा

तिथि–दिन ठीक–ठीक स्मरण नहि पड़ैछ, परंच आयोजनक भव्यता, पंडाल तथा प्रतिनिधि अभ्यागतक तम्बूक खीमाक समीपे थाना भरिक गाम–परिसरक आगत व्यक्तिओक लेल लगेपासमे व्यवस्था छलैक। लग–पासक ग्रामीण तँ समयपर औताह–जैताह तें तकर विशेष प्रयोजन नहि। हमर गाम दूर, ओ आयोजनमे योगो देनिहार, तें लग–पासमे किछु व्यवस्थो भेलैक।

संयोगवश पहिल दिन महाराज नहि आबि सकलाह। ओ ख्यातनामा विद्वान् महामहोपाध्याय पण्डित गंगानाथ झा महोदयकें पठौलथिन, जमघट किछु कम भेलैक, परंच उत्साहमे न्यूनता नहि। तावत् स्वागत–समितिमे कनफुसकी होमय

लगलैक जे स्वागतगान तँ मिथिलेशक नामे अछि। कोओ व्यक्ति हमरा पकड़लनि, सभा आरंभ भऽ रहल अछि, तखनुक ई स्थिति। हम काँपि उठलहुँ। परंच जेना–तेना लिखल तथा अपनहि हारमोनियमपर सस्वर गाबि सुनौलहुँ। थपड़ी पड़लासँ तथा अध्यक्ष पदासीन महान् व्यक्तित्वक प्रसन्न मुद्रासँ हमरो हृदय आश्वस्त भेल। ओहि कविगोष्ठीमे भाषाक नियमन नहि।

रातिमे आगत प्रतिनिधि कलाविद्क कला–प्रदर्शन एवं संगीतक स्वागत–परिवेशमे छलाह। दोसर दिन कुमार गंगानन्द सिंह सबेरे आबि कविसम्मेलन, गायक सम्मेलन तथा विद्वत्परिषदक कार्यवाही राजपण्डितजीक निर्देशनमे चलौल। विद्वद्गोष्ठीमे स्थानीय पण्डितक दिससँ उदयनडीह करियनक पं0 दुःखमोचन झाजी आगत मैथिल विद्वानक स्वागत–संवर्द्धनामे जे संस्कृतमे भाषण देलनि तकर प0 माध ाव झा शास्त्री लोकनि भूरिभूरि चर्चा करैत रहथि। ओ लोकनि स्वागत–सभाकें आश्वस्त कयलथिन जे महाराजाधिराज आइ समयपर पहुँचि अध्यक्षता करताह। उत्साह विशेष होइत रहलैक। सभा उमड़ि उठल। महाराजाधिराज यथासमय पहुँचि सभाकें जगमगा देलनि। ओहिमे हमहु हुनक प्रशस्ति पढ़लहुँ।

स्मरण पड़ैछ सुप्रसिद्ध दामोदरबाबू ककरोसँ मिथिलाक अधोगतिक चर्चा भेलापर तमकिकऽ उठि तकर खंडन–मुद्रामे कहलनि जे हम 60–70 वर्षक अन्तरालक साक्षी छी, दिनानुदिन शिक्षा–कला–व्यवसाय–कृषि–संपदा सभमे उत्तरोत्तर उन्नतिए देखि रहल छिऐक। स्वागताध्यक्ष जगन्नाथ बाबू लोकनि तकरे समर्थन कयलनि। रोसड़ा–नगरमे अनेक दृष्टिएँ सभाक अधिवेशन अभूतपूर्व मानल गेल, बादो धरि एकर चर्चा चलैत रहल। परंच कने इहो जे मैथिल महासभा तँ समस्त मिथिलावासीक चाही, वर्गविशेषमे सीमित नहि। अधिवेशनमे संस्कृत–हिन्दी–मैथिली सभ भाषामे कविता पाठ भेल। आरसीजी सेहो सम्मिलित भेलाह। हम अपन रचना 'शुष्क सुमन' पढ़ने रही, तथा किछु ओतय कविरूपमे परिचित भेल रही। विशेषतः हरिश्चन्द्र बाबू लोकनि उत्साहितो कयलनि।

रोसड़ा–सभाक बाद हमरालोकनि भावावेशपूर्वक गाम पहुँचलहुँ। किछु दिन ओतहि जमि, पुनः मातृकमे पंडित दुःखमोचन झाजीक स्नेह–संस्कारक सुख लैत, तखन पुनः दरभंगा पहुँचलहुँ। वैह संगीत कार्यालय लहेरियासरायक परिसर, नगरक प्रथित बुद्धिजीवी केन्द्र ओकालतिखाना, पुस्तक–भंडारक साहित्यिक दीवानखाना ओ खादी भंडारक राजनीतिक तराना। बीच–बीचमे गामक बंधुवर गोपीबाबू–बिहारीबाबू लोकनि आबथि तँ हुनके सभक संगतिमे समय कटय। बल्लीपुर डेरा लग संस्कृत विद्यालय सेहो जाइ एवं गोपीबाबूक संग हुनक मित्र महुआक बाबू शशिभूषण प्रसाद तथा खरारीक राजाबाबूक समीपी डेरापर जाइत–अबैत समय कटय।

किन्तु रोसड़ा–महासभामे दरभंगाक विशेषतः राजसंपर्की व्यक्ति जाहि तरहें दरभंगा अयबाक, भेटघाँट करैत रहबाक जे भावावेश देखौने छलाह ताहिसँ ओहि दिस पुनः जयबाक उद्रेक उठैत रहल। संगी–साथी तथा बन्धु–बान्धव एहि दिस

उत्साहित करैत रहलाह जे शीघ्रे जयबाक थिक, टटका–टटकी भावावेशक रस–स्वाद लेबाक थिक। हमहु पुनः दरभंगा पहुँचबाक कार्यक्रम बनाय, शीघ्रे पहुँचि गेलहुँ।

एहि बीच लहेरियासरायसँ राज–दरभंगा परिसर हम आयल–गेल करी। विशेषतया मिर्जापुर स्थित राज–सचिव कुमार गंगानन्द सिंहजीक ओतय एवं तत्कालीन रमेश्वरलता–विद्यालयक लक्ष्मीसागर महल्लामे स्थित छात्रावासक निकटे राजपण्डित बलदेव मिश्रजीक आवासपर। दूहू राज–दरभंगाक प्रमुख व्यक्तिक अतिरिक्त मान्य पण्डित गिरीन्द्रमोहन मिश्रजीकें, अपन पिता एवं हुनक मातुलभ्राता बाबू गोपालजी चौधरीक हित–मित्र रूपें श्रद्धास्पद व्यक्तित्वकें सेहो प्रणाम कय जाइ। कहियो यदि ओतय प्रातःकाल पहुँची तँ नियमित रूपें प्रत्यह सबेरे पुस्तक भंडारक अध्यक्ष रामलोचन शरणजी पैदल टहलबाक क्रममे ओतय पहुँचल भेटथि, तखन पुनः कदाच हुनका संग लहेरियासराय घुरि पहुँची। परंच आपस होयबाकाल ओ घोड़ागाड़ी वा टमटमपर फिरथि, हमहु हुनक संग कदाच परिवर्तित होइ।

'मिहिर'मे नियुक्ति

एही अन्तरालमे एक दिन अकस्मात् एक घोड़सबार, राज–सिपहसालार संगीतालय लहेरियासराय पहुँचि हमर नामक पुछारि करैत एकटा राज प्राइवेट हाउसक पत्र थम्हा देल, जाहिमे आदेशित छल जे हम दोसरे दिन सन्ध्या साढ़े चारि बजे नरगौना पैलेसमे महाराजाधिराजक समक्ष अन्तर्वीक्षाक लेल हाजिर होइ। स्थिति हमर ओहि दिन प्रतिकूल भेल छल, पछिला दिन ज्वर भेलापर गलफुल्लीसँ पीड़ित, दवाइ ओहिपर सटने ओछौनपर पड़ल रहैत छलहुँ। चिट्ठी पढ़ि सहसा प्रसादक संग स्वास्थ्यजन्य विषादसँ सीदित भऽ उठलहुँ। धोती–कुर्ता–चादरि छल, किन्तु माथ पर पागो चाही, से बुझना गेल। कोना पहुँची तकर चिन्ता–फिकिर भेल। स्फूर्ति भेल, गामक वृद्ध पुरुषोत्तम दामोदरबाबू, जनिका हमसभ बाबा साहेब कहि सम्बोधिअनि, धखाइते हुनका ओतय राजक प्राप्त पत्र देखौलिअनि, ओ कने चकित–तर्कित भऽ कहलनि, महाराजक साक्षात्कार लेल जाइत छी, भाग्यक बात। हँ, माथपर पाग अवश्य लऽ लेब। हमर गाड़ी पहुँचा देत। हँसी–खुशी प्रणामपूर्वक बिदा भऽ पहिने बाजारसँ कोकटी पाग कीनि आनल। महाराजक भेंट करब तँ किछु पद्य–पंक्ति सेहो लिखि कऽ लऽ जाइ। तकरो चिन्तन–मनन कऽ लिखि लेल।

दोसर दिन किछु सबेरे बाबाक पठौल गाड़ीसँ दरभंगा पहुँचि, सचिव कुमार साहेबसँ भेंट कयलिअनि। कहलनि, समय पर पहुँचि जाइ, हमहु ओतय रहबे करब। राजपंडितजीसँ सेहो भेंट कयल, ओहो कहलनि, हुनक प्राइवेट दरबारमे हमहु रहिते छी। हँ, एक बातक ध्यान राखब। ओ कोनो नव व्यक्तिकें निरीक्षण करबाकाल व्यक्तिक आपादमस्तक निरीक्षण करैत छथिन। ओहि काल देखब, अहाँक दृष्टि हुनक निरीक्षणमे बाधक नहि होइन। हँ, हुनका समक्ष होइतहिँ पहिने हाथक

फूल–जनउ आगाँ करिअनि ओ स्पर्श कऽ देताह, अहाँ तकरा माथ लगा लेब, स्वस्ति कहि कोनो श्लोक वा पद्य पढ़ि अभिनन्दित करिअनि।

हम जखन पहुँचलहुँ, महाराजाधिराज नरगौनाक पूब–दक्षिण भागमे सहचर–परिचर संग खानगी दरबारमे कुर्सीपर स्थित रहथि। लगक दोसर आसनपर शुभंकरपुरक एक बबुआन तथा सचिव कुमार साहेब सेहो आसीन छलाह। सामने गलीचापर पारिवारिक श्रोत्रिय कुटुम्ब, पर्सनल स्टाफक किछु व्यक्ति ओ राजपण्डित एवं आनो पण्डित–ज्योतिषी लोकनिकें सेहो शान्त–प्रफुल्ल मुद्रामे बैसल देखलिअनि। मन कने उत्साहित–उद्भावित भेल।

हमहु निर्धारित रूपें पुष्प–यज्ञोपवीत आगाँ बढ़ाय देल, पंडितजी सामान्य रूपें परिचय करौलनि। महाराजक जिज्ञासु मुद्रामे निरीक्षणक बाद निर्देशित भेलापर आसन पर बैसि, पुनः किछु पंक्ति सुनयबाक निवेदनपूर्वक लिखित शुभाशंसा स्पष्टतासँ पढ़ि सुनौलिअनि। दरबारी लोकनिक बेश–बढ़ियाँ–साधुक मन्द ध्वनिक बीच हम कने काल बैसल रहलहुँ। सचिव द्वारा प्रस्थान संकेत पाबि हम पुनः अभिवादन पुरःसर ओतयसँ जिज्ञासु मुद्रामे बहरयलहुँ। बाहर अयलापर देखैत छी जे दरबार उसरि गेल, सभ बाहर भेलाह। किछु ओहिमेसँ कहलनि, सुन्दर रहल, शुभमस्तु। हम पुनः मोटरसँ बिदा भऽ डेरा घुरलहुँ, हित–बन्धुकें दरबार जयबाक गप्प सुनौलिअनि। अपनो परिणामक चिन्तन करैत रहलहुँ।

दोसरा दिन पुनः प्राइवेट आफिससँ कागज भेटल, जे मइ '35 क आरंभसँ 'मिथिला–मिहिर'क 'मैनेजिंग एडिटर'क पदपर नियुक्त कयल जाइत छी। ज्वाइनिंग रिपोर्ट प्रेषित करू। सभ तत्काल अपेक्षित स्वजन एवं पुस्तक भंडारमे अपेक्षित साहित्यिक बन्धुसँ संबर्धित होइत रहलहुँ।

'मिहिर'क पहिल अंक

सूचनानुसार नियत तिथि 9 मैइसँ एक दिन पूर्व दरभंगा पहुँचलहुँ। भूकम्पक बाद राजक अधिकारी एवं सेवारत लोकनि आवास सुविधार्थ कटहलबाड़ी, जतय विद्यालय स्थित छलैक, तकर पार्श्व परिसरमे बहुतो पर्णकुटी बनल छलैक, प्रधानाध्यापकसँ लय राजपण्डितजी सहित अनेक अध्यापक एवं किछु हेड आफिसक अफसर–कर्मचारिओक तात्कालिक आवास बनल छलैक। बूढ़ा गुरुजी (प० मुक्तिनाथ मिश्रजी)क डेराक बगलेमे हमरो आवास निर्देशित भेल। संगक सीमित अनुचर–सहचरक संग ओतय रहबाक व्यवस्था कयलहुँ।

दोसर दिन प्रातः दस बजे राजप्रेसक आफिस पहुँचलहुँ। मिथिला–मिहिरक कर्मचारी लोकनि भेट–घाँट कयलनि, प्रेस मैनेजरक अपर पार्श्वमे एडिटरक सज्जित रूम। फर्निचर एवं बैसबा–उठबाक, आरामो करबाक यथोचित व्यवस्था देखि प्रसन्नता भेल। 'ज्वायनिंग लेटर' लिखि हेड आफिस पठा देल तथा प्रेसक बंगाली मैनेजर,

नीचाँ स्टाफरूम तथा कम्पोजिंग सेक्शन, कागज गोदाम सभ सम्बद्ध स्थान ओ स्टाफसँ परिचय प्राप्त कय ओहि दिन स्वागत–सत्कारेक वातावरणमे डेरा अयलहुँ। अभिभावकवत् राजपण्डितजीसँ भेट कयलियनि। औपचारिकताक बाद ओ पुछि बैसलाह, सभ किछु अनुकूल अछि? हम स्वीकारोक्तिक संग कने सहमि कऽ कहलिअनि, 'किन्तु'। ओ अकचकाइत कहलनि, 'किन्तु की?' हमर नम्र स्वरमे उत्तर भेल ''सभ तँ ठीके–ठाक छैक मुदा छौ मासक एप्रेंटिस'क अवधि धरि वेतन पच्चीस टाका मात्र, अतिरिक्त यात्रा भत्ता आदि।'' ओ हँसैत कहलनि, राजमे वेतन–विशेष नहि भेटैत छैक। परंच भत्ता सुविधासँ ताहि सभक पूर्त्ति भऽ जाइत छैक। राजक जाहि पिउनकें पाँच टाका वेतन छैक यदि तीन बेर डाकघरसँ डाक लऽ अबैछ तँ रोज ओकरा यातायातक दू टाका खेप भेटैछ, जोड़िऔक तँ ओकर मासिक आमदनी कतेक भऽ जाइत छैक। हम आब राजक सेवामे बूढ़ भऽ चललहुँ, पैंतालिसे टाका मास भेटैछ, परंच ओतेक हमर दैनिक खर्च अछि से तँ चलिते अछि। तें कोनो घबरयबाक बात नहि, एप्रेंटिसक अवधि बीतय दिऔक, सेहो सब भऽ जयतैक। हम गुम्म रहि गेलहुँ।

दोसर दिनसँ नियत समयपर जाय–आबय लगलहुँ। पत्रमे की सभ परिवर्तन–परिवर्धन करबाक अछि से चिन्तन करय लगलहुँ। पहिल अंकक सम्पादकीय की रहत, ताहूपर विचार कयल। पुस्तकभंडारक साहित्यिक बन्धुसँ विचार चलिते रहय।

अन्ततः पहिल सम्पादकीय स्मरण होइछ–शीर्षक रहैक 'योग–वियोग'। ओहिमे पूर्व सम्पादकक प्रति निष्ठा ओ वर्त्तमानमे कोन सभ ध्येयकें प्रतिष्ठा देबाक थिक तकर विचार राखल। यत्र–तत्र–सर्वत्र नामे समाचार संकलनक आकलन कयल। मैथिल–सुलभ हास्य–विनोदक लेल 'गोनूझाक नोसिदानी' स्तम्भ आरम्भ कयल।

सयत्न तत्परतापूर्वक अंक प्रस्तुत कय सान्ध्य दरबारमे महाराजाधिराजकें अपना हाथें अर्पित करबाक कौतूहलसँ ओतय पहुँचलहुँ। ओ मौन–मौन स्वीकार कयलनि, उनटयलनि–पुनटौलनि। प्रायः ऊपरमे गंगा दशहराक प्रसंग गंगावतरणक ब्लाकक नीचा पद्माकरक एक कवित्त 'जेते तुम तारे तेते नभ मे न तारे हैं' पर प्रायः दृष्टिपात करैत मूड़ी डोलाय राखि देलनि। हम माथ झुकाय बाहर आबि गेलहुँ।

पुनः ध्यान गेल जे पूज्य म0 म0 गंगानाथ झा जी एतहि अपन जेठ बालक डा0 भवनाथ बाबूक ओतय छथि, हुनकहु प्रथम प्रयास अर्पित करी। तदनुसार लगले ओतहु पहुँचलहुँ। प्रणाम कय आगाँ रखलिअनि। ओ कहलनि 'बहरा गेल' तखन उनटि–पुनटि कऽ प्रायः सम्पादकीय पढ़ि शीर्षकक अवलोकन कय कहलनि। सुन्दर! पहिले अंक अहाँक परिश्रमक परिचय दैछ। बेस सुन्दर भेल अछि। एहिना यत्नपूर्वक सम्पादन करैत चलू। हम प्रणामपूर्वक ओतयसँ डेरा आबि पुनः राजपण्डितजीक आगाँ राखि देल। ओ बड़ी काल धरि, शीर्षक ओ लेखक अवलोकन करैत कहलनि, 'बढ़िआ, एहिना पत्रकें नवीनता–प्रवीणतासँ पठनीय बनबैत चलू। ओहि राति सन्तोषसँ निद्रा– विश्रामक आनन्द भेटल।

दोसर दिन उपेन्द्रबाबू लोकनि भेटला। सेहो सब प्रसन्नता अभिव्यक्त कयलनि।

सम्पादन–कार्य

पुनः एहिना साप्ताहिक अंक प्रकाशित होइत चलल। ओहि समय सोनाक मूल्य बढ़ैत छलैक। गृहस्थ–जमीन्दार परिवारक परिवार स्वर्णाभूषण बेचिकऽ मुद्रा संग्रह दिस उन्मुख देखि पड़लाह। बुझि पड़ैक जे घर–परिवारक सोना सेठ–साहूकारक माध्यमसँ विभिन्न देशमे पहुँचि भारतकें स्वर्णहीन कऽ देतैक। हम ताहिपर ओही प्रसंग 'निराभरण भारत' नामसँ सम्पादकीय लिखल। सोनाक निर्यातपर एक आँकड़ा भरल लेख प्रकाशित कयल।

ओहि अंकक चर्चा बढ़ि गेल। कतोक उत्साही व्यक्ति ओहि टिप्पणी ओ लेखक प्रशंसामे पत्र लिखि पठौलनि, 'सरस्वती' मासिकमे ओकर उद्धरणो प्रकाशित भेल, से हम पाछाँ शिवपूजन सहायजीसँ बुझलहुँ तथा तकरा देखि अंककें सहेजिओ राखल।

एहि ठाम ई कहि देब आवश्यक अछि जे उक्त मान्य शिवजी हमरा अनेक परामर्शक संग, तत्कालीन प्रमुख पत्रकें विनिमयार्थ अंक पठयबाक अनुरोध कयलनि। भंडारमे हिन्दीक सभ पत्र अबैक, ओहिमे जखन कोनो पत्रमे प्रेषित 'मिहिर'क अंश उल्लखित होइक तँ तकर सूचना हमरा दऽ देथि। हम ओकरा पुरस्कारवत् अनुभव कयल करी। मन पड़ैछ, सम्पादकाचार्य माखनलाल चतुर्वेदीजी 'वियोगीजीक कवितासँ संन्यास' पर 'मिहिर'क 'कर्मवीर' पत्रमे टिप्पणीक उल्लेख कयने रहथि। एहिना हुनक निर्देशनमे अच्युतानन्दजीक व्यंग्य–रंगक अंतरंग सहयोग आइओ हमरा हृदयमे अंकित–टंकित अछि।

हँ, एहि प्रारंभिक कल्पमे एक घटनाक उल्लेख करबाक लोभ नहि समेटल जाइछ। कहि आयल छी जे म0 म0 गंगानाथ झाजीक अनुकम्पा–आशीर्वाद हमरा सहज उपलब्ध रहैत छल। एही बीच ओतय ख्यातनामा शिक्षाविद् प्रो0 अमरनाथ झाजी पिताक भेट करबाक प्रसंग आयल रहथि। ओहो अपन अग्रज डा0 भवनाथ बाबूक आवासेपर टिकल छलाह। हम जखन महामहोपाध्यायजीक निकट पूर्ववत् पहुँचलहुँ, तखन हुनको देखबाक सुअवसर भेटल। हम कनें नमन–अभिवादन कयलाक बाद सहसा निवेदन कऽ बैसलिअनि जे 'श्रीमान्, 'मिथिला–मिहिर' हेतु किछु लेख–विचार देबाक अनुग्रह कयल जाय।' ओ हमरा दिस दृष्टि फेरैत कहलनि – 'मिथिलामिहिर'मे तँ भने छपैत जाइत छी जे 'बकरीक बच्चा भलैक तकरा मनुष सन हाथ–पैर छैक। एकटा कोनो मौगीके रेल डब्बामे प्रसव भेलैक तँ ओकरा पैर नहि छलैक ओहू स्थानमे हाथे जकाँ अंग लटकल छलैक। फल्लाँ नेपाल परयलाह, तँ स्वदेशी गोल–विदेशी गोलमे ठेलम ठेला मचल अछि।'

हम हुनक मुह अवाक् भेल निहारैत रहलहुँ, बकोर जकाँ लागि गेल छल। तावत् महामहोपाध्याय जी हुनका कहय लगलथिन, 'बच्चा, ई नवका सम्पादक अयबे कयलाह अछि। एम्हर जे अंक हिनका समयमे बहार भेल अछि तकर रूप–रेखा

बहुत किछु बदलि गेल छैक।'

अमरनाथ बाबू तखन हमरा दिस ताकि कऽ कहलनि, 'बेस, अहाँ किछु अंक दऽ जाउ, तखन हम किछु कहब।'

हम दोसर दिन पूर्व–प्रकाशित तीन–चारि अंक नेने हुनका आगाँ धखाइते राखि देलिअनि जे 'अपनेक आज्ञा भेल छल, हम अंक सेवामे आनल अछि।'

ओ किछु क्षण तकरा उनटाय–पुनटाय कहलनि, 'हे ! हम गोटेक अशर्फीपर अपन लेख कतहु दैत छिऐक। अहाँ ?' हम मुस्किआइत कहलिअन, ई तँ श्रीमाने लोकनिक थिक, हम के लेनिहार–देनिहार ?' ओ मुस्किआइत कहलनि, 'बेस आइ जाउ, दोसर दिन भेट करब।'' हम लगले नमन–पुरस्सर विदा भऽ गेलहुँ।

तेसरा दिन फेर सन्ध्यामे पहुँचलहुँ तँ ओ अपन बहुमूल्य तीन पाँतीक सम्मति 'मिहिर'क हेतु संवर्धनार्थ देलनि। हम कृतार्थ भऽ अगिला अंकक मुखपृष्ठपर छापल। तकर शिक्षित समाजपर असरि की भेलैक से हमरा स्पष्ट बुझा गेल। ओकरा बादसँ जखन–कखनो ओ दरभंगा आबथि, हमहुँ हुनक दर्शनार्थ पहुँचल करी। ओतय रमानाथबाबू–तन्त्रनाथबाबू–ईशनाथबाबू–दीनानाथबाबू लोकनिक बीच सम्पादकजी नामे संबोधित होइ आ' क्रमशः एक पार्षद रूपें हमरो हुनका ओतय प्रवेश भऽ गेल।

एही क्रममे किछु घटनामे इहो यत्र–तत्र चर्चित होअय लागल छल जे ई जे किछु लिखैत–गढ़ैत छथि से तँ अधिकांश पुस्तक–भंडारेसँ लेखक–साहित्यिक द्वारा लिखब्रा अबैत छथि। सन्ध्या समय देखबनि जे ई पुस्तक–भंडारेमे भेटताह। दरबार धरि एकर परिधि पहुँचैत रहलैक। केओ पुछिओ बैसथि, पुस्तक–भंडार एतेक यातायात किएक ? अहाँकें तँ सन्ध्यामे दरबार ओ स्टाफ सभक सहकारमे रहबाक चाही।

हमर उत्तर एतबे हो, ओतय अनेक साहित्यिक परिचित छथि, तनिक संगतिक लाभ उठबैत छी। पत्रोक हेतु किछु सामग्री हुनका लोकनिसँ भेटि जाइछ। हम तँ सम्पादन टा करैत छी. लेख–कविता–व्यंग्य तरंग तँ नामोल्लिखित लेखकेसँ ने भेटैछ जे सेवामे पहुँचबैत छी। पाक कयनिहार तँ गृहस्थक उपजौल अन्न–व्यंजनसँ रान्हिकऽ थारी परसैछ, भोजनकर्त्ताक तुष्टिक पात्र बनैछ।' सुनि कने मुस्किआइत 'ठीक' कहि दोसर गप उठबथि।

पत्र–पत्रिकाक सम्पादनक रुचि–रोचक जे कल–कल्पना हमरा छल तकर अतिरिक्त अनुभवोक प्रसंग इंगित भेल। हमरा मैनेजिंग एडिटर (प्रबन्ध–सम्पादक) कहि नियुक्त कयल गेल छल तें तकरो किछु दायित्व उठयबाक प्रसंग सेहो इंगित होमय लागल। कटु–मधु स्वाद पयबाक किछु अनुभव सेहो उल्लेखनीये। पत्रमे बाजार भावक कालम सेहो चलैत छलैक। निर्धारित व्यावसायिक कोनो फर्मसँ भटैत छलैक। एक दिन हमरा कहल गेल जे एहिमे राज–भंडारीक अनुगमे किछु भावक परिवर्त्तन करबाक थिक, कारण एकरे आधारपर राजमे सप्लाइ कयनिहारकें पेमेंट होइत छैक। तें तकर अनुकूलतापर सप्लाइ कयनिहारक दिससँ से किछु रसद–वस्तु

उपलब्धो होइत छैक तें तकर ध्यान राखब लाभप्रद। हम एहि प्रकरक विचार–परामर्शपर कने सहमि गेलहुँ। नैतिकताक अंशक संग नोकरीक दायित्व सेहो, एहि विचारसँ सहमत होयबामे हिचक भेल। फलतः भंडार विभागसँ जे किछु उपलब्ध होइत छलैक से सुतरां बधित भऽ गेलैक।

जें प्रोवेशनक अवधि छल,तें हमरा मैनेजिंग क्रिया–कलापक अनुसार कोर्टक विज्ञापनीय निलामी इस्तहारक विज्ञापन संग्रहक हेतु दरभंगा सदर, ओ मधुबनी–समस्तीपुरक मुन्शिफ कोर्टमे विज्ञापन संग्रहक प्रसंग यात्रा करय पड़ल। तकर यात्रा–व्यय नियमानुसार राज हेडआफिसमे पेमेंटक हेतु पठौल जाइक। से भेलैक । परंच स्वभावतः वेतनसँ अधिक भऽ गेने, प्रचलित नियमक अनुसार पेमेंट बधित। तें तकरा हेतु स्वीकृति लेल ट्रेजरी आफिसमे विशेष मंजूरी करबय पड़ैक। से सभ करबाक झंझटि सेहो उठबय पड़य। प्रेसक आफिसर इन्चार्जक माध्यमे से सभ बखेड़ा चलैत छल। क्रमशः तकरो झंझटि उठबय पड़य।

झंझट जे बढ़ओ, परंच लघु वेतनक जे दुर्वहता छल से एहि सब व्यवस्थासँ कमल अवश्य, परंच मैनेजिंग क्रिया–कलाप कखनो शुद्ध सम्पादन काजमे तनावक अनुभव करबैत रहल।

स्थानीय समाचार प्राप्त करबाक लेल संवाददाताक कोनो व्यवस्था नहि, तँ तकरो संचालनक चिन्ता, कोनो सभा–समितिमे जयबो पत्रोक लेल वांछिते। तें पत्रक अतिरिक्त किछु लिखबा–पढ़बाक समय नहि भेटय, कने क्षणो तँ साहित्यिक भेट–घाँटेमे खपि जाय। तत्काल 16 पेजक अंक। सामग्री भरबाक, टीका–टिप्पणी लिखबाक, प्रूफ पढ़बाक सभ बखेड़ा माथ पर, आब कने कोनो स्वोत्साही सहयोगीक प्रयोजनीयता आवश्यक प्रतीत होमय लागल।

बीचमे यदुनन्दन शर्मासँ भेट–घाँटक क्रममे तथा मिश्रटोलक सरस कलाप्रेमी विश्वनाथजीक संग सुधांशुशेखर चौधरी कखनहु भेटि जाथि। लेखन–प्रेमी इहो। क्रमशः परिचय बढ़ने कखनो कदाचित हिनकहु सभसँ किछु सहयोग भेटय लागल। यदुनन्दन शर्मा 'प्रलयंकर' विशेषतः सहयोगी रहथि।

व्यवस्थापक अंशमे हमर रुचि एवं प्रवेश अभिनिवेश अल्पतम छल तकर मुख्यतया दायित्व प्रेसक इनचार्ज लोकनिपर जानि बुझि कऽ छोड़ल। केवल एक प्रसंगपर हम ध्यान देल जे हमरा जनैत उचित रहल। 'मिथिला–मिहिर'क कैश बुक स्वतन्त्र पत्र–विभाग मे छलैक। प्रेसक आफिसर इनचार्ज सेहो सह–हस्ताक्षरी रहैत छलाह। एकबेर देखना गेल जे कैश बुकमे कोनो अंश गलत बुझल जाइक तँ ओकरा रबड़सँ उड़ाय तखन लिखल जाइक। हमर परामर्श भेल जे गलत अंशकें रबड़सँ नहि मेटाय, काटि गलत अंशहुपर हस्ताक्षरित कय तखन ओकर सही–शुद्ध रूप लिखि पुनः हस्ताक्षरित कयल जाय। एहि बातकें ऑडिट कयनिहार सेहो पुष्ट कयलनि।

मिथिलांक

किछु मास जेना–तेना अंक चलैत रहल। एकबेर मन तरंगित भेल जे किछु विशिष्टता चाही। सामान्य अंक तँ चलिते अछि, एक गोट विशेषांक प्रकाशनीय थिक। कोन विषय ओ कोन अवसर एहिलेल अनुकूल होयत से मन मे सोची, जखन–तखन विचार–विनिमयो करी। ओही बीच सुनना गेल जे महाराज कामेश्वर सिंहक जन्म दिवसपर राजक कुलदेवता कंकाली मन्दिरपर शुभाशंसात्मक गोष्ठी छैक। हम अपन अभिभावक तुल्य राजपंडित बलदेव मिश्र एवं आदरभाजन कुमार साहेबसँ सेहो विचार कहलिअनि जे हमारा मनमे तरंग उठल अछि जे मिथिलेशक जन्म–दिनमे 'मिथिला मिहिर'क एकटा विशेषांक 'मिथिलांक' नामसँ बहार कयल जाय। समय ओ विषय दूहूकें पसिन्द अयलनि। केवल कहलनि, महाराजाधिराजक समक्ष सेहो निवेदन कयल जाय आ' कने सजि–धजि कऽ हो।

तदनुसारे हम ओहि दिन सान्ध्य निजी दरबारमे पहुँचलहुँ। सुन्दरपुरक परिचित प्रतीहारी देवनारायण बाबू द्वारा निवेदन पठाओल। संकेत पबितहिँ विधिवत् ओतय उठिकऽ महाराधिराजसँ निवेदन कयलियनि जे 'भैरवाष्टमी पर्व'क अवसरपर मिथिलेश सरकारक जन्मदिनमे मिहिरक 'मिथिलांक' नामसँ विशेषांक बहार करबाक अनुमति प्रार्थित अछि। ओ–"बेस, बहार करू"। हम हुलसल–फुलसल बहरयलहुँ। लगले दोसर दिन हम एकटा विधिवत् अपन लिखित दरखास्तकें अंग्रेजीमे अनुवाद कॉपी समेत चीफ मैनेजरक नामसँ पठा देलिअनि जे हमरा महाराजाधिराजसँ विशेषांक बहार करबाक स्वीकृति भेटल अछि । तें निवेदन जे तदर्थ कागज ओ ब्लाक आदिक व्यवस्थाक हेतु अनुमानित खर्चक व्यवस्था कराओल जाय।

हमरा तखन बुझल नहि छल जे पहिने चीफ मैनेजरक स्वीकृति लेब आवश्यक छल से पाछाँ ऑफिस सुपरिन्टेन्डेण्टसँ बुझलहुँ। प्रेसक मैनेजिंग कमीटीमे प्रस्तावित आधारपर सोझे महाराजसँ आदेश लेब एहि प्रकारें विहित नहि। परंच से तँ वीति गेलैक। महाराजक जन्मदिनक आयोजन तँ आब जेना–तेना पूरणीये। तें तकर सेंक्शन कहुना भेटि गेल। परंच त्रुटि एतबा रहि गेल, मासावधिक लेल प्रूफ रीडर एवं सहायक संग लेखकक परिश्रमिकक ओहिमे कोनो उल्लेख नहि छल, ओहि त्रुटिक असरि पाछाँ बुझना गेल।

समय कम, अनुभवो नामेक। लेख लगले जुटायब आवश्यक। फेर हमर दौड़बरहा बढ़ल पुस्तक–भंडार ओ पंडित समाजमे, लेखक वर्ग जे भेंटथि तनिकहुसँ आग्रह चलल। विषय–सूची, चित्र सूची, स्थान–विशेषक फोटो खिचयबाक, मिथिलाक विभिन्न संस्था–संस्थान आदि विषय। एक नव वयसक अनभिज्ञ, केवल उत्साहपर 'पगलायल' अनुभवहीन पत्र–सम्पादक। औनायल रही, ढहनायल फीरी। परंच प0 त्रिलोक नाथ मिश्र, प0 जीवनाथ राय, प0 सिद्धिनाथ मिश्रजी तथा विशेष रूपें पुस्तक भंडार स्थित शिवपूजन बाबू, महारथीजी, दत्तजी तथा स्वयं शरणजीसँ सेहो

गप करी। भोलाबाबू, नरेन्द्रनाथ दासजी प्रभृतिसँ भेंट–घाँट चलय।

सर्वाधिक चिन्ता छल ख्यतनामा हिन्दी–कविलेखक ओ संगहि प्रमुख मैथिलीक विद्वान् लेखक, विषय विशेषज्ञ सबसँ लेख सामग्री प्राप्त भऽ सकय। सूची तैआर कयल, चिट्ठी–पत्री पठबय लगलहुँ।

फलतः किछु लेख प्राप्त भेल। सर्वप्रथम डा0 उमेश मिश्रजीक, किन्तु ओ मिथिलाक्षरमे लिखल। हम तकरा मुद्रणार्थ देवाक्षरमे उतारबाक हेतु अपन सहायक संगी प0 रामनिरेषण मिश्रकें देलिअनि। ओ लिप्यन्तर तँ कयलनि परंच मात्रा प्रयोग अभ्यस्त तत्काल प्रचलित शैलीमे कयने, पश्चात् मिश्रजीसँ उपालंभो सुनय पड़ल, किन्तु प्रकाशनपर प्रसन्नता सेहो। म0म0 गंगानाथ झाजीक लेख सूचीमे निबद्ध 'मिथिलाक अधोगतिक निदान'क प्रतिवाद स्वरूप टिप्पणी, जे पाछाँ अनेक मैथिली संग्रहोमे उल्लिखित भेल। 'शिशिर समीर' कविता (स्व0 वेदानन्द झा) सेहो सुन्दर प्रतीत भेल। म0म0 बालकृष्ण मिश्र मूर्द्धन्य विद्वानक लेख भेटि गेल।

ओम्हर हिन्दी लेखमे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तक 'सीता'क संस्मरणात्मक कविता, वयोवृद्ध रससिद्ध अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔधक पद्य गौरवोदीप्त कयलक। ओहिकाल शिवजी सँ पता लागल जे राहुल सांकृत्यायन जी कतहु प्रयाग अस्पतालमे छथि। हुनकहु अनुरोध कयल तथा बीचमे बरोबरि स्मरणार्थ कार्ड पठबैत रहिअनि। पाछाँ बौद्ध नैयायिक मैथिल नैयायिक निबन्ध भेटि गेल। उल्लसित भेलहुँ। दिनकर– आरसी–केसरी–सहृदय आदि कविवरक रचना एवं क्रमशः मिथिला प्रसंगक अनेक सामग्री पाबि कृतार्थ भेलहुँ। प्रेसक काज आरंभ भेल। महारथीजी कृपया कष्ट उठाय अपेक्षित चित्र डिजाइन बनाय ब्लाक–निर्माण हेतु स्वयं कलकत्ताक यातायात कयलनि। शिवजी तँ निदेशक आधारे छलाह। दत्तजी निरन्तर अनुदेशके। हुनक अनुज परमानन्द परमार्थीक मासावधिक हेतु विधिवत् सहायक बनाओल, प0 रमनिरेषण मिश्र हमर संगी सहायक छलाहे, राति–दिन एही तरंगमे उबडुब करैत रहलहुँ।

राजपंडित जी आदि किछु प्रतिष्ठित लोकसँ विषय वस्तु सूनि–गुनि लेखो प्रस्तुत करय पड़य। किछु अज्ञानता मे संचय–उपजय उद्भावन–नामांकन करैत मास दूमास कोना बीतल, तकर स्मरणोसँ कंपित रोमांचित भऽ उठैत छी।

मिथिलांक प्रकाशित भेलैक। जन्मदिनमे किछु अपूर्ण स्थितिमे कवर लगाय महाराजाधिराजक हाथमे स्वयं अर्पित कयलिअनि। किछु काल उनटबैत–पुनटबैत प्रसन्न मुद्रामे ग्रहण कयलनि। पुछलनि 'सुनीति कुमार चटर्जीक लेख कोना भेटल?' हम कहलिअनि–पत्रहिसँ निवेदन करैत अंग्रेजीमे लेख पठा देलनि, जकर अनुवाद कराय प्रकाशित कयल जा सकलैक। तखन समय कम रहने पूरापूरी नहि छपलैक अछि। किछु जे शेष छैक तकरा पूरा कऽ गवर्नर जे अयबाक लेल छथि ओहि समय धरि पूरापूरी छपि जयतैक। गवर्नर साहेबक ब्लाक इंडियननेशनसँ मङा रहल छिअनि।' मुस्किआइत कहलनि जे 'हुनक फोटो छापी, हुनक मेम साहिबाक सेहो

चित्र छपैक।' हम माथ झुकाय सुनि लेल। एक कर्त्तव्य पूरा भेलापर सन्तुष्ट मने बहरयलहुँ।

विशेषांक बहरायल, ओकर स्वागतो भेलैक, पत्र–पत्रिकामे परिचयो छपलैक। बेनीपुरी जी अपन समीक्षामे संकेत कयलथिन जे कल्याण जेना अपन विशेषांकसँ आदृत भेल अछि तहिना एहू विशेषांकसँ 'मिहिर'क आदर बढ़तैक। आनो–आन मे छपलैक। 'विशाल भारत' मे मिथिलांकक दिनकर जीक 'मिथिला' कविता साभार छपबो कयलैक।

किन्तु ई सभ भेनहु, हमरा वितरणक सुव्यवस्था तथा प्रचारक कलासँ अनभिज्ञता, तकर लूरिक लेश नहि, तें तकर बहुत कमी रहलैक। आशाक अनुरूप प्रचार–प्रसार नहि भेलैक। हँ, आब 'मिहिर' पढ़बा योग्य भेल अछि से लोक कहथि–सुनथि।

सम्पादन–अनुभव

सामान्य अंक चलैत छल, सीमित साधनमे एकाकी काज–धंधाक व्यवसायमे मन नहि भरय, कखनो चित्त उछटि जाय। समय–समयपर, विशेषांक नहि कहल जाय, अवसरविशेषपर आवेशांक कहल जाय, बहार करैत रही।

अंकक विशिष्टता होइक जखन कोनो फंक्शन समारोह आयोजित होइक यथा मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनपर 'परिषदांक'। मैथिल महासभाक समय 'महासभांक'। पूजाक अवसरमे शारदंक–पूजांक। वसन्तपंचमीक प्रसंग 'वसन्तांक'। साधारणे आकार प्रकारमे। हँ, सबसँ विशेष उत्सुकता देखल जाइक होलिकांकमे, जाहि मे विशेष अवधानपूर्वक प्रमुख व्यक्तिक उपाधि, व्यंग्य–विनोद, कटु–मधु कटाक्ष तथा प्रूफ–अशुद्धिसँ, पत्र–पत्रिकाक जोड़ी लगयबासँ, तथा कृति–प्रकृतिक व्यंग्य–तरंग ओ रंग–अबीर लगयबाक–पहुँचयबाक शब्दालापसँ।

किन्तु क्रमशः भाषा–विभाषामे नव–नव तकनीकीक रंग–टीप ओ आवरण परिधानक तारुणिक साज–सज्जाक बीच वृद्ध 'मिहिरक' काया एवं ममता–माया उसरय लगलैक, कागजक महगी ओ छुच्छ–रुच्छ छपाइ–सफाइक कमी पत्रक प्रियता महत्तम आकांक्षा लघुतम रूपरेखामे सीमित होइत गेलैक। आब हमहु अग्रिम प्रवाह नहि, निर्मम निर्वाह दिस पिछरय लगलहुँ। जीविका साधनक अन्यत्र खोज करय लगलहुँ। अथापि तत्कालीन साहित्यिक मित्र जखन–तखन जुटल करथि। कविजी (कविवर सीतारामझा), मधुपजी, यात्रीजी प्रभृतिक अंगित–इंगितक आवर्यात जारी छल।

हमर सुदीर्घ सम्पादन–कालमे अनेक प्रेसक इनचार्ज परिवर्तित होइत रहलाह। मुख्य उल्लेखनीय छथि सुधांशु वसु, बच्चूबाबू श्रीवास्तव, शान्तिनाथ झा, विभूतिभूषण मुखोपाध्याय, शम्भुनिाथ आदि। सभक सामञ्जस्य बनल रहल। विभूतिबाबूक साहचर्यमे

साहित्यिकता एवं बंगला साहित्यक परिचयक विशेष रस भेटल। शान्तिनाथ बाबू जे म0म0 गंगानाथ झाक सोदरपुत्र छलथिन, तनिकासँ सम्पर्क भेने अमरनाथबाबू लोकनिक सामीप्य, सोतिपुराक व्यक्तित्व सभसँ परिचय, श्रीवास्तवजीक सहयोगे मैनेजिंग विभागमे सहूलियत तथा बाबू शंभूनाथजीक सहयोगे हुनक चेयरमैनीमे म्युनिस्पल बोर्डसँ तथा नागरिक राजनीतिक व्यक्तित्वसँ परिचय आदि बढ़ैत रहल।

प्रेसक स्टाफोमे अनेक व्यक्ति एहन संपर्कित होइत रहलाह जे एखनहु धरि स्मृतिगत होइत रहैत छथि। भुटकन झाजी जनिका सहस्र गायत्री जपी ओ एकाउंट मे प्रवीणता लेल, सूर्यनारायण झा जनिक प्रारंम्भिक शिक्षामे तत्परता हेतु सम्पर्क बनल रहल। श्री लाडिलीदासजी, जनिक सखी सम्प्रदायक रामविवाह गीतकार रूपमे आगहुँ धरि भेंट–घाँट होइत रहल। क्लर्क गंगानन्ददास सहचर, 'मिहिर'क कंपोजिंग स्टाफक किछु व्यक्ति नन्दचौधरी, कामेश्वर चौधरी, सिंहेश्वर दास, सीताराम प्रसाद, लीलाधर झा ओ पाश्र्वचर रघुनाथ ठाकुर आदि पश्चातो अपन प्रेस ओ मुद्रण व्यवसायमे संग पुरैत रहलाह।

पुस्तक–भंडारक अनेक व्यक्ति सम्पर्कमे छलाहे। विशेषतः मराठीभाषी सोमणजी, जे विद्यापति प्रेसक मैनेजर रहथि, तनिक रुचि–प्रकृति व्याहार–व्यवहारसँ आकृष्ट रही। हुनक छात्र–पुत्रक मुहें माहेश्वर–सूत्रक उदात्त–अनुदात्त स्वरित स्वरक ध्वनि–उच्चारणसँ बुझना गेल जे एखनहु महाराष्ट्री लोकनिक उच्चारणमे आर्यजातीय स्वर–ध्वनि भाव–प्रभाव रक्षित अछि जे पाछाँ राष्ट्रिय स्वयंसेवकक सम्पर्कमे औरो पुष्ट होइत गेल। डा0 मुंजे प्रभृति नेता लोकनिक भाषण पढ़ने–सुनने क्रमशः समथित होइत रहल।

बीचमे एक बेर एही उपक्रममे हम रोगाक्रान्त भऽ गेलहुँ । डेरेपर दवाइ सेवन करितहुँ जखन कष्ट नहि दूर भेल, तखन डा0 भवनाथ झा राजक चीफ मेडिकल आफिसर देखि–सुनिकऽ हमरा राज अस्पतालमे भर्ती कयलनि। किन्तु कतोक दिन बितलापर जे कोनो नवीन दवाइक हमरापर प्रयोग भेल तकर किछु एहन असरि पाछाँ डाक्टर वर्गोमे मान्य भेलैक जे एहिसँ दिमागी विकृतिक असरिओ होइत छैक। ताही क्रममे हम अस्पतालसँ बाहर चलि जयबाक दुश्चेष्टा करय लगलहुँ। ओही मानसिक स्थितिमे अस्पतालक रेलिंगकें फनैत हम बाहर धड़–पकड़मे दौड़िओ चललहुँ। पाछाँ बेहोस सन पुनः बेडपर आनल गेलहुँ। स्थितिक खबरि पाबि हमर पिता–माता, जेठ भाय, वैद्य राघवेन्द्रबाबू आबिकऽ हतप्रभ भेल हमरा टेक्सी द्वारा गाम संग लऽ गेलाह। जतय मास दू–तीनक बाद नीक भेलेपर पुनः कार्य करबा हेतु आबि गेलहुँ।

तावत् पत्रक व्यवस्थामे किछु परिवर्तन घटित भऽ गेल छलैक। चीफ मैनेजर पुनः पूर्वसम्पादक कपिलेश्वर झाजीकें बजाय कार्यभार देलथिन। हमरा पुनः अयला एवं भेंट भेलापर चकित–चकित ओ कार्यरत होयबाक आदेश कयलनि आ पूर्वसम्पादकजीकें सहायक रूपमे काज करबाक। कने एहेन व्यवस्था हमरो अरघल

नहि। तखन हुनका मैनेजिंग भागक आदेश भेटलनि। असमंजस दूर भेल, यद्यपि किछु भत्ता आदिमे आघातो पहुँचल। किछु दिन धरि शास्त्रीजी कार्यरत रहलाह परंच पाछाँ कोनो गाम–घरक व्यस्ततामे ओ पद छोड़ि देलनि। किन्तु सहायकक पद चालू भेने हेड आफिसक साहित्यिक अभिरुचिक श्री उमापति तिवारी जी ओही बीच पत्र ओ प्रेसक काज देखय आदेशित भेलाह।

एहि बीच प्रेसोमे परिवर्तन भेलैक। कन्हैयाजी प्रेसक काज देखबा लेल प्रवृत्त भेलाह। हुनक साहित्यिक अभिरुचिक कारणें हुनकासँ घनिष्टता जुड़ि गेल। एही बीच भुवनजी द्वारा दरभंगाक यातायात बढ़ल। राजसँ किछु सहयोग–अनुयोगक आकांक्षी, अपने डेरापर रहि दौड़धूप करैत, जखन ताहिमे सफलता नहि भेटलनि तखन ओ महाराजपर एवं हुनक पक्षधरपर शाब्दिक आक्रमण आरंभ कयलनि, मैथिल महासभाक अवसरपर कने विरोधी प्रदर्शन सेहो कयलनि। मासिक पत्रोमे उत्तर–प्रत्युत्तर चलय लगलैक। भोलाबाबूक 'भारती' पत्र चलय लागल छल। कन्हैयाजीक प्रेरणासँ एहिपर व्यंग्यचित्र बनबौल गेलैक जे मिथिलामिहिरक संगहि भरतीमे छपलैक। चित्र महारथीजीक बनाओल छल मुदा ओहिपर कन्हैयाजीक नाम अंकित छल। ताही संग तंत्रनाथ बाबूक व्यंग्य कविता सेहो। भुवनजी द्वारा मानहानिक मोकदमा मुजफ्फरपुर कोर्टमे दर्ज भेलैक। कन्हैयाजी, हम, भोलाबाबू, तंत्रनाथ बाबू सभ मुद्दालह बनौल गेलहुँ। राजक दिससँ तकर मुद्दालहक पक्षमे सभ भार उठौल गेलैक। सारिसवपाहीक भवनाथबाबू मोकदमाक इनचार्ज छलाह। मोकदमामे बहुधा मुजफ्फरपुरक दौड़धूप चलल। किन्तु मुद्दइ–मुद्दालहक बीच साहित्यिकताक कारण सम्पर्क सेहो चलैक, जकर प्रत्यालोचना राजपरिसरमे चलबो करैक। क्रमशः पुनः मोकदमा जेना–तेना थमलैक, तकर विवरण अनावश्यक।

एही क्रममे कन्हैयाजीक संग सहयोग–संपर्क घनिष्ठ होइत गेल। भोलाबाबूक संग हुनका ओतय आवर्यात बढ़ैत रहल। स्मरण अछि, एही बीच तत्कालीन सिनेमाक प्रसिद्ध गायक कुन्दनलाल सहगल हुनक आतिथ्यमे दरभंगा रमि गेलाह। ओतय जाइ तँ आन विधानक संग देखी जे किछु अनुचर सीसापर बादाम घसैत कुन्दनजीक हेतु शर्बत तैयार कऽ रहल अछि।

स्मरण अछि जे ओही बीच भोलाबाबूकें जिद्द कऽ कन्हैयाजी कने भाङ पिया देलथिन। शीघ्रे अभिभूत भोलाबाबू ओहि दिन डेरा नहि जाय हमरे वासापर पड़ि रहलाह। बीच–बीच मे पूछि बैसथि 'भाङ पीने ककरो मृत्युओ भेलैक अछि?' हमरा लोकनि हुनका बोधैत– उपचार करैत निशीथमे हुनक निद्राभिभूत भेलापर सुति सकल रही। एहि बीच भोलाबाबूक संग–सान्निध्य बढ़ैत रहल। रजपंडितजीक संग सेहो हुनक यातायात चलैत रहल। ओही समय पंडितजीक शुभकामना हुनका भेटैत रहनि, घबराउ नहि, अहाँपर लक्ष्मी–सरस्वती सपत्नीभाव छोड़ि सखीभावसँ बरसि जयतीह। संयोग भेलैक जे भोलाबाबू बीचमे युनाइटेड प्रेस, भागलपुरमे काज आरंभ कयलनि। ओही क्रमे प्रारंभिक वर्ग हेतु इतिहासक सेट तैआर कयलनि, जे स्वीकृत

भेलनि। प्रकाशकसँ निरस्त–त्रस्त होइत इंडियननेशनक तत्कालीन मैनेजर आचार्यजीक सहयोगें कागज आदिक सुविधासँ विभिन्न प्रेसमे छपय लगलनि। माङ बढ़ल ओ विक्रेता द्वारा नोटक बंडल गनबाक कण–क्षण नहि। भोलाबाबू लक्ष्मीक कृपा–कटाक्षसँ बड़का प्रेस किनलनि, पटनामे आफिस खुजल। परिवारो लोकनि गिरिशिखरक भ्रमण–अभिक्रमण करय लगलथिन। पुनः बेगम सीता, मौलवी वसिष्ठ आदिक प्रयोगपर एम्हरसँ विरोध उमड़लैक, स्वीकृति उठि गेलैक। 'पुनः पूर्ववत् स्थिति' देखबामे आबय लागल।

प्रकृतमनुसरामि। एहि बीच पण्डित रमानाथ झाजी राज द्वारा पुस्तकालयक अध्यक्ष पदपर मधेपुरसँ आबि गेलाह। पंडितजी संस्कृत विभागमे आ ई शेष विभागमे कार्य देखय लगलाह। पुनर्गठन आरंभ भेल। ओतय साहित्यिक चर्चा–अर्चा केन्द्रित होअय लागल। ओही क्रममे पहिने रमानाथ बाबू मैथिलीक शैलीपर विधिवत् पत्र–पत्रिकामे विचार आरंभ करौलनि। तदनुसार प्राचीन लेख सभक आधार देखाय 'ए' 'ओ'क निवेशसँ वर्णबहुल शैलीक आधारपर 'मैथिली साहित्य पत्र'नामे त्रैमासिक पत्र नहि, ग्रन्थेक प्रकाशन आरंभ कयलनि। चारि गोट नाथबन्धु रमानाथ झा–तन्त्रनाथ झा ईशनाथ झा–दीनानाथ झाक 'कैल' पर रचनावली छपय लागल। ओम्हर नाथचतुष्टयम् कहि आलोचना चलल। प0 मुरलीधर झा सम्पादित 'मोद'क शैली 'कैल' पर प्रहार। प्राचीन पंडित लोकनिक लेख–रीति 'कयल' पर राजपंडितजी लोकनिक स्थिरता ओहि समय बेस रंग देखबैत रहय। सुतरां 'मिहिर'मे तकर चर्च–वर्च चलैत रहल। म0 म0 गंगानाथ झाजी, दीनबन्धु बाबू प्रभृतिक आधारपर तत्कालीन परिषद्–सचिव किरणजी सेहो एहिमे रस लैत रहथि। हुनक समयमे किछु प्रकाशन एही शैलीमे चलल जे पाछाँ चलिओ पड़ल। ओम्हर परीक्षा आदिमे छात्र लोकनि शैलीकें सफलता मूलक मानि, 'कओलेज' आदिक प्रयोग दिस विशेष झुकाव देखाओल जे क्रमशः शिथिल होइत यथातथा वर्तमान स्थिति धरि देखल जा सकैछ। अलमधिकेन।

प्रबंध–व्यवस्था, जे हमर बाह्य पक्ष छल, तकरे दिस हम बहकि गेल छलहुँ, आन्तरिक पक्ष सम्पादनक प्रसंग छौ दशकक अन्तरालक बाद जे मन पड़ैत जायत कहैत चलब।

किछु अंकक बादे हम 'सम्पादकजी' नामे परिचित–अभिहित होइत रहलहुँ। किछु बुजुर्ग ओ वर्गाभिमानी 'जी'क संगतिओ बिना सम्पादक कहि हमरा अभिहित करथि। तत्कालीन लेखक–बन्धु जनिक संख्या तावत् विशेष नहि छल, अपन रचना पठबय लगलाह। किछु प्रतिष्ठित कवि–लेखकसँ रचनाक आग्रहो करय पड़य।

उल्लेखनीय छथि कविवर सीताराम झाजी जनिक नामक पाछाँ कविसम्राट हम लगा दिअनि, यद्यपि एहिपर कतोक व्यक्ति गुर्राथि से हुनका तत्काल फकड़ा जोड़निहार कहि बैसथि। जँ हुनक रचना भेटबामे विलम्ब अन्तराल आबि जाय, तखन अनुरोधपत्र पठौलापर ओ पत्रोत्तर रूपे लिखथि–

नमो नमस्ते सम्पादकजी, स्वीकृत करबे हमर प्रणाम।
पत्र विलम्बक हेतु आन की केवल एक लिफाफक दाम।

संयोगवश एक दिन हम मुद्रित अंक स्वयं सान्ध्य दरबारमे मिथिलेशक हाथमे देलिअनि, ओ हुनक एहि पंक्तिपर आदेश देलथिन जे वर्षमे एहिलेल सयटाका भेटल करनि।

मैथिली साहित्य परिषदक प्रथम स्थापक सचिव शशिनाथ चौधरीजी गंगटोक विद्यालयक प्रधान शिक्षक रूपमे कार्यरत लेखादि पठबथि, सेहो सुपाठ्य मानल जाय। वृद्ध प्रसिद्ध जनसीदनजी, कुशेश्वरकुमरक लेखादि सेहो भेटय। प० त्रिलोचन झा, तात्कालिक परिषद–सचिव भोलालालदास जीक सम्पर्क बढ़ैत रहल, हुनक सूचना आदि भेटय। तत्कालीन लेखक–कविमे पुलकित लालदास 'मधुर', काशीकान्त मिश्र 'मधुप', आनन्द झा न्यायाचार्य, प० जीवनाथ झा, हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', धनुषधारी लालदास, रमाकान्त झाजी, श्री वल्लभ झाजी, महावीर झा 'वीर', दत्तबन्धु, नन्दकिशोर दास मुख्तार प्रभृति कवि–लेखक–बन्धुक परिचयपूर्वक सहयोग–अनुयोग भेटबाक उपक्रम चलैत रहल।

तावत् रमानाथ बाबू दरभंगा नहि आयल रहथि, मधेपुर हाइस्कूलमे प्रधानाध्यापक रहथि, ओतहि हुनक मेधावी छात्र रूपें श्री लखनजी चर्चित होथि। तंत्रनाथ बाबू राज स्कूलमे अध्यापक। अन्यान्य भाषाक पत्र–पत्रिकाक अनुकरण–अनुसरणपर, अवसरविशेषपर छोटछीन आकार–प्रकारमे फगुआ–अंक, शरद्–अंक एवं देशीय संस्था–संस्थानक वार्षिक सम्मेलनपर तत्प्रधान विवरणात्मक अंकक सम्पादन–प्रकाशन चलैत रहल। बेसी प्रचार नहि भऽ पाबय किन्तु मिथिलाक सामाजिक स्तरपर एकर चर्चा चलि पड़ल।

एही क्रममे तत्कालीन स्थानीय बन्धुवर्गक आकर्षक परिचय बढ़ैत गेल। क्रमहि उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', हरिकान्त झा, बैजू बाबू, शुभंकरपुरक चिरंजीवजी प्रभृति तथा दरभंगा मिश्रटोलाक विश्वनाथ जी जे पाछाँ बिहार सरकारक नृत्य–संगीत संस्थानक डाइरेक्टर भेलाह, हुनक स्निग्ध बन्धुता पाबि जीवनक शुष्क–रुक्षता दूर होइत रहल।

तावत् अमरजी अल्पवयस्के छलाह। संस्कृत विद्यालयमे पढ़ैत बूढ़ा गुरुजी पण्डित मुक्तिनाथ मिश्रजीक पट्टशिष्य राजपंडित बलदेव मिश्रक अभिभावकतामे 'रजनी–सजनी' अर्थात् गीत–कविताक रचना प्रक्रियासँ फराक व्याकरण न्याय स्वाध्यायोन्मुख रहबाक अनुशासनमे। किन्तु सहज रुचि–प्रवृत्तिक कारणे कविता लिखि 'मिहिर'मे प्रकाशनार्थ देने छलाह। परंच हमहु कने राजपंडितजीक अनुगमे, प्रकाशनकें टारैत चलिअनि। अन्ततः ओ उग्रमुख भऽ 'बालक' सम्पादक अच्युतानन्द दत्तजीसँ प्रोत्साहनपूर्वक रचना प्रकाशित करबौलनि। तखन हम राजपंडितजीकें कहलिअनि, 'आब हिनक रचना प्रक्रिया रोधनीय नहि', तखन हिनको सम्पर्क बढ़ल। एही प्रसंगक बादक एक घटना उल्लेखनीय जे एकबेर एक हिनक सुपरिचित ओ

हमरो सुविदित व्यक्तिक कार्ड भेटल जे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमल'क सहसा गामहिमे दुःखान्त भऽ गेलनि। समीपी व्यक्तिक अन्य स्रोतसँ तकर चर्च–बर्च नहि सुनि संवाद तँ नहि छापल, परंच किछुए दिनक बाद भेंट भेने प्रमुदित–चकित होइत हिनका कहलिअनि, आब अहाँ 'अमल'सँ 'अमर' भऽ गेलहुँ। 'रलयोरभेदः' व्याकरणक अनुसार नवकल्प विकल्प रूपें सर्वथा सुसंगते थिक। एतबे उल्लेखसँ साधनसीमित पत्रकारक विषमता बुझल जा सकैछ।

एकबेर ओहि समय सुविदित कांग्रेस नेता बेतियाक प्रजापतिमिश्रजी जमाय प0 शंकर मिश्रक ओतय अयला, हमरालोकनि हुनक संवर्धनार्थ ओतय जुटलहुँ आ हुनका मैथिल समाज गौरवमणि कहल गेल। नेहरूजी जेना बाजल छलाह जे हम 'एक्सिडेन्टली' कश्मीरी द्विजकुलमे जन्म लेलहुँ तहिना ओहो कहलथिन जे हम 'एक्सिडेन्टली' 'मैथिल' थिकहुँ। 'मिहिर'मे एहूपर टिप्पणी भेल जकरा लोक बेजाय नहि मानलनि।

हास्यरसाचार्य हरिमोहन बाबूक कोनो व्यंग्य–कटाक्षसँ व्यंजित–रंजित लेख छापी तँ ओकर अवरोधी–विरोधी विचार छापय पड़य। कदाचित् हरिमोहनबाबूओक वाक्य–प्रहार अंगीकार करय पड़य।

शास्त्रीय वाद–विवाद ओ खंडन–मंडनक मैथिल–सुलभ प्रक्रिया चलिते रहैक। मध्यममार्गी भेल जेना–तेना सम्हरैत चली, किन्तु सतर्कता राखहि पड़य। प्रियबन्धु यात्रीजीक 'पारो' छपल तँ किछु विवादित अंशपर एक विशिष्ट प्रकृष्ट व्यक्तिक 'पारो तँ कपारो धरि फोड़ि देल' सेहो छपलैके। अपना दिससँ पुनः किछु अंशपर संस्करणान्तरमे लेखकीय परामर्शपूर्वक ज्वाला शान्तो करय पड़ल। ओहि समयक मानसिक परिस्थितिमे अनेक महत्वाकांक्षा जे उठय ताहिमे की शक्य की अशक्य सोचबाक सहूलियत नहि रहय। 'कने न औगुन जग करत नै वै चढ़ती वार' विहारीक वचन आब तथ्यपरक बुझना जाइछ। बेनीपुरीजी ओहि युगक साहित्य–नेते नहि साहित्यिक निर्माते रहथि। हुनक 'योगी' पटनासँ चलैत छलनि। व्यंग्य–विनोदमे योगीक उल्लेख करैत चख–चुख सेहो उठा देल जाइक। बन्धुवर अच्युतानन्द दत्तक एहि सभ रंग–तरंगमे बेस सहयोग भेटय। 'गोनूझाक 'नोसदानी' शीर्षक हरिमोहनबाबूकें प्रीतिकर रहनि।

मिथिला–मैथिलीक प्रसंगमे जखन कोनो आन्दोलनात्मक चर्च–वर्च उठैक तँ मैथिलीकें बोली कहि ओकरा हिन्दीक उपभाषा मानबाक तत्कालीन हिन्दी तरंगित लोककें एकटा लति भऽ गेल छलनि। 'मिहिर' अल्प कंठहुसँ तकर विरोध करैत चलय।

'मिथिलामिहिर' कोनो राजनीतिक पत्र नहि छल, सामाजिक–सांस्कृतिक मिथिलाक व्यावहारिक पक्ष ओकर प्रत्यक्ष उद्देश्य छलैक। हँ, साहित्यिक प्रतिभाक उद्भावनो ओकरा द्वारा होइत चलैक। तें कखनो तारतम्यक प्रश्नो उठि जाइक। स्मरण अछि जे एकबेर रामलोचन शर्मा 'कंटक' जीक 'तरेगन' नामक कविता

मुखपृष्ठपर छपल। ओहिपर टिप्पणी छलैक जे वर्षक सर्वोत्तम कविता रूपमे ई गणनीय थिक। एहिपर किछु टीको–टिप्पणी चलैत रहल। उपेन्द्र ठाकुरजी ओ विनोदानन्द ठाकुर जे पाछाँ क्रमहि प्राध्यापकमे अग्रगण्य ओ पत्रकारमे प्रमुखगण्य भेलाह, तत्काल सी.एम. कालेजक छात्र रहि रम्य रचना प्रकाशित करबथि। सुप्रसिद्ध काशीक प्रतिभावान बाल संस्कृत कवि श्रीशजी, हबलदार त्रिपाठीजी,रघुनाथ उपाध्याय सेहो अपन हिन्दी रचनासँ 'मिहिर'क साहित्यिकता बढ़बथि ।

पाछाँ पुरनाइत रहलहुँ, अकछाइत–रुखसुख जीवनक आँचमे टटाइत कने अनमनस्क सेहो भेल जाइ। 'मिथिलामिहिर' घिसिआइत जाय, रंग–विरंगक पत्र–पत्रिका सब प्रकाशन सिलसिलामे पिछरैत–पछरैत पाछाँ बंद होयबाक स्थितिधरि पहुँचि गेल। ग्राहकक अभाव, एकर रूप–रेखाक पछड़ल–पिछड़ल भाव अन्ततः एकरा निस्पन्द कऽ देलक। हमहु कालेजमे जयबाक दंगली प्रसंगमे लागि गेलहुँ।

एकबेर बीचमे पूर्ण मैथिली रूपमे श्री उमापति तिवारीजीक सहायकत्वमे किछु पैघ साइजमे चलयबाक उपक्रम भेलैक, कने नव स्फूर्तिक जागरणो भेलैक। खट्टरकाकाक तरंग भोलबाबाक गप्पकें सनकी कहबाक, पंडिताइ विचारकें उछाल देबाक उपक्रमो भेलैक, परंच से ससरलैक नहि। समयकें अरघलैक नहि। ओकर तिरोधान कतोक वर्षक बाद प्रवासी मैथिलक आग्रहकें प्रमुखतया अमरजी द्वारा मैथिल महासभाक प्रसंगमे उद्‌बोधित करबाक किछु समयक अन्तरालपर पटनासँ 'मिथिलामिहिर' पुनः अपन नवीन रूपरेखामे शेखरजी, उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'जी, हंसराजजी, भीमनाथबाबू आदिक समवेत सहयोगें एवं मिथिलेशक आदेशानुसार श्रीकान्त ठाकुरजीक तत्वावधानमे सुचारु रूपें प्रकाशित होअय लागल। उत्तरोत्तर भाषा–साहित्यक नवता ओ प्रचुरता मे प्रभावी सिद्ध होइत रहल। बीचमे कखनहु ओतहु वाद–विवाद आरंभ, मान्य लेखकक उपेक्षा– अपेक्षाक प्रश्न उठि जाइ। कने गर्मागर्म बहसो उठैक परंच ओकरा सोझरयबामे कखनहु हमरो अनुयोगक अवसर आयल। आठम दशकक बाद इंडियननेशन–आर्यावर्तक स्थगन समय ओहो स्थगित भऽ गेल। इत्यलं मिहिर काण्डम्।

हँ, एही क्रमे इहो कहि चली जे 'मिहिर'मे सम्बद्ध रहने साहित्यिक सामाजिक अनेक व्यक्तिसँ पारिवारिकता तेना जुटि गेल जे अपन पारिवारिको काजमे हुनका लोकनिकें आमन्त्रण हकार गामोसँ दिअनि आ ओ लोकनि स्नेहाबद्ध सुदूर देहातक मार्ग जन्य कष्ट उठाय परिवार समेत हमरा दर्शन दय कृतार्थ करथि। बिसरि नहि सकैत छी जे विद्यार्थी (ब्रजेन्द्रजी)क उपनयनमे प0 गिरीन्द्रमोहन मिश्रजी, रमानाथ बाबू, जीवा बाबू, प0 त्रिलोक नाथ मिश्र, गुरुवर सहदेव झा (राजनगर), नरेन्द्रनाथ दास जी एम.एल.ए. तथा यात्रीजी, मधुपजी, अमरजी, शेखरजी प्रभृति बन्धुगण कष्ट उठाय हमरा सबकें सहजहि ग्रामीणो लोकनिकें कृतार्थ कयलनि। एहिपर शेखरजीक विवरण प्रकाशितो भेल। तैं एतबे।

एही ठाम इहो कहि दी तदनुरूपे चि0 विद्यार्थीक विवाहमे दुरूह मार्गकें पार

करैत अनेक बन्धु एवं प्रिन्सपल लक्ष्मीकान्त मिश्रजी लोकनि वर–वरियातक शोभा–संवर्धन कयने छलाह। एहि प्रसंग एतबा कहि चली जे विद्यार्थीक भविष्णुता देखैत द्रव्यमूलक अनेक कथा छोड़ि लालबागक लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरीक लाइब्रेरियनक माध्यमे कोरियाहीक नूनूबाबूक ओतय बिनु आदान–प्रदानक कथा सिद्धांतित भेल। कारण, ओ हमर पिताक ओतय गाम पहुँचि स्वीकृति लऽ आयल छलाह। एहि प्रसंग मित्रवर श्रीकृष्णमिश्र जी एहि औपचारिकताकें परिचालित नहि कयने वंचित रहलाह। तकर खेद हमरा बादो धरि बनल रहल। वैयक्तिक रहनहुँ वैवाहिक प्रसंग एक तुच्छ–रुच्छ प्रसंगक संकेत मात्र कय चली। सनामा नूनूबाबू साक्षी छथि। जखन कोरियाहीक नूनूबाबू प्रसंगतः डेरापर अयलाह तँ स्वागतार्थ संयोगल किछु अल्पाहार हुनका आगाँ राखल तँ ओ ई कहि ग्रहण नहि कयल जे हम एना भावी कुटुम्बक ओतय अन्न ग्रहण नहि करै छी। हम तदनुक्रमे बरियातमे गेलापर यावत् वैवाहिक–चतुर्थीपर्यन्त कर्म सम्पादन नहि भेने अन्न नहि ग्रहण कय फलादि मात्र ग्रहण कयलहुँ। समधिक प्रचलित विदाइओ नहि स्वीकार कयल। तत्काल ओ जे आवेशमे आयल होथि अपन रोबदावसँ कुटुम्बमात्रक ओतय धाक जमौनिहार हमरा प्रति नम्र–विनत होइत रहलाह जे हुनक परिचित–उपचित कुटुम्ब वर्गकें अस्वाभाविक बुझना जाइन। अलं बहुना।

आवास–प्रसंग

ऑफिस–कार्यालयक कल्प तँ चलिते छल। कने आवास–सुपासक चर्चा करैत चली। भूकम्पीय तृण–छावनीक कतोक मासक बाद राजक नव क्वार्टरक निर्माण चललैक। ए.बी. टाइप तँ दमगर आफिसरक निवास बनल। सी. टाइप हेड आफिस प्रमुख विभागीय लोकनिकें, ई0 डी0 टाइप, एफ0 टाइप एम्हर सामान्य विभागीय ओ अध्यापक आदिकें। सी0 टाइपमे हेड क्लर्क, ट्रेजरी आफिसर, एकाउंटेंटक अतिरिक्त राजपण्डित बलदेव मिश्र तथा अव्यवहित सामने विद्यालयक प्रिन्सपल तथा जी0 खपरैल टाइपमे कविराज विश्वनाथ झा प्रभृति। किछु बगलक बंगाली नर्सरी व्यवसायीसँ घर–परिसर बगलमे किनलो गेलैक। जकर एक भागमे हमरो तत्काल डेरा भेटल पक्का मकान दिस, पाछाँ ओ हेड एकाउंटेन्टकें वितरित भेलनि। तकर सम्बद्धे खपरैल मकानक सिलसिला छलैक, एक भागमे हमरा भेटल दोसर भागमे न्यायाध्यापक काशीनाथ ठाकुरकें। हम ओहीमे आबि जमलहुँ। ई कने लंबमान घर छलैक। पाछाँ ओकर एक भागमे किछु श्रोत्रिय कर्मचारी एवं इनवेस्टमेंट आफिसर वैद्यनाथ झाजीक पार्श्वचर वृद्ध मार्कण्डेयबाबूक संग हेड आफिसमे कार्यकर्ता श्रोत्रिय बाबू कीर्तिनाथ– वैद्यनाथ–चिन्त्यनाथ झा लोकनिकें। एहि सब पड़ोसीक संग एक भागमे हमरो डेरा छल जे सम्पादकीय अवधि धरि जमल रहल। एहि सम्मर्दमे लिखबा–पढ़बाक अनुकूलता नहि बुझना जाय, परंच जन–सम्मर्दमे रहबाक अभ्यासी

भऽ गेलहुँ। अपने समंगर छलहुँ, अतिथि–अभ्यागत सेहो झमटगर। तकर दिनानुदिन वृद्धिए होइत जाय।

नगरवासक वरदान–अभिशाप जे बुझल जाय, गाम–परिसरक वा बाहरी सम्बद्ध– असम्बद्ध परिचय–पातक लोक बाजार करय आबथि, वा चिकित्सा प्रसंगें आबथि अथवा राजमे कोनो काजे वा जीविकार्थ आबथि, डेरापर जमि जाथि। मन अछि, हमर पैतृक गाम मोहना–कन्हौलीक दू युवक जे राजमे एप्रेंटिस बनि अयलाह ओहो डेरेपर धमकि गेलाह। जगह सिकस्त, चौकी–खाट कम, जे छल ताहिमे दू गोट चौकी अजबारि लेलनि। अपन नियत समाङ नीचाँ पटिया ओछाय भने सुतल करथि। एम्हर पिउन लीलाधर मिश्र चौका चलबैत रहथि। हमर मातृमातृक नवहथक राजमे अनुष्ठानी रघुनाथ ठाकुर पहिने यदा–कदा पाछाँ सदा एतहि जुटि गेलाह। हँ, एतबा अवश्य जे आब ओ अतिथि नहि अतिथिलोकनिक स्वागतोमे सहायक भऽ गेल करथि। कविजी प0 सीताराम झाजीक आवेशें हुनक छोट बालक विषपायीजी एतहि रहि पढ़य लगलाह। तत्कालीन स्थितिक अनुमान एही सबसँ लगाओल जा सकैछ।

निवासक संकीर्णता वा संभृतता तँ चलिते छल। साहित्यिक बन्धुक यातायात सेहो वृद्धिगते। उदाहरणार्थ भच्छीक काशीनाथ ठाकुर 'कलेश'जी बहुधा एतय रहथि। राजमे अपन पूर्व पुरोहितीक उत्कीर्ण करबाक प्रसंगो रहनि। पुनः टभकाक हुनक बहिनोय–भागिन लोकनि से अबैत–जाइत रहथि। एतहि एक बेर कोइलखकें प्रथमा शिक्षा–परीक्षाक गुरुवर जयसिंह ठाकुर अस्वस्थ भऽ कऽ डेरापर अयलाह। दीर्घरोग दू–एक मास अपेक्षित डाकदरक देख–रेखमे चिकित्सा चलैत रहलनि। दीर्घरोगी पथ्य–पानिसँ शिष्यक ओतय कम परहेज रखनिहार। अन्ततः एतहि निधन भऽ गेलनि। हुनक संस्कारार्थ टैक्सी द्वारा कोइलख पठाय कर्त्तव्यशेष कयल।

एहिना हमर अभिन्न संगी रामनिरेषण मिश्र अस्वस्थ भेलापर साग्रह एतय अयलाह, चिकित्सो चलल, परंच एतहि पंचत्व प्राप्त कयलनि। एतबे किछु स्मृत–विस्मृत उल्लेखसँ स्थिति ज्ञात कयल जा सकैछ। रातिमे सुतबाक स्थानाभावमे विद्यालयक परिसरमे हमरा लोकनिकें जाय पड़य। ओहि समय मच्छड़क प्रकोप कम छलैक तें केवल ओछौन लऽ जाय पड़य। जाड़मे भरि कोठरी सेजौट ओछैले रहैक कष्टं–शिष्टं कहुना निबहि जाइ। और जे हो, आतिथ्य लेल सिद्ध–प्रसिद्ध भऽ गेलहुँ। किन्तु आब तकर प्रतीकारार्थ किछु विचार उठल जे एतय परिवार यदि लऽ आनी तँ कने बाहरी आवर्यात कदाचित् कम हो।

बीचमे सी0 एम0 डैनबी देश गेलाह। ए0 एम0 माननीय मिसरजी सी0 एम0क काज करथि। हम साहसपूर्वक डेरामे विच्छेदक देवाल दऽ परिवार रखबा योग्य स्थिति बनयबाक प्रसंग निवेदित कयलिअनि, आङनक सामिलात जलकल बाहर गड़बा देबाक सेहो। स्वीकृति भेटल, राजक ब्युल्डिंग आफिससँ से करा देल गेलैक। तखन साहसपूर्वक गामसँ परिवार मङा लेल। आब कने डेरा हलुकाय लागल।

बाहरी लोक दोसर डेराक व्यवस्था करैत गेलाह। किछु लिखबा–पढ़बाक सुविधा भेटय लागल।

एहि बीच पड़ोसी समाजवादी राजनीतिक चेतनाक रामेश्वर प्रसाद वकीलक जेठ भाइ लालबाबू किछु व्यवसायी मिजाजक। ओ एकटा हैंडप्रेस राखि 'प्रजा' नामसँ एक पत्र चलौलनि, सम्पादक भेलथिन बाबू धनुषधारी दास, ओ किछु दिन हुनके ओतय रहि, पाछाँ 'मिथिलादर्शन' (सुलतानगंज)क पत्राचारी चिन्हार हमरा बुझि डेरेपर आबि गेलाह। छः मास धरि पत्र चलबा समयधरि डेरेपर जमल रहलाह। एही ठाम 'रुपैयाराज' व्यंग्य मैथिली–कविता पुस्तक लिखलनि, प्रकाशितो कयलनि। पत्र बंद भेलाक बादे डेरा छोड़लनि। आदि–आदि।

बाहरी भीड़–भार कमल अवश्य, परंच यथावसर सेहो चलैत रहल। एक बेरक प्रसंग उल्लेखनीय अछि। राजमे विशेष उत्सवपर किछु भीड़भार बढ़िए जाइक। एकबेर इन्द्रपूजाक अवसरपरक घटना मन पड़ैछ। गामक अपेक्षित जमीन्दार नागेश्वर बाबूलोकनि पूजनोत्सव देखय अयलाह संगमे खबासो नेने, हमरा ताहि लेल पागक प्रबंध करय पड़य। एक दिन सभ गोटे इन्द्रभवन जाइत गेलाह। बाहरमे संगक खबास किछु हटिकऽ सभक जूताक रखबारि करैत बैसल रहनि। राति किछु बेसी भऽ गेलैक, ओकरा बुझना गेलैक जे प्रायः ओ सब हमरा हटिकऽ बैसने खलिए पैर डेरा चलि देने होथि। ओहो जूता सहेजि डेरा दिस चलल। अनभुआर रहने डेराक रास्ता ओकरा भुतिआ गेलैक। ओ टौआइत–बौआइत, अन्ततः हारि–दारिकऽ सोझे गामक रास्ता धयलक–जूताक पोटरी बन्हने गाम चलि देलक, ओ रास्ता ओकरा देखले छलैक। हम सभ घुरलहुँ तँ आदमीक पता नहि, हारि–दारिकऽ खाली पैरें डेरा फिरबालेल विवश छलहुँ। दोसर दिन सभ चट्टी आदि कीनि तकर निर्बाह करय पड़ल। पाछाँ ओकर गाम जयबाक खबरि लगैत गेल।

प्रसंगतः उल्लेखनीय अछि जे हमर पितामहभ्राता ज्योतिषी नागेश्वर झा जे पहिने अपन श्रद्धालु यजमान बाबू दुर्गानन्द झाक ओतय रहैत छलथिन, तनिका चर्चबर्चे हमर सम्बन्धी बूझि ओ हमरे ओतय निवासार्थ पठा देलथिन। ओ भात खयनिहार नहि, रोटी–चूड़ा सामान्य रूपें ग्रहण करैत। कहुना तकरो व्यवस्था चलय लगलनि। परंच अफीम खयबाक अभ्यास, ताहि हेतु हुनक व्यग्रता–विकलता देखि कहुना व्यवस्था करय पड़य। कखनहु अभाव–अभियोग बढ़ि गेने वस्तु बंधक राखि दोकानसँ अफीमे जुटबय पढ़य।

एवंप्रकारक अनेक कटु–मधु अनुभव निवास–स्थलक स्मरण पड़ैछ, कतोक बिनु टिकटक अर्ध–परिचितो व्यक्ति पहुँचि जाथि तनिक जुर्मानाक टाका जुटबय पड़य, पुनः हुनक दर्शनाभावसँ तकरा अनठाबय पड़य। एक बेर हमर सासुर दिसक बेगूसराय परिसरक व्यक्ति गाजा–प्रकरणमे पकड़ल गेलाह, मोकदमा चलल। दिक होइतहुँ कोर्ट–कचहरीक पैरबी पहुँचाबय पड़ल। पाछाँ ससुरक मुहे ओकरा सभक पेशे एहने ओहन छैक, सुनि सावधानो भेलहुँ। एकबेर भजोखाक किल्लत चललैक

तँ सरकारी खजानाक एक कर्मचारी स्टेशनपर पकड़ल गेलाह। सहसा हमरा स्टेशनपर देखि आक्रंदन पूर्वक ताइ लेल विवश कऽ बैसलाह। परिचयक ई सभ दुस्सह स्थितिओ कटु–तिक्त अनुभव जखन–तखन भेटल अछि। बीस वर्षक पत्रकारिताक जीवनमे अनेक कटु–मधु प्रसंग अङेजय पड़य। अलमतिविस्तरेण।

प्रसंगतः एतय ई कहि देब आवश्यक बुझि पड़ैछ, सुदीर्घ अवधि धरि दरभंगिया होइतहुँ, गामक रंगटीप उखड़ल नहि जुड़ल रहल। पिताजी द्वारा कखनहु कोनो अंगवस्त्र भेटि जाय, मायक पाठाओल चूरा–मूढ़ी–पकवान पहुँचि जाय। संगी–साथीक सौहार्द हृदयकें तृप्त कऽ जाय। अल्पकालिको छुट्टीमे गाम की तँ साइकिलसँ सोझे, अथवा किसनपुर स्टेशन उतरि चारि कोस पैदले चलि पड़ी। केओ दुखित–सुखित होथि तँ चलि पड़ी। मन अछि, 40–41 इ0मे माय बेशी अस्वस्थ भऽ गेली, साँझोक ट्रेनसँ जाय, पैदलो राति–बिराति भेल तँ ककरो संग लय, कतोक बेर, 'भूत–पिशाच निकट नहि आबै। महावीर जब नाम सुनाबै।।' चालीसाक पाँती गुनगुनाइत चलि पड़ी। स्टेशनसँ दूर गामक बासी रहने कहि बैसी जे एतेक पैदल चलबाक अभ्यासी रहब, इष्टे थिक। तें नागरिकतासँ अधिक ग्रामीणताक रुचि–प्रकृति बनले रहल।

एही बीच मातृहीन भऽ गेलहुँ। लघुपरिवारक अभिनिवेशिनी मायसँ अधिक व्यापक परिवारडेवी पिताक रुचिक हम विशेष आकृष्ट रही। किन्तु मायक संयमी जीवन, जाहिमे कष्टंशिष्टं किछु बचाय ओ ककरो पैंचोउधार देल करथि, हमरो सबकें काज पड़ने सम्हारि देथि, से स्मृतिमे झकझक अछि।

अपन वासाक चर्चा करैत अड़ोस–पड़ोसक दिस सेहो दृष्टि दैत चली। हमर अव्यवहिते दक्षिण घेड़ल–बेढ़ल परिसरमे राजक एकाउंट आफिसक प्रमुख बाबू रामकृष्ण दासक डेरा रहनि। स्मरण अछि, ओ सन्ततिविहीन रहने अपन गृह–सम्पदाक भार भातिजकें दैत, ग्राममे पुस्तकालयक निर्माण हेतु पुष्कल अंश सार्वजनिक दान कयलनि तथा ओकर उद्घाटन महाराजाधिराजक हाथें करयबाक आग्रह सफल कयलनि। ओतयक स्वागत–विधानमे वक्तव्य आदि लिखि हमरो लोकनि सहभागी होइत गेलहुँ। पश्चिम भागक डेरामे क्रमशः एक बंगाली परिवार छलाह, जनिक माय रामकृष्ण परमहंसजीक परिवार शाखाक छलथिन। पुनः ओहिमे क्रमशः अनेक परिवार अबैत गेलाह। वर्त्तमान एम0 एल0 सी0 नीलाम्बर जी प्रभृतिक छात्र–जीवन ओतहि कटलनि।

पश्चिम भाग राज क्वार्टर सी0 टाइपक सिलसिला। प्रिन्सपल बूढ़ा गुरुजीक पंडिताम डेरा। अमरजी लोकनिक शैशव। सामने राजपंडितजी, हुनक आश्रयमे विविध व्यक्ति, सुलिपि–लेखक बालगोविन्दजी, सदारक्तांवरधारी तान्त्रिकवेशी प्रभृति। दक्षिण बगलमे डा0 सूर्यकान्तजीक पिता चुम्मन ठाकुर एकांउट विभागीय, रामचरितमानसक अभ्यासी। तदुत्तर खत्री ट्रेजरी आफिसर तथा पूर्व–दक्षिण भागमे फणिनाथबाबू सपरिवार। ओकर पाछाँ डी0 टाइपमे सामवेदीजी, उपेन्द्र झाजी

पश्चात्। जकर दक्षिण ई0 टाइप जाहिमे गौरी बाबू लोकनि राजकर्मचारी। ओकर आगाँ ए0 टाइपमे ए0 एम0 श्री गिरीन्द्र मोहन मिश्रजी, इनवेस्टमेंट आफिसर वैद्यनाथ बाबू, महाराजक बडीगार्ड माल सिंह, तदुत्तर सचिव सदन। दक्षिण पार्श्वमे ऑडिटर, ट्रेजरी आफिसर दुर्गानन्दबाबू, सर्कल विभागीय आफिसर राधाबाबू, तदुत्तर लॉ आफिसर उपेन्द्र बाबू। पुनः बी0 टाइपमे पैलेस आफिसर धनेश्वरझाजी, लाइब्रेरियन रमानाथ बाबू, महाराजक ममिऔत डयौढ़ी सुपरिटेंडेन्ट लोकनि।

एतहु गाहे–वगाहे, कार्यवश, अपेक्षितक कार्यवश कदाचित् जयबा–अयबाक सामान्य विशेष गतिविधि पत्रकार रूपें चलैत रहय। डेराक सामने रामेश्वर बाबू, यादव लोकनि। पूब सड़क–भागमे विभूतिबाबूक परिवार। तदुत्तर धर्मशाला, विद्यालयक छात्रावास, पाछाँ प0 त्रिलोकनाथ मिश्रजीक डेरा। कटहलबाड़ीक बाजार शुरू हो, तदुत्तर देवानी तकिया, पोखरिपर राजक एक गेस्ट हाउस। बादमे लक्ष्मीसागर, पुनः भीड़पर मंदिर। तदुत्तर लक्ष्मीसागरक रसालकुंज, जतय एखन महल्ला बसि गेल अछि। तदुत्तर हथिसार धर्मगाछी जे एखन नगरक पूर्व खण्डे जमि गेल अछि। बाजार, पोखरि, गाछी धरि अपना सबहिक यातायात चलैत छल।

एही बीच विद्यालयक भवन–परिसरक उद्घाटन भेलैक देवासक महाराजक हाथें, पंडितलोकनि पंक्तिबद्ध समान वेष–भूषा पागधारी भऽ हुनक स्वागत कयने छलथिन, हमहु सम्मिलित भेल छलहुँ।

एहिना स्मरण अछि, भूकम्पक बादे प्रायः 34 इ0क दीपावली रातिमे निशीथ रात्रि मुहूर्तमे श्यामा–भगवती प्राणप्रतिष्ठापूर्वक स्थापित भेल रहथि। प्रसिद्ध पंडित ओ तान्त्रिक व्यासजीक पूजकतामे। अपनाकें हुनक प्रतिष्ठान–दर्शनसँ धन्य मानैत गेलहुँ। तावत् माधवेश्वरक परिसर घेरल नहि छलैक। पाछाँ सेहो भेलैक। मन्दिर–विभागक सुपरिन्टेंडेन्ट सेहो नियुक्त होइत रहलाह।

उपर्युक्त विवरण राजमे अवस्थितिक समयक छल। पाछाँ एहिमे बहुतो फेर–बदल होइत रहलैक। कालेज–जीवनक समय हमर सटले पक्कावाला उत्तरी पार्श्वमे राज द्वारा भाड़ापर प्रिन्सपल लक्ष्मीकान्त मिश्रजी रहय लगलाह। तावत् हुनक वर्त्तमान डाक्टर एवं आइ0 ए0 एस0 पुत्र लोकनि शिशुए छलथिन। हिनक डेरामे बिजली कनेक्शन छलनि। यैह सौहार्दपूर्वक बिजुली लाइन हमरो डेरामे कनेक्ट कऽ देलनि। प्रेसोक हेतु सुविधा भऽ गेल।

प्रिन्सपल साहेबक ओतय जमघट होइते रहैक। अध्यापक ओ छात्र–गार्जियन पहुँचिते रहथि। नागेन्द्रजीकें ओतय बहुधा अबैत देखिअनि। पाछाँ ओ कालेजमे एडमिशनो लेलनि। छात्रो रूपमे परिचित भेलाह। राधानन्दनजी सेहो कखनहुँ भेटथिन। पाछाँ एक युवक कार्यकर्त्ताक रूपमे ओ बहुपरिचित नागरिक होइत रहलाह।

दरभंगामे जीविकाक व्यस्तता एवं आवासक ओझरौटक कारणे गामक आवर्यात् कम भऽ गेल। हमर जेठ पितिऔत भाय, जे महापंडित खुद्दी झाजीसँ 'वैद्यविद्या–

निधि'क उपाधि पौने छलाह, संगीतक धुरंधर प्रेम अपन स्वर ध्वनि श्लोक पाठसँ सभाकें मुग्ध करैत छलाह, जनिक संग हम कोइलख–पटना पढ़बाक बहुत–किछु समय बितौलहुँ तनिक अन्तिम समय हम उपस्थित नहि भऽ सकलहुँ। बहुत एम्हर आबि 85 मे जखन हुनक कनिष्ठ यादवेन्द्र बाबू होमियोपैथक अंतिम समयहुमे हम कोनो दिवस–समारोहमे बाझल मृत्युक' दोसर–तेसर दिन पहुँचि सकलहुँ आदि पारिवारिक च्युति–विच्युतिक खेद बनल अछि। सुहृद्वर हेमकान्तबाबू–गोपीकान्तबाबूकें दुखित रूपें देखि–सुनि तँ अयलिऐनि किन्तु अन्तिम समय वंचिते। पुनः एम्हर प्रिय देवनारायण ओ रूपनारायण बाबू सदृश व्यक्तिक मृत्यु सुनिएकऽ विह्वल रहलहुँ। एम्हर अनुज कलाकार ओ आयुर्वेदाचार्य देवेन्द्र (विहोरी बाबू)क आकस्मिक मृत्यु समाचार सुनिएकऽ तिलांजलि अर्पित कऽ सकलहुँ। से सभ कतेक सुनाओल जाय? संक्षेपमे एतबे कहब जे इलाहाबादी–अजीमावादी गोरखपुरी–बनारसी–बेनीपुरी नामक अनुक्रमे बल्लीपुरी उपनाम नहि जोड़लहुँ परंच चिट्ठीपत्रीक शीर्षमे आवास दरभंगा लिखी तँ निवास गाम बल्लीपुरक उल्लेख करिते रही। संक्षेपमे रामायणेक प्रासंगिकता रहय जे 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' इति यावत्।

मिथिला प्रेसक स्थापना

बरहवर्षा डेढ़युग बीति गेल। अर्थात् 46–47 इ0 अबैत, अपन आर्थिक स्थिति तेना गड़बड़ाइत गेल जे मन घबड़ा उठल। अपन छोट सोदर बाबू भूपेन्द्रक संग गप उठबैत रहलहुँ जे आब कोनो उद्यम–व्यवसायक उपाय सोचय पड़त। हुनक विचार एहि हेतु विशेष काम्य भेल जे ओ एहि दिस कने साकांक्षता रखैत छला। हुनक कैमरा–फोटोक रुझान ओ सन्धान 'बालक'मे छपि चुकल छल। चश्माक सेन्सकें जोड़िजाड़ि कूटक कैमरा साटि–सुटि बनाय फोटो उतारबाक प्रयोग शिवजी–दत्तजी–महारथीजी लोकनिक समक्ष प्रदर्शित भऽ बाल आविष्कारी रूपमे 'बालक' 36–38 इ0मे छपिओ चुकल छला। हायाघाट सर्कलक मैनेजरक दौड़–बरहा करैत किछु जमीनो बंदोबस्त लऽ नेने छलाह। किछु दिन घुमि–फिरि सूर्यनारायण चौधरीकें संग लगाय घुमंत व्यवसायो करैत रहल छलाह, पाछाँ कोनो दुर्घटनावश ओकरा छोड़ि देलनि ओ सूर्योजी मोटर–इंजनक मरम्मती करबामे लागि गेलाह।

हुनका संग विचार–विमर्श करैत स्थिर भेल जे अपन रुचि–प्रवृत्तिकें देखैत स्वतंत्र प्रेसे खोलल जाय। परंच ताहिलेल पूजी चाही। ओहि समय बैंक आदिक् ताहि प्रकारक व्यवस्था नहि चलैत छलैक। तें तदर्थ तकर प्रबंध अन्वेषणीय। पुस्तक भंडारक मैनेजर सोमणजीसँ चर्च कयल। हुनक कारबार इलाहाबादक टाइप फाउंड्री राजारामसँ चलैत छलनि, हुनक माध्यमे कने सुविधाजनक दरपर टाइप मङा लेलहुँ। डेरेक एक कोठरीमे ओकरा लगाय तत्काल जे निर्वाचक–सूची चलैत छलैक, तकर

किछु ठीकाक काजक जोगार लागल। किछु पूजीक अंश ओहूसँ जुटल। मित्रवर श्रीकृष्णबाबू सेहो किछु अंश जुटाय सहयोग कयलनि। क्रमशः कंपोजिंग एतय चलय। छपाइक काज सुदर्शन प्रेसमे चलाबी। विशेषतया स्वतंत्रताक बाद जे निर्वाचन सूची आदिक बहुधा मुद्रण–संशोधन चलैत रहैक तकर काजक स्वतंत्र ओ आनो प्रेसक पछुऐल काज भूपेन्द्र परिश्रमपूर्वक जोगार करैत रहथि। क्रमशः तकर परिवेश बढ़ैत गेल, मिर्जापुरक कंपोजिटरक सेहो सहयोग भेटैत रहल। आब कम्पोजिंगसँ मशीन ट्रेडिल किनबाक आवश्यकता बुझना गेल। भूपेन्द्र कलकत्ता गेलाह। हजार–खाँ मे देशी मशीन ठीक कयलनि। आब ओकरा अनबाक प्रश्न छल, कोनो बालू ट्रकसँ कोनहुना मोकामाघाट धरि ट्रेडिल मशीन पहुँचल। तत्काल पार आनब कठिन। मासावधि जहाजक मंजूरीमे हुनका प्लेटफार्म पर ओगरय पड़लनि। ओही बीच दरभंगाक व्यक्ति ओतय मोकमा हाइस्कूलमे हेड मास्टर रहथि। ओ सहानुभूति देखबैत रहलथिन। पाछाँ स्कूल मैगजीनो एतय छपबौलनि। एही प्रकारे बड़े श्रम साधनसँ मशीन आनि लगे एक मकान किरायापर लऽ मिथिलाप्रेस खोलल गेल। विविध क्षेत्रमे परिचय रहने काजो भेटैत गेल।

बादमे एकर विकास विस्तारक सनक दुहू भाइ पर सबार भेल। सेवा–निवृर्त्तिक बाद जे सुरक्षित निधि भेटल, ओ विशेष अवदान भेटल, ताहिसँ सेकेंड हेंड फ्लाट मशीन हिन्दुस्तान प्रेससँ, हैन्ड मशीन रामायण प्रेससँ कीनैत गेलहुँ। कटिंग स्टीचिंग, परफेटिंग मशीन बाहरसँ कष्टं–शिष्टं मङबैत रहलहुँ। एतेधरि जे मोगलिया सूदिपर सेहो से सब करय पड़ल। ताहि प्रसंग एक घटना मन पड़ैछ। नियत दिनमे मोगल सूद असूलय पहुँचल तँ हम अनुज भूपेन्द्रसँ कहलिअनि जे अहाँ कहि देबैक जे एखन घरपर नहि छथि। ओ बाजि उठला, झूठ कोना कहबैक, हमहु एतयसँ चलि दैत छी, ओ ककरो नहि देखि अपनहि घुरि जायत। हम एतबो झूठ बजबासँ हुनका विरत देखि चकित रहलहुँ। मनमे कहल जे 'सत्याऽनृते च वाणिज्यं' से हिनकासँ कोना चलि सकत! परंच तकरा ओ अपने लीखपर चलबैत रहलाह। प्रेस चलैत गेल, पुस्तक–पत्र छपैत रहल। कोनो तेहन बाधा नहि पड़ल। एकबेर एक तत्काली महत्वपूर्ण व्यक्तित्व अत्यन्त अपेक्षित ओ आश्रयमूलक व्यक्ति कोनो निर्वाचनीय मोकदमामे हुनकासँ मिथ्यामूलक साक्ष्य देबाक आग्रही रहथि। दोसर केओ रहैत तँ संग्रही भऽ जाइत किन्तु हुनका ओतय से सब नहि चललनि। तकर साक्ष्य एखनहु एक प्रमुख अधिकारी छथि, बहुतोकेँ ई बुझल छनि तँ पिष्ट–पेषण नहि कर्तव्य।

'मिथिलाप्रेस' ओहि समय विशेषतः मैथिली–लेखकक रचना अपनहु छपौलक, छापि कऽ हुनकहु जेना–तेना अर्पित कयलक। बहुतोकें ई सुविदित छनि तें तकर अधिक चर्चा स्वकीय अर्चा ने भऽ जाय तें एतबे।

राजपुस्तकालयक परिसर

मन पड़ैछ जे जखन पुस्तक–भंडारक साहित्यिक परिसर उखड़य लगलैक, पुस्तक व्यावसायिकतामे स्थानीय उद्यमी प्रतिभाक संग लेखकीय जुटान पटनामे उपटय लगलैक, भंडारक देखादेखी नालंदा–अजंता आदि नामे प्रकाशन केन्द्र बनय लगलैक, तखन जे जतबे व्यक्तित्व तत्काल एहि गतिविधिक रही से कोनो ठाम कखनो जुटबाक रुझान मे रही। तखन राजपुस्तकालय गिरीन्द्रमोहन रोडक 'ए'टाइपक पश्चिमी छोरपर सचिव–सदनक सटले स्थापित रहैक। एक दिस संस्कृत पुस्तकाध्यक्ष राजपंडितक पंडिताइ जुटान, दोसर दिस रमानाथ बाबू लाइब्रेरियनक नवीन साहित्यिक अनुसन्धान, जीवाबाबूक दूहूक मध्यवर्ती रुझान, सटले सचिव सदनसँ छोट फाटक होइत कखनहु कुमार गंगानन्द सिंह जीक जखन–तखन पहुँचान हमरो लोकनिक आकर्षण स्थल भऽ गेल। एकरस जीवनमे कने दो–रस वसातक सुवास भेटय।

किछु सोति–ब्राहमणक रंग–विरंगी प्रसंग, किछु तात्कालिक मैथिली लेखन शैलीक तरंग, कोनो नव पुरान विद्वान कवि–लेखकक व्यासंग चलि पड़ैक। कोनो प्राचीन हस्तलेखक बातो उठैक। जीवाबाबू डाकक विषयमे तड़िपतक आधारपर संकलनो कयलनि। मैथिली साहित्य पत्रो रमानाथ बाबू चलबैत रहलाह। नाथ चतुष्टयक चर्चो–अर्चो चलैत रहल। तावत इंडियननेशन प्रेसमे प्रकाशनक हेतु रमानाथ बाबू सूक्तिमुक्तावली नामे 'हरिहर सुभाषित' प्राचीन जीर्ण लेख–पुस्तकक आधारपर प्रस्तुत करैत रहथि। ओहिमे जीर्ण–शीर्ण स्थिति अनेक स्थान उड़ल छलैक, तकरा स्थानमे उपयुक्त पदक स्फूर्ति करबाक प्रसंग अयलैक। किछु दिन पहिने रमानाथ बाबू जखन–तखन सोतिपुरा जथि तँ गुरुवर कविशेखर जीसँ ओकर समाधान करबथि। हुनका दौड़–धूप करैत देखि गुरुजी कहलथिन जे अहाँ एक काज करू, हमर शिष्य सम्पादक छथि, से अहाँक निकटे छथि, हुनकासँ अहाँकें ई काज चलि सकैछ। पहिने दू एक बेरि प्रसंग अनलनि तँ हमरा जे फुरल कहि देलिअनि, सन्तोष भेलनि। तहिआसँ सन्ध्या समय ततय अबैत रहबाक आग्रह गृहीत भऽ हम अबैत रहलहुँ। जीवाबाबू सेहो आयल करथि। हुनके मुहें पंडितजी सेहो बुझलनि। कहि बैसथि, एहि हरानिएँ की ? हमर क्रम ओहिना चलैत रहल। पुस्तक प्रकाशित भेलापर रमानाथ बाबू स्वयं डेरापर आबि पुस्तक समर्पित कयलनि। अपन विद्वत्तापूर्ण भूमिकाक अन्तमे तकर उल्लेखो कयलनि –

If this under has been successful, that success is due to the constant advice of and helpful suggestion of Kavishekhar Pandit Badari Nath Jha, lately of the Dharmasamaj Sanskrit College of Muzaffarpur and his worthy desciple Pandit Surendra Jha 'Suman',

the editor of the Mithila Mihir Darbhanga. But for their cordial assistance and suggestion, this would never have been what it is"

एहि प्रकारे विविध उपक्रम चलैत रहलैक। ओ जखन कालेज जाय–आबय लगलाह तखन पाठ्यग्रन्थक निर्माणमे ओ बरोबरि हमर सहयोग उल्लेखपूर्वक लैत रहथि। तकर विवरण अनावश्यक। एतय कुमार साहेबसँ घनिष्ठता बढ़ैत गेल, ओ जे कोनो लेख भाषण आदि लिखथि हमरा बजाय सुनबथि तथा सहमति पूछथि। हमहु यथामति हुनक संग पुरल करअिनि। पाछाँ हुनको ओतय बैसार चलय लागल। सन्ध्या गोष्ठी जमि जाइक। जयदेवबाबू, बहुधा रामानाथो बाबू, तत्कालीन इंडियननेशनक संवाददाता नागरिक गोपालजी बाबू एवं कमलेशजी, विन्ध्येश्वरी बाबू प्रभृति किछु औरो नागरिक जखन–तखन जुटि जाथि।

एहि सभक उल्लेख विज्ञापना नहि केवल ज्ञापनार्थ कऽ रहल छी। बहुतो व्यक्ति हमरा अन्यत्रो विरुद्धवर्त्ती लोकमे सम्मिलित देखि हुनक विरोधी वर्गमे हमर उल्लेख कऽ दैत छथि। तें हमरा स्पष्ट करब आवश्यक बुझना जाइछ जे हम हुनका साहित्यक श्रेष्ठतम वेत्ता, समीक्षक तथा वास्तविक साहित्य–निर्मात्ता रूपमे मान्य बुझैत छी। संस्कृतक सुविज्ञ एवं सतत स्वाध्यायी लेखननिरत युगक अवदान बुझैत सम्मान दैत रहलहुँ अछि। रमानाथ बाबू अपना सन अपने छलाह। कोनहु प्रसंग मतद्वैध रहनहुँ हुनक सेवाकें हम मिथिला–मैथिलीक लेल अवदान मानैत छी।

आमोद–प्रमोदक परिसरक चर्चा क्रममे इहो कहि दी जे किछु दिन राजकुमारगंज इंजिनियर अनिरुद्धबाबूक सामने पश्चिम भागमे एक लाइन जकाँ छलैक धर्मप्रिय बाबूक डेरा। किछु दिन ओहो परिसर जुटानक रहैक। दासजी, पूर्णानन्दबाबू एवं अनेको प्रोफेसर जुटथि, सतरंजक खेल जमैक। ओतहु कखनहुँ पहुँची, खेलमे जुटि पड़ी।

कालेज

तावत् नवीन शिक्षाक रंग–तरंगक प्रवाह जन–मानसमे बढ़ैत देखि तत्कालीन बुद्धिजीवी वर्गमे एतय कालेज स्थापनाक विचार चलय लागल। पंडित गंगाधर मिश्र, अवकाशप्राप्त एडुकेशन इन्सपेक्टर बाबू हरिवंश श्रीवास्तव, एडवोकेट प्रियनाथ मित्र प्रभृतिक विचार चलैत छल। ओ सभ रामलोचन शरणजीक पुस्तक भंडारमे अनेक बेर बैसैत रहला। ब्रजकिशोरबाबू–धरणीबाबू–पंडित गिरीन्द्रमोहन मिश्रजी, प0 नागेश्वर मिश्र, सफी साहेब लोकनिक परामर्श–सहमति भेटैत रहने 1937क जुलाइसँ लहेरियासरायक काठगोदाममे किछु योग्य अध्यापककें जुटाय कालेज प्रारंभ कऽ देल गेल, जाहिमे आर0 सी0 पी0, मजुमदार साहेब लोकनि आरम्भमे निर्वृत्तिके प्राध्यापन आरम्भ कयलनि। क्रमशः प्रवेशार्थी छात्र बढ़ैत रहल। गंगाधर बाबूक प्रयास विशेष रूपक छल। हरिवंश प्र0 श्रीवास्तव सहित ओ सेक्रेटरी रूपमे कार्यरत

छलाह। दोसरे–तेसरे वर्ष छात्र लोकनिक संख्या तेना बढ़ल जे आब स्थानक कमी देखि तकर खोज होमय लागल। तावत् भूकम्पक बादे महाराजाधिराजक इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट नामे देल गेल नगर नवनिर्माणक योजनासँ चौक बाजारमे गोल बाजार जे बनल छलैक से वणिक् वृत्तिक लोकसँ अपन नियत दोकान छोड़ि एतय अपनाओल नहि गेल छलैक तथा ओ अन्ततः म्युनिस्पल बोर्डक अधीन आबि गेल छलैक। ततहि एकरा स्थानान्तरित करबाक विचार प्रबन्ध समितिमे भेलैक। ताहि हेतु प्रयास चलल। परंच जें महाराजाधिराज दरभंगामे तकनीकी शिक्षाक लेल एहि सभक उपयोगक विचार कहिओ व्यक्त कयने छलाह तें एतय संभाव्य–असंभाव्यक आख्यास लोककें होनि। एहि प्रसंग प० नागेश्वर मिश्र ओ म्युनिस्पल कमिश्नर गोपालजीबाबू विशेष प्रयासी देखल गेलाह। संयोगवश तावत् गंगाधरबाबूक संग हमहु म्युनिस्पल कमिश्नर रूपमे नोमिनेटेड कयल गेल छलहुँ। बाबू शंभूनाथ जे राजप्रेसक मैनेजर रूपमे राजक खास आदमी बुझल जाथि, तनिका ओतय जोर पड़ल। ओहो तकनीकी संस्थानक तथाकथित विचारक समर्थक मानल जाथि, तें द्वन्द्व। गोपालजीबाबू वाइस चेयरमैन, कालेजक तात्कालिक सचिव नागेश्वरबाबूक आग्रह–अनुरोधसँ वार्डकमिश्नरहु लोकनिमे कालेज हेतु गोल बाजारक स्थानपर विचार–संघर्ष चलैत रहल। हमरा पूर्ण स्मरण अछि, शम्भूबाबू अपन लक्ष्मीसागर निवासंपर कमिश्नर लोकनिक मत–विमत बुझबाक लेल मीटिंग बजौलनि। हुनक अधिकांश पक्षधर सदस्य उपस्थित भेलाह। हम हुनक प्रेस–मैनेजर रूपें सम्बद्ध रहने बड़ अनुगामी सदस्य बुझल जाइ। बुझि पड़ैछ जे तें अपन अनभिमतक पोषक रूपमे हमरा बूझि ओ हमरेसँ विचार पूछब आरंभ कयलनि।

कालेजकें देबाक हमर अभिव्यक्त विचारकें देखि ओ शुभंकरपुर–वाजितपुरक अदौक कमिश्नर किशोरी बाबूक मत देखि कने हतप्रभ जकाँ होइत, फेर आने–आने प्रस्तावक विचार प्रारंभ कयल। एवंक्रमे कालेज़ पक्षमे सदस्य लोकनि सहमत भेलाह तें किछु शर्तक संग प्रबन्ध समितिक हाथें कालेजक लेल भूमि–भवन देल गेल। किछु शर्तो लगौल गेलैक, यथा कालेजक प्रवेशार्थ किछु छात्रक मनोनयन, शिलांकित तत्कालीन सदस्यक नामावली आदि। छात्रनामान्वयन चलितो अछि। शेष उलेखनीय नहि।

सचिव गंगाधर बाबू कालेजक आन्दोलन प्रसंग किछु लिखैत रहबाक अनुरोधो करथि। किन्तु खुलिकऽ कमे, जखन–तखन समाचार अवश्य प्रकाशित करैत चली।

म्युनिस्पैलिटी

म्युनिस्पैलिटीक चर्चा चलल अछि तँ ताहि प्रसंग सेहो किछु। हम म्युनिस्पैलिटीक चुनावक चहल–पहलमे कहिओ कोनो अंशग्राही नहि भेलहुँ। किन्तु चारि सदस्यक

जे नामान्चयन होइक, ताहिमे हरिजन एवं कोनो वंचित भागसँ नामान्वित कयल जाइक। लहेरियासराय भागसँ गंगाधर बाबू तथा दरभंगा भागसँ हम नोमिनेटेड भेल रही। स्वच्छ–फरिच्छ रूपें कमीटीमे उपस्थित होयब झंझटे जकाँ बुझि पड़ल। कखनहु महल्लाक अभाव–अभियोगक प्रसंग लोकक शिकाइतो सुनय पड़य। कोनो पद–पदाधिकारीक मनोनयनमे पारस्परिक कनवासिंगक झंझटो। एकबेर स्मरण पड़ैछ, वाइस चेयरमैनक चुनावमे लहेरियासरायसँ इशाकबाबू एवं दरभंगोसँ किछु गोटेक एम्हर झुकाब स्वाभाविक छल। परंच ओम्हरसँ ओ डैनबी साहेबक ओतय पैरवी पहुँचौलनि जे एडिटर झा राजमे छथि, हुनक वोट चाही। हम तावत् मिटिंगमे चल गेल रही। स्लिप लऽ कऽ एक कर्मचारी हमरा निर्देशन हेतु ओतय पहुँचलाह। हम कने संकेत बुझि बैसकसँ ने बहरयलहुँ ने पुर्जी प्राप्त कयल। पाछाँ ई कहि जे मीटिंग भेलाक बाद हमरा पैरवी–पुर्जी भेटल, तखन की हो। अपन मान बचाओल। ओहि समय धोती–साड़ी सुविधा ओकरे भेटैक जकरा म्युनिस्पल कमिश्नर रिकोमेंड करथि। सार्वजनिक व्यस्तता बढ़ल, किन्तु अपन पारिवारिक सुविधार्थ किछु नहि कऽ पाबी। एतबे कहब पर्याप्त अछि। प्रायः 39ई0 सँ 49 धरि हम नगरपालिकासँ सम्बद्ध रहलहुँ। ओहि समय नगरक विभिन्न वार्डसँ सर्वाधिक सदस्य कायस्थ श्रीवास्तव समाजक। ब्राह्मणमे नोमिनेटेड हम, गंगाधर बाबू, मिर्जापुरसँ वैद्यनाथ मिश्र, एकाध आर, बस एतबे।

तहिना जिला बोर्डमे, लोकल बोर्डमे विभिन्न जातिवर्गक संख्या। महेशबाबू लोकनिक वरीयता, पाछाँ राजाबहादुर विश्वेश्वर सिंहक चेयरमैनशिपमे लोकल बोर्डक चेयरमैन सुन्दरपुरक भवानीदत्त झा। हुनक बालक चन्द्रशेखर बाबूसँ हमरा लोकनिक घनिष्ठता बढ़ल जे अग्रिम चुनाव सबमे बड़ सहायक सिद्ध भेल। म्युनिस्पल कमिश्नर किशोरी बाबूक चर्चा कऽ चुकल छी। हुनकासँ परिचय बढ़ने ओतय आबी–जाइ। ओ एक आदर्श कृषक गृहस्थ छलाह। मटिया तेल छोड़ि कोनो गार्हस्थ उपादान हुनका कीनय नहि पड़नि ओ अपने परिसरमे उपजाबथि। आनन्द–सम्प्रदायक मन्दिरपर सम्प्रदाय प्रचलित कीर्तन निरन्तर प्रवर्तित छल। ओहू समय लालबागमे गोपालजी बाबूक पिता प्रसिद्ध नागरिक राधाबाबूक नाम चलैत छल। कुमरबाबू चेयरमैनो रहथि। हुनक पारिवारिक प्रतिष्ठा छलनि। लालाजी पद्मनाभ प्रसाद राजक बाद हुनको कोठी नगरक केन्द्र छल।

स्फुट प्रसंग

तेसर दशकक बादे राष्ट्रीय जागरणक प्रारंभिक दू–तीन दशक अंग्रेजी शिक्षा–दीक्षाक स्थानमे एम्हर राष्ट्रीय शिक्षा–संस्थानक दिस स्थान–स्थानमे नव प्रयास आरंभ भेल। नेशनल स्कूल कहि नगर–नगरमे संस्था खुजल। दरभंगो ताहिसँ वंचित नहि। जिला स्कूलक प्रतिद्वन्द्वितामे एतहु सरस्वती स्कूल स्थापित भेल

जे पाछाँ महारानी लक्ष्मीवतीक सहायतासँ म0 लक्ष्मीवती हाइ स्कूल नामे बादमे नागरिकक शिक्षाक प्रधान–केन्द्र बनल। गाँधीजीक निर्देशमे सरकारी स्कूलक बहिष्कारक क्रममे राष्ट्रभाषा रूपमे हिन्दी–प्रचारक योजना चलैत रहलैक। नवीन ढंगक शिक्षानुकूल अंग्रेजीक उतार पर भाषामे बाल–साहित्य लिखल–छापल जाय लागल। पटनामे खड्गविलास प्रेस ओ दरभंगा शरणजीक पुस्तक भंडार ख्याति प्राप्त कऽ रहल छल। ओम्हर रामदहिन मिश्रजी लोकनि, एम्हर भंडारमे बेनीपुरीजी लोकनिक चर्चा चलि पड़ल छल। एहि भागमे बंबइक बेंकटेश्वर–समाचार, पटनाक 'पाटलिपुत्र', कलकत्ताक हिन्दी–वंगवासी, एम्हर मिथिला मिहिरो (मैथिली अंश) सहित चलि पड़ल छल। किन्तु विहारी हिन्दीक प्रति यू0 पी0क हिन्दीसेवी उपेक्षाक दृष्टि राखथि। तकर प्रतिक्रिया एम्हरो चलैत रहैक। ओहि समय हिन्दीकें समष्टिरूपें भाषा मात्र कहलो जाइक, भाषा–प्रभाकर, भाषा–भास्कर आदि नामें हिन्दी व्याकरण नामान्वितो होइक। परंच आब ताहि ठाम हिन्दी–कौमुदी, हिन्दी–व्याकरण नामान्वयन चलि पड़लैक। ई क्रम थोड़–बहुत आगहुँ चलैत रहलैक। तावत् मुख्यतया हिन्दीभाषी प्रभागमे प्रमुख युक्तप्रान्तक काशी–इलाहाबाद–लखनउ एकर पीठ बनल। बिहारमे पटना–आरा–भागलपुर– दरभंगा आदिमे प्रतिद्वन्द्वी प्रकाशक एवं तत्सहयोगी लेखककें ने दोयम मानबाक अहंकार उमड़ैत रहैक। विहारी हिन्दी कहि चलबाक प्रथो चलि गेलैक। तकर प्रतिरोधमे अनेक बेर दूहू प्रान्तक पत्र–पत्रिकोक भिडंत देखल जाइक। एकबेर एतहु तकर धमक उठलैक। पुस्तक–भंडारसँ किछु विवादास्पद साहित्यो चललैक। दत्तजी एकबेर एही क्रममे काशी–प्रयाग–लखनउक विचार–यात्रा कयलनि। बेनीपुरीजी प्रकाशित आक्षेपपर अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत कहलथिन, 'इन आलेखों में मेरा नाम लेनेवाले यह नहीं जानते कि बेनीपुरी ओट में चोट नहीं करता। उन्हें मेरी लेखकी परख नहीं, बेनीपुरी का तो कामा बोलता है, फुलस्टाप बोलता है!'

तहिना द्विजजी जखन अ0 भा0 साहित्य सम्मेलनमे पहुँचथि तँ अपन धराप्रवाही भाषणसँ तेना मुग्ध करथि जे विहारीक हिन्दीक आक्षेप क्षपित होमय लगलैक, शिवजीक लेखनी हिन्दीक माथक बिन्दी चमकाबय लागल। गयाक वियोगीजी, पटनाक रामदहिन मिश्रजी तथा राधिकारमण प्रसादजी, दरभंगाक भुवनेश्वर मिश्रजी तथा विमाताक लेखक अवधनारायणजी पाछाँ, दिनकरजी–मनोरंजनजी–आरसीप्रसाद, केसरीजी, नेपालीजीक रचनासँ धाक हिन्दी–क्षेत्रमे तेना जमैत गेल जे आक्षेपक निक्षेपण उठिए गेल।

एहि सभक चर्चा एही हेतु करय पड़ल जे हिन्दीक आवेगमे एम्हरो किछु उद्वेग ताहि तरहें उठैत रहलैक जे स्थानीय मैथिली भाषाक जागरण–उत्थानमे सेहो विवाद उठि जाइक। एहिसँ कखनो मागधी ओ भोजपुरी क्षेत्रोमे स्थानीय भाषाक चर्चो उठा देलक तथा विशेषतः भागलपुरक दिशसँ मैथिलीक विरोध चला दैक। परंच मिथिलाक्षेत्रमे एहिपर विरोध होईंत रहलैक। से कखनो एखनो अंगिका–बज्जिका

नामे चलैत रहैछ।

एहि दिशामे सामंजस्यक निर्वाह पुस्तकभंडार द्वारा शरणजीक उद्यमे होइत रहल, व्यावसायिके पृष्ठभूमिपर सही। विद्यापतिक नामपर प्रेस, पदावली, मिथिलाक्षरांकन समितिक स्थापना आदि एकर साक्ष्य अछि। एही सामंजस्यक उपक्रमे मिथिलामिहिरोक हिन्दी–मैथिली द्विभाषी प्रयोग उदाहरणीय कहल जा सकैछ।

1935–36मे मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनक कार्यवाहीमे एकर किछु ध्वनि–अंकितो अछि। कखनो रेडियोक द्वारपर प्रदर्शनो एहू बीच दृष्टिगत भऽ सकैछ। छिटफुट सामयिक पत्रिकोमे चर्चित होइत रहैछ। किछु दिनक बादे चारिम दशकक अन्तमे पुस्तक भंडार क्रमशः पटनामे परिवर्तित होमय लागल, क्रमशः पाँचम दशकमे पूर्णतः स्थानान्तरित भऽ गेल। शरणजी अबैत–जाइत रहलाह। अपन मैथिली रामचरित–मानसक संशोधनक प्रसंग हमरहु सेवा लेल करथि। हुनक समक्ष पढ़िकय कोनो संशोधनक सुझाव देबय पड़य। हुनक हिदाइत छल जे नामपदमे कोनो फेरबदल नहि। ओ मन्त्रवत् यथावत् रहय। रोज हुनक मोटर आबय, लऽ जाय–पहुँचाबय। इहो हमरा स्मरण अछि जे कोनो पारिश्रमिक नहि चाहलापर ओ नव मकान जे बनबै छलहुँ ताहिमे बिजली लगयबाक प्रबन्ध ओ बलात् अपन द्रव्यसँ करा देलनि।

विगत–वर्त्तमान

दरभंगाक रहन–सहन पारिवारिक भीड़–भारसँ भरल रहने, कखनहु केओ क्लेशितो होथि तँ ताहि लेल मेडिकल–नगर कहबितहुँ डाक्टरी चिकित्साक फेरमे ततेक नहि पड़ी, वैद्य पिताक समाङ रहने मामूली औपचारिक दवाइसँ काज चलबैत चली। कोनहु प्रसूतोकें प्रसव–वेदनासँ घबराय तुरंत एखनुक प्रक्रिया चीर–फाड़सँ दूरे रही। एतय अरविन्द–अनन्त–जयन्ती–प्रदीप–जयदीप–आशा आदिक जन्म भेलैक। व्यस्त–शिकस्त घरे–आङनमे, मन नहि अछि, ककरो अस्पताल जयबाक जरूरी पड़ल हो। सभ नेनाकें आङनेमे तेल–कूड़, रौदमे सुताय मालिस करैत·हमर पत्नी पोसैत रहलीह। आँजन–काजर आँखिमे लगबैत, काजर बिन्दुक ठोप करैत जँतैत–पीचैत पोसैत चलथि।

आबक स्थितिसँ तुलना करैत किछु कही तँ बेढंगे मानल जायत। एकाध उदाहरणो कहि चली। एम्हर जाहि नेनाकें जन्म भेलैक अछि, सभ अस्पतालिये। सप्ताहक सप्ताह ओतय ओगड़ि दौड़–धूप करैत, खर्च–वर्चक ठेकान नहि। अन्ततः कोनो दिव्यता–नव्यता नहि। उदाहरणार्थ बीचमे छोटका दौहित्र अनन्तकुमार, जे एखन एक स्थानीय पब्लिक स्कूलमे चतुर्थ श्रेणीक कर्मचारीमे काज करैत छथि, दू–बेर अपन सन्तानेक जन्म–प्रकरणमे चीर–फाड़ करबैत आठ–दस हजारक फेरमे पड़ल छथि। हमरा बुझने एहू प्राकृतिक प्रक्रियामे वर्तमानक देखादेखी प्रक्रिया एतेक

बढ़ि गेल छैक। सर्वसाधारण तंग भऽ रहल अछि। विशेष संकट देखने इहो सभ चलौक, परंच देखादेखी एना भेने पारिवारिक स्थितिपर आघाते पड़ैत छैक।

पहिने वैद्य–कविराज वा हकीम सभ थोड़ पूजीमे काज चलबथि। आब तँ मेडिकल जाँच–जूँचमे साधारणो सुख–दुखमे लोक अँाट भऽ जाइछ। सम्पन्न लोकक देखादेखी विपन्नो लोक पिसाइत चलैछ। मेडिकल हेल्प सरकार द्वारा हो, समाजसेवी संस्था द्वारा हो, सुलभ सस्त बनायब वर्त्तमान स्थितिमे प्रयोजनीय कल्प बुझल जाइछ।

ई तँ स्वास्थ लेल 'आरोग्यं मूलमुत्तमं'मे कदाचित् क्षम्यो मानल जा सकैछ। किन्तु परिधानक प्रक्रिया तँ औरो देखादेखी बढले जाइछ। विदेशीक नकल तँ पहिने बड़े अमीर–उमराब धरि सीमित छलैक, आब सर्वसाधारण जनतोमे पसरि–चतरि रहल अछि। धोती–तौनी सभटा गेल, आब पैन्ट–शर्ट, हाफ–फुल सर्वसाधारणमे बढ़िए–चढ़ि कऽ, पाग–टोपी–कैपक स्थान लोलीदार रंग–बिरंगी फुनगीदार माथपर सबार अछि। शरणार्थीक देखादेखी पहिने किछु सलवार चलल, आब तँ मैक्सी आदिक घर–घर छूटि अछि। बुझि पड़ैछ, विदेशक रंग–ढंगपर, पार्टी–क्लबक नकलपर घर–आङनक अपन वसन–भूषण दूषण मानल जा रहल अछि।

'सींथ सोझ, कोंचा कुटिल, पैघ आँखि, मुह पानि।
लुरिगरि गितगाइन सहज लिअ तिरहुत तिय जानि।'

तिरहुतिक स्त्रीगण अपन परिचय निश्चय गमा बैसतीह। युवक वर्ग तँ तकर शिकारे छथि, रंग–बिरंगी चेन्ह–चाक तस्वीरी अंग–वस्त्रमे फिल्मी तर्जक पोशाके चलि पड़ल अछि, पसरि रहल अछि। आब तँ धोती पहिरबो बिसरि रहल छथि। जखन विवाहदानक अवसरपर धोती पहिरबाक क्रममे हुनक स्थिति दयनीय नहि उपहसनीय भऽ जाइछ। कहुना लपेटि–सपेटि काज चलबै छथि।

एहि विवरणक ई आशय नहि जे पहिलुके चपकन–मिर्जइ–डोपटा चलैत रहय। परिवर्त्तन स्वाभाविक थिकैक, समय–सुविधाकें देखैत, स्थिति–परिस्थितिक अनुसार नवो पोशाक पहिरल जाय। यदि साइबेरियाक ठंढकमे पहुँची तँ ओतय धोती फहरबैत, ठिहरैत नहि चली। पेंट–पायजामा पहिरू, ओवरकोट पहिरू। परंच देशक वेश–भूषामे यदि गाम–घरमे ऋतुक अनुकूल कने परिवर्त्तित अंगवस्त्र धारण करी तँ ताहिमे कोन हर्ज!

वेश–भूषाक गप चलल अछि तँ कने उल्लासक गप्पो कही। पहिने जेना सड़क चलैत स्त्री–पुरुषकें तंग–भटरंग धरिया–ठेहुनियाँ, गुदड़ी–चेथड़ीमे चलैत देखी ताहिमे आब बहुत फेर–बदल भेलैक अछि। जन–मजदूर परिवारोक लोक रंग–टीपमे सजल–धजल चलैत भेटैत छथि। स्थितिक अनुकूलताक दृश्य थिक, उत्कर्ष–प्रकर्षक बोधक थिक। कहबाक आशय एतबे जे नीक रूपक ऋतुक अनुकूल पोशाक चलओ, अवश्य चलओ; केवल अपन देश–समाजक अनुकूल, ऋतु–समयक अनुरूप स्वच्छ–फरिच्छ वस्त्र चलबेक चाही। केवल प्रदर्शनार्थ नकल–नवल नहि।

वस्त्रक महिमा पहिनो कहल गेल छैक –

"किं वाससा नैव विचारणीयं वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः
पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ तनूजां चर्माम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः।"

पीताम्बर विष्णुकें लक्ष्मी, आ चर्माम्बरी महादेवकें विष देनिहार सागर पुरुषे वस्त्रक उपयोगिताक प्रमाण छथि।

व्यक्ति, परिवार, कुटुम्ब तकर बाद समाजक जे सिलसिला जीवनमे चलैछ, ताहिमे व्यक्ति परिवारक चर्चा बहुधा अबैत रहल अछि, कुटुम्बहुक प्रसंग किछु कहि चली।

ग्रामीण व्यक्ति जखन नगरक वासी बनैछ, तखन कुटुम्बक आवागमनक अनुभवो करहि पड़ैछ। सुतरां तत्काल गाममे हाइ स्कूल–कालेजक ताहि समय अभाव रहने ओहि प्रसंगें किछु जुटान होइतहि छैक। कने चिन्हरगर रहने एहि बीच जे कोनो परिवारमे कन्यादान आदि होइक हमरा ओहि घटकैतीमे जाय पड़य, तें कुटुम्ब लोकनिक बीच एतय कर्यार्थी होयब स्वाभाविके। एकरे परिणाम स्वरूप 45 इ0क बाद गाम–परिवारमे कन्यादानक सिलसिलें बहेड़ी, नयानगर, थलवारक भतिजजमाय पढ़बा लेल स्वाभवतः पहुँचय लगलाह, परंच डेरा तेहन जन–संकुल छल तथा पाहुनपरक उपयुक्त साधन– सम्पन्न नहि छला, तें स्वभावतः ओ लोकनि किछु दिन कष्टं–शिष्टं समय बिताय आन व्यवस्था करैत रहलाह।

हमर जेठ जमाय नाजिरपुरक श्री जयविन्द चौधरीक पित्तीक डेरा छलनि। ओतहि स्कूली शिक्षा प्राप्त कयलनि, कालेजोमे प्रविष्ट भेलाह, पाछाँ ऑडिट डिपार्टमेंट शिक्षालेल कलकत्तो गेलाह। जा धरि दरभंगा रहथि प्रत्यह भेंट करबालेल सन्ध्या समय दिवानी तकियासँ कटहलबाड़ी पहुँचथि, हमहु नियत रूपें पहुँचि जाइ। सिन्धी दोकान पर चाह–जलपान कऽ फिरैत जाइ।

छोट जमाय चि0 कर्मकान्त ठाकुरजी सेहो सी0 एम0 साइन्स विभागमे नाम लिखौलनि। परंच अपन कालेज समीपे डेरा लेलनि, भेंट–घाँट होइत रहय। परंच डेराक धमगज्जरिमे कहियो नहि देखल जाथि। ओना समधिक आकर्षण इहो छलनि जे प्रोफेसरक कन्यासँ विवाह भेने पढ़बा–लिखबामे सुविधा सहजे भऽ सकतनि। परंच जमाय एहन स्वाभिमानी प्रकृतिक छलाह जे एहि सब प्रसंग कहिओ कोनो प्रकारक सुविधा नहि चाहलनि। किछु दिन ओ बी0 एस–सी0 मधुबनीसँ कयलनि। ओहि वर्ष ओतय तीनिए गोटे बी0 एस–सी0 कयने रहथि ताहिमे ई टॉप कैलनि। हिनका ओतय सर्विसोक ऑफर भेलनि। हमरासँ विचार पुछलनि तँ हम कहलिअनि– अहाँ सर्विसो करब तँ घरेसँ किछु मङबय पड़त। कारबार करबाक प्रवृत्ति रहने सैह ठीक रहत। सेकेंड मैनकें ओतय नोकरी लागय दिऔक। सैह कयलनि एवं एतय हिनक कारबार बढ़ैत गेल। अनेक नोकर–चाकर राखि अपन क्रिया–कलाप बढ़बैत गेलाह। परिवारमे प्रमुख परिगणित भेलाह। किन्तु हमरा मनमे सन्तोषक संग कचोटो होइत रहल जे हमरासँ हिनका कोनो प्रकारक सुविधा–सहयोग नहि भेटि सकलनि।

एकर विपरीत किछु दूरस्थ कुटुम्ब डेरापर जमल रहथि, नोकरिओ करथि। पाछाँ कलकत्तोक नोकरी कयलनि। एक व्यक्ति बादमे कहिओ भेंट भेलापर गप–सप करैत पूछि बैसलाह जे एखनो डेरापर ओहिना पनिगर दालि बनैत छैक कि किछु सुधारो भेलैक अछि? हम मुसकिआइत उत्तर देलिअनि जे ओही पनिगर तीमन–तरकारीपर अहाँ सन व्यक्ति पढ़ि–लिखि आब आफिसर बनि सकलहुँ अछि ने? ओ मुसकिआइत कहलनि, हँ से तँ सत्ते। एहि विषयमे कत्ते ने बकि गेलहुँ, आब मौने ठीक।

पंचकोशी

आइ भाषा–विज्ञान अध्ययन–ज्ञानमे एक प्रधान विषय मानल जाइछ। परंच देशमे विशेषतः मिथिला प्रदेशमे लोकवाद प्रसिद्ध अछि जे बोलचाल, चालिचलन पाँच कोसपर बदलैत रहैछ। एतय स्थान–स्थानमे पंचकोशी ग्राम–परिसर बहुधा बहुत्र प्रचलित अछि। सौराठ–रहिका शतलखाक पंचकोशी, रांटी–मङरौनी–पिलखवार सहिसव–पाही, तरौनी–सकरी, झंझारपुर–मोहना–कन्हौली, बहेड़ी–बोरज, करिअन–बलहा बल्लीपुर, महिसी भौआर, सहरसा, मधेपुरा जाँता–काँटा एवं आनोआन मंडल मे थोड़–बहुत मुहें पंचकोशी शब्द सुनैत चलब।

यदि शब्द स्वर–ध्वनि वाग्धारा उच्चारण विधिकें सूक्ष्मतासँ अकानल जाय तँ पाँच–पाँच कोसक अन्तरहुमे ध्वनि ओ किछु शब्दावलीमे किछु ने किछु अन्तर बुझि पड़ते। भाषा–साहित्य एक रहनहु बोलीमे ध्वनिमे सूक्ष्मतयापि किछु अंतर भेटबे करैछ।

एहि अंतरकें लऽकऽ देश–भदेश, उतरबरिया दछिनाह, पछिमा–पूबा आदि वास–बसवासक अभिधान चलि पड़ल अछि। परंच एहि भेद–भादक कारण भाषाक विभिन्नताक नामकरण, तिरहुतिया, बज्जिका, अंगिका आदि स्पृहणीय नहि मानल जाय।

हँ, स्तरीय भाषा कोनो ने कोनो केन्द्र बिन्दुक मान्य होइतहि रहलैक अछि, वर्धमानक भाषा बंगलामे स्टेन्डर्ड कहल गेल, दिल्ली–मेरठक भाषा हिन्दीक बिन्दी मान्य भेल। आरा–छपराक भोजपुरी स्तरीय जानल गेल। नालंदा–विहारक मगही स्तरीयता गलहक। अतएक स्वर–ध्वनिक पंचकोशी भेद–भादकें यदि निखारल जाय, जेना एखन रेडियो आदिसँ लोकगीतक नामकरणमे चलि पड़ल अछि तँ साहित्यदर्पणी विश्वनाथक 'अष्टादश भाषा वार विलासिनी'क अठारह भाषा भेदक स्थानमे बकौल अडवाणीजीक रेडियोमे एकसय अस्सी भाषाक वाग्–विलाससँ ग्रियर्सन आदि भाषा–विज्ञानीक भाषा उपभाषाक अध्ययन–क्षेत्र आजुक जनसंख्या विस्फोट जकाँ भाषा विस्फोट भऽ चलत।

छूत–अछूतक भूत

छुआछूत लऽकऽ मानव–समाजमे खास कऽ भारतमे जे एतेक भेदभाव बढ़लैक। तकर रोध–प्रतिरोध जतेक भारतमे देखल गेल ततेक आन देशमे नहि। तकर जे कारण रहल होइक, आचार–विचार, खान–पान, स्वच्छता–मलिनताक वेश–परिवेश, किन्तु ई एतय पराकाष्ठापर पहुँचि गेलैक। छायासँ छूति, रास्ताधरिकें बदलि देलकैक। द्विज– अन्त्यजक भेदभाव तेना दक्षिणसँ उत्तर धरि पसरि गेलैक जकर प्रतिक्रिया स्वाभाविक छलैक। सन्त–परंपरा एहिपर किछु ध्यान देलक, 'छूत–अछूत नहीं होय दोय। हरिके भजे सो हरि के होय' कहि उठल। 'नरतनसन नहि कवनिउदेही' नर तनधारी मात्रकें उत्तम कहल गेल। पश्चात् सुधारक दयानन्द स्वामी आर्यसमाजमे अछूत कें छूत बुझबापर जोर देलनि, रामकृष्ण–विवेकानन्दक परम्परा सेहो एहि समस्याक समाधान कय चलल। अंबेडकरजी प्रभृति एहि समस्याकेँ जखन नैतिक रूप दियऽ लगलाह, महात्मागाँधी पहिनहिसँ एकर बीड़ा उठौलनि, हरिजन संज्ञा दय ओकर उद्धारक आन्दोलन करैत रहलाह। संघ आदि सांस्कृतिक संस्था सेहो एकर परिहांर करैत गेल। राजनीतिक दल सभक जोरसँ ई एक राजनीतिक मोर्चाक रूप धारण कयलक।

मिथिलामे दक्षिण जकाँ तँ नहि परंच, पानि चलब, नहि चलब, ई चतुर्थवर्णीय भेद चालू छलैक। अन्त्यज स्पृष्ट जलपानक प्रायश्चित्ती व्यवस्था हमरा लोकनिक समयहुमे चलैत छलैक। गोदानपूर्वक गंगास्नान धरि हमरोलोकनिक समयमे देखल जाइक।

पहिने स्पृश्यता–अस्पृश्यताक जे आधार रहल होइक परंच बादमे एकर व्यवहार प्रतीकारक योग्य भऽ गेलैक। आब तँ क्रमशः कानून सहजहिं, व्यावहारिक क्रमहुमे कमे कदाचिते देखल जाइछ। पूजा–पाठक समय भोज आदिक समय कने–मने चलैत रहौक, परंच हाट–बाजारमे जन समारोहमे चाह–पानसँ लय होटल जीवनमे कहल जाय तँ आब टोटल रूपें छूआ–छूति उठि गेल अछि।

ओना इहो मानल जाइछ जे जाहिआ एकर व्यवहार चलल होइक, ओकर आधार स्वास्थ्य–स्वच्छता, आ गंदगी वाला पेशाक कारणो रहल होइक। परंच ओकर जे रूप व्यवहृत होअय लगलैक तकर परिहार अनिवार्य छलैक सैह भेवो केलैक। परंच आब जखन एकरा सामाजिक रीतिसँ हटाय राजनीतिक नीति दिअय जाय लगलैक अछि, तखन तकरो प्रतिक्रिया स्वाभाविके छैक।

समक्ष–परोक्ष

प्रतिद्वन्द्वी शब्दक प्रयोग भाषा–सभमे खूब चलैछ। दिन–राति, शत्रु–मित्र, दोस्त–दुश्मन, मुद्दइ–मुद्दालह, सन्धि–विग्रह, राजा–रंक, डे–नाइट, सुबह–शाम आदि

विभेदात्मक तहिना किछु अभेदात्मको जेना घर–आङन, यार–दोस्त, रिश्ता–नाता, ईस्ट–वेस्ट, आदि–आदि।

समक्ष–परोक्ष सेहो प्रयोग करिते रहैत छी। तकर अन्तर जीवनमे कतेक पड़ैत छैक, तकरो दु–एक भेदात्मक उदाहरण कहि चली।

दरभंगा जीवनमे किछु प्रसंगक संगति–असंगतिक अनुभवो होइत रहल। एतय अयलहुँ तँ साहित्यिके प्रसंगमे रहलहुँ ताही रंगमे। परंच कंचोट अछि जे जाहि कथा– उपन्यासकें हृदयग्राही बुझल ताहिमे 'विमाता' नामक उपन्यास अनन्य रहल। बिहारमे उपन्यासक जखन द्विवेदी युगमे चर्चा चलैक तखन 'विमाता' गणनीय हो। तकर लेखक दरभंगाहिमे। शुभंकरपुर महल्लाक एक कोनमे बाबू अवधनारायण लालदास। 'मिथिलांक' बहार करितहु, दूर–दूरक नामी–ग्रामी लोकसँ लेख याचित कयलहुँ, प्राप्तो कयलहुँ, परंच ई स्फूर्ति नहि भेल जे अवधबाबूसँ किछु लिखबाबी। पुस्तक–भंडारेसँ 'विमाता' छपल छल, भंडारसँ सम्बद्धो रहलहुँ। परंच एम्हर ध्यान ने गेल, ने देऔल गेल। हिनकासँ घनिष्ठता बढ़ल परंच प्रसंगांतरमे। समस्तीपुर कोर्ट गेल करी, पत्रक हेतु इश्तहार संग्रहमे। ओतय ई सिरिस्तेदार छलाह। नाम सुनि ६ ाक दऽ परोक्ष व्यक्तित्व समक्ष भेलाह। अबेर भेने एक रात्रि हिनक डेरापर विश्रामो कयलहुँ, ई पलंग हमरा देलनि, अपने कम्बल ओछाय नीचाँ सुतलाह, आग्रह गृहीत भेलापर कहलनि, हम भूमिशयी छी। आब लिखब–पढ़बो छूटि गेल अछि। समक्ष–परोक्षक ई एक उदाहरण भेलाह।

दरभंगाक आवासी जीवनो किछु एहने रहल जे समक्ष रहथि, प्रत्यक्ष जे होथि तनिका तँ अपनबैत रही परंच जे परोक्ष समीपीओ रहथि तँ ओहर ध्यान देबाक कोनो संभावने नहि। एक निजी घटना कहि चली। हमर पत्नी गामे छली। हमर दोसरि कन्या मैथिलीक जन्म ओतहि भेलनि। ओतहु पल्लड़ परिवार व्यक्ति–व्यक्तिपर ततेक ध्यान संभव नहि। हुनक संवाद पहुँचल, पथ–पानि लेल दूध जरूरी, दस–पांच टाका जे हो चाही। कहैत संकोच होइछ जे सेहो परोक्ष रहने पठायब संभव नहि भेल। जकर उपालंभ बाद धरि ओ दैत रहलीह।

कुटुम्ब–मित्र कने दूरस्थोक यदि निकट समक्ष आबथि तँ तनिका लेल किछु कयनहि, परोक्ष रहथि तें पुछारि करबाक अवसर–प्रसर नहि। एतबेसँ प्रत्यक्ष–परोक्षक अन्तर समक्ष हो।

व्यवहारमे सुधारक प्रयोजन

आब तँ एकर चर्चे टा उठा सकैत छी, ने पर्चा लिखि सकैत छी ने व्यावहारिक खर्चामे संकोच रोचक कोनो उपचार, केवल विचार उठबैत चली।

समय जेना–जेना बीतल जा रहल छैक, महगी बढ़ि रहल छैक, सामान उपादानक मोल बढ़ि रहल छैक। आर्थिक चिन्ताग्रस्त समस्त समाजमे काज–धंधा

व्यस्तता बढ़ि रहल छैक, व्यावहारिक क्षेत्रमे किछु समयानुरोधी सुधार चाही। पहिलुको उदाहरण अछि, प्राचीन कालमे श्राद्धादि मास–मास चलैत वर्षी धरि, सांवरिक एकोदिष्ट धरि, वर्षावधिमे सम्पन्न कयल जाइक। मध्यकालमे मुस्लिम आक्रमणक बाद प्रथम श्राद्ध एकादशाहक बादे द्वादशाहक विधि–विधान स्वीकृत कऽ चौदहो मासिक एके दिनमे सम्पन्न करयबाक व्यवहार पंडित–समाजक विचारानुसार निर्धारित भेल जे एखनहु चालू अछि। मिथिलामे धीरेश्वर–वीरेश्वर लोकनि तदनुसार पद्धति बनाय समयोचित व्यवस्था धरौलनि।

एखनहु किछु तेहने स्थिति उपस्थित अछि। महगी ओ निर्वाहार्थ नोकरी–चाकरीक स्थिति जनवृद्धिक वातावरण तेना होइत रहल अछि तथा किछु सम्पन्नवर्गक देखादेखी किछु व्यवहार तेना पसरि रहल अछि जे सर्वसाधारण त्रस्त अछि। मुंडन सन साधारण प्रथमकचकर्वन विधि उपनयने जकाँ रूप ग्रहण कऽ रहल अछि। उपनयनक विधि ताही सबसँ कतहु तीर्थ–मन्दिरमे जाय कहुना कराय गाममे भोज–भातक प्रदर्शन चलि रहल अछि। विवाह–दानमे शास्त्रीय विधिसँ बढ़ि लौकिक व्यवहारक बहार देखल जाइछ। सम्पन्न तँ सम्हारि लैत छथि किन्तु विपन्नक दुःस्थिति बढ़ि रहल अछि।

मैथिलमहासभा सदृश–प्राचीन सामाजिक संस्थाक एवं समाजसुधारक व्यवस्थापक लोकनिक ध्यान एहि दिस आवश्यक जे ओ लोकनि मान्य विद्वानकें विचारवान मीमांसक, कर्मकाण्डीक सहयोगसँ पण्डित–मण्डलीसँ एहि प्रकारक व्यवहार सुधार करबथि जे लोक आचार–विचारक रक्षापूर्वक अपन स्थितिक अनुकूल कर्मकाण्ड कऽ सकथि।

एहि प्रसंग किछु और अनुभव कहि चली। पंडित नहि रहितहुँ कतहु केओ गुणी–पंडितमे हमरो नोति दैत छथि। एकबेर कोनहु श्राद्ध प्रसंग हम श्राद्धस्थल गेल छलहुँ। ओतय शय्यादानक उपकरणमे वर्त्तन–भाजनक दान चलि रहल छलैक। पिकदानक वाक्य गढ़ल गेलैक, पहिने मुस्लिम कालमे महफिलमे पनखौक अमीरक हेतु पिकदानक प्रचलन भेलैक। देखादेखी दानोप्रकरणमे प्रचलित भेल। संस्कृतमे एकर कोनो संज्ञा नहि। तखन शब्द गढ़ल गेल, 'पतत्स्रवपात्र' अर्थात् मुहसँ लाल थूककें वहन कयनिहार, एहन शब्द गढ़ि–मढ़ि तखन दान प्रकरणकें बढ़ायब–चढ़ायब कोन कर्मकाण्डोद्धार भेल? एहि सब विषयपर समाजसेवी विद्वानक ध्यान समाजसंस्थाक कर्तव्य। स्वर्गीय प० त्रिलोकनाथ मिश्रजी एहि विचारकें पसिन्द कयने छलाह। वर्त्तमानमे प० शोभाकान्त जयदेवजी, अमरजी प्रभृति एहि विचारक समर्थक छथि। तनिका लोकनिसँ सहयोग लय समाज–व्यवस्थापक लोकनि नव व्यवस्थापक बनथि ई काम्य अछि।

बन्धुता ओ कौटुम्बिकता

बन्धुताक बलपर कौटुम्बिकता तथा आजुक दृष्टिमे पहिलुक वैवाहिकताक

अन्तरक अनुभव जे भऽ चुकल अछि, तकर स्मरणसँ कृतार्थ भऽ उठैत छी। हमर दौहित्री आशा कुमारी दरभंगहिमे रहि पोसलि गेलि, शिक्षा–दीक्षा घरहि पर, कोनो स्कूली शिक्षा नहि। विवाहक फिकिर दबने रहैत छल। एक अपेक्षित महानुभाव हमरा कहलनि जे किरणजीक छोट बालक प्रान्तीय राजकीय सेवामे नियुक्त भऽ चुकल छथि, अहाँ अपन मित्र किरणजीसँ कने हमर कन्यादानक प्रसंग उठाउ। हम सुनलाक बाद सोचलहुँ जे हमरो तँ ई प्रसंग अछि तखन ताही प्रसंगमे किएक ने प्रयास चलय। एही गुनिधुनिमे प्रिय अन्तेवासी श्री जटिलजीसँ चर्चा चलाओल। ओ लगले हुनका ओतय पहुँचलाह। प्रसंग सुनि कहलथिन, हुनका जखन इच्छा छनि तखन हम अपने अबैत छी, ओ तहिना स्वयं पहुँचि गेलाह। प्रस्तावित गप सुनितहिं स्वयं उल्लासपूर्वक स्वीकृति देलनि। तदनुसार निर्धारित तिथिमे कोनो प्रकारक लेन–देनक व्यवस्था बिनु संक्षेपमे वर–बरियातीक संग रातिमे विवाह सम्पन्न कराय प्रातःकाले बिनु जलपाने भलमानुसक प्रक्रियासँ प्रस्थान कऽ कृतार्थ कयलनि। अपन आदर्श उदाहरण निदर्शित कयलनि। ओकर प्रभाव हमरोपर जमल रहल। हमहु परिवारमे हमर अभिभावकत्वमे जे कोनो सम्बन्ध भेल गेलैक, ताहिमे कोनो आदान–प्रदानक प्रश्न नहि भेलैक। आब क्रमहि समय बदलि गेल छैक। एहि विषयमे अधिक कहबाक नहि रहल।

अविस्मरणीय

हमर सहाध्यायी मित्र राजेश्वर ठाकुर साहित्याचार्य एक अपूर्व शान्त–दान्त प्रकृतिक व्यक्ति छलाह। वैष्णव आचारी, मत्स्य–मांससँ ततेक परहेज रखनिहार जे ओहि वर्तनहुमे नहि खयथि–पिबथि। लिखवा–पढ़वामे त्रिभाषाऽभिज्ञ एवं सर्वाधिक हुनक विशेषता छल जे ओ परार्ध जीवनमे टाका पाइ कोनो मुद्राक स्पर्शो ने करथि। अतएव हुनका जखन रेलसँ वा बससँ कतहु जयबाक होन्हि तँ टिकट कटय लेल एक व्यक्तिकें तदर्थ संग पठबय पड़य। किछु दिन अपन सम्बद्ध ग्रामीण विद्यालयमे मधुपजीकें ओ नियुक्त करबौने रहथि। ओतहिसँ मधुपजी बहेड़ा–स्कूल अयलाह। एकबेर स्मरण अछि डेरापर एक गोष्ठीमे दोकानसँ पुष्कल संख्यामे पान मङौल गेलैक। कातमे तदनुरूपे चून लागल पान छलैक। आग्रहवश चूनेवाला पान ओ मुहमे धऽ लेलनि। फलतः मुह क्षत–विक्षत रक्त–रंजित भऽ गेलनि। ज्वराक्रान्त भऽ गेलाह। ओहि दिनसँ ओ पानो छोड़ि देलनि। स्वदेशक ओ निरन्तर सेवामे लागल रहथि।

एहि प्रसंग राजमे प्रतिष्ठित दुइ व्यक्ति सहसा साकार भऽ उठैत छथि। प० पुष्करनाथ रैना तथा गोपीनाथ पंडित। पूर्वजन ब्रहमाक पुस्तकधारी ध्यानक अनुसार एवं सरस्वतीक पुस्तकधारिणी प्रतिमाक अनुरूप ब्राह्मण मात्रकें यज्ञोपवीत जकाँ पुस्तक सतत हस्तगत रखबाक थिक। ओ सतत पुस्तकहस्त रहैत छलाह। गोपीनाथ पंडितजी तत्काल हिन्दी व्याख्यान हेतु नमूनाक व्यक्ति मान्य छलाह। मैथिली

भाषणमे राजपंडितजी, संस्कृतमे प0 त्रिलोकनाथ मिश्रजी, उर्दूमे मो0 अजीज नामी रहथि।

प्रियता–संग अप्रियतोक प्रसंग

राज–सेवाक प्रसंग सुनैत अयलहुँ प्राचीन परम्पराक श्लोक जे *'मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वर्तन्तुलः सेवाधर्मः परमगहनः'* तकरो अनुभव कदाचित होइत रहल। एकबेर स्मरण अछि, काशीक 'युवक' पत्रक संपादक वीरेन्द्र अरुणजी दरभंगामे राजपंडित जीसँ भेंट कयलाक बाद हमरहि ओतय आबि धमकलाह। सम्पादकक ओतय सम्पादक सहज बात छल। ओ किछु सम्पर्की विशेष, क्रमशः ओ कन्हैयाजीक ओतय हेमक्षेम बढ़ा लेलनि, यातायात चला लेलनि। ओझाजी अपन बालकक एमर बढ़ैत अभिरुचिक प्रति सन्दिहान भऽ अभिज्ञान लेलनि जे ई युवक टिकल कतय छथि। हमर नाम बुझि एकदिन अपन अंगीभूत फणिनाथबाबू द्वारा हमरा भेट करबाक संकेत दियौलनि। हम ओतय पहुँचलहुँ। ओ वीरेन्द्रजीक डेराक प्रसंग हमरासँ पूछि, ओतयसँ हटा देबाक निर्देश कयलनि। हम कहलिअनि, ओ सम्पादक, हमरो सम्पादक बुझि अतिथि रूपें किछु दिन सँ छथि। हुनका एतयसँ कोना हटय कहिअनि। हँ, हम आग्रह नहि करबनि। पाछाँ सुनल जे ओ रुक्ष–रुष्ट छथि। हुनकासँ हमरा सम्पर्को कम रहय, जयबो–अयबो नहि।

किछु दिन पंडौल आदिमे किसान आन्दोलन चलैक। समाजवादी नेता सूरजबाबू ओकर प्रधान, आनोआन समाजवादक आन्दोलनीसँ कदाच हमरो कतहु सम्पर्क हो, उचित विहित गप हो तकरो सूचना राजमे तत्काल डेभलपमेंट आफिसर राधाबाबूक देखरेखमे चलैक, तकर फिल्डवर्कर घुमैत–फिरैत हमरा कदाचित संग संगतिक खबरि देने, बुझि पड़य जे हम किछु बदरंग बुझल जाइत छी। किन्तु से–सब किछुए दिन धरि। शेष यथावत् चलैत रहल। पत्रकारक रूपमे ई सभ चलैत रहैत छैक से बुझल जाय लगलैक।

बीच–बीचमे बहुधा फर्माइशी अभिनन्दन एवं वर–वरियाती स्वागतगीत, पाछाँ आगत सम्बन्धी अभ्यागतक संवर्धना लिखैत रहबाक प्रसंग गप कहैत रहलहुँ अछि। आब अपन अकछायब एवं ओकरा फरिछायब सेहो कहि चली। प्रेस अपन रहने जे केओ किछु लिखबय आबथि से प्रत्युपकार बुझि एतहि छपबथि। तकर भान भेने हम अपन लिखित पत्रादिकें एतय छापब अस्वीकार कऽ दियनि ताहूपर झंझटि कम नहि भेल। एकबेर एहेन स्थिति उपस्थित भेल जे हमर हिस्सक छोड़ाइए देलक। एक व्यक्तिक सभा वा वर–वरियातक प्रसंग लिखब गछि नेने छलिअनि। बीचमे हमर पत्नीकें उदर–शूल तेहन बढ़ि गेलनि जे हुनका अस्पताल लऽ जाय पड़ल। आपरेशन कराय उदरस्थ पाथर बहार करबाक स्थिति छलनि। हुनक आपरेशन आरंभ, हम भगवानक नाम लैत प्रतीक्षारत। तावत तथाकथित महाशय जुमलाह, 'हमरा तँ जुलुम

भऽ गेल काल्हिए काज अछि, छपबय पड़त, भरोसे रहि गेलहुँ। हम विलाप–कलापपर की करब ?' ओहू स्थितिमे हुनके आनल कागज–पेन्शिलसँ खररि जान बचयलहुँ, ओ संकल्पित भेलहुँ जे आब ई धंधा छोड़ी। तकर निर्वाह करितहि रही तावत गोशालाक मान्य सचिव धर्मलालबाबू पूर्ववत् गोपाष्टमीक अवसरमे सब लिखबाक आग्रह कयलनि। हम हाथ जोड़ि माफी माङल जे आब हम कोनो लौकिक अभिनन्दन– वन्दन लिखबासँ परहेज कयने छी। ओ गुम पड़ि गेलाह, हम तदुत्तर औरो दृढ़ भऽ गेलहुँ। एहि प्रकारक झंझटिसँ मुक्ति लेल।

कालेज–जीवन

दरभंगाक प्रथम बीसीक बाद दोसर बीसी हमर कालेज–युनिवर्सिटीसँ सम्बद्ध भेल। तकरो चर्च आब उठबी।

मिथिला कालेजक स्थिति दिनानुदिन प्रशस्त होइत गेलैक। प्रायः प्रान्तमे सर्वाधिक छात्र संख्यावाला कालेज रूपमे एकर प्रसिद्धि–प्रतिष्ठा बढ़ैत रहलैक। कला, विज्ञान, वाणिज्य, कानून आदि समस्त लोकप्रिय विद्या धाराकें प्रशस्त करबामे प्रान्तमे एकर प्रमुखता छलैक। मैथिलीक पठन–पाठनक हेतु एकर केन्द्रीयता स्वाभाविके। एकर प्रबन्ध–समितिमे बहुतो परिचित–सुविदित व्यक्तित्व।

एहीक्रममे एकदिन प्रायः स्वतन्त्रता वा गणतन्त्र दिवसक झण्डोत्तोलन लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी परिसरमे कुमर कल्याण लालजीक हाथें सम्पन्न भेल। आमन्त्रण पाबि हमहु ओतय गेलहुँ, आदेश भेलापर किछु प्रासंगिक विचारो व्यक्त करबाक अवसर भेल। सभान्तमे कुमरजी हमरा कहि बैसलाह जे अहाँ कालेजमे आबि जाउ। मैनेजिंग कमीटीक प्रेसिडेन्टक एहि आह्वानपर हमर मन ऊर्ध्वमुख भेल। कहलिअनि– 'तकर उपाधि–क्षमता हमरामे नहि।' ओ कहलनि, मैथिलीमे तकर कोनो व्यासंग नहि रहतैक। अहाँ एप्लाइ करू। हम ओतयसँ फिरि अपन सुहृद्‌वर्गमे चर्चा कयल।

ओहि समय इंजीनियर अनिरुद्ध मिश्रजीक मिर्जापुर–लालबाग–राजकुमारगंजक मोड़पर डेरा छल। प्रो0 सुरेन्द्रनाथ झाजी, प्रो0 जयदेवबाबू, डा0 भवनाथबाबू तथा हरिबाबूक चिकित्सा–मन्त्री रहबाक प्रसंगें अन्यान्यो मेडिकल कालेजक डाक्टर लोकनिक आबाजाही चलैत छल। प्रिय सनामा मित्र प्रो0 सुरेन्द्रनाथ झा सेहो बहुधा ओतय आबथि। जखन हम एकर चर्चा कयल तँ ओ–लोकनि विशेष आग्रही देखल गेलाह आ' क्रिया–प्रक्रिया चलय लागल। जयदेवबाबू जे पटना कालेजमे नियुक्तिक कारण एतयसँ स्थान रिक्त कऽ जाइत छलाह, तनिक तँ आग्रह–अनुग्रह कहले ने जाय।

दरखास्त तैआर भेल, उपाधि–तावत् ककरहु प्राप्ये नहि। कलकत्ता युनिवर्सिटीसँ जयदेवबाबूकें प्राप्त छलनि। एकाध गोटे केओ औरो रहल होथि। तखन तँ निरुपाधिके व्यक्ति साहित्यक वृहत्–लेखनक बलपर राखल जा सकैत छथि। तदर्थे

किछु रचना प्रकाशनीय। तदर्थो ओही बीच तीन टा ग्रन्थ– अर्चना–प्रतिपदा–साओन भादव' प्रकाशित भेल छलैक, तकर समीक्षा प्रान्तक दैनिक 'इंडियन नेशन'मे प्रकाशित भेलैक। किछु प्रशंसापत्र अमरनाथबाबू तथा गवर्नर अणे, म0 म0 उमेश मिश्र अभिशंसात्मक पत्रक अतिरिक्त संस्कृत परीक्षाक उपाधि पत्र छल।

प्रसंग विस्तारकें संक्षेपहि व्यक्त करी। कालेज प्रबन्ध समितिमे अध्यक्ष कुमरजीक अनुकूलता चर्चिते अछि। एडवोकेट प्रियनाथ बनर्जी, नेहराक ओकील शैलेन्द्रबाबूक पिता हरीन्द्र झाजी पूर्ण सहयोगी, मिश्रजीपर सभक समान विश्वास, पैरवी कनवासिंग ओम्हर ईशनाथ बाबूक दिससँ पूर्व चीफ जस्टिस लक्ष्मीकान्त बाबूक ओतय पहुँचल जे एकधा स्वयं अध्यक्ष कुमरजीक ओतय पहुँचि पूर्व निर्धारणकें निवारण कऽ, एडवोकेट नागेश्वर बाबूक सहयोगें निर्णय ईशनाथ बाबूक पक्षमे घोषित भेल। ओ प्रथम मैथिली विभागक भारग्रहण कयलनि। एहीक्रममे मधुबनी रामकृष्ण कालेजमे मैथिली अध्यापन स्वीकृत भेल। नियुक्तिक प्रसंग बाबू क्षेमधारी सिंह 'श्रीकर' साहेब दरभंगा अयलाह। हमरो भावी उमेदवार बुझि आत्मज बुद्धिधारीक पक्षमे आग्रह कऽ गेलाह। हमरो दरभंगा छोड़बाक नहि, केवल 'किरण'जीक कारणे कने व्याघात उठलैक, परंच अन्ततः बुद्धिधारी सिंहजीक नियुक्ति भेलनि। छात्र संख्याक कारणे तथा प्रतिष्ठा वर्ग बढ़ने जखन दोसर प्राध्यापकक पुनः प्रयोजनीयता भेलैक तँ पूर्वप्रक्रमे हमरा नियुक्त कयल गेल। एम्हर पटना युनिवर्सिटी द्वारा एम0 ए0 वर्ग संचालित भेने, तदर्थ प्रत्याशी भेने किछु अपेक्षित–अनपेक्षित बाधा अवश्य भेल। किन्तु प्रबन्ध–समितिमे अन्तर्वीक्षा–पुरस्सर नियुक्त भेलहुँ, जे बादमे युनिवर्सिटी द्वारा स्वीकृतिक प्रसंग बहुत व्याघातो पहुँचल। परंच प0 हरिनाथ मिश्रजीक प्रचुर सहयोगें एवं अनेक सिनेटरक अनुकूल बहसें प्रो0 सुरेन्द्रबाबू लोकनि सुहृदजनक परामर्शे तथा प्रिन्सपल लक्ष्मीकान्त मिश्रजीक अनुयोगें विघ्न–बाधा दूर भेल तथा निबोध 69 धरि कालेजमे अध्यापन करैत रहलहुँ।

किछु तकरहु अनुभव। स्कूल–कालेजमे हम कहिओ पढ़ने नहि, तकर प्रयोग चलल। एम्हर मिथिलामिहिरक योगसँ पूर्णतः असंपृक्तो नहि। डेरोक रहन–सहन सेहो यथावते, साइकिल दौड़बैत रहलहुँ। तें शिक्षण–प्रशिक्षणमे यथोचित योग देबामे पूर्ण सफलता नहि भेटय। पाठ्यपुस्तक क्लासेमे उनटयबाक अवसर, तें अपनो मन नहि भरय। कर्त्तव्यक निर्वाह जेना–तेना कऽ पाबी। एम्हर किछु बादमे प्रिन्सपल लक्ष्मीबाबू लोकनि तात्कालिक युवक सदस्य शंकर मिश्रजी, गोपालजीबाबू लोकनिक सहयोग एवं प0 गिरीन्द्रमोहन मिश्रजी लोकनिक अनुशंसापर महिला–कालेजक स्थापना भेलैक। ओहूमे हमरा पढ़यबाक भार पड़ल। किछु आयक उपायो प्रायः 60 रु0 बढ़ल। परंच व्यस्तता अधिके। तें समय–संकोचें शिक्षण–अध्यापन निर्वाहिते करैत रहलहुँ। की पढ़ा चुकलहुँ, आब की पढ़यबाक अछि, तकर जिज्ञासा क्लासेमे चलय। तें अध्यापन प्रक्रिया मन मोताबिक नहि भऽ पाबय। केवल रस–अलंकार, ध्वनि–व्यंजनाक प्रसंग आबय तँ छात्र लोकनिपर धाक जमय, परंच पुस्तकक पूर्वापर

प्रसंगक संगति नहि प्रदर्शित कयने मन संकुचित भऽ जाय। नोट लिखयबाक सेहो तेहन अभिनिवेश नहि। किन्तु छात्रमे साहित्यिक व्यवस्थेसँ धाक जमौने रही। एहि सब त्रुटिक पूर्ति शिक्षण–अभिनिवेशी प्रधान ईशनाथबाबू करथि। हुनक अध्यापन यशस्कर होइत रहल। हँ, महाविद्यालयीय सभा–गोष्ठीमे हमर यश–ख्याति बढ़ैत रहल, तें शिष्य–मंडलीक हम प्रीति–भाजन बनल रहलहुँ। त्रुटिबोध हमरा मनमे जे होइत छल, से एही तरहें धोआइत–पोछाइत रहल। विशेषतः महाविद्यालयीय कोनो लेख–वक्तव्य हो, तकरा प्रस्तुत करबाक भार बहुधा हमरा भेटल करय, आ' तकर यशस्वितासँ हम प्रियता बढ़बैत रहलहुँ।

कालेजक अध्यापक वर्गक बीच परिचय–घनिष्ठता विभिन्न विभागहुमे बनैत–बढ़ैत रहल। विशेषतः आर्ट्समे सर्वश्री जगन्नाथ मिश्र, धर्मप्रियलाल, पूर्णानन्द दास, साइन्स डिपार्टमेंटमे सुरेन्द्रनाथ झा प्रभृतिसँ आत्मीयता प्रगाढ़ भेल। प्रिन्सपल मिश्र महोदयक सहवर्ती एकत्र डेरा रहने, कालेजक स्टाफसँ सेहो हेम–क्षेम बढ़ले रहय। विवरण विस्तृतिक भयें एतबे।

एजुकेशनक 'मिनिमम क्वालिफिकेशन' सकेंड क्लास एम0 ए0क अभावमे हमर कालेज सेवा बहुत दिन धरि थरथरायल रहल। वेतनवृद्धि रुकल रहल। पाछाँ प्रिन्सपल मिश्रजी तकर परिहार कयलनि। अन्तमे 'मिनिमम क्वालिफिकेशन'क विरुद्ध 'मैक्सिमम क्वालिफिकेशन' आइ0 ए0 सँ एम0 ए0 धरिक कोर्समे स्वीकृत पाठ्यग्रन्थक बलपर पक्षधर सदस्य सिनेट–सिंडिकेटमे बहस–मुवाहिसा करैत रहथि। अन्ततः दशक बादे हम स्थिरता पाबि सकलहुँ। रमानाथबाबूक बाद ईशनाथबाबू, तदुत्तर हमहु विभागीय अध्यक्षता ग्रहण कयलहुँ। पटनाक बाद बिहार युनिवर्सिटिहुमे एम0 ए0क पाठ्य चलल। अनेक प्रतिभावान् ओ प्रतिभावती एम0 ए0 कयलनि। पी–एच0 डी0क ताँता बन्हल। तकरहु निदेशक–परीक्षक होइत गेलहुँ। पटना–बिहार–मगध–भागलपुर–दरभंगा सभ विश्वविद्यालय–महाविद्यालयक परीक्षक, पाछाँ युनिवर्सिटी कमीशनमे, जयत अपन नाम–स्वीकृति असंभवप्राय बनल छल, ततय मुख्यतया परीक्षक–समीक्षक बनि मैथिलीक अनेकानेक शिष्य–परम्पराकें नियोजित करबामे भागी–सहभागी होइत रहलहुँ। एहि सब सम्बन्धमे विवृति संक्षेपिते रहओ।

स्वदेश–प्रसंग

'मिहिर'मे रहैत अयलहुँ। साप्ताहिक समाचार–विचारक सीमित क्षेत्रहि भने रहौ, संचार करैत रहलहुँ, परंच मासिकक प्रचलित उपचार छैक, तकरा हेतु मानसिकताक परिष्कार नहि भऽ पाबय। जयदेवबाबू वंग–रंगसँ रञ्जित छलाह। तत्कालीन बंगलाक 'देश' पत्रक चर्चा करैत रहथि। हम हुनकासँ 'स्वदेश' बहार करबाक आशंसा व्यक्त कयल, ओ सोल्लास अनुशंसा कयलनि। पुनः नाथ युगलबन्धु (रमानाथबाबू–तन्त्रनाथबाबू)सँ सेहो चर्च कयल, ओहो स्वस्ति देलनि।

श्रीकृष्ण मिश्रजी आप्त मित्रे छलाह। हुनक अभिमत प्राप्ते रहय। राजपंडितजी तँ एहिठामक गार्जियने रहथि, हुनको अनुमति भेटल। अपन छायावत् अनुयायी अनुज तँ सतत अनुगमने करथि। पूर्वकथित प्रस्तावित मिथिलाप्रेसमे जखन टाइपक जोगार भऽ गेल, आ' ओही बीच सुभद्रबाबू दरभंगा–राजकुमारगंजक डेरा छोड़ि जर्मनी–फ्रांसक विदेश–यात्रा कयलनि तखन हुनके डेरामे प्रेसक सामान सजाय, 'स्वदेश' मासिक आरंभ कयलहुँ। पूर्वोक्त बन्धुक सहयोग भेटैत रहल। तावत् पुरुषोत्तमबाबू मिथिला कालेजमे अंग्रेजी विभागक लेक्चरर पदपर प्रतिष्ठित भऽ गेल छलाह। ओतहि हुनकासँ प्रथम परिचय भेल। तंत्रनाथबाबू पूर्वभागमे पड़ोसिए। पत्र चलय लागल। पत्रक माध्यमे साहित्यिकक जुटान सेहो। छौ टा अंक मनोनुकूल रूपें प्रकाशित होइत रहल। प्रशंसितो भेल, जतय पहुँचैक प्रचलितो भेल। परंच प्रचार व्यवस्थाक ने लूरि, ने ताहि दिस घूरि तकबाक समय। विज्ञापन दिस ध्यान नहि, लेख–सामग्रिएटाक संधान। सुतरां छौ मासक बादे पत्र भावी व्यवस्थाक आस्थामे स्थगित कऽ देल जे पुनः नहि चलि सकल। परंच जतबे चलल तकर मूल्यांकन होइत रहलैक। पाठ्यग्रन्थक संग्रहमे ओकर अनेक गद्य–पद्य टीका–टिप्पणी उद्धृत होइत रहलैक। एखनहु ओकर प्राचीन अंकक खोज होइत रहैछ।

ई भेल 1948 इ0क गप। किछु एही गुनि–धुनिमे समय बितैत रहल। पुनः 52–53क बाद तरंग उठल जे पत्र नहि तँ बुलेटिन टाइपक 'स्वदेश' दैनिकक प्रयोग भऽ चलय। तावत् विद्यार्थी (व्रजेन्द्रबाबू) कालेजक इंग्लिश ऑनर्समे पढ़ैत रहथि, ओहो रुचि देखौलनि। डा0 सूर्यकान्तजी नवे मेडिकलसँ डिग्री प्राप्त कयने रहथि, तनिको उपयोग, अनुज भूपेन्द्र छायावत् प्रस्तुते। 'अमर'जी एहन क्रिया–कलापक प्रकल्पिए, नवयुवक रामदेवबाबू एहि योजना सबमे अग्रसरे। हुनका लोकनिक सहयोग नहि योग–प्रयोगेसँ दैनिक 'स्वदेश' बुलेटिनक आकार–प्रकारमे चलय लागल। अमरजी एवं रामदेवजी साइकिलसँ भोरेभोर पहुँचि सैकड़क संख्यामे दरभंगा–लहेरियासरायक बीच ग्राहक बनबैत स्वयं वितरण करैत रहथि। कल्पनातीत श्रम–सहयोगक आश्रयपर 'स्वदेश' चलैत रहलैक, आश्वस्ति पबैत रहलैक, प्रयास अनुशंसित–प्रशंसित होइत रहलैक। ताहि हेतु विभिन्न वर्गीयक नाम संपादक मंडलमे योजितो रहैक। मेकप आदिमे तथा विषय निवेश प्रसंग विचारार्थ धर्मप्रियबाबू, सुरेन्द्रबाबू प्रभृति सुहृदवर्ग पहुँचैत रहथि। विभिन्न वर्गक सहानुभूति भेटय।

परंच एहि प्रकारक पूजीविहीन पत्र, विनु विज्ञापन योगें, बिनु आर्थिक साहाय्य– सहयोगें कते समय चलओ। किछु मासक बाद एकरो भावी आशा–विश्वासपर तत्काल स्थगित कऽ पश्चात् बंदे करय पड़लैक। प्रायः दू दशक धरि भिन्न–भिन्न अपरिहार्य कार्यमे लग्न–मग्न रहय लगलहुँ, पाछाँ विधान–सभा, लोकसभाक सदस्यताक समाप्तिक बाद पुनः 1981–82मे आबि, किछु पैघ आकार–प्रकारमे 'स्वदेश'क पुनः प्रकाशनमे लागि गेलहुँ, जकर किछु विवरण आगाँ दऽ रहल छी।

मन पड़ैछ जे एहि साहसिकताक क्रममे कोना छोटछीन डेरहिमे, एक

ट्रेडिलपर दैनिक बुलेटिन कोना दिन–रात्रिक श्रमसँ चलैछ तकरा निरीक्षण करबा लेल मान्य म0 गिरीन्द्रमोहन मिश्रजी, राजपंडितजी एवं अन्यो नागरिक ओ अनुयोगी सहानुभूतिशील दृश्य देखि जाथि, साधुवाद दऽ जाथि।

पुनः दोसर बेर किछु प्रचलित आकार–प्रकारमे दैनिक स्वदेश चलबाक सेहो प्रसंग आयल। तकरहु चर्चा करैत चली।

ओकरा बाद मनमे 'स्वदेश'क स्वप्न चलैत रहल, अन्ततः लगभग तीन दशक बाद जखन हम 1977मे लोकसभाक सदस्य निर्वाचित भेलहुँ, ओही बीच कलकत्ताक किछु प्रवासी बन्धु मिथिला मैथिली संघक किछु सज्जन दिल्ली आबि बंगालेक माननीय चन्दरजी शिक्षामन्त्रीसँ डेपुटेशन रूपमे भेंट करय अयलाह। बंगाली विद्वान् लोकनि सहानुभूतिपरक रहितहि छथि तथा अपन कलकतिया प्रवासी मैथिलक प्रति अपनापन देखबितहिं छथि, तें मैथिलीकें भाषासूत्रीमे निबद्ध कयल जाय तकर प्रसंग अनुरोध करबा लेल हमरो संग लगा लेलनि। ओतय गपक क्रममे मैथिलीक प्रसंग चर्चा उठलैक तँ ओ सहसा पूछि बैसलथिन, पत्र–पत्रिकाक की स्थिति अछि? ई लोकनि साप्ताहिक मासिक सभ किछुक नामो गनौलथिन। हुनक जिज्ञासा भेल, कोनो दैनिको चलैछ। 'नहि'क उत्तर सुनि कहलथिन दैनिक पत्र बिनु कोनो जनभाषा अपन भाषात्वक अस्तित्व–प्रतिष्ठा कोना पाबि सकैछ?'

एहि घटनासँ हमरा मन–मस्तिष्कमे दैनिकक प्रकाशनक सनक पुनः उठय लागल। जखन छठम संसद सहसा भंग भऽ गेलैक, हम दरभंगा फिरलहुँ, वर्ष–दू–वर्ष धरि रोगाक्रान्त रहि, 80क बाद स्वस्थ भऽ पुनः 'स्वदेश' संचालनक प्रक्रियामे लगलहुँ। सहयोगी लोकनिसँ परामर्श चलैत रहल, तत्प्रसंगे 'स्वदेश' गोष्ठी नामे सन्ध्याकाल नियमित गोष्ठी चलैत रहल। पुनः मैथिली आन्दोलनी लोकनिक प्रेरणा–प्रोत्साहन पाबि कार्य आरंभ भेल। अनुज भूपेन्द्रबाबूक अहर्निश श्रमक मूलपूजी, तदर्थ अपना अवकाश– प्राप्त कयने प्रोविडेन्ट फंड जे भेटल छल तदुपरि व्यवस्थानुसार जे फंड विश्वविद्यालयसँ प्राप्त भेल, ताहि सबसँ हिन्दुस्तान प्रेससँ प्लेट कीनि आनल, पटना टाइप फाउंड्रीसँ टाइप आदिक जुटान भेल। दस गोट तदर्थ कंपोजिटर राखल गेलाह। अमरजी, रामदेवजी, प्रदीपजी, मुरलीधरजी प्रभृतिक योगायोगसँ चलि पड़ल। पहिने आदर्शांक तखन सप्ताह, अर्धसप्ताह, दु–दिना, क्रमशः दैनिक रूपें चलि पड़ल। सहयोग बढ़ितो रहल, बहुतो अश्रान्त–परिश्रम देखि रुखि–विरुखि सेहो देखबैत गेलाह। आरंभ भेल तँ तकर निर्वाह कयनहि। स्वस्थ–अस्वस्थ रूपे दिन–राति जे जुटान चलैत रहय, तकर स्मरणोसँ कंपित भऽ उठैत छी।

एकदिन आरसीबाबू एतय पहुँचलाह, रातिमे जखन उठथि, देखथि जे सब जुटले–काजमे भिड़ले। तखन ओ पटनासँ विचार लिखि पठौलनि। 'स्वदेश'क प्रकाशनक कल्पना नहि कयल जा सकैछ। ओ क्रिया–कलाप देखलेपर बुझल जा सकैछ।

अथ जुटयबाक क्रममे स्थायी अर्थात् पत्रक आजीवन ग्राहताक हेतु एक

हजार टाका चंदा राखल गेल। तकरो संख्या क्रमशः जुटबय पड़ल, जुटैओ लागल।

परंच आय एहिमे सीमित, व्यय असीमित देखि विज्ञापनक प्रसंग चेष्टा करय लगलहुँ। कठिनता छल जे सम्पादनक संग एकर व्यवस्था घुमि–फिरि कोना कयल जाय? कहुना सहकारीक ऊपर से भार अर्पित करैत बहरयलहुँ।

पहिने आय–व्ययपूर्वक प्रचार–प्रसारकें ऑडिट कराय प्रस्तुत करबाक छल। से पटना जाय पंडितप्रवर उपेन्द्रबाबूक बालक श्री नरेन्द्र झाजीक ऑडिट संस्थानसँ प्रमाणित कराओल। ओ बड़े उत्साहसँ पूर्ण कयलनि। तकराबाद मुख्यमन्त्री डा0 जगन्नाथ मिश्रजी निर्धारित नियमक शिथिलतापूर्वक स्वीकृति आदेशित कयलनि। प्रान्तीय विज्ञापन विभागक प्रधान श्री जगदानन्द झाक अनुयोगें राज्य दिससँ विज्ञापनक स्वीकृति भऽ गेल तथा क्रमशः सेहो भेटय लागल। पुनः दिल्लीक यात्रा कयल। ओतहु केन्द्रीय विज्ञापनक अनुयोग लागल। तकरा स्वीकृति वचन लऽ आश्वस्त भऽ फिरलहुँ। किन्तु एहि मध्यकालीन व्यवस्थात्मक प्रक्रियामे लागल रहने प्रकाशन–क्रम गड़बड़ाय लागल। तावत् मैथिली अकादमी द्वारा "उत्तरा" पर 25 सै टाकाक जे पारितोषिक प्राप्त भेल, ताहिसँ इंडियननेशन द्वारा कागज कटबाय तत्रस्थ हमर जेठ जमाय श्री जयविन्द चौधरी द्वारा दरभंगा पठाओल। एहि सब उपक्रममे श्रान्त–क्लान्त होइत, एकर व्यापक व्यवस्थाक लेल पुनः पटनाक दौड़ लगाओल। तावत् चेतना–समितिक अधिवेशन भेलैक। ओतय हम 'स्वदेश'क संचालनार्थ प्रस्ताव राखल। समथेन तँ वांछित रूपें प्राप्त भेल। तत्कालो किछु संगृहीतो भेलैक। मुख्यमन्त्रीक ओतय एकर पटनामे प्रचार–प्रसारक हेतु निवेदन करैत रहलहुँ, बैसको तदर्थ होइत रहलैक, हुनक कहब भेल जे पटना रहू, तखन एतय सब व्यवस्था भऽ सकैछ। एहिमे हमर असमर्थता छल।

तावत् इंडियननेशन प्रेससँ 'मिथिला मिहिर' दैनिक रूपमे कुमार श्री शुभेश्वर सिंहक बहुल प्रेरणासँ आरंभ भेल। हमरा प्राणमे प्राण आयल, प्रकाशनमे श्रान्तक्लान्त हम सम्पादकीय लिखि एहि काण्डकें ई कहि समापन कयल जे दैनिक चलयबाक संकल्प आब नवकल्पित रूपें समर्थ संस्थासँ आरम्भ भऽ रहल अछि अतएव दैनिकक स्वप्न यथार्थ देखि 'स्वदेश'क सेवाकें विश्राम दैत छी। आदि।'

'स्वदेश'क प्रसंग अधिक विवरणक आवश्यकता नहि, अमरजी अपन पत्रकारिताक इतिहासमे बहुत किछु लिखि गेल छथि। अतएव एतबहि 'स्वदेश' प्रसंगक इंगित अछि।

संस्था–आस्थासँ सम्बद्धता–प्रतिबद्धता

एहि सभ जीवन–प्रक्रियाक क्रिया–कलापमे विविध संस्था–संस्थानसँ सम्बद्ध होइत रहलहुँ। मैथिली साहित्य परिषद्, मैथिल महासभाक कार्यकारिणीमे रहब 'मिहिर'क प्रतिनिधि भेने अपेक्षिते छल, नगरपालिकाक सदस्य रहने नागरिकक

सभा–संस्थानमे नामान्वित भैए जाइ। एम्हर किछु सांस्कृतिक संस्थानक यदि कोनो शाखा–प्रशाखा स्थापित होइक, ताहूमे धरा जाइ। साधारण सदस्य रूपमे नहि, मन्त्री, संयुक्त मन्त्री सेहो होबय पड़य। फलतः ओहि समय पण्डित–सभाक जोर चललैक, संस्कृत विश्वविद्यालय–स्थापनाक आन्दोलनमे किछु प्रयोजनीयो छलैक, तँ प0 उपेन्द्र झाजीक मन्त्रित्वक संग हमहु संयुक्त कऽ देल गेलहुँ। करपात्रीजीक आगमनसँ वर्णाश्रम स्वराज्य संघक जिलाशाखा प्रस्तावित भेलैक तँ तकर मन्त्रित्वक भार हमर माथेपर। केओ अधिकारी आबथि तनिक रहबा–सहबाक व्यवस्था करय पड़य। एकबेर ओकर अधिकारी केओ 'आचारी' सम्प्रदायक अयला तँ हम अपन डेराक दोसर भनसा कोठरीमे चौका लगबा देलिअनि तँ ओ नानोत्तर भिजले वस्त्रें पाक आरंभ कयलनि तँ हम जिज्ञासार्थ कोठली जाय लगलहुँ तँ ओ द्वारेपर रोकि देलनि जे स्नानोत्तरे प्रकोष्ठमे आयब विहित। एहन आचारधर्मीक निष्ठाक प्रतिष्ठा रखबामे अप्रतिष्ठ भऽ जाइ। पंडित सभाक प्रसंगें प्रमुख विद्यालय परिसरमे पंडितजी लोकनिक संग पूरय पड़य। प्रस्तावहि प्रस्तुत करय पड़य। कुमार गंगानन्द सिंहजीक प्रान्तीय अध्यक्ष रहने स्थानीय संगठनमे जुटय पड़य। थोड़ पूजीक दुर्बल–व्यस्त लोक मन कने उजबुजिया जाइत छल। एकबेर 'मिथिलाप्रान्त आन्दोलन–समिति', मैथिल महासभाक प्रस्तावानुसार बनल ताहूमे राजेन्द्र झा 'स्वतंत्र' (भागलपुर)क संयुक्ततामे हमरा मन्त्री बना देल गेल। तावत् कुमार साहेबकें विहार राज्यक मन्त्रिमंडलमे चल गेने ओ कागजी प्रस्तावे बनि कऽ रहि गेल।

एकर अतिरिक्त साहित्यिक गोष्ठी यदि कतहु स्थायी–अस्थायी बनैक तँ ताहूमे धरा जाइ। फलतः परिचय–संपर्क जे बढ़ओ, परंच कमेठताक आहुति शिथिल होइत रहल। हँ, निजी रुचि–अभिरुचिक अनुकूल पुस्तक–भंडारक परिधिमे यदि केओ प्रमुख कवि–लेखक पधारथि तँ ततय सावेश पहुँचि जाइ। एतहि प्रिन्सपल मनोरंजनजी, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', नेपालीजी, गयाक वियोगीजी प्रभृतिसँ परिचय होइत रहल। प0 जयनाथ मिश्र (पाछाँ नालन्दा प्रकाशनक प्रवर्त्तक), प0 गौरीनाथ मिश्र, राधाकृष्ण प्रसाद जी, नवल किशोर गौड़ प्रभृतिसँ घनिष्ठता बढ़ल। हिन्दी–साहित्य सम्मेलनक प्रान्तीय वा केन्द्रीय अधिवेशनोमे विधिवत् आमन्त्रित होइत पहुँचि जाइ। प्रान्तीय साहित्य सम्मेलनक समय शिवजीक साहचर्ये तत्कालीन प्रान्तीय लेखक लोकनिसँ परिचय होइत चलय। काशी–प्रयाग आदि हिन्दी साहित्य सम्मेलनक अवसरपर निरालाजी, बच्चनजी, पन्तजी प्रभृतिक परिचय चलय। प्रसादजी–प्रेमचंदजी सभा–सम्मेलन नहि गेल करथि तें हुनकासँ एक–दूबेर काशीमे दर्शन करय पड़ल छल। तकर विवरण पत्र–पत्रिका मे प्रकाशितो भेल अछि।

पाछाँ चलिकऽ भाषा–साहित्यक आन्दोलनकें बढ़यबामे विद्यापति दिवस आदिक योगदान विशेष रहलैक। काशीमे अनेक क्षेत्र स्थापित छल, तारामन्दिर, श्यामामन्दिर, काली मन्दिर, राममन्दिर आदि। ओतय पंडित छात्र एवं तीर्थयात्री जे जाथि अथवा घुमैत–फिरैत देशक लोक पहुँचथि बनैली रजौड़ आदि मैथिल स्टेक

दिससँ ई अन्नसत्र चलैक। नियत छात्र पण्डितक अतिरिक्त मैथिल अतिथि मात्रेकेँ तीन दिन धरि व्युत्पन्न रूपें भात–दालि, दू व्यंजन, घी, दही, चटनी, अँचार आदिक पथार लगाय भोजोत्तर ताम्बूल पर्यन्तसँ आतिथ्य चलैक। बोहुतो व्यक्ति आहारसँ पुष्ट–तुष्ट संध्या मे तथाकथित चना चबेनापर निबहि जाथि। काशी महारानी साहेबाक ओतहु मैथिलक जमघट मचैक । काशी विद्यालयोक परिसरमे मैथिलक मजलिश जुटनि। ओतय छिटफुट विद्यापति दिवस चलैक। एकबेर हमहु ओतय सभापति रूपें आमंत्रित भेलहुँ। ओहि समय जयमन्तबाबू लोकनि ओतय छात्रावस्थहिमे छलाह। छपल भाषाण पढ़लहुँ, प्रायः किरणोजी रहथि। विद्वान एवं छात्रक जुटान राजक एक प्रथित मन्दिरक परिवेशमे भेल छलैक।

दरभंगामे पहिने बाबू भोलालाल दास, बाबू नरेन्द्रनाथ दासक उद्योगें मिथिलेशक सभापतित्वमे आयोजित विद्यापति जयन्तीमे पाँच वर्ष धरि निबन्धपर प्रतियोगितापूर्वक परितोषिक वितरण भेल। क्रमशः नरेन्द्रनाथ दास, डा० उमेश मिश्र, सुमन, शिवनन्दन ठाकुर, प० रमानाथ झा लोकनि पुरस्कृत भेलाह। बाद मे यात्रीजी लोकनिक प्रस्ताव जकर समर्थक सुरेश्वर बाबू लोकनि छलाह, स्थानीय मिथिलावासी लोकनिक उत्साहें सामूहिक अनुयोगें विशाल रूपे पटनामे चेतना समितिक आयोजन होइत रहलैक। उत्तरोत्तर एकर परिधिक विस्तार भेलैक। कविसम्मेलन, गायक–नर्त्तक गोष्ठी प्रभृति मनोरंजनक कार्यक्रमे एकर प्रचुर प्रभाव रहलैक। स्थान–स्थानमे एकर देखादेखी विद्यापति जयन्तीक प्रचार–प्रसार भेल। पाछाँ तँ पर्व–पर्वत शिखर–श्रृंगसँजे भावधारा प्रवर्त्तित भेल ओ सब तरि मिथिले नहि, दक्षिणो विहारक प्रमुख नगरमे प्रचार मंच रंजित मंडित कऽ देलक। जे विद्यापति मंच किरणजी, मधुपजी, अमरजी लोकनि सतरंजी–चादरि संग लऽ जाय गाम परिसरमे धूनी रमबैत छलाह, श्रोता –वक्ता, कवि सहृदय, वृद्ध–सिद्ध विद्वानक संग उत्साही अरुणोदयी तरुणकें जगबैत चमकबैत चलथि, तकर परिधि विस्तार सबतरि व्यापक रूप धारण कयलक। दरभंगामे संकल्पलोक एवं सहरसा–सुपौल,मधुबनी, मुजफ्फरपुर, बेगुसराय, मुंगेर, भागलपुर, दुमका प्रभृति ग्रामांचलोमे प्रचार पौलक, मैथिली भाषा साहित्यक नव जागरणमे जकर प्रचुर योगदान मानल जायत। एहू सभामे जाइत जाइ। दुमकहिमे उत्पलजीक मुखमंडलक कलात्मक हावभावसँ समन्वित नवरसक प्रदर्शन देखि चकित भेलहुँ । तदुपरि हुनक विचारधारा सुनबोक सुअवसर प्राप्त भेल। जे क्रमहि हुनक अंगीभूत होइत समधि–सम्बन्धें सम्बद्ध भऽ गेलहुँ, अपन 'उत्तरा' काव्य हुनकहि समर्पित कयने छी।

आर्यावर्त

महाराजाधिराजक आप्त सचिव रूपें कुमार गंगानन्द सिंहजीक दरभंगा–निवास अनेक दशा–दिशाकें प्रेरित कयलक, हिन्दूमहासभाक सदस्य रहने हिन्दुत्व भावनाक उद्‌भावनक संग–संग हुनक अड़ाइडंगा वंगसीमापर युवक आन्दोलनमे नवजागरण

अनलक। जेना तमूरियाक म.म. उमेशमिश्रक भाषण मैथिलीभाषाक नवजागरणक आह्वान कयलक। तदुत्तर बिहारमे भाषापत्रक विकासमे कुमार साहेबक योगदान–अवदान मानल जयबाक थिक। बिहारक राजधानीमे इंडियननेशनक संगहि कोनो हिन्दी दैनिक चलयबाक संकल्प हुनका पूर्वहिसँ छलनि। हमरालोकनि हुनक वैयक्तिक परिवेशमे रहनिहार जयदेवबाबू, कमलेशजी, गोपालजी बाबूक संग हमहु हुनक विचारकें बरोबरि निखारैत रहलिअनि। अन्ततः महाराजाधिराजक संग गपक अनुक्रमे ओ एक दिन कहि उठलाह जे अच्छा 'इंडियन नेशन'क उतारमे मिलैत जुलैत नाम फुरबैत जाउ। हमरालोकनि यथास्फूर्ति विभिन्न नाम सुझवैत गेलिअनि। हम 'आर्यावर्त' नाम अंकित करौलिऐ। ओ तकर दोसर वा तेसर दिन सान्ध्य आप्त दरबारसँ अबेर कऽ सचिव सदन पहुँचि हमरा लगले बजबा पठैलनि। हम सहसा तत्काले पहुँचि पुछलिअनि, की आदेश छैक। ओ मुस्किआइत बाजि उठलाह, 'आइ हमरा बड़ खुशी अछि तकर अनुमान करू।' हम कहलिअनि जे प्रायः अपनेक दैनिकक प्रस्ताव स्वीकृत भेल अछि। ओ कहलनि 'ठीक बुझल। आ अहूँकें विशेष प्रसन्नता होयबाक थिक'। कहलिऐन, से तँ ठीके परंच विशेष की? कहलनि नाम अहींवला पसंद कयलनि। आनन्दोल्लासक संग गप करैत डेरा अयलहुँ।

पाछाँ सम्पादकक नामक चर्चा उठल। हमर आन्तरिक इच्छा छल जे भोलाबाबूक नाम आगाँ रखिअनि। 'चाँद ' आदि प्रसिद्ध पत्रमे हुनक लेखमाला छपैत रहलनि। 'मिथिला' पत्रक सम्पादक रूपमे प्रसिद्धिप्राप्त छलाहे। परंच ओ 'आज' क सम्पादक मंडलक प0 दिनेशदत्त झाक नाम लेलनि। हमरोलोकनि बढ़ियाँ चुनबाक अभिमते जनौलिअनि। उपसम्पादकमे भोलाबाबूक नाम कहलापर ओ किछु हुनक टीका –टिप्पणी, लेख देखबाक इच्छा व्यक्त कयलापर सेहो भेलैक। तदनुसार ओ किछु दिन ओतय काजो कयलनि। दिनेशबाबू काशिए रहि ओतयसँ सम्पादकीय पठौल करथिन। आर्यावर्त चलय लगलैक, ओकर प्रचार–प्रसार बढ़य लगलैक। कालक्रमे परिवर्त्तन परिवर्धन होइत रहलैक। भोलाबाबू ओतयसँ किछु दिनक बादे पुनः भागलपुर युनियन प्रेस धऽ लेने रहथि।

आर्यावर्तकें बिहारक प्रतिनिधि पत्र बनबाक महत्त्व प्राप्त भेलैक। से सभ देखि कऽ केन्द्रीय पत्रसंस्था सभ पटनामे अपन ध्वजा गाड़ैत चलल। तदुत्तर मिथिला मिहिर साप्ताहिको एतहिसँ प्रकाशित भेल। प्रकाशनोक काज, कोश आदिक संकलनक काज चलय लागल। बाबू लक्ष्मीपति सिंहकें ताहि हेतु राखल गेलनि। दरभंगाक गतिविधिकें प्रेरित करबाक ओहो एक प्रमुख केन्द्र बनि गेल। पाछाँ कते अपेक्षित प्रतिभावान ओतय स्थापित भेलाह जाहिमे प्रमुख हीरानन्द झा शास्त्री, मार्कण्डेय प्रवासी, उपेन्द्र ठाकुर मोहन, शेखरजी प्रभृति ओहिमे संयुक्त भेलाह।

मैथिली साहित्य परिषद्

भोलाबाबूक मन्त्रित्व कालमे लहेरियासराय स्थित हुनक गृह–परिसरेमे दास

जी क्लर्कक देखरेखमे परिषदक कार्यालय चलैत रहल। दरभंगाक परिधि–परिसर मैथिल महासभाक अधिवेशन-उपेनशनसँ परे स्वायत्ततासँ ओकर अधिवेशन मधुबनीक बाद मुजफ्फरपुरमे भेलैक। गमक- रमक बढ़लैक, वार्षिक रिपोर्ट सेहो छपय लगलैक। पुनः पटनामे ओकर परिधि- विस्तार भलैक। चुनाव- प्रक्रियासँ अधिवेशन अवसरपर पदाधिकारीक नव-निर्वाचन भेल करैक। डा0 सुभद्र झा, प्रो0 तन्त्रनाथ झा, प्रो0 परमाकान्त चौधरी, हमहुँ, श्रीकृष्ण मिश्रजी, अमरजीक मन्त्रित्व चलैत रहल। क्रिया- प्रक्रिया कार्यक्षेत्र बढ़ैत रहल। बीचमे शेखरजीकें तत्काल रिक्त- अनभिषिक्त देखि हुनकहु परिषदक कार्यालय- संचालनमे संयुक्त कयल गेल। एकटा 'इजोत' नामक छोटछीन मासिक रमेन्द्र नारायण चौधरी, अमरजी ओ हमरहु सम्मिलित अर्थ- श्रमक योगसँ किरणजीक अनुयोगसँ छपय लागल। लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरीक पार्श्वभागमे कार्यालय चलाओल गेल, सन्ध्यामे यथासमय जुटानी भेल करैक। तकर बाद वा पहिने ठीक मन नहि पड़ैछ, श्रीकृष्णबाबू, भक्तिनाथबाबूक योगें दरभंगामे ओकर परीक्षादि चललैक, अमरजी प्रभृति ओकर व्यवस्था कयल करथि। सिलेबस छपलैक, परिषदक किछु प्रकाशनक प्रचारो भेलैक। किछु दिन हमरो व्यस्त माथपर भार पड़ल, परंच हम स्वीकार करैत छी, व्यस्ततें हो वा असक्तते हो, विकासक स्थानमे ह्रासे होइत रहलैक। पाछाँ किरणजी, अमरजी प्रभृतिक प्रयाससँ मधुपजी, अणुजी एवं बहेड़ा परिसरक वर्माजी लोकनिक अनुयोगें किछु प्राण अयलैक। ग्राम- परिसरमे प्रचार बढ़लैक।

बीच-बीचमे किछु आनो स्थलमे सहरसा, सुपौल, मधुबनी, मनीगाछी, सीतामढ़ी आदिमे विभिन्न संस्थान सभमे चेतनात्मक भावना उमड़ैत- जमैत रहलैक जकर फलस्वरूप बादमे विभिन्न महाविद्यालय आदिमे मैथिली-स्वीकृतिक बादे अध्ययन-अध्यापन चलय लागल। मातृभाषाक माध्यमहुसँ जीविका चलाओल जाइछ से सिद्ध–प्रसिद्ध भेल।

मैथिली साहित्य परिषदक गतिविधि द्रुत- विलंवित रूपमे सात दशकसँ संचालित अछि। एखनो से क्रम चलिते छैक। बीचमे समय - समयपर बैसक होइत छैक, जेना साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष आयल रहथि तँ हुनक संवर्धनामे बेस उत्साहपूर्ण जुटान भेल छल। स्मृति- शताब्दीक क्रममे कविवर सीताराम झा, निबन्धकार ज्यो.बलदेव मिश्रक लेखमाला पढ़ल गेल, प्रकाशित भेल। किछु दिन धरि डा0 गणपति मिश्रक उत्साहे पत्रिका चलल, पुनः एकरा अनुप्राणित करबाक चर्चा चलि रहल अछि। एतावदेव पर्याप्तम्।

विभिन्न संस्था समारोहक प्रसंग

समय पूर्वक परम्परानुक्रमे नवीन धारणाक साहित्यिक संस्था व्यवस्थित होइत रहैक। हिन्दीक संग मैथिलीक कविगोष्ठी, उर्दू बजार किलाघाट आदिक मोशायराक कहिओ कदाच संगमित- संक्रमित चलैत छलैक। एम्हर श्री अमरजी, शिक्षक एवं प्राध्यापक पश्चात् प्रिन्सपल नित्याबाबू, लालबागक शंकरजी, कमला मेमोरियल लाइब्रेरीक पदाधिकारी लोकनि तथा प्रतिष्ठित नागरिक लोकनिक मान्य गुरु भवानी दत्तजी एवं भंडार स्थित साहित्यिक लोकनिक योग- अनुयोगसँ लहेरियासराय एवं दरभंगा दूहू ओर- छोरमे गोष्ठी नियमित- अनियमित चलैत रहैक। दोगादोगी हमहु सम्मिलित होइत रही, विशेषतः श्रोता रूपें वा सांवादिक रूपें। संकोची स्वभावक रहने पढ़बा वचवासँ बचैत रही। तथापि कखनो आग्रह—गृहीत भऽ जाइ, तें कखनहु किछु पाँती लिखिकऽ संग राखहु पड़य।

तुलसी जयन्तीक अवसर अबैक तँ खास कऽ कमला मेमोरियल लाइब्रेरीमे जुटान होइक। कखनहु कोनो प्रसंगमे जिला बोर्डक समीपी को-ऑपरेटिव हालमे जमैक। पाछाँ राजेन्द्रहाल दरभंगामे सार्वजनिक संस्था सभक समारोह जमैक। हालमे ध्वनि-प्रतिध्वनिक कारणे मंच दिस श्रवण-बाधा रहितहुँ, नीचाँ एवं बाहरमे प्रतिध्वनि निर्वाध होइक। एकबेर स्मरण अछि— विजयालक्ष्मीजीक राजनीतिक सभा आयोजित भेलनि। एक मियाँजी अध्यक्ष भेलाह। हुनक वक्तव्य स्पष्ट ध्वनित नहि भेने श्रोतावर्ग हल्ला कऽ बैसल, एकाध बेर शान्ति- शान्ति कयनहु से शाँन्त नहि भेने विजयालक्ष्मीजी द्वारपर धरना देनिहारकें नाधैत ओ उठि कऽ चलिए देलनि।

अथापि एतय समारोहक सिलसिला चलबे करैक। खुला मैदानक सभा पहिने जिला स्कूलक सामनेक मैदानमे होइ ,जतय एखन अस्पताल भवनक सिलसिला छैक ततय दरभंगा लहेरियासरायक मध्यवर्ती रहने लोकक जुटान सुविधाजनक रहैक। पैघ सार्वजनिक सभा होइत रहैक। सुभाषबाबूक अग्रगामी सभा, सहजानन्द स्वामीक किसान सभाक जमाव ओतहि चलैक। किन्तु पूर्व विज्ञापन विशेष नहि भऽ सकने स्वतः लोकजमाक सुविधा देखि दरभंगा- लहेरियासराय दूहू टाबरपर सभा आयोजित भेल करैक, नामी नेतो लोकनिकें आयोजन सफल बुझि पड़नि। गर्जन- तर्जन जयकार - नारा नगरव्यापी भऽ जाइक। पाछाँ दरभंगामे राजमैदान, लहेरियासराय मे कोर्टक पश्चिमी मैदान जमावक जगह रहैक। राजाजी, स्वतन्त्र पार्टीक जेनरल करियप्पाक हिमालय बचाओ अभियान सन भीड़—भाड़ वाला जुटान एतहि जमैक।

एही क्रममे कहि चली जे साहित्यिक सभा- गोष्ठीक परिसर- प्रसर दूहू टावरपर जे छोट- मोट चलैक ताहिमे लहेरियासराय पूर्णतः पुस्तक भंडार ओ परतः

ग्रन्थालय केन्द्रित होइत रहल। एम्हर राष्ट्रसेवी कमलेश्वरी बाबूक अनाथालय – परिसर, ओम्हर कमला स्मारक भवन सेहो भविष्णु– वर्धिष्णु लोकक परिसर बनि गेल। एम्हर राधानन्दनजी, ज्योतिषी लक्ष्मीकान्तजी, भूपजी प्रभृति अपन पड़ाव बनौने, ओम्हर भंडारक पूब– पश्चिम दिस आर्यसमाजकेन्द्र ओ नरेन्द्रजीक शान्ति निकेतन आकर्षक रूपें गमनागमनक केन्द्र बनल रहैक, छतपर महारथीजीक डेरासँ आरंभ कऽ बाद धरि चहल–पहलक विन्दु कहल जाइत रहल।

बहुतो संस्था आस्थाक चंक्रममे एहिसभ स्थानक उपक्रम बिसरल नहि अछि। दरभंगामे एही टावरक पूर्वभागमे रमनीबाबूक ग्रन्थालयक सामने हमहुँ सभ मिथिला प्रेस संचालित कयने रही। कालेजक समीपी रहने ताहूसँ एहि सभ स्थानक चहल – पहल बढ़ैत रहल। संस्था– संस्थापनक सम्पर्क बनल रहल। किछु दिनधरि एकरे पूब भागमे वर्त्तमान शिशु शिक्षा केन्द्र पब्लिक स्कूलक सटले पच्छिम नागेश्वर बाबूक सहयोगें किछु धूर भूमिमे तत्काल एक खपड़ैल गृहभाग परिषदकें प्रसिद्ध व्यवसायी श्रीनिवास वैरोलियासँ भेटल छल, जतय मैथिली साहित्य परिषदक बैसार चलय लागल। पाछाँ तकरो विक्रयांश लगाय गीताभवनक आगाँ परिषदक भूमि प्राप्तिमे योग लागल।

संघ–संघटनसँ सम्बद्धता

अपन जीवन– पद्धतिक अनुकूल– अनुरूप आस्थाक प्रेरक स्वयंसेवक संघसँ प्रत्यक्ष रूपमे सम्पृक्त होयबाक अवसर दरभंगामे एक दशक बाद भेल। 1925 इ0क मे साम्प्रदायिक उत्तेजनाक बादे डा0 केशव हेडगेवार चिकित्सा डिप्लोमा प्राप्त कयलाक बादो, परिवारक दबावक बादो स्वतः प्रेरित अनुशासन– निष्ठामूलक राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ नामसँ संस्थाक स्थापना कयलनि। सौभाग्यसँ काशी हिन्दू विश्वविदयालयक शिक्षण मे कार्यरत माधवरावजी गोलवलकर महोदयक सहयोग प्राप्त कयने संघटनक कार्य वेगसँ चलि पड़ल। युवक लोकनिकें सान्ध्य शाखाक योजनासँ निर्धारित चुस्त– दुरुस्त वेषभूषामे शारीरिक व्यायाम एवं बौद्धिक कार्यक्रमक शिक्षण–प्रशिक्षण द्वारा शाखाक विस्तार दशकक बादे विभिन्न प्रान्तमे भऽ चलल। लाल टोपी जेना कम्युनिष्टक निशान रूसी क्रान्तिक बाद देखल गेल, हिटलर– मुसोलिनीक कार्यकर्ताकें स्वास्तिक चिह्नित पोशाकें जानल गेल, तहिना स्वयंसेवक संघकें बाहरी विभिन्न राजनीतिक लोक देखल करथि। परंच संघकें शाखाक कार्यक्रममे कोनो राजनीतिक दलसँ सम्पर्क नहि। हँ, जतय प्राकृतिक बाढ़ि– रौदी अथवा कोनो हिंसात्मक उपद्रव होइक संघक स्वयंसेवक दलबद्ध सेवा–कार्यमे, मेला– ठेलाकें व्यवस्थित करबामे समयपर सेवा सेहो करथि। परंच मुख्यतया नगरक

कोनो मुक्त मैदानमे सन्ध्या शाखा लगौल करथि। मध्यमे ध्वज स्थापित कऽ देल जाइक 'नमस्ते सदावत्सले मातृभूमे' सँ लऽ 'परं वैभर्वं नेतुमेतस्वराष्ट्रं समर्था भवत्वाशिषा ते भृशं' शाखाक लेल स्तुति संस्कृतमे करथि, आदेशवाक्य उत्तिष्ठ ,प्रचल, अग्रेसर, विकिर आदि वाक्ये संस्कृते प्रवर्तित हो। अतएव, एकर आकर्षण समाजमे बढ़ैत गेलैक। प्रान्त – प्रान्तमे नगर – नगरमे एकर प्रचार बढ़ि चलल।

1940 इ. मे जे नागपुरमे 'संघ शिक्षावर्ग' चललैक ताहिमे दरभंगाक राजस्कूलक एक छात्र काशीनाथ मिश्र, मुजफ्फरपुर संस्कृत कालेजक अंग्रेजी-अध्यापक सरिसवक अनन्त मिश्रजी सर्वप्रथम प्रशिक्षण प्राप्त कऽ दरभंगामे ध्वजास्थापन पूर्वक राजमैदान मे शाखा आरंभ कयलनि। क्रमशः शाखा बढ़ैत गेल, किछु समयक बादे महल्ला-महल्लामे ध्वज स्थापित हो, नवयुवक निर्धारित वेश- भूषामे जुटय लगला। दर्जन तिनिएक शाखा चलय लागल। मधुबनी, समस्तीपुर, रोसड़ा प्रभृति नगर – उपनगरमे चलय लागल। प्रौढ़ लोकनिक सुविधार्थ प्रातःकालीन शाखा सेहो संचालित भेल।

कालेज आन्दोलनक समय, व्यवस्थानुसार नगरक संघचालक प0 नागेश्वर मिश्र जे कालेजक सचिवो छलाह, दरभंगाक संघचालक रहथि। प्रो0 जयदेव मिश्र,, कलाविद् विश्वनाथजीक संग कदाचित कहिओ सर संघचालक गुरुजी (गोलबलकरक प्रचलित संबोधन) आबथि तँ हमहु संघक आयोजनमे जाइ। अनुशासन, समयपर आदेशानुसार पंक्तिबद्ध बैसबाक- उठबाक व्यवस्थासँ आकर्षित होइत रहलहुँ।

एक समय आयल जे लहेरियासराय कोर्टक सामनेक मैदानमे मिड्ल स्कूलक बगलमे गुरुजीक आगमन-अवसरपर संघक अंतमे गुरुजीक बौद्धिक चलल, अध्यक्षताक लेल हम आगृहीत छलहुँ। बौद्धिक सुनलाक बाद अन्तमे थरथराइते अध्यक्षीय वक्तव्य दऽ हम फिरलहुँ। बादमे संघक शिक्षक-प्रचारकक बरोबरि आवागमन बढ़ैत गेल। ओहि समय एडवोकेट मिश्रटोलावासी अभयनाथ चौधरी जिला- नगर संघचालक प्रभृतिक सहयोगे बुद्धिजीवी – व्यवसायी,शिक्षक लोकनिक बीच एकर प्रचार बढ़ैत गेलैक।

प्रायः 1960 मे ग्रीष्मावकाशीय प्रान्तीय संघ शिक्षावर्ग इन्द्रभवनक आगाँ आयोजित भेलैक। तम्बू-कनात एवं स्नान-कल, शौचालय आदिक विशाल व्यवस्था कयल गेलैक। केन्द्रीय संघ-नायक लोकनिक दिनानुदिनक बौद्धिक कार्यक्रम प्रस्तुत भेल। शिविरक प्रधान परिचालक हमहि निर्धारित भेलहुँ, किन्तु रातिमे डेरेपर रहि सकबाक अनुमति भेटलापर हम तदर्थ सहमत भेलहुँ। परंच संघ-निष्ठाक जे उदाहरण भेटल से हमरा अतीव प्रभावित कयलक। जिला-नगरक संघचालक लोकनि जाहिमे बाबू धनुषधारी लाल ओकील, सुरेश्वर नारायण सिन्हा ओकील पाँच बजे अन्हरोखे डेरापर ट्रेन वा रिक्सासँ जेना- तेना पहुँचि जाथि आ हमहु मुह-

आँखि धोइत हुनका संग शाखा स्थान चलि आबी। प्रातःकालीन शाखामे सम्मिलित होइत स्नानादि अनुशासित रूपें करैत मध्यकालीन बौद्धिक प्रक्रिया सहित संध्या प्रार्थना रातुक संघचर्याक बाद पुनः डेरा प्रवर्तित होइ। प्रायः दू सप्ताहक कार्यक्रम छलैक। प्रतिदिन केन्द्रीय अधिकारी अबैत- जाइत रहथि।

जहि दिन सर संघचालक पूज्य गुरुजीक आगमन भेल ओहि दिन तँ प्रान्तभरिक सम्बद्ध व्यक्ति पहुँचलाह। नेपाल सँ तत्कालीन भारत एवं अन्य विदेश व्यवसायिक प्रतिनिधि लोकनि सेहो पहुँचल रहथि, ने स्थान ने नामो स्मरण। अतएव चर्चे मात्र ।

एही शिक्षा शिविरमे माननीय दीनदयाल उपाध्यायजी बौद्धिक क्रममे तीन- चारि दिन एतहि रहला। ओही मध्य एकदिन सन्ध्याक बादे भयानक बिहाड़ि झाँटपानि उठलैक। तम्बू- कनात तहस- नहस, मैदानमे पानि भरि गेलैक। पैखानाक घेर- बेढ़ सेहो क्षत- विक्षत। प्रथम रातिमे उपाध्यायजी शौचालय जयता। की कयल जाय? हमरा डेरामे नीक व्यवस्था नहि। तखन फुरल जे प्रिन्सिपल लक्ष्मीकान्त मिश्रजीक वासा कालेजमे लय जयबाक थिक। रिक्शा लगपासमे नहि, तखन साइकिलपर चलबाक आग्रहपर कहलनि चढ़य तँ जनैत छी, परंच एमहर आठ- दस वर्षसँ संयोग नहि भेल अछि। कहुना डगमगाइत चललाह । हम तँ अभ्यस्ते। जखन ओतय पहुँचलहुँ तँ प्रिन्सपलसाहेब चकित होइत व्यवस्था कयलनि। निश्चिन्त भेलापर मात्र चाहक आग्रह मानि ओ लगले फिरि अयलाह। संघ शिविर समाप्त भेलापर हम एहि क्षेत्रमे कने चिन्हार भऽ अयलहुँ।

एक प्रसंग मन पड़ैछ। अतःपर कालेजक दिससँ वाइस प्रिन्सपलक हस्ताक्षरें हमरा एक शिकायती पत्र भेटल जे कलक्टर द्वारा इन्क्वायरी आयल अछि जे कालेजक अमुक प्राध्यापक एक सैनिक संस्थामे योगदान दऽ रहल छथि, तनिकासँ सफाइ माङल जाय। हम सोचि–विचारि कऽ उत्तर देलिअनि जे सैनिक नहि सांस्कृतिक संस्था थिक। एकरापर निषेधाज्ञा एकबेर लागल छलैक, परंच गृहमंत्री श्रीपटेल द्वारा जाँच पूर्वक प्रतिबन्ध उठा लेल गेल छैक। अनेक प्रोफेसर, सरकारी अफसर एहिसँ सम्बद्धो छथि। आदि आदि। पुनः कोनो रोध- अवरोध नहि भेल।

हम जिलाक संघचालक रूपें बहुत दिन धरि शाखा स्थानमे आवाजाही करैत रही। नगर–उपनगर कसबा- गाम जतय कतहु फंक्शन होइक, पहुँचल करी। वंकिमचन्द्रक 'सुजलां सुफलां शस्यश्यामलां' मातृभूमि- वन्दनाक संग कवीन्द्र रवीन्द्रक 'जनगणमण अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता', गुप्तजीक 'हम कौन थे क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी', भारतीय आत्माक 'मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तूँ फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक' आदि स्वर- ध्वनि कंठमे बसवैत जे भावना

हृदयमे उछलैत रहल, तकरे परिणति छल जे राजनीतिमे भावनात्मक प्रेरणा जागृत करैत रहल। भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्तिक परिवेश जाहि देश- विभाजनक रूपमे परिणत भेल तकर प्रतिध्वनि 'कविताक आह्वान' सहजहिँ एहि रूपमे परिणत भेल–

पूर्वांचलसँ सुन्दर वनक विहंगम उड़ि- उड़ि आबि
सिन्धु संगिनि रावी कनइछ खंडित रसना दाबि।
उदित भानु रजनी तम चिरइत नव- नव लय आलोक
किन्तु हमर अछि रूप विरूपित हर्षहुँ बोरल नोर।
एखनहु धरि विस्फी आङनमे मिथिला बहबय नोर,
कविता मिलित कंठसँ गबइछ हमर दुखक नहि ओर।

स्पष्ट अछि जे खंडित देशक व्यथा, स्वाधीनता- प्राप्तिक गाथा, देश–स्वदेश सहकथा ग्रथित होइत रहल।

एहिबीच विदेशी भाषा अंग्रेजीक प्रथाकें भारतीय भाषाक आस्थाकें संवर्धित करबाक व्यवस्थामे डा0 रघुवीरक भारतीय शब्दावलीक उद्धारकर्ताक रूपमे आन्दोलन प्रो0 उपेन्द्र झाक संग संघप्रचारक देवजी लोकनिक कार्यपद्धति जनमानसकें आन्दोलित करैत रहल, एम्हर काश्मीरक अभियानमे आत्मवलिदानी श्यामाप्रसाद मुखर्जीक निधन हृदयकें उद्वेलित करैत रहल। जनसंघक संस्थापक सचिव दीनदयालजीक राजनीतिमे भारतीय एकात्म मानववादसँ प्रभावित होइत रहलहुँ। हुनक दरभंगा- यात्रामे संपर्कमे अयने विशिष्ट रूपमे संबद्ध भऽ गेलहुँ। संगहि राष्ट्रीय स्वयंसेवकक दरभंगा- शाखा स्थापनाक प्रसंगे तत्सम्बद्ध प्रचारक लोकनिसँ बरोबरि संपर्क होइत गेल तथा ओहिसँ मूलतः भावनात्मक सहानुभूति निरन्तर बढ़िते गेल। अन्ततः पूज्य गुरुगोलवलकरजीक सान्निध्य प्राप्त भेने स्व0 भोलाबाबूक सान्निध्यमे श्रीकृष्णबाबूक संगहि संकल्पितो भेलहुँ। अन्ततः 1960 मे आबि कऽ विधिवत् राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघक जिला संघचालक रूपमे उद्घोषित भेलहुँ।

एही क्रममे प्रचारक उद्देश्यें अबैत रहनिहार संघ जनसंघक नेतृवर्गक डा0 बलराज मधोक, पीताम्बर दास, दीनदयालजी, देवरसजी, जगन्नाथ राव जोशी, नानाजी देशमुख, माथुरजी, भंडारीजी, रामलखन गुप्तजी, लक्ष्मणजी भिडे, देवजी, जगदम्बी यादव, ठाकुर प्रसाद जी, कैलासजी प्रभृति नेतृवर्गक सन्निध्य प्राप्त होइत रहल। स्थानीय व्यक्तिमे सर्वश्री नरेन्द्रजी, अश्विनीजी जलौटा, काशीनाथ झा द्वय, महावीर गुप्ता, शिवजी, अनिरुद्धजी, रमाकान्तजी, रामबहादुरजी, हरिनारायणजी (पांचजन्य प्रचारक), सुरेश्वर नारायण सिन्हा प्लीडर, सत्यनारायण साहु, रमेश चक्रवर्ती, सर्वदयाल पाहुआ , चन्दर शाह, त्रिवेणी जी, महादेव जायसवाल, सुन्दरलाल राजपाल, रामदास राजपाल, केदारजी, श्रीमंत पाठक प्रभृतिक नाम उल्लेखनीय अछि।

राजनीतिक चेतनाक क्रमिक उद्‌भावना

जन्मना वर्णाश्रमी भावनाक मैथिल ब्राह्मणक परिवारिकतामे, कर्मणा श्रौत-स्मार्त मतानुरूप संस्कारित होइत रहलहुँ, तदनुरूप सन्ध्या आदि स्वेच्छया अभिभावकेच्छया चलैत रहल। सांस्कृतिक आहार–व्यवहारक प्रक्रिया जारी रहल। शिक्षा तदनुकूले, वैष्णवीय दीक्षा तदनुरूपे। पश्चात् सनातनी एवं हिन्दुत्व आन्दोलनी पत्रिकाक समाचार–विचारसँ उपचारित रहने तथा शंखध्वनि- उत्सव- जुलूसपर बरोबरि महजीदी- मन्दिरी उपद्रवक समाचार पढ़ैत–सुनैत, विदेशी सरकार द्वारा ताहिपर छद्मपूर्ण रुखिक समाचार–विचारक प्रभाव नवीन मस्तिष्ककें प्रभावित करैत रहल। वंगीय मध्यम- परीक्षार्थी रूपें कलकत्ताक मछुआटोली 23 नंबरक विशाल भवन- परिसरमे घेरल बेढ़ल सप्ताह भरि जीवन बितयबाक फलस्वरूप हिन्दुत्व रक्षार्थ विशेषया महाराष्ट्री डा0 मुंजे, डा0 हेडगेवार द्वारा हिन्दू संगठनक बिगुल सुनि ताहि प्रसंग उन्मुखता बढ़ैत रहल। ओना गाम- परिसरमे रोसड़ा - समस्तीपुरक उपनगरीय परिधिमे विदेशी वस्त्रकें परित्याग तथा तकरा अग्निसात् करबामे बालोचित जुलूसमे नारा लगौनिहार रही। लगपासक गाहर- बलहा पेठियामे जुलूसमे भाग लैत, गाँधीक जयकार लगबैत कांग्रेसी भावनामे भावित रहिते छलहुँ। यैह सब आरंभिक उपक्रम छल। असहयोग सत्याग्रह आन्दोलनक सभामे बालकंठसँ अपन वरिष्ठ पितिऔत राघवेन्द्र बाबूक संग पुरैत रहबे करी। गाँधीजीक सभा- समारोहमे जयबाक खादी किनबाक होड़मे जोर लगयबाक चर्चा पूर्वमे कैए चुकल छी। परंच इसवी पच्चीसक बाद कने मन डगमगाय लागल जे अंतमे वीर सावरकरक हिन्दूसभा आन्दोलनमे कुमार गंगानन्द सिंहक सहचर रूपमे सम्मिलित भेलहुँ। क्रमशः जिला तथा प्रान्तक प्रतिनिधि रूपें लखनउक प्रसिद्ध नेता सर जे. पी. श्रीवास्तव महासभाक स्वागताध्यक्षक ओतय जयबाक प्रसंग भेटल। ओतहि पहिल बेर अनुभव भेल पश्चिमी यूपीमे भोजन–व्यवहारमे राहड़िक संग उड़ीदोक दालि अनिवार्य रहबाक तथा अंतमे काँजीक ग्लास पीबाक व्यवहार चलैत छल। स्मरण अछि जे ओही अधिवेशनमे सावरकरजी गाँधीजीक 'इंडियन ओपीनियन' पत्रमे ब्रिटिश सरकारक चलि गेनहु भारतक रक्षामे निजाम- हैदराबाद स्टेट रक्षाक भार सम्हरि सकैछ, तकरा स्थानमे निकटवर्ती हिन्दू राष्ट्र नेपालक नाम नहि लेबाक कटु आलोचना कयने रहथि। बादहु मे जखन प्रान्तीय अध्यक्ष कुमार गंगानन्द सिंहकें गिरफ्तारी-पूर्व सचिव सदनेमे नियन्त्रित रखबाक आदेश विहार सरकार निर्गत कयने छल, हमरालोकनि कमलेशजी, गोपालजीबाबू आदि हुनक संग स्थित छलहुँ।

साम्प्रदायिकताक सूत्र

अपन राष्ट्रमे सम्प्रदायक प्रयोग एक विशिष्ट अर्थमे होइत अयलैक। आध्यात्मिकताक प्रसंग अपनाकें कोनो पूर्व–प्रवर्त्तित पद्धतिमे समर्पित करब, सम्प्रदाय कहबैक। प्रधानतया पंचदेवोपासक एहि देशमे सूर्यदेवसँ सौर, गणपति– विनायकसँ गणपत्य, शक्तिक उपसनासँ शाक्त, शिवक भक्तिपरायणतें शैव, ओ सत्वगुणी विष्णुक उपासने वैष्णव सम्प्रदाय प्रचलित छल जे एखनहु धरि प्रचलित अछि। एम्हर विदेशी लोकनिक आक्रमण जखन उत्तरापथ, दक्षिणापथमे क्रमहि होअय लगलैक, जिहादी चढ़ाइ शुरू भेलैक ओ जखन एतय बसि–टिकि गेलाह, तखन मजहबी जे कहबथु किन्तु तथाकथित साम्प्रदायिक नहि कहाय, मुख्यतः विदेशमे हिन्दुस्तानक बासी हिन्दुस्तानी कहबथि। अमेरिकामे तँ हालधरि मुस्लिमो नागरिक यदि ओतय पहुँचथि तँ हुनका हिन्दू–हिन्दुस्तानी सैह कहल जाइन। ब्रिटिश शासनक स्थापनाक बाद स्वतन्त्रतामूलक विचारकें अंकुरित देखि ओ लोकनि सम्प्रदायवादक विशेष उल्लेख करय लगलाह, विशेषतः हिन्दू मुस्लिमक बीच संघर्ष बढ़बैत महजिद लग शंख बजौने उपद्रवक स्थिति कूटनीतिकतासँ उत्पन्न करैत रहलाह। गोमुंड देवस्थानमे ओ सुअरमुंड महजिदमे उनैसम सदीक अन्त ओ बीसम शताब्दीक आरंभ भागमे पत्र–पत्रिका उनटौनिहार दंगाफसादक समाचारक कारणमे ताकि सकैत छथि।

तकर बाद क्रिया– प्रतिक्रिया क्रममे हिन्दू–मुसलमानक बीच बड़का शहर सभमे जतय तकर बहुल संख्या छल कलकत्ता, कानपुर, लखनउ, हैदराबाद आदिमे दंगा होइत छलैक। कानपुरमे गणेशशंकर विद्यार्थीक हत्या ओकर नमूने अछि। विद्यार्थी ज़ी एक हिन्दू महल्लासँ एक मुस्लिम ज़वानकें सुरक्षित कयने ओकर महल्ला पहुँचाबय जा रहल छलाहे कि हुनकापर घातक आक्रमण भेल जे पाछाँ सुरक्षित मुस्लिम जवानक बयानसँ पत्र– पत्रिकामे प्रचलित भेल। ओहि समय जनसंख्या आदिक आँकड़ा जे प्रकाशित हो ताहिमे जनताकें दू–विभागमे बाँटय मुस्लिम– गैरमुस्लिम। पहिलुका जतेक सरकारी कागजपत्र छपै ताहिमे हिन्दू–मुस्लिम नहि मुस्लिम– गैरमुस्लिम सैह अभिज्ञान रहैक। साम्प्रदायिकताक आधारपर ओ निर्वाचनी सीट सभक विभाजन करैत गेल। एहर लोक दुइए भागमे बाँटल जाय, मुस्लिम– गैरमुस्लिम । हिन्दू– इसाइ– सिक्ख आदि बहुत एम्हर आबिकऽ प्रचारमे आयल। हिन्दू आदि गैरमुस्लिम कहिकऽ परिचित छलहुँ।

एकबेर मालवीयजी लोकनि एहि प्रकारक विभाजनक विरोधमे सम्प्रदाय विरोधी चुनाव फ्रंट बनौनहु छलाह। परंच कांग्रेसमे मुस्लिम विरोधकें मेटयबालेल तुष्टीकरणक नीति चलाओल गेल। राजनीति– परम्पराक अध्ययनी ई नहि बिसरल होयताह। मुस्लिमक चौदह माङ ओही समय स्थापित भेल। नेहरूपरिवारक एक

महिला- सदस्या तुष्टीकरणक प्रसंगमे एतेधरि बाजि गेलि रहथि जे हमरा सबकें स्वतन्त्रता इष्ट अछि, हम सब मुसलमाने भऽ कऽ यदि विदेशी शासनकें हटा सकी तँ जनउ- टीक रखबाक अनिवार्यता कोन ? जनउ तोड़बा- तोड़यबाक प्रदर्शन बहुत एम्हर धरि विभिन्न समाज–साम्य मतानुयायी मे चलि पड़य। मुस्लिम- गैरमुस्लिमक गणनाक बात तँ एम्हर लोक विसरिओ गेल अछि। परंच घटित घटना स्मृतिसँ सर्वथा मेटा नहि जाइछ। बस एतबे।

अन्तरान्तरा आन्दोलनी नारा

'मिथिला मिहिर' मे रहितहिँ सातवर्षक अभ्यन्तरे देशक राजनीतिक स्थिति आन्दोलनी भऽ उठल। रामगढ़ कांग्रेसक बादेसँ, सुभाषबाबूक अध्यक्षतेसँ कांग्रेसमे किछु रुखि बदललैक। अग्रगामी दल चलि पड़लैक। दरभंगोक किछु आन्दोलनी ओहिमे सम्मिलित भेलाह। मन पड़ैछ, प्रायः जानकीबाबू लोकनिक ग्रूपक झुकाव ओहि दिस भेल। सुभाषबाबू भ्रमण- क्रममे एतहु आयल रहथि। किछु चखचुख चलितो रहलैक।

पुनः किछु दिनक बाद 'भारत छोड़ो'क आन्दोलनी युग आयल। तोड़–फोड़क कार्यक्रम चलि पड़लैक। प्रतिबंध लागय लगलैक। रेल–पथ सेहो रुकि गेलै। आवागमन कठिन। तथापि गुप्त आन्दोलन जारी। आफिस, डाकघर, थाना आदिपर जुलूस हमलेबाजी चलय लागल। धर- पकड़, कागज- पत्रक छीन–छान राजनीतिक परिसरमे पूर्ण हलचल। संयोगवश हम राजक स्टाफ छलहुँ। राज सरकारक संग तें एम्हर ककरो दृष्टिपात नहि। किछु परिचित राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता जिला कांग्रेसक कागजपत्र हमरा ओतय राखि गेलाह। से छलैके। कमलेश्वरी बाबू लोकनिक आग्रहें एकटा बुलेटिन बाँटल जाइक। जेना निर्देश करथि लिखि दिऐन। बाहर तकर आभास नहि। तें एम्हर कोनो जाँचखोज नहि।

एही बीच मन पड़ैछ, हमरा मायक अस्वस्थताक कारण गाम जायब आवश्यक। किछु आवश्यक सामग्रिओ लऽ जयबाक। बिनु कलक्टरक आदेशे स्टेशनपर गाड़ी नहि पकड़ि सकैत छी। चीफ मैनेजर डैनबी साहेबक रिकोमेंड लेटर लऽ कऽ तखन एक आयरिश कलक्टर ओहि समय छलाह तनिकासँ परमीशन प्राप्त कयलहुँ तखन गाम जा सकलहुँ।

ओही सिलसिलामे कहि चली, किछु समयक बाद नोट- टाकाक भजोखा नहि भेटैक। बाहर मधुबनी- समस्तीपुर कोर्टक आबाजाहीमे जलपान- पान ली तँ शेष ओतहि छोड़य पड़य जे बादमे दोसर दिन मोजर होअय।तदुत्तर सरकार दिससँ शान्ति कमिटी स्थापित होअय लगलैक। प्रेस मैनेजर ओ म्युनिसिपल चेयरमेन शंभू बाबू अग्रसर, ओहि समय हुनके ऑस्टीन मोटर सड़क पर बेसी दौड़ल करय। ओ

सरकार दिससँ शान्ति-समितिक बुलेटिन लिखय कहथि। हम कते कहि-सुनि माफी माङि ली।

एकबेर ओही क्रममे हमरा जूरीमे बैसबाक नोटिस भेटल। उत्सुकतावश गेलहुँ। घंटो भरि चुपचाप बैसल बयान सुनैत, बहस सुनैत, हाकिम हुकामक हँ मे हँ मिलबैत अकछि गेलहुँ। ओतय कने पैरवी लगाइए कऽ मुक्त भेलहुँ।

प्रेस मैनेजर शंभूबाबू ओही बीच ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट भऽ कचहरी जाय- आबय लगलाह। कहलानि, की इच्छा होइछ तँ पैरवी लगा दी। हम सहानुभूति हेतु धन्यवाद दऽ माफी माँगि लेलिअनि।

प्रसंगतः संघक विघटनक स्थिति बादमे जेना पहुँचलैक से सर्वविदिते अछि। स्थानीय स्थितिक विषयमे किछु कहि चली। 48 क 30 जनवरी सन्ध्यामे हम जखन शंभूजीक ओतय बैसल छलहुँ सहसा रेडियो करुण-ध्वनि प्रतिध्वनित भऽ उठलैक। लगले गाँधीजीक गोली- आघातसँ राम नामोच्चारण करैत मृत्युक समाचारसँ शोकाहत भऽ उठल। चतुर्दिश मातमी माहौल, शोक-संवेदना, चतुर्दिश हाहाकार, शोक-सभा जुलूस श्रद्धांजलिक ताँता लागि गेल। दोसर दिन दरभंगामे नागरिक लोकनिक शोक-जुलूस वाग्वती नदी- तटपर विशाल संख्यामे श्रद्धांजलि अर्पित करय पहुँचल। हमरोलोकनि नागेश्वर बाबू लोकनिक संग धय श्रद्धांजलि चढ़वय नदी- तट पहुँचलहुँ। फिरबाकाल किछु गोटे पियासाकुल भऽ गेलाह। शुभंकरपुर पुलक कातमे मेन सड़कक तटवर्ती दोकान मे ओलेकनि पानि पीबा लेल गेलाह। नागेश्वर बाबू कहलथिन, खाली पानि नहि पीबू, किछु पहिने मुहमे दऽ दिऔक। दोकनदार उताहुले, ओ किछु पेड़ा पानि पिउनिहारकें अनकहु बढ़बैत गेल। भुखल-प्यासल सब छलाहे, लैत गेलाह। मुख्य अग्रसर रहने नागेश्वरे बाबू दाम चुकता कयलथिन।

दोसर दिन कोनो सांवादिकक कुतूहलसँ पत्रमे समाचार छपलैक जे गाँधीजीक मृत्युपर दरभंगामे संघसंचालक नागेश्वर बाबू अपन सहयोगी मुख्य शिक्षक सुरेन्द्रबाबू (विज्ञान विभाग)क संग मधुर भोजनक उत्सव मनौलनि।

ओम्हर केन्द्रमे आन्दोलन उठिते छल। संघ सहसा बाधित संस्था घोषित भेल। दरभंगामे नागेश्वरबाबू, प्रो0 सुरेन्द्रबाबू तथा अन्यान्यो लोक वंदीगृहमे बंद कयल गेलाह। पाछाँ कतेक वादानुवादपर गृहमंत्री पटेल साहेबक प्रयासें संघपरसँ नियन्त्रण उठौल गेल। परंच विरोधी वर्गसँ आक्षेपक परम्परा उठिते रहलैक। साठे फाँसीपर चढ़ला, हुनक अन्तिम वक्तव्य अखबारमे प्रकाशित होइते पुनः जप्त कऽ लेल गेल। तदुत्तर बहुत दिन धरि आक्षेप-प्रत्याक्षेप चलि पड़ल। तकर बादे संघ प्रतिक्रियास्वरूप अपन राजनीतिक 'विंग' जनसंघक नामे घोषित कयलक जे श्यामा प्रसादजीक व्यक्तित्वें एवं दीनदयालजी लोकनिक विचारधाराक बलपर अटलजी-मधोकजी-पीताम्बर दासक अगुआइमे बढ़ैत चलल। गुरुदत्तजीक कथा-उपन्यास

तथा अनेक लेखक ओ सम्बद्ध पत्र–पत्रिकाक माध्यमे प्रचरित होइत बढ़ैत चलल।

राजकुमारगंजक वास–निवास

'न्यू जेनरेशन', 'जेनरेशन गैप' शब्द सुनिते टा छलहुँ, परंच कने युगानुसार अनुभवक अवसरो भेटय। जखन विद्यार्थी व्रजेन्द्रबाबूक द्विरागमन भेल, सौभाग्यवती कनेञा सासुर अयलीह, गाममे फैल घर–आङन रहनहु, परिवार–बहुल, खपरैल, नीचाँ गोबर- माटिक नीप–पोत। जे सुनैत अयलहुँ, कनेञा वनविहार मध्यप्रदेशक कन्या विद्यालयमे किछु दिन शिक्षा पौने, नैहरमे पक्का–महलमे पलित रहने, सासुरक दोसर तरहक ग्रामीण स्थितिमे आबि गेने मन उखड़ब स्वाभाविके। अपेक्षाकृत नगरक बास अनुकूल पड़नि। एतय मङा लेल गेलीह। भूपेन्द्रक माध्यमे घरक एक कोठरी एवं बाहरी ओसारापर कोठरीक व्यवस्था कराय कने ताहिसँ निश्चिन्त भेलहुँ। हमर दूहू कन्याक संग गप–सपमे रमल रहतीह। से कहाँ धरि सफल भेल, हम अंदाजे कऽ सकैत छलहुँ।

किछु दिनक बाद कनेञाक मातृकक लोकवेद आजमगढ़मे रहैत छलथिन। विद्यार्थी हुनक प्रेरणे सटले एक टा पक्का फैल सन मकान पसिंद कयलनि तथा एहि सिकस्त डेरासँ ओतहि चलबाक आग्रह देखौलनि। परिस्थितिक संगति बूझि हमहु स्वीकृति देलिअनि। अपन सहचर लीलाधर मिश्र तथा पत्नीक संग हमहु ओतय आबि गेलहुँ। पुरनो डेरा यथावत् चलैत रहल, केवल दौड़–बड़हा बढ़ैत गेल। प्रतिदिन आजमगढ़सँ डैनबी रोडक डेरा, ततयसँ प्रेसो। महिला कालेज होइत आर्ट्स कालेज। साइकिल दौड़बैत अस्त–व्यस्त स्थितिमे दिनचर्या चलैत रहल।

आजमगढ़क डेराक लग चमड़ा–गोदाम छलैक। तकरो गंध कखनो मनकें भिन्ना जाय। मकान चारू भर घरसँ घेरल रहने, अङनहु वा ओसारामे स्वच्छ हवाक कमी। मन उखड़ैत गेल।

अंतमे भूपेन्द्रकें कठिनता कहलिअनि। ओ कटहलबाड़ीमे एकटा पैघ मकान देखि सुनि अयलाह। एखन जाहि ठाम डाक कार्यालय अछि, ओहि समय ओकर भाड़ा 80–90 कहल गेलैक, दू सय मासिक पौनिहारकें शतावधि भाड़ा देब संभव नहि छल, तें दोसर उपाय सोचबाक वाध्यता।

एहि बीच राजक एक प्रमुख कर्मचारी अपन बंदोबस्त जमीन उक्त डाकघरक पाछाँ नेने रहथि से बेचबापर प्रस्तुत। हम, संस्कृत विभागाध्यक्ष सुहृद परमानन्द झाजी तथा नूनूबाबू दू–अढ़ाय कट्ठा कऽ एक संग जमीन लेलहुँ। ओतय घर बनयबाक विचारो भेल, परंच बहरयबाक कोनो रास्ताक व्यवस्था निकटमे नहि रहैक। तें ताहि विचारसँ निरस्त भऽ ओकरा बेचि कतहु अन्यत्र भूमि लेबाक संधानमे रही। ओहिसँ पूर्व राजकुमारगंज (रुइफुल्लागंज)मे राजक जमीन फणिनाथ बाबूक देख–रेखमे बेचल गेलैक। श्रीकृष्ण बाबू, इंजीनियर अनिरुद्ध बाबू जमीन लेबो

कयलनि। हाथ सिकस्त रहने हम ततहु चुकि गेलहुँ। बहुत दिनक बाद पूर्वोक्त प्रकरणमे सहसा हम गणित विभागक प्राध्यापक मथुरा बाबूसँ आग्रह–गृहीत भऽ प्रधान–पोखरिक मोहारपर मथुराबाबू– श्रीशंकर बाबूक संग हमहु जमीन लेलहुँ। पूर्वोक्त कटहलबाड़ीक भूमि बेचल। ओहीसँ किछु फंड जुटाय राजकुमारगंजक जमीन जेना तेना मथुराबाबूक देख–रेखमे लेल, से बीचमे किछु दिन द्रव्याभावें पड़ल रहल। 'अपन डेरा'क फणिनाथ बाबू एकदिन आवेश जन्य एकटा ईंट नीक दिनमे गाड़िकऽ हमरा कहलनि जे हम तँ नीक दिनमे नेञो एक प्रकारें राखि देल। आब जल्दी पड़ोसी भऽ जाउ।

एहि बीच दूर–दुरंत दूहू डेरा, प्रेस टावरपर, तकर बाद महाविद्यालयक यातायातसँ उद्विग्न तथा नव–परिवारक रहन–सहनसँ नव आवास बनयबाक तृष्णा बढ़ैत गेल। हम अस्त–व्यस्त, संगहि गृहनिर्माणक झंझटिसँ आँट भूपेन्द्रसँ अनुरोध करैत रहलिअनि। अन्ततोगत्वा प्रेसक झंझटि रहितो ओ भार ग्रहण कयलनि। तीन मासमे घर प्रस्तुत करबाक योजना सुनौलनि।

घरहटि, फंडक अभाव, अभावग्रस्तकें प्रभुक कृपा–प्रसादक अधिभार। सिंधी ईंट–व्यवसायी रामदास राजपालजी ईंट देब गछि लेलनि। रानीपुरक अपेक्षित चन्द्रशेखर बाबू एक डिब्बा सिमेंट रेलसँ मङौने छलाह, पचास बोड़ाक जोगार ओहो लगा देलनि। गामक अपन कारीगर– जन ननूदास पहुँचि गेल। एहू ठामक तत्कालीन थोड़ रोजपर खटनिहार मजदूर कारीगरक जुटान भऽ गेलैक। हम सब जेना कालेज–डेरा करैत रही, से यथावत्। भूपेन्द्र डेरासँ सात बजे एक कप चाह पीबि एक बजे धरि एतय खटैत–खटबैत। गामपर पहुँचि रुख–सुख जे बनल से खाइत–पिबैत पुनः डेढ़ बजे पहुँचि जाथि। ओ रोज–बोनि चुकबैत सन्ध्या छौ बजेक बाद डेरा पहुँचथि।

बीचमे बढ़हीक काज चलल, चौकाठि–खिड़की–केबाड़, संघक सिद्ध–प्रसिद्ध स्वयंसेवक रमाकान्तजीकें हम सब नेताजी कहैत छलिअनि, हुनका ओतय लकड़ी व्यवसाय चालू छलनि। हुनको तात्कालिक योगदान, तीन मासक भीतरे मकान एक तरहें तैआर भऽ गेल। हमरा लोकनि वास्तु–पूजा निमाहैत वासो आरंभ कऽ देल।

किन्तु एहि हड़बड़ीमे छतक पिटाइ जेना चाही से नहि भऽ सकलैक। तें एक दिन वर्षाक कारण एकटा विषम स्थितिमे पड़ैत गेलहुँ। हमर छोटि कन्या मैथिली एक नेनाक जन्म देलनि। एक कोठलीमे प्रसूतगृह छलैक। पानि बंद नहि भेनिहार, टप–टप पानि तेना चुबय लगलैक जे त्राहि–त्राहि मचि गेल। प्रत्येक समाङ विद्यार्थीसँ लऽ शंकर–सून–बाउ सभ गोटे निद्रा छोड़ि एकाएकी कोनो सतरंजी–जाजिम जे उपयुक्त भेटेय ताहिसँ प्रसूता ओ शिशुकें रक्षा करैत रातिभरि जगिते रहल। वर्षा विन्दु ओछिते–उपछिते रहि गेलहुँ। नेता भोगेन्द्र बाबूक पत्नी डा0 श्रीमती चन्द्रकला देवी जे प्रसूता चिकित्सामे संलग्न छलीह, तनिके बारंबार बजविते पहर–पहर कटैत रहलहुँ। वृष्टि रूकल। उपरक छेद–छाद तत्काल बंद करौल गेल। एही बीच

प्रसूताक शरीरमे चमक जकाँ बुझना जाय। अनुभवी डाक्टर परेश बाबू देखि–सुनि टिटनेसक चिकित्सा– व्यवस्था कयलनि। तावत् जमाय श्री कर्मकान्त बाबू पहुँचलाह, रोगोपद्रव शान्त भेलैक। छतक दोहरा ईंट बैसाय जेना–तेना मरम्मति कयल गेलैक। डेराक सिकस्ती तथा साइकिल परस्ती कने कमल। परिवारो पक्का–मकानक परिसर–प्रखरसँ सुव्यवस्थित बुझना गेल।

एहि बीच गाममे पिताजी वार्धक्य ओ रोग दुहूसँ उपद्रुत होइत रहथि। एतय घर–निर्माणमे व्यस्त रहने हुनक परिचर्यामे कसरि पहुँचैक। तकर हुनको असन्तोष ओ हमरो लोकनिक मनमे मसोस होइत रहल, जे तकर बाद ओतय निरन्तर परिचर्यामे उपस्थित रहि, छुट्टी ओ हड़तालक कारणें सेवाक त्रुटिमे जुटि जाइत गेलहुँ।

घरहटक झंझटि बड़ उत्कट–विकट मानल जाइत रहलैक अछि। किछु–ने–किछु ओझराहटि चलिते रहैत छैक। घरतँ ठाढ़ भऽ गेल, परंच पूब गंभीर खाधि। हमरा दिसक भूमि पूर्वक मोहार छलैक, नीचाँ गहीर खाधि। स्थिर भेल छलैक, भीड़सँ ओकरो सरियाव कयल जयतैक। तदर्थ किछु फंड शामिलात एहि लेल लगाओल जाय। तदनुसार काज आरंभो भेलैक, परंच पच्छिमक निचाह भूमि भरैत–भरैत पूबक भूमि खधिआयले रहि गेलैक।

संयोगवश ओहि समय दरभंगाक हवाइ अड्डाक निर्माण चलैत छलैक। ओकर अन्यतम इंजीनियर अश्विनी कुमारजी संघसँ सम्बद्ध रहने हमरा ओतय अयलाह ओ निर्मित घर देखि कहलनि जे खाधिक सटल घर बिनु भरने कोनो समय खसि सकैछ। तें अनिवार्य जे एहि खाधि लेल भूमिकें तीन खंडमे देबाल बान्हि माटि देल जाइक। अगत्या सैह करय पड़ल। देवाल ठाढ़ करैत, माटि बाहरसँ मङाय भरैत खर्च–वर्चक चपेटमे पड़ि गेलहुँ। बादमे कने निश्चिन्त भेलहुँ।

एहि बीच मुख्य पड़ोसी मथुराबाबू पटना थीसिसक काजसँ निवृत्त भऽ डेरा रहय लगलाह तँ स्थिति देखि, कने गुम्हड़ि उठलाह। कारण छलैक जे रजिस्ट्रीमे पूर्व–निर्धारित मूल्यसँ विक्रेता द्वारा किछु अधिक मूल्य मंगबाक गप कहि ओ माड़ रखने छलाह, किन्तु रजिस्ट्रीमे निर्धारित मूल्यपर विक्रयक बात लिखल गेने हमरा लोकनि ओतबे सौंपलिअनि, ओ ई कहि जे कम मूल्य लिखल गेलासँ ओकर टैक्स दर कम लागत, तें ततबे लिखल गेल छैक। ई नव बखेड़ा उठने एतबा अवश्य कहल गेलनि जे पाछाँ बुझल जयतैक। तत्काल सम्हारि चलू। एही सम्हारबाक गपक ओ चर्च उठबैत रहलाह, हमरा लोकनि ताहिमे ननुनच उठबैत रहलिअनि।

एक दिन शुद्धक समय जखन लोक विवाह–उपनयनक नोत–पिहानमे लगने कतिआयल छल, ओ रातारातीं जन–कारीगरकें मङाय रस्तापर देबाल ठाढ़ कऽ लेलनि। भोरे उठलापर देखने उपालंभपूर्वक तकर उपाय सोचल जाय लागल। ओ द्रवित होयबाक नाम नहि लेथि। प्रत्युत थानामे दर्ज कराय देख–भाल लेल एकटा सिपाही भर्ती करा लेल। ओहि सिपाहीक अवस्थान हमरहि आवासपर धरा देल।

सिपाहिओं स्थिति देखि कने अपने सहानुभूतिपरक बुझना गेल। तदनुसारे जखन ओ दुपहरमे भोजनार्थ बाहर रहथि, तखन किछु हुनके संकेतानुसार एम्हर संघ—कार्यकर्त्ताक जुटानपर प्रोत्साहित भूपेन्द्र बाबू प्रभृति ओहि देबालकें हटा—मेटा देलनि। हम दूहू बाप—पूत नेआरि कऽ ओहि काल क्लास लैत छलहुँ। पश्चात् हमरा लोकनिपर फौजदारी चलल। रूपबाबूक पिताजी लोकनि विशेषतः हमरा सभक दिससँ बहस—मुवाहिसा चलबैत रहथि। अन्ततः मोकदमा प्रोफेसर लोकनि अपनेमे सुलह—सलूक करथि, इत्यादि आदेशपूर्वक खारिज भेल।

तकर बादसँ बाड़ीक टाट—जाफरी घुसकैत—फुसकैत, जे रास्ता चुनाव आदिक प्रसंगमे जीप— मोटरक दौड़ानमे छल से कटैत—छटैत पैदलो चलबायोग नहि रहल। अन्ततः फाटक धरि हुनक असार—पसार बढ़ि गेल। हमरा लोकनि दोसर पड़ोसीक कृपा—सहानुभूतिए चचरी माध्यमे घरसँ बहराय लगलहुँ। पुनः इन्क्वायरी पूर्वक रास्ता खोलबाक मोकदमामे अनुकूल डिग्री भेने आब पुनः विधिवत् रास्ता खुजबाक प्रक्रिया जारी भऽ रहल अछि। अद्यतन स्थिति धरिक घटित घटना यैह। आवास—कांड खण्डम् समाप्तम्।

पुरना डेरा

राजकुमारगंज नवका डेरामे आबि गेलापर पुरना कटहलबाड़ी महल्लाक राज—एरियाक डेरा खाली भेल। हमर पूर्वसहचर रघुनाथजी ओहिठाम रहिते छलाह, हुनक आवर्यात एहू डेरापर रहिते छलनि। पाछाँ मित्र नूनूबाबू दरभंगा डेरा खसौलनि तँ स्वभावतः ओहिमे रहय लगलाह। केओ कदाचित् परिचित—वर्ग कार्यार्थी आबथि तथा कोनो सम्बन्धी वर्गक विद्यार्थी पढ़य आबथि तँ निर्देशानुसार ओतय रहल करथि। किछु प्रेसक फाजिल सामान सेहो ओतय राखल रहैक। किछु वर्षक बाद नूनूबाबू आग्रह—ग्रहित होथि जे 'हम चाहैत छी जे ओतय अहाँक नामे एक सुभ्यस्त घर बनाय 'सुमन—सदन' नाम राखि हमहु रहल करी। हमर एक कन्या छथि, समीपे चतरिया देहातमे कवि मोहन जीक पुतोहु, जे अहीं द्वारा ओहि परिवारमे गेलीह, तनिको दरभंगामे रहबाक इच्छा छनि, तनिकहु निर्वाह होइत रहतनि।" हम सुनैत चली, परंच हुंकारी नहि भरि सकलिअन्हि। मन—मोदक भने चलैत रहओ। किछु दिनक बाद भूपेन्द्रक विचार भेलनि जे ओतय घर नव ढंग बनाओल जाय, तदनुसार ओ आंशिक घेर—बेढ़ो करय लगलाह। परंच एक उद्दंड समाङ, जे किछु दिन हमरो प्रेसमे काज सिखथि, से कने ओतय उनट—फेर कय चलथि। एम्हर पड़ोसक मास्टर राधाकान्तजी जे तत्काल इन्स्योरेन्समे काज करैत सपरिवार एतय रहथि, जनिका संग राजसँ डेरा—जमीन बंदोबस्त नेने रही, हमरे पैरवीपर हुनको बगलक भूमि बंदोबस्त भेल छलनि, ओहो एहि पर टक्क लगौने छलाह।

एही बीच हमर दौहित्री आशा आबथि,- जमाय केसरीनाथ झाजी (किरणजीक सिविल सर्विसी पुत्र) तथा हमर पौत्री जयन्ती, ई दूहू दौहित्री ओ पुत्री आग्रह

कयलनि, ''हमरा दूहू गोटेकें ओ भूमि दी, घर बनायब।'' हम कहलिअनि, अहाँ सभक तँ थिके।

संयोगवश जाहि दिन साहित्य अकादमीक दरभंगा–बैसक 'मैथिली मे रामायण' विषयपर आयोजित छलैक, मैथिली विभाग (मिथिला युनिवर्सिटी)क सहयोगितामे, सहसा ओही दिन सबेरे केसरीनाथबाबू (तत्कालीन सप्लाइ आफिसर मधुबनी) फीता– जंजीर आदि सामान नेने जमीनपर पहुँचि गेलाह। हमरा छुट्टी नहि, हमर अनुज भूपेन्द्र बाबू दूहू बाप–पूत ओ अरविन्द (हमर दौहित्र) हुनका संग जमीनपर नाप–जोख लेल पहुँचलाह। ओतय राधाकान्तजीक युवक बालकगण तेना बखेड़ा मचौलथिन जे मारिपीटक नौबति पहुँचि गेलैक। अरविन्द कने तमतमाह, सहसा भिड़ैत, अंतमे घायल भेल, डेरा फिरलाह। हम मीटिंगमे जयबा लेल प्रस्तुत। किंकर्त्तव्यविमूढ़, तावत् भविष्यक हेतु आश्वासन दैत, ओही स्थितिमे सेमिनारमे सम्मिलित भेलहुँ।

पश्चात् राधाकान्तजीक आ' हमरो परिचित व्यक्ति थोड़थाम लगबैत दुःस्थितिकें शान्त कयलनि।

तत्काल नाप–जोखक सामानो पड़ोसी हड़पि रखलनि। बीच–बचावक लेल देवनारायणबाबू, बैजूजी प्रभृति उद्यत होइत गेलाह। भेंट कयलापर तत्कालीन सदर एस0 डी0 ओ0 सरजमीनपर इन्क्वाइरी कऽ गेलाह। बखेड़ा नहि करबाक ताकीद कऽ गेलथिन।

दिन बितैत गेलैक, नूनूबाबू अपन डेरा बगलेक सटले खंडमे राजकर्मचारीक डेरेमे रखने रहथि। हुनक एक समाङ एम्हर कोनो व्यावसायिक धंधाक क्रममे लागल, किछु दिन फिरोजपुरक चूड़ीक सप्लाइक प्रसंग सूरसार करैत। एक दिन हुनक अनुपस्थितिमे खिड़कीकें तोड़ि ओहि घरमे राधाकान्तजीक समाङ कोठलीमे धमकि गेलाह। हिनक प्रवेशो बंद। बादमे हमरा खबरि चलल जे ताही संग ओ मध्य आङनमे सेहो घर–ओसारा तानि रहल छथि। अकच्छ भऽ ई विचार करय लगलहुँ, आब अधिक बम–बखेड़ासँ नीक जे एकरा उचित मूल्यपर कतहु बेचिए ली। बीचमे यदि केओ क्रेता देखय–सुनय आबथि तँ ओ पड़ोसीक समाङ तकरासँ गारि–गलौज कऽ बैसथि। एहि बखेड़ामे इच्छुको व्यक्ति विरत होथि। नूनूबाबूसँ कने गप्पो चलय तँ ओहो बखेड़ा देखि–शिथिल भऽ जाथि। किन्तु कानूनी जमीनपर एना बखेड़ा कयने की भऽ सकैछ, से हुनको संगी–साथी विचार देथिन, जे बखेड़ा नहि कऽ दऽ लऽ कऽ अहीं लिखा लिअऽ।

अन्ततः एक दिन हमर पड़ोसी ओ हुनक इन्स्योरेन्सक सहकर्मी जगन्नाथ पाठकजी एकाध व्यक्तिक संग तकर प्रस्ताव लऽ कऽ पहुँचलाह। हमर उत्तर छल, हुनका तँ जोर–जबर्दस्तीक भरोस छनि। ओ उचित मूल्य चुकौताह ? ओ लोकनि तकर विश्वास दैत कहलनि जे भूमिक मूल्य एक लाख लऽ कऽ लिखि दिअनि। हमर उक्ति छल जे अस्तु, परंच हमर घरक वस्तु सभ जे कोनो दखल कयलनि, नष्टो

कयलनि, तकर दंडो तँ किछु भरबाक चाहिऐन। कहलनि सेहो होयतैक।

तदनुसार क्रमहि साक्ष्य संग ओ आंशिक देब आरंभ कयलनि ओ अंतमे रजिस्ट्री हेतु लैओ गेलाह। ओतय किछु पेमेंटक संग काज संपन्न भेलैक। तदुत्तर किछु अंश औरो लैत-दैत ओ दस्तावेजी निकासक हेतु रसीदपर दस्तखत कराय लय गेलाह। तकरा बादसँ भेंटो नहि। विशेष देबाक गप तँ फराक रहओ। रजिस्ट्रीक शेषो अंशो नदारद। पाछाँ पाठकजीसँ भेंट भेलापर कहिऐन तँ कहथि, पेन्शन भेटबालेल छनि, हमर हाथेमे छथि। हुनको हाथसँ कहिआ कोना छूटि खेलयलाह, तकर कोनो चर्च-वर्च नहि। हम निरस्त छलहुँए। इति भूमिकाण्डम्।

विधायकताक हेतु निर्वाचन प्रसंग

पूर्वोक्त गति-विधिक कारणे संघक संगठनात्मक एवं राजनीतिक कर्मठ कार्यकर्त्ता लोकनिक सम्पर्क रहने 62 इ0मे विहारक तृतीय विधान-सभाक चुनावक प्रसंग छलैक। हम तँ केवल संस्थाक सहयोगी सदस्य छलहुँ, परंच कर्मठ कार्यकर्त्ता लोकनिमे प्रमुख सर्वश्री नरेन्द्र मिश्रजी, प्रचारक नवीनजी, हरिकान्तजी, अनिरुद्धजी, रमाकान्तजी, रामबहादुरजी, सुन्दर राजपाल, रामदास राजपाल, चन्दरजी, त्रिवेणीजी, जगदीशजी प्रभृतिक जोर-दवाब पड़य लागल जे प्रत्याशी होअय पड़त, नकार करितहुँ अन्ततः स्वीकार करय पड़ल। श्रीमंत पाठक प्रभृति साहित्यिक बन्धु लोकनिक जोर-सोरसँ प्रचार कनवासिंग चलि पड़ल। संयोग एहन जे हमर साक्षात् पड़ोसी ओकील रामेश्वर बाबू कांग्रेसक दिससँ प्रत्याशी घोषित भेलाह। ओ एकदिन हमरा आग्रहपूर्वक कहलनि जे अहाँ हमर साक्षात् प्रिय पड़ोसी थिकहुँ, हमरा हेतु खटय पड़त। हम गुम भऽ गेलहुँ, बारंबार अनुरोध कयलापर कहलिअनि, हम बड़ असमंजसमे अपनहि पड़ल छी। जनसंघ हमरे प्रत्याशी बनबय चाहैछ। ओहिसँ मुक्त रहब तखन किछु कहि सकब, ओ चकित भऽ उठलाह, हमरा तँ तकर आभास नहि छल। आब बेशी की कहू? औरो जे निकटवर्ती बन्धु लोकनि छलाह से चकित छलाहे। बहुतो नागरिक परिचित तथा म्युनिस्पल-वाइस चेयरमैन लालबाबू कहि उठलाह जे किछु पंडित लोकनिक टा वोटक बलपर ई एहिमे कूदि पड़ल छथि। अन्ततः कांग्रेससँ उक्त पड़ोसी ओकील रामेश्वरबाबू आ' दरभंगा खाँ साहेबक ड्यौढ़ीक कोनो खान साहेब मुख्यतः उमेदवार भेलाह। हम साधन-हीन, कार्यकर्ता लोकनिक साहाय्य बलपर घूम-फिर करय लगलहुँ। पहिने पैदल ओ रिक्सापर, श्रान्त-क्लान्त होइत बीचहिमे दुःखित पड़ि गेलहुँ। निकटक डाक्टर देखलनि, जे रामेश्वर बाबूक घनिष्ठ मित्र, सभ संशयालु- मनहूस। ओहि समय संघक अध्यक्ष पद आग्रह-गृहीत भऽ गछने रहथि से दुःखिते अवस्थामे अपन त्यागपत्र थम्हा गेलाह। सभ निरस्ते, तथापि नरेन्द्रजी लोकनिक यत्नें दवाइ आदिक इंतिजामे, देवें-सेवें हम नीके भेलहुँ ओ पुनः चुनाव मैदानमे रिक्शेपर बैसल घूम-फीर करी। तावत् बाबू समरेन्द्रनारायण चौधरी

अपन जीप नेने नूनूबाबू–चुम्माबाबू गामसँ किछु नवयुवकक गिरोह नेने हमर पिताजीसँ चुनावी गीत बनबौने जुमलाह। लोकल बोर्डक पूर्व चैयरमैनक बालक चन्द्रशेखरबाबू भूपेन्द्रक प्रियमित्र सेहो सबन्धु जुटि गेलाह, भातिज समाङ माधवेन्द्र नारा लगबैत संग घुमथि।

ओही वर्ष शीतलहरीक प्रकोप जारी भेलैक। अन्हरोषेसँ कार्यकर्ता लोकनि शीत–कंपित गाँव–घर घुमैत चलथि, जाहिसँ किछु सहानुभूति–आकर्षण बढ़लैक। कार्यकर्ता अपन खर्च–वर्चक बलपर एक साधारण स्थितिक नोकरिहाराकें तेना समर्थन दैत रहलाह जे जीत नहिओ हो, किन्तु सेकेंड पोजीशन आनि देलनि। साधन–सम्पन्न खाँ–साहेब मुस्लिम बहुल क्षेत्रहुसँ तेसर स्थान पौलनि। कार्यकर्ता लोकनि मनहूस नहि भेल रहथि। ततबा बुझना गेल। जनसंघक नाम ओ दीपक चिह्न इलाकामे चिन्हार तँ भऽ गेलैक।

समय कटैत गेल। अग्रिम चुनावक बेर 1967मे पुनः हम कार्यकर्ताक दृष्टिमे छलहुँए। किन्तु ओही बेर हमर पूज्य पिताक स्वर्गवास भेने हम मुक्त रहलहुँ। दरभंगाक सम्पन्न पूजीवाला, ओ बहेड़ी हाइस्कूलकें स्थायी भवन–भूमि देनिहार उत्साही स्वयंसेवककें प्रत्याशी बनओल गेल। भोलाबाबू ओहि समय जनसंघक जिला–अध्यक्ष छलाह, फंडक सौविध्य रहैक, चुनाव–प्रचार चललैक, परंच परिणाममे एहिबेर संघकें तेसर स्थाने भेटि सकलैक। तकर किछु मनहूसी रहलैक। पुनः 72क चुनावी दंगल आरंभ भेल। हमरे प्रत्याशी बनाओल गेल। एहि बेरक रंग–ढंग बदलल छलैक, समर्थन जोर–सोरसँ चलल। नगरक समीपी गामक उनटि पड़ने, नगरक तैआरी रहने जनसंघकें जीत अनेको ठामसँ भेलैक।

क्षेत्र विस्तृत रहने, संख्या बाहुल्य रहने कतोक समर्थक प्रचारकक नाम अनुल्लिखिते, ताहि हेतु क्षम्य छी।

विधायक–जीवन

1972 मार्चसँ '75क अप्रैल धरि विधायक–जीवन रहल। पचहत्तरिक बजट अधिवेशनक बीच जखन विधानसभासँ इस्तीफा देबाक एवं ज ाप्रकाशजी तथा इन्दिराजीक बीच राजनीतक पत्राचारक बाद आन्दोलन उठलैक जकरा जे0 पी0 आन्दोलन कहल जाय लगलैक, पहिने एम0 एल0 ए0 लोकनिक बैसकमे त्यागपत्रपर विचार कयल जाय लगलैक। किछु त्यागपत्रक विरुद्धो विचार रखनिहार छलाह, हमरा पूछल गेल तँ हम स्पष्टीकरण कयल जे हमरालोकनि पार्टीक दिससँ सदस्य बनल छी, अतएव पार्टीक निर्णये शिरोधार्य थिक। तदनुसारे कार्य आरंभ भेलैक। मार्चमे विधान–सभाक घेराबंदी कयल गेलैक। हमरा लोकनि निर्णयानुसारे विरोध–प्रदर्शनक बीच बाहर आबि गेलहुँ। वेलक नाराबाजीक विशाल प्रदर्शनमे प्रदर्शनकारीक मध्य सम्मिलित भऽ सभाक चतुर्दिश घेर–बेढ़ कयनिहारमे सम्मिलित भेलहुँ। भीड़पर

गोली चललैक, बीच–बचाव करैत पुनः निकटवर्ती आर–ब्लाकक अपन 6लाइनक 7म आवासमे फिरलहुँ। उत्तेजना–दमन बढ़िते गेलैक। पहिने पानि– प्रहारक बाद गोली प्रहार आरंभ भेलैक। एकर व्यापकता तेना छलैक, एकटा छर्रा हमरहु डेराक जंगलाक शीशाकें छेद करैत बहरायल। हमरा स्मरण अछि जे ओहि समय कैलासपतिजी एवं गेविन्दाचार्यजी हमरहि आवासपर आसीन भऽ आन्दोलनी चर्चामे निरत छलाह। दू–घंटा धरि ई दृश्य चललैक, भीड़ छँटलाक बाद सभ यथास्थान प्रत्यावर्तित होइत गेलाह। ई तँ आद्यन्त– अवधिक प्रसंग भेल।

मध्यवर्ती विधायक जीवन दू वर्षसँ अधिके रहल। स्मरण अछि, विधायकत्वसँ पहिने हम कहिओ विधान–सभा परिसर नहि देखने छलहुँ। सदस्यताक हेतु शपथ ग्रहणक प्रथम दिन जखन सभा–भवन प्रवेश कयलहुँ तँ जिज्ञासोत्तर कहल गेल जे मातृभाषा–मैथिलीमे शपथ ग्रहणक विधान नहि छैक, तखन अंग्रेजी–हिन्दी–संस्कृत आदि। हम संस्कृतमे शपथ ग्रहण कयल।

एहि ठामक विधि–व्यवस्थासँ अनभुआर तँ छलहुँए। उछल–कूदक उपचारक कने परहेजे रखैत रहलहुँ। तें अखबारमे बेसी चर्चित नहि रही। हँ, प्रथम–प्रथम मिथिला विश्वविद्यालयक प्रसंग वा मिथिला–मैथिली समस्याक प्रसंग हमर कोनो प्रश्न मौखिक रूपें विचारार्थ सदनमे आयल, तखन जखन हम मिथिला–मैथिली, तिरहुत – तिरहुताक प्रसंग चर्चा आरम्भे कयलहुँ कि वी. पी. मण्डल तमकि उठलाह, 'तिरहुतिया जिस राजमे पैठा उसे उखाड़ स्वयं जम बैठा' आदि फकरा पढ़ि रोध उत्पन्न कऽ बैसलाह। हम कने नव, धखाइते ताहिपर बीचमे टोक–चाल, कने थमकि तँ गेलहुँ, परंच पाछाँ किछु सम्हरि कऽ बजबो कयलहुँ। स्मरण अछि, विधानसभा–अनुभवी अपन सुपरिचित राधानन्दनजी तखन कने उत्साहित कयलनि। ओहि दिनसँ जेना हम मंडलजीक ऑखिपर चढ़ि जाइ।

विधान–सभामे प्रथम दिन, छठम–विधान सभा सदस्यक सामूहिक चित्र लेलाक बाद व्यक्तिशः परिचयपत्र प्रस्तुत करबाक प्रक्रिया चलल। विधायक–कक्षमे सचिवसँ अपन नाम–क्षेत्र–संख्याक सूचना कय परिचय–कार्ड लेल। तदुत्तरे विधान–सभाकक्षमे प्रवेश आदिक सुविधा उपलब्ध होइक। से–सभ सम्पन्न कराय, आफिसक सचिव सुपरिचित गोविन्द मोहन मिश्रजीसँ भेंट कयल। ओ सदस्यक अपन कर्त्तव्यताक उदारतापूर्वक विवरण देलनि। प0 हरिनाथ मिश्रजी अध्यक्षे छलाह। ओ हमरा पुस्तकालय–उपसमितिक सदस्य मनोनीत कयलनि, तदनुसार अपन कार्यक्रम चलैत रहल। केन्टीन आदिक सुविधासँ अपन तथा आगत अतिथिकें सत्कृत करबाक प्रसर भेटैत रहल। हम बहुधा एक कात उपवेशिकामे बैसल करी। वितरक–परिचारकक विशेष रुखि एहि हेतु रहय जे ओ सभ अध्यक्षक लग देखल करय। एहि ठाम बनल मधुर–खाद्य बाजारभावसँ बहुत सस्त तें कखनहु डेरोपर से लऽ जाइ जे आतिथ्यमे विशेष सुविधा हो। विधानसभासँ पृथक् नव सचिवालय दूर रहैक, कार्यार्थ ओतहु जयबेक हो। ओहिठाम शिक्षामन्त्री विद्याकर कविजीसँ विशेष

घनिष्ठता भेल। ओ संस्कृत शिक्षा सुधार समितिक सदस्यो बनौलनि। ओहि समितिमे प0 ब्रह्मदत्त द्विवेदी सेहो सदस्य रहथि। हम हुनका प्रवेश करितहि प्रणाम कयल। विद्याकरजी जिज्ञासु भेलाह। हम कहलिअनि, ई हमर गुरु छथि। म0 म0 कृपालुजीसँ पढ़वा काल ई हमरा चेतवैत रहथि।

विधायक भेलाक बाद इहो कर्तव्य बुझना गेल जे अपन निर्वाचन क्षेत्रमे घुमी– फिरी। ओहि समय विधायक हेतु कोनो यातायात लेल शासकीय सुविधा नहि छलैक। कहुना गाड़ीक व्यवस्था कऽ लग–पासक गाम चललहुँ। परंच ओतय स्वागतार्थ भोजनादिक व्यवस्था कयनिहार घंटा-घंटा समय लगा देलनि। एकाधे गाम–टोल जा सकलहुँ। अगिलो दिन सैह क्रम रहल। पाछाँ एहि क्रमक भ्रमणमे उत्साहित नहि भेलहुँ। अथापि किछु प्रखंडक गाम–गमइक भ्रमण कयल, सभा–गोष्ठीमे कर्तव्य सुनलहुँ, अपन गति–विधिपर प्रकाश देलहुँ। परंच पूर्ण सफर नहि सफल भऽ सकल। डेरापर अबतहिँ, घेर–बेढ़मे पड़ि जाइ जे एहि जीवनक अभिशाप वा वरदान जे बुझल जाय।

विधायकताक आन्नदोल्लास जनिका जे बुझि पड़ौन, परंच हमरा तेना नहि बुझना गेल। आर. ब्लाकमे रहबोक समय लोकक घेर–बेढ़ ओ दरभंगा आबी तँ तखनो तद्वते, किछु अधिके कहबाक चाही। क्षेत्रीय लोकक अभाव–अभियोग सुनबे बेसी करी, तदर्थ कोनो उपाय तँ नहि लगा सकी। केवल प्रश्न द्वारा ओहि सब समस्यापर लिखित उत्तर प्राप्त कऽ ली। तकरो प्रचार करबाक साधन नहि। तें बेसी स्थानीय लोकक अरुचि–विरुचि सैह सुनय पड़य। केवल डेरा–कार्यालय भेट–घाँट करबेमे आँट होइत रही। कखनहु हो जे किएक लोक एहि लेल एतेक बेहाल होइत रहैछ।

एतबा अवश्य जे जँ कतहु सभा–समिति पहुँचलहुँ तँ आदर–सत्कारक अवसर भेटैत रहय। कोनो अफसरसँ गप चाही तँ से सुलभ हो। जिला वा प्रखंडक कोनो मीटिंगमे जाइ तँ अध्यक्षता करय पड़य। किछु समस्योक समाधान करा सकी। पैरबी–पैगाम तँ जनिका–तनिका हेतु लगबहि पड़य।

जहल–जीवन

कांग्रेस आन्दोलनमे जेलकें कृष्णजन्म–मंदिर कहल जाइक। हमर बहुतो बन्धु ओकर तीर्थयात्रिओ भेलाह। सुहृद्वर गोपीकान्तबाबू गाँधीजीक साबरमती–आश्रमसँ फिरि एतय आन्दोलन–क्रममे गिरफ्तारी देलनि। प्रियबर देवनारायणबाबू सेहो कारा प्रवेश कयलनि। परंच हम ताहिमे पछुआयले रहलहुँ। पिताजीक अनिच्छा हमर इच्छा–चक्रपर ब्रेक बनल। दरभंगा राजक सेवा अयलापर राष्ट्र–आन्दोलनीक सम्पर्कमे रहनहुँ , कांग्रेसपर बंधन लगने ओकर कागज–पत्र अपन डेरामे सुरक्षित रखनहुँ, राज–कर्मचारी रहने, जेलखानाक चहारदिवारिए टा सरकारी अस्पताल लग रहने,

निहारि चली। पाछाँ जखन विहार विधान सभासँ इस्तीफा देलापर, जयप्रकाश बाबू द्वारा आपातकालीन घोषणपर, इन्दिराजीसँ पत्राचारक बाद सत्याग्रहक जनक्रान्तिक घोषणा कयलनि, जनता पार्टी बनल, जे0 पी0 आन्दोलन भेल। सत्याग्रही वंगजी लोकनिक प्रच्छन्न बैसकमे दरभंगा–समस्तीपुर–मधुबनी आदिक गुप्त बैसारमे सम्मिलत होइ, तखन चतुर्मुखी क्रान्तिक सिलसिलें ओ मुक्त बैसक सेहो विधिवत् दरभंगाक सर्किट हाउसमे चलैक। तदुत्तर हुनक किछु विचारकें अपना प्रेसमे छपाय सौराठ–सभा लय गेलहुँ। ओतय वितरित कयलापर फिरलहुँ तँ डेरापर ज्वरी भऽ गेलहुँ। दू डिग्री ज्वर– तापमे पड़ले छलहुँ। तावत् डेढ़ बजे रातिमे डोर खटखटायल, केबाड़ खोलल गेल तँ पुलिस इन्सपेक्टर सिपाहीक संग गिरफ्तारीक कागज देखौलनि। ज्वरक स्थिति देखला–कहलापर कहलनि, जे सब व्यवस्था ओतहु होयतैक। बाहर भेलहुँ तँ देखल जे सड़कोपर सिपाहीक ताँता जकाँ। शेष रातिभरि थान्ना फाटकमे बेंचपर। दोसर दिन विधिवत् अस्पताल पठौल गेलहुँ, पेइंग वार्डमे राखि चिकित्सा चलैत। किछु दिन धरि ओतहि रहि, अनुज्ञापर स्वजनसँ भेंटो चलय, बनल भोजन डेरोपरसँ जाय, चिन्हार सिपाहीक संग अस्पताल एरियामे घूम–फिर करबो करी। तावत् प्रो0 साहीजी सेहो वंदी रूपमे आबि गेलाह ओ पुनि दूहू गोटे जेल पठा देल गेलहुँ। विश्वविद्यालयसँ ओहि अवधिमे सस्पेंडो कयल गेल।

जेल–जीवन आरंभ भेल, नवे अनुभव। ओतय एही सब प्रसंगें आनो व्यक्ति पहुँचय लगला, मधुबनीक समाजवादी ओकील विश्वनाथजी, समस्तीपुर सार्वजनिक आन्दोलनक विनोवाजी नामे प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता एवं आनो कतोक सज्जन पकड़ि कऽ आनल जाथि। संघक नैष्ठिक कार्यकर्त्ता सभ अयलाह। एक गोटे फलाहारी रहथि। पानिओ नदीक पिअनिहार। एक दिन पूरापूरी निर्जले, निराहारे। दोसर दिनसँ हुनका बाहरसँ फल आदि जल पर्यन्त पहुँचयबाक आदेश निर्गत भेलनि। ओतय मीरा होटलक मालिक सेहो छलाह ओ पान–मसाला, गप्प–रिसालासँ विनोदात्मक वातावरण बनेने रहथि।

ओतय दीर्घकालिक अनेक कैदीक व्यवस्था–निगरानीमे यथासंभव राजनीतिक कैदीक अनुरूप भोजनादिक व्यवस्थ चलल, तखन आश्वस्त होइत गेलहुँ। एकटा आन्दोलनी महिला सेहो पहुँचि गेली। शाहीजी भोजनविन्यासी, देवीजी सेहो छनन–मनन, कोनो तरल–भुजल करथि। हमर पैतृक गामक एक किशोर बेटिकट रेल–यात्री पकड़ल गेलाह। पहुँचलापर परिचय भेने ओहो आश्वस्त सन परिचर्या करय लागथि। ओही सिलसिलामे अनेक स्वयंसेवकोक जेल–आगमन भेल। बिना ध्वजक शाखा–प्रार्थना सेहो चलय लागल। स्नान–गृह लग एकटा खपरैल दालान सन रहैक, ओहिठाम सन्ध्या–गायत्रीक स्थान जमा लेल। कष्ट छल पैखानाक गन्दगीक, अन्हरोखे पहिने पहुँचि नहि पाबी। बादमे जेना–तेना कहुना निबहि जाइ।

बीचमे जेल निरीक्षणमे आदिवासी कलक्टर महोदय परिचित भऽ चुकल

छलाह। ओ व्यवस्था पुछथि। और सब ठीक, केवल शौचालयमे सुधारक प्रसंग कहिअनि। आश्वासन देथि। परंच, हमरा सभक बहरयलापर सुनैछी जे आधुनिक ढंगक बनबो कयलैक।

जेलकें जतेक दु:सह भयानक बुझैत रहिऐक ततेक अनुभव नहि भेल। परंच एकटा युवक भेटल जे जेल–जीवनक तेना आदी भेल, बिन कमयने–खटयने खान–पानक सुविधा पौने ओ जेलसँ बहरा कऽ कोनो जानि–बुझि कऽ अपराध कऽ बैसय जाहिसँ फेर एतय पहुँचि जाय। दीर्घकालीन कैदी सब अकछायलो रहय। ओ सब पूर्व विधायक बुझि, आन्दोलनी बूझि, कने दोसर दृष्टिएँ देखल करय जे हिनका लोकनि द्वारा कदाच कोनो सुविधा वा छूट बादोमे भेटि सकैछ, तें कने आदरोभाव देखबय।

परंच जेलक एकरस जीवन, बाहरी लोकसँ कदाच फाटकपर पर किछु मिनटक भेट–घाँट। बहरयबाक तृष्णा।

अन्ततः लगभग छौ मासक बाद हमर अभियोग–पत्र जखन कोर्टमे पेश भेलैक, तखन कोनो तेहन अपराध नहि। तें जमानतिपर छोड़ि देल गेलहुँ।

जेलहिक अवधिमे हमरा विश्वविद्यालय–सेवासँ अवकाश ग्रहण करय पड़ल। एकर बादो कतेक बेर जेल–यात्रा करैत रहलहुँ, परंच एकदिना–दूदिना। कोनो धरनापर, जुलूस सभाक रोकपर। अनेक कोर्टक घेरावपर शत–शत संख्यामे जुलूस संगीक संग साँझ गेलहुँ भोरेमे छोड़ि देल गेलहुँ। अधिक काल विद्यापति सेवा संस्थानक आन्दोलन बैजूजीक बड़ी लाइन दरभंगामे बनयबाक प्रसंग रेल–रोकपर अनेकधा देवनारायणबाबू लोकनिक सङोरमे जाइत–अबैत रहलहुँ। जेल–जीवन एतबे संक्षेपहिं।

सांसद जीवन

मार्च 1977–छठम संसदक अवधि पूर्णकालिक नहि, सवा दू वर्ष संचालित रहलैक। पाँच सै सँ उपरे सदस्य, वर्षमे दू बेर राष्ट्रपतिक भाषणक प्रसंग एवं बजटपर सदस्यकें बजबाक अवसर देल जाइक। ओहि अवसरक हमहु उपयोग कयलहुँ। तकरा प्रचारार्थ प्रोसिडिंग्ससँ अविकल उद्धरण करबाय प्रकाशितो कराओल, जे पुस्तिकामे उपलब्ध अछि। से जतबे गोटे पढ़लनि, तकरा संवर्धितो कयलनि। प्रश्नक संख्या प्रचुर रूपें रहल। मौखिक प्रश्नावली तँ लौटरीक आधारपर अबैक, सेहो अवसर भेटैत रहल। लेखबद्ध प्रश्नावलीक संख्या प्रचुर छल। ओहि सभक प्रकाशन रेकर्डसँ उतरबायब व्यय–साध्य तें से ततेक संभव नहि भेल।

संसदमे प्रथम ओ दोसर दिन सर्वथा वयोवृद्धक अध्यक्षतामे जे नन्दाजी छलाह हुनक अध्यक्षतामे शपथ ग्रहणक काज चलैत रहलैक। हम संस्कृतेमे शपथ ग्रहण कयलहुँ। मातृभाषामे तखनहि केओ शपथ ग्रहण कऽ सकैत छलाह यदि ओ

तदतिरिक्त कोनो भाषा नहि बजैत होथि वा नहि बाजथि। नवीन सदस्य लोकनिक सामूहिक रूपमे चित्र लेल गेलैक। पश्चात् अपन परिचय–पत्रक हेतु व्यक्तिगत छायाचित्रक बाद संसदक प्रकोष्ठमे सचिवक माध्यमे प्रस्तुत कराय कक्ष आदिमे प्रवेश–निर्गम आदिक सौविध्य प्राप्त करब संभव भेल जे यात्रा हेतु सुविधा भेलैक।

हमरा आसन–संख्या 50 वितरित भेल, जे पदाधिकारीक बादे चलैत छल। हमरासँ पहिने आसन छलनि श्री रामजी सिंहकें, जे विशेषतः वादानुवादमे विशेष भाग लैत छलाह। समीपे सीतामढ़ीक महंथ दासजी छलाह, हुनको भाग विशेष रहैत छल। हम मध्यममार्गीय छलहुँ, आवश्यक भेलेपर टोकाचाली करैत रही। कने ताहि लेल राग–उपराग सेहो सुनी, परंच अपन स्वभावसँ विवश रही। बेसी उछल–कूद, मध्यान्तरमे व्यवधानसँ परहेज रखनिहार, तें कखनहु दर्शक दीर्घासँ घुरनिहार श्रोताक उपालंभो सुनय पड़य तथा अखबारी चर्चासँ वंचितो रहय पड़य।

सांसदकें बहस–मोबहसाक सुविधाक लेल संसद् सचिवालयसँ सुविधा छैक जे कोनो प्रसंगमे पत्र–पत्रिका लेखादिक सामग्री पुस्तकालय विभागसँ माङ कयलापर प्राप्त कराओल जाइत छैक। ओतय जे तार्किक विचारव्यसनी सदस्य छथि से लाभ उठबैत छथि।

संसद भवनक वाम कक्षमे अति अभ्यस्त द्रुतलेखी स्टाफ रिपोर्ट लिखैत रहैत छथि जे प्रोसिडिंगमे दर्ज होइछ। ओतय मन्त्री लोकनिक प्रश्नोत्तरक समय सुविधो पहुँचबैत रहैत छथिन। हुनक एकान्तता चमत्कारक रहैछ। दक्षिण भागमे देश–विदेशक अतिथि–दर्शकक बैसार रहैछ। ऊपरमे तीन कात दर्शकक गेलरी, सुनबालेल हिन्दी–अंग्रेजी एवं मूलभाषाक श्रवण–यंत्रक सुविधा लागल बैसक रहैछ। बाम भागमे दोसर सदनक सदस्यक आसन रहैछ। सटल हालमे सदस्य–पूर्वसदस्य टा बैसैत छथि। बाहरी व्यक्तिक प्रवेश निषिद्ध। उनका यदि सदस्यसँ भेट चाहिऐन तँ सटल ओसारपर तकर व्यवस्था रहैछ।

सांसद जीवनमे एक औरो सुविधा भेटल। पार्लियामेंटक लाइब्रेरी उल्लेखनीय। कहल जाइछ जे यदि ओतय पुस्तकाधार आलमारीकें यदि पाँती लगा देल जाय तँ दू मील जगह छेकि लेतैक। किछु दिनक बाद ओम्हरो दृष्टि गेल। समय भेटने ओतय पढ़बा लेल पहुँची। ओतय किछु एहनो साहित्य छैक जकरा पढ़ब नियंत्रित छैक। लाइब्रेरियनक अपेक्षा–सहानुभूतिवश हमरा किछु तेहनो पुस्तक देखबाक मौका भेटल। एकटा पुस्तक छलैक, तैमूरनामा। ओकरा उनटौलहुँ–पुनटौलहुँ, हृदय विदीर्ण भऽ उठल। मुस्लिम आक्रमणक आरंभ केहन नृशंस, क्रूर, दानवीय भावनासँ भरल छलैक, तकर झलक भेटल। फेर बाबरनामाक रुखि दोसर छैक, ओहिमे सहृदयता–सहानुभूतिक भावना झलकैछ। किन्तु बाबरनामा पढ़लाक बाद कल्पना भेल जे कदाचित् एहि सब उत्तरकालीन नामामे किछु सद्भावनाक दृष्टिएँ सुधार सेहो कयल होइक। पुस्तकालयक अतिरिक्त संसदक वाचनालयमे वर्तमान पत्र–पत्रिकाक प्रत्येक भाषाक संवादपत्र अबैक। ओतय जखन–तखन जाइ तँ अनेक प्राचीनो

सांसद नेताकें देखिअनि। मधोकजी लोकनिसँ बहुधा भेट भेल करय। औरो प्राचीन–नवीन सांसद भेटि जाथि। हुनका संग चाय–काफी पीबाक तथा दूध–दहीक व्यवस्थित स्टालपर सहभोजनक अवसर भेटि जाय। संसदक उपसमितिक संगठनमे शिक्षा उपसमितिक सदस्य छलहुँ। रेलवे उपसमितिमे एकबेर रेलमंत्री मधु दंडवतेसँ विनोदमे कहलिअनि, 'अहाँ अपन नामकें सार्थक करैत कतहु तँ मधु बाँटैत छी किन्तु हमरा सभक दरभंगा–क्षेत्रकें दंडे दैत आयल छी। एहिपर ठहक्का मचल, अखबारमे चर्चित भेल।

संसदक उपसमिति जखन संघटित भेलैक, तखन गृह विभागक अन्तर्गत राजभाषा प्रचार समितिक वृहत् संगठन सेहो कयल गेलैक, दस–दस सदस्यक तीन भागमे। हम जाहि विभागमे मनोनीत भेलहुँ ताहिमे वित्त, यातायात आदि किछु प्रमुख भाग छलैक। गृह विभागीय ओम मेहताजीक नेतृत्वमे संघटित विभागमे हम पड़लहुँ। दस सदस्यमे एकटा कुमर मुहम्मद अली सेहो छलाह। हम हुनका पुछलिअनि, 'कुमर तँ हिन्दू–राजकुलमे लगैत छैक, से अहाँमे कोना ?' ओ कहलनि, 'हम तँ राजा भोजक वंशधरमे छी तें हमरा खानदानमे ई उपाधि चलैत अछि।' एहि कुल–परम्पराक गर्व रखनिहार मुस्लिम सदस्यक प्रति आकर्षण बढ़ल, पाछाँ हुनकासँ घनिष्ठतो बढ़ल। संयोगवश वासा सेहो एके ठाम अड़ोस–पड़ोसमे भेटल। ताहिसँ औरो स्नेहाबद्ध भेलहुँ जे पूर्ण सदस्यकाल धरि कायमे रहल।

समितिक एक सदस्य छलाह हर्षदेव मालवीय, महामना मालवीयजीक भातिज, हुनकोसँ घनिष्ठता रहल। दोसर छलाह द्विवेदी जे उत्तर भारतसँ एकमात्र कांग्रेसी सदस्य जयी भेल रहथि, ओ कहने छलाह जे हमहीं एकमात्र कांग्रेसी सदस्य मध्य–प्रदेशसँ जितलहुँ, आ' हमरे इन्दिराजी छाँटबापर तुललि रहथि, हम एकमात्र उत्तरसँ कांग्रेसक नाम रखलहुँ। ओहो अपन घनिष्ठतर छलाह, गप–सप जमल करय। जगन्नाथ राव जोशी तँ हमरा लोकनिक नेते रहथि, गोआ–मुक्तिक महारथी तथा जनसंघक स्थापना समयहिसँ नेतृत्व देनिहार। मन अछि जे जखन हुनका एतय स्वागतार्थ मखानक माला पहिरौल गेलनि तँ कहि उठलाह 'अरे माखन के साथ मखाना खिलाओ'। जखन मखान लऽ जाइ तखन हुनका आग्रहो करिअनि।

मिस्टर फैलेरो वैह थिकथि जे हालमे गोआक मुख्यमंत्री भेल छथि। आग्रहवश सदस्य सभ हिनका ओतय गेल रही। रास्तामे एक घटना मन पड़ैछ, जखन हिनक आवासक पता एक युवकसँ सहसा पूछल गेल तँ ओ हिन्दीमे उत्तर देल, परंच जखन ओकरा बुझना गेलैक जे भाषा–समितिक सदस्य छथि, तखन जेना हिन्दी नहि बुझैत हो तेना चेष्टामान देखल गेल।

एकबेर हमरा लोकनि त्रिवेन्द्रमसँ विवेकानन्द स्मारक शिला–मन्दिर गेलहुँ। रातिमे ओतय गेस्ट हाउसमे टिकलहुँ। रातिमे कुमार मुहम्मदक फोंक–खर्राटसँ निन्द उचटि गेल तँ बाहर ओसार दिस बहरयलहुँ। देखल जे अनेक संगीन रक्षक ओतय मुस्तैद अछि। जिज्ञासापर उत्तर भेटल जे ई तमिल प्रान्तमे पड़ैत छैक,

राष्ट्रभाषा– परिषद्क यात्रा अवरुद्ध छैक। समितिक रक्षार्थ हमरालोकनि विशेष रूपें नियोजित छी। भाषावादक एहि घटनापर चकित रहि गेलहुँ। मन पड़ल जे स्वतंत्रताक बाद राजगोपालाचार्य पहिने हिन्दी प्रचारक काज एतहि आरंभ कयने छलाह। ततय ओकरे विरुद्ध स्थिति एहि प्रकारें बदलि गेलैक। हिन्दी–विरोधक झलक समितिकें बंगालोमे बुझना गेलैक। महाराष्ट्र–गुजरात आदिमे सद्भावने देखल गेलैक।

एहि उपसमितिक वृहत चर्चा एही लेल जे सांसद जीवन एही समितिक माध्यमे चलल।

एहि समितिक विशेषता छलैक जे परिधि एकर व्यापक। देशक एक छोरसँ दोसर छोर तक घुमबाक एवं भारतीय भाषा–उपभाषाक संग समन्वय करबाक दायित्व रहने, एकर मन्त्रालय पृथक् छलैक। सचिवगण आइ0 ए0 एस0 श्रेणीक, भ्रमणक सुचारु व्यवस्था। बस, रेल, वायुयान सभ मार्ग। जतय–जतय केन्द्रीय कार्यालय एवं प्रभाव–परिसर छैक ततय राजभाषा व्यवहारक गतिविधि देखबाक दायित्वक कारणे देशक ओर–छोर धरि भ्रमणक अवसर भेटलैक। एही क्रममे यावतो ज्योतिर्लिंग, शक्तिपीठ, प्रसिद्ध मन्दिर सभक परिक्रमा कयल। अजन्ता–एलोरा, खजुराहो, सूर्य मन्दिर, कलिंग–लिंग सब तरि जयबाक मौका भेटैत रहल। वाहन स्वतंत्र, अपना संग एक सहचर अपेक्षितोकें लऽ जयबाक व्यवस्था। कहिओ कला–अभिनवे विश्वनाथ मिश्र, सुहृद् रमेन्द्रनारायण चौधरी, नूनूबाबू तँ सहजहि अधिक काल संगहि रहथि। नगर–डगर देखबाक, गिरिपथ घुमबाक ओ भ्रमण–सुख लेबाक सहभागी बनथि।

संक्षेपमे एतबे कहब जे एहि मध्य आगराक ताजमहलसँ बंबइक ताज होटल धरि, त्रिवेन्द्रम् केर ब्रीच होटलसँ पंजाबी मोटल धरि, गोआक बाथ चौकसँ पुरी सागरक शंख भरल तट–स्नान धरि, हिमगिरिक शिखर खंडसँ दक्षिण सागरक तरंग–भंगी धरि, राजस्थानी बालुका–परिसरसँ चेरापुंजीक वर्षण–प्रवण गिरिशृंग धरि, हरियाणाक उद्योग–धंधामय शहर–डगरसँ पूर्वोत्तर गिरि–काननक उच्चावच गिरि–कानन कुञ्ज धरि भ्रमणक अनुभव, शंकराचार्यक पीठसँ तिब्बती पंचम लामा–दलाइ लामाक खेमाधरि घुमबा–फिरबा, देश–कोश देखबाक अनुभवकें अपन महाकाव्य–खण्डकाव्यमे चित्रित करबाक जे प्रसर–अवसर भेटल, तकर भूमिका एही प्रसरमे प्रस्तुत भऽ सकल। अलमति विस्तरेण।

साहित्य अकादेमी

1982क दिसम्बरमे सहसा भीमबाबू सूचित कयलनि जे अहाँक नाम साहित्य अकादमीक सदस्यता हेतु अनुशंसित भेल अछि। तकर बादे हमरा अकादमीसँ सेहो सूचना प्राप्त भेल। तदनुसारे हम दिल्ली गेलहुँ, प्रथमतः ओकर ऑर्गेनाइजिंग कमीटी एवं मैथिलीभाषाक एकमात्र सदस्य रहने कार्यसमितिमे लेल गेलहुँ। आंचलिक

संगठनमे पूर्वाञ्चलीय भाषा–विभागमे आबि गेलहुँ। परामार्श समितिक हेतु नामान्वित करबाक प्रसंग आयल तखन हम नौ नाम प्रस्तावित कयलहुँ जे स्वीकृत भेल। सर्वश्री प0 जयदेव मिश्र, डा0 जयकान्त मिश्र, डा0 शैलेन्द्रमोहन झा, मदनेश्वर बाबू, अमरजी, मन्त्रेश्वर झा, श्रीमती अणिमा सिंह, श्री जगदीश प्र0 कर्ण, डा0 भीमनाथ झा। परामर्श समितिक पहिल बैसक दिल्लीमे बजाओल गेल। प्रथमतः परामर्श समितिक सदस्य लोकनिसँ विभिन्न विषयक मौलिक एवं अनुवाद कार्य वितरित भेल। निर्धारित समयमे तकरा प्रस्तुत करबाक निर्देश भेलैक। तदनुसार क्रमशः मैथिली पुस्तक प्रकाशित करबाक प्रक्रिया चलल। पश्चात् पूर्वाञ्चलीय शाखाक कलकत्तामे सेहो बैसक भेल करैक जाहिमे पुस्तक–लेखनसँ प्रकाशनक कार्य निर्धारित भेल करैक। पूर्वाञ्चलक सचिव श्री निर्मल कान्ति भट्टाचार्यी नीक रस लेल करथि। तदनुसार अनेक सुपाठ्य पुस्तक–प्रकाशन मैथिलीमे होइत रहल। किन्तु ओकर प्रचार–प्रसार शिथिल रहलैक। जतय आन भाषाक पुस्तकक विक्रीक हिसाब प्रचुर ततय मैथिली–प्रकाशनक विक्रय नाम मात्रक। ताहिसँ विक्रय–विभाग अनुत्साहिते छल।

पूर्वाञ्चलीय भाषाक क्रमे उपसमितिक बैसक कलकत्ता, कटक, गुआहाटी, मणिपुर, डिब्रुगढ़ आदिमे भेल करैक। एकधा मिथिला–विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक सहयोगें चन्दा झा रमायणक प्रसंग दरभंगामे एकबेर अधिवेशन भेलैक। विभिन्न पूर्वाञ्चलीय भाषा–साहित्यक प्रतिनिधिगण सम्मिलित भऽ मिथिला–मैथिलीक साहित्य–संस्कृतिक प्रति आकर्षण अभिव्यक्त करैत गेलाह। एकाध बेर पटनोमे आयोजित भेलैक, ओतहु कार्यक्रम सन्तोषप्रद मानल गेलैक। किन्तु जतेक उल्लास ओ मनोरंजक कार्यक्रम पुरी–गौहाटी–मणिपुरमे भेलैक, ततेक एम्हर कहाँ ?

अकादमीक प्रथम सत्र (1983–87)क बाद दोसर सत्र आरंभसँ पूर्व ओकर अधिवेशन पुनर्निधारणार्थ ओकर दक्षिण कार्यालय बंगलोरमे आयोजित छलैक। ओतय जयबाक हेतु कलकत्ता विमान–पत्तनसँ हमरो टिकट छल। परंच ओकरा पुनः संपुष्टि करयबाक विधि हम अज्ञानतावश नहि कऽ सकलहुँ। फलतः हमरा ओहिमे स्थान प्रतीक्षिते रहल। निराश भऽ ओतहि बैसल जकथक भेल छलहुँ। वंगीय प्रतिनिधिक सहचर देखलनि तँ ओ हमर संग धऽ लोक गार्डेन श्री प्रबोध नारायण सिंहजी ओतय पहुँचा देलनि।

सत्रान्त समितिमे पुनः पंचवार्षिक सदस्यता हेतु हम मनोनीत भेलहुँ। परामर्श समितिक मनोनयनमे दसवर्षी सदस्यताकें छाँटल गेने शैलेन्द्र बाबू, भीमबाबूक रिक्त स्थानमे अमरेश पाठकजी, प्रबोधबाबू, रामदेव बाबू परामर्श समितिमे नामान्वित भेलाह। यथानियम तकर उपवेशन प्रधान कार्यालय दिल्ली तथा शाखा–कार्यालय कलकत्ता एवं विभिन्न पूर्वाञ्चलीय क्षेत्रमे भेल करैक।

दोसर सत्रमे मैथिलीमे अनुवाद–साहित्यक रचना–क्रममे हमर गीताञ्जलिक अनुगीताञ्जलिक अनुवादक उपक्रममे रवीन्द्र–साहित्यक अनुवादक भार देल गेल।

हमहु तकरा स्वीकारि लेल। रवीन्द्र–रचनाक हम अनुरागी रहबे करी, दोसर अवकाश–जीवनमे किछु आयक स्रोत भेटने हम ओहि दिस प्रवृत्त भेलहुँ। ओहि बीच दिन–राति हमर वैह काज छल। अनुवाद करैत जाइ, दोहराकऽ देखबाक समय नहि। जे केओ वाचक भेटथि, यथा समरेन्द्र बाबू, माधवेन्द्र–शैलेन्द्र घरक समाङ तनिका बाँचि सुनबय कहिअनि। मात्रा–पंक्तिक छूट–टूटकें जोड़िते चली। अधिक काल भीमेबाबूकें हरान करिअनि। कखनो ठीक–ठाक देखबा लेल अमरजी लोकनिकेँ सेहो देखय पड़नि।

क्रमशः सात नाटक नाटकावलीक दू खंडमे, रवीन्द्र कथावलीक लगभग चारि दर्जन कथा दू खंडमे तथा तीन उपन्यास जाहिमे गोरा 400 पृष्ठसँ अधिके एवं निबन्धावली लगभग हजार पृष्ठक दू खण्डमे अनुवाद सम्पन्न कय मुद्रणार्थ पठा देल। इहो लिखि देल गेल जे हम वाचनो कऽ चुकल छी तकर पुनः प्रयोजन नहि। आठ खण्डमे ई समग्र रचनावली प्रकाशित भेवो कयल। प्रूफ देखबामे भीमबाबू, अमरजी, रामदेव बाबू एवं अपन भातिज शैलेन्द्र मदति करैत गेलाह। एही क्रममे हमर आँखिपर विशेष जोर पड़ने दृष्टि–शक्ति कमजोर होइत अन्तमे अन्धताक स्थितिपर पहुँचि गेल। बहुतकें तँ एते अविधमे एतेक लिखि लेबाक विश्वास नहि होइन। परंच जेना–तेना कार्य सम्पन्न भेलापर हमरा रवीन्द्र नाट्य–साहित्यपर अनुवाद हेतु साहित्य अकादमीसँ पुरस्कारो यथासमय भेटल।

कहिओ प्रेमचन्दजीक पत्रमे पढ़ने छलहुँ जे 'हम तँ कलमक मजदूर छी, मजदूरी पयले पर भी० पी० सँ रचना पठा सकैत छी।' से ओहि समय हमरहु गृहव्ययक समाधान एही कलमक मजदूरीसँ भेल करय। एहि मजदूरी–जीविकाक संग यशो अभिप्रेत छल। 'काव्यं यशसे अर्थकृते सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे'क सद्यः उदाहरण हृदयंगम भेल।

केलकरजी हमरा फाइनेन्स कमीटीमे मनोनीत कयलनि। ओहिमे मनमोहनजी सदृश अर्थ विधानज्ञ छलाह। हम वर्षधरि कहुना हँ–हूँ करैत काटल, तदुत्तर प्रकाशन–उपसमितिमे सेहो किछु समय छलहुँ। पश्चात् केलकरजीक अवकाश ग्रहणक बाद डा० इन्द्रनाथ चौधुरी सचिव पदपर अयलाह। गोकाकजी हिनक निर्देशन सहायताक हेतु केलकरजी तात्कालिक सहयोगी रूपें रखलथीन्ह, परंच इन्द्रनाथजी तकर अप्रयोजनीयता लगले सिद्ध कऽ देलथीन।

अमरेश पाठकजीक उपस्थितिसँ जतय परामर्श समितिमे बहसक किछु सोर बढ़ि गेलैक एवं अकादमीक प्रधान सचिवकें रोक–टोकक अवसर प्रसर होइत रहनि, समयक पाबंदीपर जोर–तोड़क जोर होअय लगलैक ततय पाठकजीक आतिथ्यक अवसरो प्राप्त भेल। एकबेर उपसमितिक यावतो सदस्य पटना दस बजे रातिमे ट्रेनसँ उतरैत गेलहुँ। कोनो होटलक तलासमे मनेमन संलग्न छलहुँ, पाठकजी हठात् मोटर ठीक कऽ अपना डेरापर लऽ चललाह। हाथ–मुह धोइत भीतर गेलहु, तावत् भनसाघर मे छनाछन होअय लागल। घंटो नहि बीतल छल, चाह–पानक बाद

भोजनो प्रस्तुत। भोजन नहि, भोजे आरंभ भेल। तीमन–तरकारी, दूध–दहीक सचारे लागि गेल, सभ विस्मित–चकित। पुनः सेज–मशहरी सभक लागल। आराम करैत गेलहुँ एवं पाठकजीक पारिवारिकताक प्रशस्तता देखल। महल्लाक ओहि भागकें मिथिला–कालोनीकें अन्वर्थ मानल।

एकबेर एहिना असमय रातिमे हम सभ सदस्य पटना उतरि अपन जमाय–दौहित्रक डेरा दीनापुर पहुँचलहुँ, ओतहु अकालमे सकाल जकाँ समारोहपूर्वक तृप्ति पाबि सभकें संतोष भेटल।

पूर्वाञ्चलीय साहित्य अकादमीक नेपाली भाषा क्षेत्रक लेल महिला लेखिकाक मिलन–आयोजन भूटानमे आयोजित भेलैक। एहिमे प्रसिद्ध लेखिका ओ समाजसेविका महाश्वेतादेवीक संगतिक अवसर भेटल। मेधाविनीक संग अत्यन्त नम्र स्वभावक। हुनक नम्रताक प्रसंग की कहल जाय–कते कहल जाय ? प्रायः हमर वयोवृद्धताक कारणे, विनु पादस्पर्श कयने, माथ झुकौने नहि रहथि। भोजन परिवेशनोमे भाग लेथि ओ हमर रुचि विधानक बड़ ध्यान राखथि। श्रीमती नीताजी मैथिली लेखिका रूपमे ओकर साक्षिणी छथि। हम हुनक आदर भावसँ विह्वल भऽ उठी। पश्चात् ओ ज्ञानपीठ पुरस्कारसँ सम्मानितो भेलीह। बादोमे ओ पत्र द्वारा खोज कयलनि। भूटान–यात्रा प्राकृतिक दृश्यक कारणे एवं बौद्ध धर्मचक्र आदिक प्रदक्षिणे अत्यन्त उपादेय रहल। ओहि ठाम जाहि सरकारी विश्रामालयमे टिकलहुँ ओ उच्च शृंगपर स्थित छलैक। हवा अत्यन्त क्षीण, अतएव तदर्थ विशेष तकनीकी व्यवस्था छलैक। शासन दिससँ प्रतिनिधिगणकें स्थान परिदर्शनक विशेष व्यवस्था छलैक। ओतय अनेक वनस्पति विज्ञानीकें नव–नव प्रकारक वनस्पतिक खोज करैत देखल। पहाड़ी नगरक जे सुविधा–असुविधा होइत छैक तकर अनुभव भेटल।

दीक्षान्त भाषण

प्रायः 1983क आरंभिक समय छल। एकदिन उड़ीसाक मुख्यमंत्री हरे कृष्ण महताबजीक पत्र भेटल जे मेष संक्रान्तिक विषुव पर्वपर उड़िया लेखक सम्मेलनक अवसरपर दीक्षान्त भाषणक निमित्त आमंत्रण देल जाइछ जे एहिमे दीक्षान्त भाषण दी। लेखक सम्मेलनक परम्परा छैक जे वार्षिक दीक्षान्त भाषण विभिन्न भाषाक विद्वानसँ कराओल जाय। एहिसँ पूर्व दिनकर जी द्वारा भाषण आयोजित छल। एहिवेर मैथिलीक विद्वान् आमन्त्रित होथि। अहाँक दरभंगामे हमर दुइ मित्र छथि। प० रामनन्दन मिश्र एवं प० गिरीन्द्र मोहन मिश्र। हिनकहु अहाँक प्रसंग लिखि चुकल छिअनि। हम स्वीकृति तँ पठा देल। किन्तु स्वास्थ्यक कारणें ओहिबेर क्षमाप्रार्थी भऽ अग्रिम वर्ष अयबाक स्वीकृति पठा देल। दोसर वर्ष संयोग जे मेहताब जीक मृत्यु भऽ गेल छलनि, हुनक पुत्र एवं झंकार दैनिकक अध्यक्ष दशरथ मेहताब जीक पुनराग्रह गृहीत भऽ ओतय पहुँचलहुँ। संगमे प्रो० मुरलीधर झाकें लऽ गेलहुँ। ओहि ठामक

दृश्य। सम्मेलनक स्थानमे जे परिवेश छलैक मन्च परिसर गोमयसँ नीपल। आसनपर मुख्यमंत्री एवं प्रधान न्यायाधीश आदि बैसल। हमहु मध्यमे आसनपर बैसाओल गेलहुँ। प्रसाद वितरित भेल, ग्रहण करैत गेलहुँ। तदुत्तर सटले सभाभवनमे प्रवेश कयल। स्वागतादिक बाद हम क्षमायाचनापूर्वक पहिने मैथिलीमे वक्तव्य देल, हर्षमय करतल ध्वनिसँ बुझना गेल जे बहुत किछु सभकें बोधगम्यो भेलनि। हम विहारोत्कल संयुक्त संस्कृत समितिएसँ आचार्य उत्तीर्ण भेलहुँ, तकर संकेत करैत, दरभंगाक पंडासराय उत्कल–पंडेलोकनिक विश्रामालय छल तथा दरभंगा–मनीगाछीक एक गाममे अखनहु उड़िया मिश्र परिवार लोकनि गाम बसौने छथि आदि सामीप्यक प्रमाण दैत उड़िया–लिपि तिरहुता–लिपिक शीर्षक मात्र भेद रहितहु दुहूक साम्य देखाओल। तदुत्तर दुहू स्थान भाषा–साहित्यक साम्य देखबैत भाषण समाप्त कयल। श्रोताक उल्लास देखि उल्लसित भेलहुँ। जयदेवक उतारपर नव जयदेवक चर्चा तदुत्तर ब्रजबुलि काव्यमे उड़िया कवि ज्ञानदास प्रभृतिपर विद्यापतिक प्रभाव ध्यानसँ सुनल गेल। उड़िया बन्धुक साहित्य–प्रेमपर संवर्धनापूर्वक जेना–तेना भाषणक इतिश्री कयल।

पाछाँ उड़िया साहित्य प्रदर्शनी बगलेमे लागल छलैक। तकरो उद्घाटन कयल। तखन पारितोषिकक सिलसिला चलल। कविता, कथा, निबन्ध, बालसाहित्य, महिला लोखिका संघ, विविध विषयपर पारितोषिक देब प्रारंभ भेलैक। स्थिति उत्साह ओ विस्तार देखि चकित रहलहुँ।

पुनः दैनिक 'झंकार'क प्रतिनिधि अन्तर्वीक्षा लेलनि। दोसर दिन विस्तारसँ से प्रकाशित भेलैक, विभिन्न स्रोतसँ अन्तर्विचार हस्ताक्षर निवेश आदि चलैत रहल। रेडियोसँ सेहो प्रचारित भेलैक।

तदुत्तर कटकक महिला एस0 डी0 ओ0क तत्त्वावधानमे पुरी–दर्शन, प्रसाद ग्रहण, भुवनेश्वर–मन्दिर, स्थानीय सूर्यमन्दिरक अवलोकन। दिन भरि से सब चलैत रहल।

रातिमे निर्धारित समयपर विदाइपूर्वक ट्रेनसँ प्रस्थान कयल। एहि यात्राक सुखद स्मरण पाछाँ दरभंगा आबि रेडियो द्वारा विवरण देबाक हेतु आगृहीत भेल छलहुँ।

पारिवारिक प्रसंग

हमर एकमात्र बालक श्रीव्रजेन्द्र पहिने आचारानुसार संस्कृत प्रारंभ तँ कयलनि किन्तु संस्कृत पढ़निहारक स्थिति देखैत अंग्रेजी अध्ययनमे प्रवर्तित भेलाह, सी0 एम0 कालेजसँ ग्रेजुएटक बाद पटना कालेजसँ एम0 ए0 कयलनि। पुनः पी0 सी0 एस0 कंपीट कऽ त्रिपुरा दिस नियुक्ति हेतु आदिष्ट भेलाह। एही मध्य लेक्चररमे नियुक्तिपत्र सेहो भेटलनि। वेतनमे कोनो भेद नहि। तें लेकचररेमे सुविधा मानि

कार्यरत भेलाह। एम्हर संगठनात्मक कार्यक्रम चलैत रहलनि, विद्यार्थी परिषदक प्रान्तीय अध्यक्ष निर्धारित भेलाह। किन्तु किछु पार्श्ववर्ती मित्रक प्रेरणासँ से—सभ छोड़ि अन्य संस्थासँ सम्बद्ध भेलाह। जनता पार्टीक प्रचारमे विश्वनाथ प्रसाद सिंहजीक दरभंगा—आगमन पर अपन किछु अन्यवर्गीय सहयोगीक प्रेरणे ओहि दलमे सम्मिलित तँ भेलाह, परंच किछुए समयक बाद ओहो छोड़ि अपन शिक्षण—व्यवसायेमे लागि गेलाह। अंग्रेजी विभागक विश्वविद्यालयीय अध्यक्षताक बाद आब अवकाश—प्राप्त कयलनि। स्वतंत्र लिखबा—पढ़बामे लागल रहैत छथि।

हमर दू कन्या। जेठि महालक्ष्मी ट्रेनिंग कऽ प्रारंभिक स्कूलमे सासुर (नाजिरपुर)हिमे शिक्षिका छथि। जमाय नाजिरपुरवासी जयविन्द चौधरी इंडियन नेशनसँ अवकाश प्राप्त अस्वस्थ स्थितिमे। जेठ दौहित्र अरविन्द, सहरसाक कालेजमे संस्कृतक व्याख्याता। छोट अनन्त पब्लिक स्कूलमे कार्यकर्ता। छोटि कन्या मैथिली रोसड़ामे अपन कौलिक ठाकुर महल्लामे जतय जामाता प्रसिद्ध व्यावहारिक स्व0 बेचन ठाकुरक सहमतिसँ मधुबनी कालेजमे लब्ध नियुक्तिकें छोड़ि अपन नगर स्थित भूमि—मकानमे व्यवसायी रूपमे सफलतापूर्वक कारवार करैत विभववान् रूपें सिद्ध—प्रसिद्ध छथि। जेठ दौहित्र प्रदीपजी संस्थापित छथि, छोट व्यवसायेमे प्रवृत्त छथि। पुत्रवधू श्रीमती उषादेवी स्वतंत्र रूपें इंग्लिशमे एम0 ए0 कयलाक बाद लाइब्रेरी सायन्समे प्रशिक्षण प्राप्त कऽ स्थानीय दन्त—मेडिकल कालेजमे लाइब्रेरियन पदपर कार्यलग्न छथि। एकमात्र पौत्र चि0 राजेन्द्र इंटरमीडियेटक बादे कंपिटीशनक तैयारीमे लागल छथि।

परिवारक अन्य समाङमे वीरेन्द्र झा हाइ स्कूलक हेड—पंडित पदसँ अवकाश प्राप्त, दोसर भातिज माधवेन्द्र राजनीतिमे रस लैत हमर देख—रेखमे संलग्न, हुनक छोट भाइ चि0 ब्रह्मेन्द्र पब्लिक स्कूलमे शिक्षक, हमर अनुज चित्रकलाभिज्ञ देवेन्द्रजीक बालक अमरेन्द्र गृहकार्यमे तथा रामानुज लक्ष्मण रूपें प्रसिद्ध प्रेस शिल्पी स्व0 भूपेन्द्रबाबूक दूहू बालक गृह—कार्यमे। छोट शैलेन्द्रजी मुद्रणकलाक देखरेख रखनिहार, सम्प्रति गामहिमे गृहस्थीमे संलग्न छथि। परिवारक ममियौत शाखामे उदयनायन करियनक विख्यात पंडित दुःखमोचन झा मातुलक पुत्र पंडित प्रमुख शशिकान्त झाक मृत्युक बाद हुनक पुत्र डा0 वागीश झा चिकित्सक रूपमे जिलेमे नियुक्त छथि। इति पारिवारिक प्रसंग।

वन्दनीय, अभिनन्दनीय ओ संवर्धनीय

ज्येष्ठ—श्रेष्ठ गुणशील वरिष्ठ व्यक्तित्वसँ प्रेरित होइत अयलहुँ, तनिक पद—वन्दन करैत, जनिक कृतित्वसँ मुग्ध—प्रबुद्ध होइत रहलहुँ तनिक अभिनन्दन करैत, जाहि प्रतिभा—प्रभासँ आश्वस्त रहलहुँ तनिक संवर्धन करैत परिचय—संचय करैत छी। स्मृतिक दुर्बलतें यदि किछु नाम अनुदीरित रहि जाइछ तनिकहु प्रति मानसी भावना

चढ़बैत चलैत छी।

1930–31क गप थिक, अनेक बंगला–उपन्यासक राष्ट्रभाषामे अनुवादक तथा मिथिला–मिहिरक पूर्व सम्पादक *प० जनार्दन झाजी 'जनसीदन'* सहसा गाम पहुँचलाह, वैवाहिक कथा–प्रसंग। हमर पिताजी हुनक आदर–सत्कार करैत क्षमा–प्रार्थी भेलथिन जे पुत्रक विवाह–कथा पूर्व–निर्धारित भऽ चुकल अछि, अतएव क्षमाप्रार्थी छी। हमहु हुनका सम्मुख उपस्थित भऽ प्रणाम अर्पित कयल। हुनक कृपा बादहुमे प्राप्त होइत रहल। ओ जखन दरभंगा साहित्यिक काजें विद्यापति प्रेस आबथि, कृपापूर्वक दर्शन देथि। अपन मिथिलाक प्राचीन–पण्डितक पद्यमय परिचय 'मिहिर'मे प्रकाशनार्थ दय कृतार्थ कयने छथि। यदाकदा हरिमोहन बाबूक व्यंग्य रचनामे सप्तशती पाठपर कोनो रोचक अंश प्रकाशित करी तँ ताहिपर संयमक उपदेशात्मक आदेशो देथि।

वयोवृद्ध प0 कुशेश्वर कुमरजी प्रसिद्ध ज्योतिर्विद छलाहे, पर्व–निर्णयकर्त्तोमे प्रसिद्ध छलाह, हुनक संपर्क–कृपा सेहो प्राप्त होइत रहल। रचनो भेटैत रहल, 'कुमर पुरातन–नीति–निरत छथि', तकर उदाहरणो उपलब्ध होइत रहल। पर्वादि कृत्यपर विचारो प्राप्त होइत रहल। दर्शन कयलो करी, दर्शन दैतो रहथि।

संगहि 'दास नवीन समाजी' *बाबू भोलालाल दासजीसँ* अभिन्नता स्थापित छल। हुनका संग यातायात, राज–परिसरमे निरन्तर सम्पर्क बोध होइत रहल। मैथिली– साहित्य परिषद्‌क प्रसंगें, 'भारती' 'मिहिर'क अंगांगिभावें अपनैती अंतकाल धरि स्निग्ध कयने चलल जे हुनक सुयोग्य पुत्र जगदीश प्रसाद कर्णजी धरि अक्षुण्ण बनल अछि। हुनक बरियातीमे सेहो सम्मिलित भेल छी। अनेक स्थलमे मधुर संपर्क चर्चिते अछि।

हमरा लोकनिक साहित्य–प्रवेशसँ बहुत पूर्वक प0 हीरालाल झाजी 'हेम'सँ हुनक व्याकरण–रचना आदिसँ पहिनहुँ प्रभावित छलहुँ। संयोगवश हुनक दर्शन–सौभाग्य सेहो नौगछिया (सहरसा)क कोनो एक 'फंक्शन'मे 'अमरजीक संगहि भेल छल, हुनक व्यक्तित्व–परिचयसँ प्रभावित भेल रही, हुनक पूर्व कृतिक स्मरण पूर्वक हुनका प्रति आदर करबाक सौभाग्य भेटल।

'सीता दाइ'क लेखक *प0 कपिलेश्वर मिश्रजीसँ*, जखन ओ पुस्तक–भंडारसँ सम्बद्ध छलाह, हुनक दूहू सुयोग्य भातिज प0 जयनाथ मिश्र तथा गौरीनाथ मिश्रसँ सेहो घनिष्ठता बढ़ैत रहल, जे बरोबरि बनल रहल। चेतना–समितिक प्रसंग हुनक सेवा–ख्यातिक हमहु एक साक्षी रहल छी। छोट भाइक नामें मैथिली अकादमीसँ जे व्याख्यानमाला स्थापित भेलैक तकर प्रथम व्याख्यानमालाक आरंभो कयने छी।

विद्यास्थली मिथिला प्राचीन कालहिसँ वंगीय कवि–कर्णक शब्दें 'गृहे–गृहे नृत्यति यत्र भारती' एहि क्रममे संस्कृतक प्रचार–प्रसारमे रमेश्वरलता महाविद्यालयक योगदान प्रसिद्ध अछि। भारतक राजस्थान, बड़ौदा आदि प्रमुख देशी राज्यमे एवं निगमागम एवं बौद्ध–जैन ग्रन्थक गुत्थी सोझरयबामे प0 शशिनाथ झा, प0 दुःखमोचन

झा प्रभृतिक नाम उल्लेखनीय अछि। धर्मसमाज संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुरमे रविनाथ झा, प0 बदरीनाथ झा, ज्यो0 दयानाथ झा प्रभृतिक अध्यापनसें पूर्व एही विद्यालयक विद्वान् शिष्य मंडलीक विस्तार करैत अयलाह। आगमक अध्यापक प0 पद्मनाभ मिश्र जखन भारत–सरकारक दिससँ पदाधिकारी निरीक्षण करय अयलाह तँ ओ अपन वर्गमे विद्यार्थीक अभाव कहि, यथार्थवक्ता आप्तक कहबी सिद्ध कयलनि। प्रिन्सपल बूढ़ा–गुरुजी प0 मुक्तिनाथ मिश्रजीक प्रसंग प्रसिद्ध छल जे हिनकासँ जे पढ़ि लैछ ओ सिद्धि–प्रसिद्धि प्राप्त करैछ। सामवेदी महेन्द्रनाथ झा वेद पारंगत विद्वान् छलाह। प0 उपेन्द्र झाजी प्रभृतिक यश सुविदित अछि। महाविद्यालयक यदि इतिवृत्त लिखल जाय तँ दरभंगा गौरवान्वित होयत। प्रिन्सपल त्रिलोक नाथ मिश्र जीक ज्वलन्त प्रतिभा शास्त्रार्थसँ लय लेख–मौखिक चतस्र व्याप्त छल।

मिथिलामे एहू समय अनेक श्रौत–स्मार्त वचनमे आस्थावान् आचार–विचारमे निष्ठावान् व्यक्तित्वक दर्शन प्राप्त होइत रहल जाहिसँ प्रतीत होइछ ई परम्परा लुप्त–सुप्त नहि भेल अछि। प0 दीनबन्धुझाजी एकबेर रेल–यात्रासँ उतरलाह, आसनासीन भेलाह तँ शालग्रामक सम्पुट खोललनि। चारि तहमे लपेटल, कहलनि 'चतुर्थे नास्ति पातकम्' तें रेलक छूति–छातिसँ हिनका बचबैत आयल छी। धर्मसमाज संस्कृत कालेजक अवकाश–प्राप्त मीमांसक गुरुजी प0 जटेश्वर झाजी डेरापर अयलाह तँ एतय भोजनक आग्रहपर कहलनि, अहाँक ओहि ठाम कलक पानि चलैछ, ओहिमे चर्मयोग रहैछ। हम तँ कूपेक जलग्रहण करैत छी, तें लक्ष्मीसागरक मन्दिरपर से सब चलैछ। करिअनक पुरोहित हरिश्चन्द्र पाठक भेटलाह, ओ कहलनि हम घरेक कूटल–छाँटल चाउरक भात अछिन्न जलमे बनबैत छी, से तँ एतय संभव नहि। करिअनेक प0 हरिवंश पाठक, प0 बच्चा पाठक लोकनिकें देखने छी, माथपर पाग, कान्हपर चादरि, कहिओ गंजी–कुर्ता नहि, जाड़मे देहपर साल। सीअल वस्त्र पहिरब वर्जित। आदि–आदि अनेक निष्ठावान् लोककें देखने–सुनने छी। की कते कहल जाय?

रामलोचन शरणजी– राधापुर–सीतामढ़ीक वासी रामलोचन शरणजी जहिआ पत्र–चन्द्रिकाक रश्मि छिटकाय, हिन्दी व्याकरणक दिशा देखाय लहेरियासराय कचहरी चौकमे पुस्तक भंडारक संचालन कयलनि, के जनैत छल जे हिनक सूक्ष्म दृष्टि साहित्य–क्षेत्रक विभिन्न अंगकें एना रत्न–विभूषित करत। विद्यापति नामसँ प्रेस खोललनि, पदावलीक संस्करण बेनीपुरीक तीख–चोख कलमसँ करौलनि। मिथिलाक्षरांकन समितिक आयोजनसँ तिरहुता लिपिक हालदार कंपनी द्वारा काँटा प्रस्तुत करबौलनि, मिथिलाक्षरमे दुर्गा सप्तशती अदिक संस्करण कराय लिपिक संवर्धना कयलनि। अंतमे सम्पूर्ण 'रामचरितमानस'क मैथिली अनुवाद कय मैथिली सेवीमे अपन नाम स्वर्णक्षरित कयलनि। बेनीपुरीजी, शिवपूजनजी, दत्तजी, महारथजी एवं विद्या–कला–साहित्यक प्रचारमे प्राण–संचार कयलनि। हमरा पूर्ण स्मरण अछि,

गंगाधरबाबू, हरिवंश प्रसाद जी लोकनि मिथिला कालेज स्थापनाक प्रसंग हिनक भंडारमे समिति उपसमितिक बैसक कयल करथि। कुशेश्वर कुमरजी एवं भोलालाल दासजीक संयुक्त सम्पादकत्वमे 'मिथिला' मासिक पत्रिका प्रकाशित करौलनि। मिथिला–मैथिलीक प्रसंग शरणजीक सेवाक मूल्यांकन एखनहु इतिहासमे अपेक्षित अछि।

सम्पादकाचार्य शिवपूजन सहाय जी– जाहि व्यक्तिक सरल प्रकृति, सरस कृति ओ उच्च सांस्कृतिक प्रभावसँ प्रभावित रहलहुँ ओ हमरालोकनिक मान्य वदान्य 'शिवजी' नामे साहित्य संसारमे ख्यात सदा–सहाय सम्पादकाचार्य शिवपूजन सहायजी छलाह। सतत आँखिपर चश्मा चढ़ल, आगाँ संशोधन हित बंडलक बंडल पड़ल, बनारसी पान ओ जर्दाक डिब्बी राखल, कुर्सीपर आसीन, टेबुलपर अखबार ओ पत्र पत्रिकाक थाक लागल, अध्ययन–लेखनमग्न, गौर वर्ण, कृश शरीर, शान्तिपूर्ण जगमगाइत कान्तिमय मुख–मंडल, ककरो देखितहिं स्मितमुख जे व्यक्ति दृष्टिगोचर होथि, ओ थिकाह सम्पादकाचार्य शिवपूजन सहायजी, जनिक जीवनक पल–पल साहित्येक नहि साहित्यिकक रचनामे खटैत रहल, जनिक प्राणवान् गद्य वाणभट्टक समान मान्य छल, हुनक विमर्श–परामर्श भेटैत रहल।

कलाविद् उपेन्द्र महारथी–उत्कल कलाक आदर्श पुरुष उपेन्द्र महारथीक आगमनसँ पुस्तक–भंडारेक नहि, मिथिलाक जीवनमे कला तरंगित भऽ उठल। मिथिलाक चित्रकला जकर चर्चा देश–विदेशमे भऽ रहल अछि, तकर आविष्कर्त्ता महारथीजी छथि। जखन हिनक दृष्टि पुरइनि–कोबरपट आदिपर पड़ल, तखन मिथिला–चित्रकलाक विलक्षणता ई लक्षित कयलनि। सीकीक शिल्पपर हिनक दृष्टि पड़लनि, ई तकरा सभसँ देश–विदेशकें परिचित करौलनि। हिनक रेखांकन एवं रंगीन चित्रांकनक कला दिनकरजीक 'जाग ओ मधुमासवाली' कविताक उद्भवनामे प्रेरक सिद्ध भेल। पुस्तक भंडारक सीमासँ विहारक खीमे धरि नहि प्रत्युत भारती प्रतिभाक सीमान्त धरि पहुँचाय, जापानी बौद्ध प्रतिमा धरि साणे गुरुजीक गरिमा पर्यन्त गयाक गौतमी दया–धाम धरि जगमगा गेल। एहि कला–पुरुषोत्तमक स्मृति हृदय तृप्तिक अनुपम उदाहरण अदयावधि जगमगा रहल अछि। 'कलाक उपासना ईश्वरीय अराधना थिक' प्रेमचंदजीक ई सन्देश–वाक्य एखनहु धरि ख़चित अछि।

अच्युतानन्द दत्त– मोट सन खादीक मटमैल धोती–कुर्ता, श्याम शरीर, हँसैत–खिलखिलाइत चेहरा, चट्टी पहिरने, बिनु चट्टी पहिरने भंडारक परिसरमे घुमैत–फिरैत वा कोनो चौकी बेंचपर बैसल पत्र–पत्रिका वा कोनो पोथी उनटबैत जे सरस्वती पुत्र देखि पड़थि, स्वतः चिन्हि लेब जे यैह थिकाह हिन्दी–मैथिलीक ख्यातनामा लेखक, कवि–सम्पादक एवं विद्वान अच्युतानन्द दत्तजी, जनिक छाप भंडारक साहित्यिक साहित्य–सर्जनाक मेरुदण्ड छल। एहन अध्ययनशील, चतुर्मुखी

प्रतिभाक धनी लेखक–सम्पादक बिरले कतहु देखल जाइत छथि। कोशी क्षेत्रक बाढ़िमे भसिआइत, एक मिडिलस्कूलमे अध्यापन करैत, प्रतिभाकें खोजि प्रथम प्रकाशमे अननिहार बाबू गंगापति सिंह छलाह जे हिनका स्कूली–शिक्षणसँ बहिर्भूत कऽ हिन्दी–मैथिली लेखकक बीच प्रतिष्ठापित कयलनि, पुस्तक–भंडारक अध्यक्ष शरणजीक आगाँ हिनका परिचित करौलनि। बादमे पारखी शरणजी भंडारक जेना कुंजिए हिनका सौंपि देल। पुस्तक–संशोधन–प्रकाशनक संग 'बालक'क सम्पादनक उत्तरदायित्व हिनकापर निर्भर कयल। रामवृक्ष बेनीपुरीजीक बाद भंडारक साहित्यिक सर्जनामे दत्तेजीपर प्रमुख भार पड़ल। ई अपन अध्ययनशीलतासँ प्राचीन हिन्दीक रासोसँ विहारी–पद्माकर धरि, आधुनिक हिन्दी भारतेन्दुसँ प्रेमचंद–राहुल–शिवपूजन धरि परम्पराक गंभीर अध्ययनपूर्वक से आस्था प्राप्त कयल जे ख्यातनामा लेखक–सम्पादक–वक्ता जगन्नाथ प्रसादजी जखन मिथिला–कालेजमे प्राध्यापक भेलाह तखन हिन्दीक प्राचीन कविक अध्यापन प्रसंग कोनो जटिल सन्दिग्ध स्थलक समाधान हेतु शिवजीसँ परामर्श करय जाथि तँ ओ स्पष्ट कहथिन जे 'यह हमसे नहीं चलेगा, दत्तजी को पकड़िए' तखन ओहो हिनकेसँ समाधान पाबथि। एकबेर 'विहारी हिन्दी' कहि इलाहाबाद–लखनउक साहित्यिकसँ आक्षेप–प्रक्षेप चलल छल तखन हिनकं स्तरीय हिन्दीपर भंडारेसँ एक पुस्तक प्रकाशित भेल छलैक, जे तत्कालीन हिन्दी–साहित्यमे तहलका मचा देलक। लोकक अनुमान छलैक जे ई बेनीपुरीक कलमसँ बहरायल अछि। जाहिपर बेनीपुरीक टिप्पणी भेल छल जे 'बेनीपुरी का कामा बोलता है, फुल स्टाप बोलता है। यह किसी दूसरे की कलम का करामात भले हो।' ई करामात दत्तजीक छल। दत्तजीक कलमसँ 'मिहिर' कृतार्थ होइत रहल। हुनक निरन्तर यातायात हमरो ओतय चलैत छल। दत्तजी मलेरिया–[illegible] क महाप्रयाणसँ दिन दसेक पूर्व डेरापर आयल रहथि। दोकानपर पान खाइत स्टेशन धरि अरिआतय गेलहुँ, अकस्मात् मन पड़ल जे काशीनाथ ठाकुरजी बनारससँ मगही पान ओ मुशकी जर्दा दऽ गेल छथि। ओ संगहि चोट्टे घुमि डेरापर अयलाह। आ ओ अन्तिमे भेंट छल–एहन नहि संयोग भेटल छल ने पुनि एहन वियोग।

बलदेव मिश्र राजपण्डित–राजपण्डित नामें प्रसिद्ध बलदेवमिश्रजी राज–दरभंगाक नहि अपितु मिथिलाक प्रभावी वक्ता छलाह। सभामे पहुँचितहि सम्पूर्ण सभाक ध्यान आकर्षित कयनिहार, सतत मिथिला–मैथिली एवं संस्कृतक पाण्डित्य कोना देशमे भासमान हो तकर उद्देश रखनिहार अपना सन अपनहि छलाह। पण्डित–समाज कोना समादृत हो, मिथिलामे पाण्डित्य कोना अखण्डित रूपें प्रवर्तित हो तदर्थ यत्नवान ओ अपने अपन उपमान छलाह। मिथिला पण्डित सभाकें प्रवर्तित प्रदर्शित करैत, आचार–विचार कें प्रचारित करैत हुनक पल–पल बितैत छल। हुनक प्रदोष कालिक पार्थिव शिव–पूजन नचारी–महेशवाणी गुंजित वातावरण साक्षात् शैव विद्यापतिक कल्पना साकार करैत छल। समयक पाबंदी

हुनक तेहन जे यदि कुतुब काल बीति जाइन तँ सन्ध्या 9 बजे, सेहो कदाच दर्बार अथवा सभा–मंचपर कटि जाइन तँ पुनः दोसरे दिन नियते समयपर भोजन करथि, जलपान–भोजन सभक विन्यास संगहि चलबथि।

ज्योतिषी बलदेव मिश्र – मैथिलीक इतिहास मे ज्योतिषी लोकनिक अवदान प्रथित अछि, प० मुरलीधर झा सँ प० सीताराम झाक जे परम्परा चलल तकरा सुसमृद्ध करबामे ज्योतिषी मिश्रजी वरदाने कहल जयताह। रामायण शिक्षासँ हुनक शिक्षात्मक दृष्टिकोणक विशिष्टता तँ विदिते अछि। निबन्धकारक परम्परामे ओ मूर्धन्य मानल जाइत छथि। काशीक सरस्वती–सदनसँ विहारक रिसर्च सोसाइटीक सेवा–काल धरि ओ निरन्तर मिथिला–मैथिलीक भण्डारमे रत्न–मणिक बहुमूल्य सम्पदा संकलित करैत रहलाह।

प० त्रिलोचन झा (बेतिया)क दर्शन हमरा नहि परंच पत्रांचार चलैत रहल। मिथिला–मैथिलीक कोनो चर्चा उठैक हुनक लेखनी प्रस्तुत। एतेक सजग प्रहरी मिथिला–मैथिलीक रक्षण–संरक्षण हित दुर्लभ।

प० दुःखमोचन झा हमर अपर माम। विलक्षण प्रतिभाक विचक्षण विद्वान्। जेहने भाषण तेहने लेखन। सदा पश्चिम प्रान्तमे जैन–बौद्ध संन्यासीक अध्यापन, किन्तु भद्रकालीक अनुरक्त भक्त। आतिथ्य–परायण, दमाक कारण आफीमक औषधिवत् सेवी, संस्कृतमे अव्याहत भाषण सुनि चकित। लेखनमे एक बैसकीमे छोट–मोट पुस्तक विन्यस्त कयनिहार। कुटुम्ब परिवारक आवेशी। चिरस्मरणीय छथि।

बाबू गंगापति सिंह, अतिथि–सतिथि जे कही, कलम धरथि कागज ओर सँ छोर–धरि भरि देथि। प्रासंगिको–अनुषंगिको, भोजन आदिमे परहेज नहि, गद्दी रहौ वा खिनहरि पटिया, समान माननिहार। वस्त्र–परिधानक कोनो संधान नहि। घुमंत–फिरंत किन्तु लिखंत सब तरि। एहू स्थितिमे सभ सन्ततिकें सुशिक्षित कऽ देश–विदेश पठा सकलाह।

बाबू लक्ष्मीपति सिंहक सौजन्य कहल नहि जाय। आवेशी तेहन जे अपना हाथें पान लगाय, सुपारी कतरि, जर्दा बढ़बैत रहताह। साहित्यिक चर्चा चलबैत रहताह। थकताह नहि। पत्नी रुग्णा, तनिकहु परिचर्चामे लागल मुदा साहित्यिक चर्चामे कनेको अड़चन नहि। लिखबामे छनो विलंब नहि। अगल–बगल पुस्तकक बंडल। अविस्मरणीय हुनक व्यक्तित्व।

उपेन्द्र ठाकुर मोहन दरभंगा रहथि तँ नित्य–नियमित भेट। कखनहु हरिकान्त जीक संग करवनहु आने केओ अन्तरंग। नव गीत–कविता लिखथि, प्रायः

पहिल पाठक हमरहि बनबथि। प्रत्यह घंटा पहर बीति जाय परंच कथाक सिलसिला नहि सेराय। बीचमे 'कलेश'जीक कलाकलन सेहो चलय। वर्षक वर्ष हुनक संग हर्षमे कटय। 'मिहिर'सँ अवकाश पाबि जखन गाम फिरलाह तँ अबितहि दर्शन देलनि जे आब अखाड़ा जमतैक। किन्तु हन्त! एही बीच सहसा रुग्ण भऽ रक्तहीन स्थितिमे चिर–वियोग। एहन नहि संयोग भेटल छल ने पुनि एहन वियोग।

हरिनन्दन ठाकुर सरोज भक्षी (मधुबनी)क वासी जाहि समय 'माधवी–माधव' नामक उपन्यास प्रकाशित करौलनि, मैथिलीमे उपन्यास तेना–चर्चित नहि भेल छल। प्रचलित प्रेम–कथाक आधारपर लिखित एकर प्रकाशन ओ जाहि परिस्थितिमे करौलनि तकर चर्चा प0 आद्याचरण झाजी करैत रहल छथि। मैथिली लेखक यदि प्रकाशको होथि तखन हुनक आर्थिक दशा केहन ओहि समय होइत छल तकर ओ निदर्शने छलाह। ओ उपन्यासक संग अनेक कथा सेहो लिखैत रहलाह।

दास बन्धुमे बाबू पुलकित लालदास मैथिली–भाषा साहित्यक गतिविधिक तत्कालीन विशिष्टं अध्येता छलाह। कोनो पत्र–पत्रिका हो वा संकलन हो हुनक लेखनी सद्यः प्रस्तुत छल। तत्कालीन सजग लेखकमे हुनक नाम उल्लेखनीय छल।

बाबू धनुषधारी लालदासक नाम संस्मरणीय अछि। विहारी सतसइक अनुवाद हुनक नामसँ सम्बद्ध पूर्ण प्रचलित भेल। लोक–साहित्यमे हुनक 'रुपैया राज' तत्काल खूब प्रचलित भेल। सुलतानगंजसँ प्रकाशित मासिक 'मैथिली–प्रभा' हुनक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भेल। दरभंगासँ 'प्रजा' नामक साप्तहिको चलौलनि। इहो कहल जाइछ जे हुनक किछु रचना नामान्तरसँ सेहो केओ–केओ प्रकाशित कराय परितोषित भेलाह। विधुजीक रचनाक प्रसंग अनेक आक्षेप प्रक्षिप्तो भेल।

कुलानन्दनन्दन सेहो सुलेखक छलाह। अनेक पत्र–पत्रिकासँ ओ सम्बद्धो रहलह। काशीक लक्ष्मीश्वरी महारानीक ओतय कर्मरत रहि मैथिली सेवा आरंभ कय, दरभंगाक पंचायतीराज साप्ताहिक मे ओ कार्यरत रहि मिथिला–मैथिलीक सेवा करैत रहलाह।

मिथिला–मैथिलीक प्रति, स्वदेश–स्वभाषाक प्रति सहज प्रीति–परम्पराक कारण लाल दासक उपाधि परम्परा तेना जुटल रहल जे आक्षेपी लोकनि एकरा 'चंद लाल दासों की भाषा' कहय लगलाह। जेना पहिने मैथिल ब्राहमणक भाषा कहि मैथिलीकें लोक सीमित करय लागल छल तहिना मैथिली–आन्दोलन–क्रममे लालदासीय भाषा कहबाक सिलसिला चलल। आब यादव लोकनिमे वृत्ति–प्रवृत्ति बढ़ल अछि तँ यादवी भाषा सेहो कहल जा सकैछ। परंच ई कहब अनावश्यके जे भाषा कोनो जतिक नहि, भूगोलक होइछ। मिथिलामे रहनिहार यावतो व्यक्ति छथि, सभ मैथिल थिकाह, सभक मातृभाषा मैथिली थिक। प्रारंभिक शिक्षा भाषान्तरमे राजनीतिक

कारणे जे चलैत रहल तकरे परिणामस्वरूप ई दुःस्थिति उपस्थित भेल। किछु दुराग्रही अंगीका–बज्जिका आदि नाम कने पंचक्रोशी ध्वनिभेद कारणे दैत रहल छथि, तनिक मोहभंग अवश्यंभावी अछि।

लालदास–मुन्शी लोकनि अपन भाषा लिपिक, व्यवहार–संस्कारक आग्रही रहलाह तकर स्पष्ट कारण अछि। सर्वाधिक शिक्षा, अक्षर न्यासीक आदी हिनका लोकनि अपन शिक्षा–परम्परासँ रहैत अयलाह तें आग्रही–सत्याग्रही होयब स्वाभाविके थिक।

प0 नागेश्वर मिश्र अधिवक्ता–दरभंगा अधिवक्ता समुदायमे विधिवेत्ताक संगहि शिक्षा संस्थानक उन्नेता रूपमे हिनक प्रसिद्धि मिथिला कालेजक उन्नायक सचिव, राष्ट्रीय सेवक–संघक अग्रगण्य संचालक एवं नगरक प्रमुख विधिवेत्ता, समाजसेवी एवं निर्भीक नागरिक नेता रूपमे मिश्र जी सुविदित छथि। गीता पाठसँ विशेष चंडीपाठक हिनक उक्ति अविस्मरणीय अछि। मिथिला कालेज संस्थापक स्वनामधन्य प0 गंगाधर मिश्रक अनन्तर मिथिला कालेजक विकास क्रममे स्थान–भवन एवं सर्वांग–सम्पन्न रूप देबामे ई संस्मरणीय छथि।

महामना प0 गंगाधर मिश्र – मिश्रजीक नाम गंगाधर–निकेतन रूपमे स्मारक उचिते अछि। मिथिलाक आधुनिक शिक्षा–जगतमे ई अपर मालवीय कहल जाइ छथि। प्रसिद्ध विधिवेत्ताक संगहि मैथिल महासभाक ख्यातनामा प्रधान सचिव रूपमे हिनक नाम अग्रगण्य अछि। दरभंगाक समाजसेवी समुदायमे हिनक नाम स्वर्णाक्षरमे अंकित रहत, शिक्षाविद् समाजक हृदय–पटलपर चिरकाल धरि अंकित रहत। हिनक स्वभाव–प्रभाव एवं सामाजिक प्रतिष्ठा भावमे जतेक कहल जाय थोड़ बुझल जायत।

संस्थान उद्योजक प0 लक्ष्मीकान्त मिश्र– मिश्रजीक दरभंगामे प्रवेश विज्ञानविद् प्राध्यापक रूपमे भेल। अपन कर्मठता एवं उद्योजकतावश ई अनेक शिक्षासंस्थानक संस्थापक रूपमे ख्याति अर्जित करैत गेलाह। क्रमशः कालेजक प्रिन्सपल, माध्यमिक शिक्षाक प्रान्तीय अधिष्ठाता, विहार–विश्वविद्यालयक कुलपति आदि पदकें अलंकृत कयलनि। दरभंगा महिला महाविद्यालयक स्थापक भेलाह। अन्तमे पब्लिक स्कूलक विशाल परिधिक निर्माता रूपमे ख्यात भेलाह। लक्ष्मीसागर महल्लाक नवीन रूप देबामे सफल भेलाह। एखनहु नित्य–नूतन योजनाक कल्पनामे संलग्न रहैत छथि। एक सफल संस्थान–संस्थापक–संचालक रूपमे ई सुविदित रहताह। हिनक संगतिक सुयोग बरोबरि प्राप्त होइत रहल अछि। दरभंगाक विकास यात्रामे हिनक नाम उल्लेखनीय रहत।

हरिकान्तजी आ बैजूबाबू अत्यन्त अनुरक्त व्यक्ति। बैजूबाबू गोशाला–पू0रहोमक संग म्युनिसिपल बोर्डक स्थानीय सदस्य रहने कोनो समाजिक काजमे अग्रसर रहने

हुनक व्यक्तित्वक प्रति सदा आकर्षित रहलहुँ। स्थूल शरीर रहनहुँ, यातायात वाधित रहितहुँ ओ कृपापूर्वक बरोबरि दर्शन दैते रहथि। कुशल–जिज्ञासा करैत रहथि। एहि बीच हनुकहु वियोगसँ व्यथित रहलहुँ।

अन्यो अनेक आप्त बन्धु स्मृति पटलपर अमिट छथि जहिमे किछु परोक्ष भऽ गेलाह आ किछु सौभाग्यसँ वर्त्तमान छथि जनिका लोकनिक स्नेह–सौजन्यसँ कृतार्थ होइत रहलहुँ अछि।

उपसंहार

एखन धरि स्मृतिक प्रवाहमे बहैत जे मन पड़ैत गेल से कहैत गेलहुँ। तटवर्ती तरु–लताक फल–फूल नव पल्लवसँ जीर्ण पात धरि जे बहैत भसिआइत आयल, सबकें बटोरैत गेलहुँ। कटु–मधुर अम्ल–कषाय जे स्वाद भेटल से–सब कहैत गेलहुँ। किन्तु जीवन–धारा जखन आब क्षार–वारिधिमे समाहित होयबापर अछि तखन कीर्ण–विकीर्ण विन्दुकें समेटि चली।

मनकें तँ दार्शनिक लोकनि सुख–दुःखक उपलब्धिक साधन–हेतुक इन्द्रिय मानलनि अछि। एकरा कर्मेन्द्रिय–ज्ञानेन्द्रियक समुच्चय कहलनि अछि। मन यदि मुक्त–अनुभूत वस्तुकें ग्रहण करैछ तँ अकल्पितोकें कल्पनाश्रित कऽ लैछ। तें दुहूक खिच्चड़ि पकबैत चलल हो, संभव भऽ सकैछ। परंच मनक एकतानताकें यदि ध्यानक अभिधान देल जाइछ तँ ई सतत बनल रहल अछि जे अभिव्यक्ति मे अनासक्त स्थिति बनल रहय, जे देखल–सुनल अछि से यथावत् कहल जाय। से कहाँ धरि सधल, कते बढ़ल–कते कमल, तकरा विषयमे कहनिहार नहि सुननिहारे, लिखनिहार नहि पढ़निहारे, वास्तविक अधिकारी छथि।

हम केवल नम्रतापूर्वक सहृदय पाठकसँ निवेदन करब जे ज्ञात–अज्ञात रूपें ककरहुपर दुर्भाव वा आत्मभाव झलकि जाय तँ ओ सहृदयतापूर्वक क्षमा करथि। किन्तु हम एतवे विनीत भावें श्रीहर्षक शब्दें निवेदन करब जे –

"धियात्मनस्तावदचारु नाचरम्, परस्तु यद्वेद सतद्वदिष्यति।
जनावनायोद्यमिनं जनार्दनं क्षये जगज्जीवपिवं शिवं वदन्।।"

एते दिन धरि तँ की कयलहुँ, की कय सकलहुँ, तकरे लेखा–जोखा करैत रहलहुँ परंच आब चिन्तन भऽ रहल अछि जे की नहि कयलहुँ, की नहि कऽ सकलहुँ। कृति तँ बड़ थोड़ भऽ सकल, करिष्यमाण तँ राशि–राशि अस्पृष्टे रहल। एहि विषयमे कविकोकिलक कंठ–स्वरेमे कहब *'माधव हम परिणाम निराशा।'*

अपन नैतिक जीवनपर यदि नजरि उठबैत छी तँ *'त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधो लोभ एव रजोगुण समुदभवः।'* गीतोक्त त्रिविध काम–क्रोध एवं त्रिविध नरक द्वारेपर लोटाइत रहलहुँ अछि। जकर उद्धारक वैह अन्तर्यामी प्रभु छथि– *'त्वमेव शरणं विभो'*, भक्त–विरक्त सूरक शब्दमे कहब जे– *'मो सम*

कौन कुटिल खल कामी ? जेहि तन दियो ताहि विसरायो ऐसो नमकहरामी !'

किन्तु दुराशामे आशाक स्रोत अछि गोस्वामी तुलसीदासक ई वचन– *'प्रणतपाल रघुवंशमणि करुणासिन्धु खरारि। गये शरण प्रभु राखिहैं सब अपराध विसारि।'*

अन्तमे जाहि देश–स्वदेशमे छी तदर्थ प्रार्थना जे हम सब प्रत्येक देश–सन्तति एतबे प्रार्थना करी जे–

'परं वैभवं नेतुमेतत् स्वंराष्ट्रं समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम्।'

इति शम्।

सुमन-साहित्य

(प्रकाशित पुस्तक)

महाकाव्य — दत्त–वती, कृष्णावतरण।

खण्डकाव्य — उत्तरा।

कथाकाव्य — बुद्धबोध।

मुक्तककाव्य — अर्चना, प्रतिपदा, साओन–भादव, कविनवतिका, कथायूथिका, मुक्तावली, पयस्विनी, अंकावली, अन्योक्तिका, प्रकृतिशतक, प्रकीर्णशतक, शृंगारहार, गाम–धरती, ललना–लहरी, सनेस, जतरा चारू धाम, अन्तर्नाद, भारत–वन्दना, नीतिका, अलंकारमालिका।

उपन्यास — उगनाक दयादबाद।

समीक्षा — मैथिली साहित्यपर संस्कृतक प्रभाव, कुमार गंगानन्द सिंह, रघुनन्दन दास।

अनुवाद — शृंगारतिलक, चण्डीचर्या, पुत्रोहं पृथिव्याः,ऋतुशृंगार, शक्तिस्ववक, शिवमहिमा, आनन्दलहरी, हरिस्मरणिका, ऋचालोक, रघुवंश (द्वितीय सर्ग), पुरुषपरीक्षा, सौन्दर्यलहरी, हनुमानबाहुक,हितोप–देशिका, हितोपदेश–मित्रलाभ, मेघदूत, कुमारसम्भव, किरातार्जुनीय, अनुगीतांजलि,रवीन्द्र–कथावली (दू भाग), रवीन्द्र–नाटकावली (दू भाग).रवीन्द्र–निबन्धावली (दू भाग), गोरा, विनोदिनी, बड़कीदाइ (तीनू उपन्यास)।

सम्पादन — कृष्णजन्म, पारिजातहरण, आनन्दविजय, वर्णरत्नाकर, गोविन्द–गीतांजलि, कीर्त्तिलता, चन्दाझा रामायण तथा लालदास रामायण (संक्षेपिका) कथामुखी।

संग–सम्पादन — मैथिली प्राचीन गीतावली, एकांकी–संग्रह।

संस्कृतग्रन्थ — काव्यदीपिका स्नेहवर्षिणी टीका, प्राचेतस राजशास्त्र, वर्षकृत्य एवं कर्मकाण्डक कतिपय पुस्तकक संकलन–सम्पादन।

अभिनन्दनग्रन्थ — श्री सुमन साहित्य सौरभ '(जीवन परिचय, 18 काव्यार्पण, 16 संस्मरण, 34 समीक्षा, 21 मौलिक काव्य पुस्तक। 700 पृष्ठ। दाम–400 टाका।)